# हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा – साहित्य : समीक्षात्मक आकलन

## कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राज0)

**की पीएच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत**

**शोध प्रबन्ध**


**निर्देशिका**
डॉ० (श्रीमती) प्रेम जैन
पूर्व व्याख्याता, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
कोटा (राजस्थान)

**प्रस्तुतकर्त्री**
श्रीमती गायत्री औदिच्य



## कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राज0)

**2015**

# प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी श्रीमती गायत्री औदिच्य द्वारा लिखित यह शोध प्रबन्ध **"हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन"** मेरे निर्देशन में लिखा गया है। मैं पीएच0 डी0 हिन्दी (कला संकाय) की उपाधि हेतु इसकी अनुशंसा करती हूँ। जहाँ तक मेरी जानकारी है, इनका यह शोध कार्य मौलिक है।

शोधार्थी ने मेरे सान्निध्य में 200 से अधिक दिन कार्य किया है।

**हस्ताक्षर**

**शोध निर्देशिका**
**डॉ० (श्रीमती) प्रेम जैन**
**पूर्व व्याख्याता, हिन्दी विभाग,**
**राजकीय महाविद्यालय,**
**कोटा (राजस्थान)**

# —: आमुख :—

किसी भी इमारत की खूबसूरती उसकी नींव पर आधारित होती है क्यों कि नींव ही वह आधार होती है जिस पर कोई भी स्तम्भ खडा होता है। उसी तरह मेरे शोध प्रबन्ध की नींव एम0 फिल0 हिन्दी के अध्ययन के दौरान पड़ी । शोध प्रविधि एक विषय के रूप में पढ़ा तथा लघु शोध प्रबन्ध लिखा। उस शोध प्रविधि के अध्ययन एवं लघु शोध प्रबन्ध ने मुझे विस्तृत शोध अध्ययन की प्रेरणा प्रदान की। एम0 फिल0 हिन्दी में गोल्ड मेडल प्राप्त करने के पश्चात् तो मेरे इस सपने को जैसे पंख लग गये आत्मबल बढ़ा एवं शोध कार्य करने का मानस बना लिया जब मैंने शोध कार्य करने का निश्चय किया तो सर्वप्रथम शोध सम्बन्धी विषय चयन को लेकर समस्या उत्पन्न हुई क्योंकि किसी अछूते एवं नवीन विषय पर कार्य करना चाहती थी। इस सन्दर्भ में जब मैंने अपनी बात परम श्रद्धेया गुरूवर डा0 श्रीमती प्रेम जैन जो कि एम0 फिल0 हिन्दी विभाग की समन्वयक थी, के समक्ष रखी, तो उन्होंने विषय चयन सम्बन्धी समस्या का निदान करते हुए आत्मकथा साहित्य की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया। साहित्य में रूचि होने के कारण साहित्यिक पुस्तकें तो पढ़ती ही थी लेकिन आत्मकथा साहित्य का गहराई से अध्ययन करने लगी तो मुझे दिशा मिली और अभिरूचि की पुष्टि भी हुई।

**हिन्दी साहित्य की सशक्त विधा–** आत्मकथा लिखना कोई शगल नहीं है अपितु रेत पर नंगे पांव चलने की जिद है और अंधेरे के खिलाफ लडने की जुर्रत भी, आत्मकथा कोई नारा या पोस्टर नहीं है, वह जीवन संघर्ष से उपजी एक संश्लिष्ट विधा है। आत्मकथा लेखन अब जीवन के इतिहास का कलात्मक प्रस्तुतीकरण मात्र नहीं है बल्कि विचारधारा की अभिव्यक्ति, समाज परिवर्तन की दिक सूचक है। जिन्दगी की गइराईयों से निकली और बेजोड़ शिल्प से बुनी हुई सच्ची कथा ही आत्मकथा है।

विभिन्न साहित्यकारों की आत्मकथा ने मेरे मन मस्तिष्क को झकझोर दिया, जैसे झंझावात आ गया हो और फिर तूफान के बाद की शांति में बैठकर मैंने मस्तिष्क का मंथन किया तथा नवनीत रूप में जो विचार प्रकट हुआ, वह यह था

कि महान लोग ऐसे ही सफल नहीं हुए है, उन्होंने भी सभी सुख दुख, आनन्द, पीड़ा, संवेदना, मजबूरी, हताशा, निराशा, सहानुभूति, दया पात्र, अन्याय, शोषण, वर्ग भेद, जाति भेद आदि महसूस ही नहीं किया है बल्कि स्वयं अनुभूत किया तब इस संसार में अपना अस्तित्व बना पायें है।

आत्मकथाकारों की अनुभूति को मैंने भी जीवन के विभिन्न धरातलों पर महसूस किया था और सोचा कि जो जीवन यथार्थ है उसी पर शोध करना चाहिए। आधुनिक काल में हिन्दी में शताधिक आत्मकथाएं आ चुकी है, इनमें से अधिकतर आत्मकथाएं साहित्यकारों द्वारा लिखी गई है। जिसमें उनकी विचारधारा, उनके जीवनानुभव और व्यक्तित्व इत्यादि पर प्रकाश पडता है, साथ ही शैली भी परिनिष्ठित है। साहित्यकारों की आत्मकथा की इस रोचकता को देखते हुए ही मैंने उनकी आत्मकथाओं को शोध कार्य का विषय बनाने का निश्चय किया।


गायत्री औदिच्य,<br>
शोधार्थी–हिन्दी (कला संकाय)<br>
कोटा विश्वविद्यालय कोटा<br>
राज0

# –: प्राक्कल्पना :–

अपने शोध विषय को मैंने सात पर्वो मे प्रस्तुत करने का बीडा उठाया है जो इस प्रकार है।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ सात पर्वों में विभक्त है –

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम पर्व | :– | शोध विषयक प्रकृति, लक्ष्य, समीक्षा एवं प्रविधि अध्ययन की प्रकृति |
| द्वितीय पर्व | :– | आत्मकथा : एक विधागत परिचय |
| तृतीय पर्व | :– | आत्मकथा साहित्य का इतिवृत्त |
| चतुर्थ पर्व | :– | हिन्दी का आत्मकथा साहित्य संसार / हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य संसार |
| पंचम पर्व | :– | आत्मकथा साहित्य – संवेदना के स्वर |
| षष्ठ पर्व | :– | कलात्मक आकलन |
| सप्तम पर्व | :– | निष्कर्ष एवं अर्थवत्ता |

**प्रथम पर्व** में शोध विषयक प्रकृति, लक्ष्य, समीक्षा एवं प्रविधि का परिचय। यह पर्व चार खण्डो में विभाजित है। इसमें अध्ययन की प्रकृति साहित्यिक शोध की रहेगी एवं लक्ष्य, सर्वथा मौलिक विषय पर शोध अध्ययन का रहेगा। साहित्य की समीक्षा के अन्तर्गत विषय से सम्बंधित पुस्तकों की समीक्षा कर साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजना तथा शोधार्थी का शोध हेतु वैज्ञानिक प्रविधि को अपनाते हुए अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचना।

**द्वितीय पर्व** में आत्मकथा का विधागत परिचय देते हुए 'आत्मकथा का साहित्यिक एवं तात्त्विक विवेचन' के अंतर्गत परिचय, स्वरूप, परिभाषा, लक्षण, आधारभूत तत्त्व, लक्ष्य महत्त्व इत्यादि तथा आत्मकथा में अन्य रूपों में डायरी, जर्नल, संस्मरण, पत्र, आत्मकथा एवं अन्य विधाएं साम्यवैषम्य, आप बीती तथा आत्मकथा के प्रति भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण का विवेचन अभीष्ट है।

**तृतीय पर्व** के अन्तर्गत आत्मकथा–साहित्य का इतिवृत्त प्रस्तुत किया जाना है। इसके अन्तर्गत विश्वस्तर की आत्मकथा तथा भारतीय स्तर पर प्रादेशिक भाषाओं से

अनुवादित आत्मकथा एवं हिन्दी का आत्मकथा साहित्य जिसमें अर्द्धकथानक से लेकर अद्यतन जो भी आत्मकथाएँ हिन्दी भाषा में प्रकाश में आई हैं उनका विवेचन होना है।

**चतुर्थ पर्व** हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य संसार को प्रस्तुत करना है। इसमें आत्मकथा का आरम्भ बनारसी दास कृत अर्द्धकथानक से लेकर आधुनिक काल के सृजन में आधुनिककाल के लेखकों की आत्मकथा एवं दलित सृजन में दलित आत्मकथाकारों की आत्मकथा का वर्णन प्रस्तुत किया जाना है।

**पंचम पर्व** के तहत हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकक्षा की संवेदना के स्तर पर समीक्षा की जानी है। इसमें साहित्यकारों की आत्मकथा की मूल संवेदना पर प्रकाश डालना है। इसमें वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, वैचारिक, स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय मानवीय, मूल्य बोध, सांस्कृतिक, नैतिक, आध्यात्मिक, जीवन दर्शन स्तर पर आत्मकथा की मूल संवेदना की समीक्षा की जानी है।

**षष्ठ पर्व** में हिन्दी साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य का कलात्मक आकलन किया जाना है। यह दो भागों में विभक्त है। भाषा वैभव एवं शैली। भाषा वैभव के अन्तर्गत भाषा, व्याकरण, भाषा सौष्ठव, सामान्य, असाधारण साहित्यिक, अतिसाहित्यिक, लेखन भंगिमाएँ, यथार्थ एंव कल्पना के स्तर पर। शैली के अन्तर्गत विशिष्ट आत्मपरक के पद्यात्मक, गद्यात्मक, गद्यपद्यात्मक, काव्यात्मक, नवीनतम शैली इत्यादि स्तरों पर आत्मकथा साहित्य का समीक्षात्मक आकलन प्रस्तुत करना है।

**सप्तम पर्व** निष्कर्ष एवं अर्थवत्ता समग्र शोध का अध्ययन, मनन, विश्लेषण, मंथन उपरान्त जो नवनीत निकल कर आयेगा वह इसी सप्तम पर्व है। जिसके अंतर्गत शोधार्थी ने समस्त शोध उपरान्त प्राप्त सत्य रूपी समुद्र को एक बडे से कलश में भरकर रखने का साहस करेगा अर्थात् सभी पर्वो के वैज्ञनिक पद्धति द्वारा निकाले गये निष्कर्षो को संक्षेप में दिया जाना है।

# —: विषयानुक्रमणिका :—

## प्रथम पर्वः—शोध विषयक प्रकृति, लक्ष्य, समीक्षा एवं प्रविधि अध्ययन की प्रकृति।


### (अ) साहित्यिक शोध—अध्ययन नेचर ऑफ स्टडी पृष्ठ संख्या 17—27

1 हिन्दी के आत्मकथा साहित्य पर शोध।

2 हिन्दी के गद्य साहित्य की आधुनिक विधा विशेष पर शोध।

3 हिन्दी के साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य का शोध परक अध्ययन।

4 वैज्ञानिक पद्धति द्वारा साहित्यिक शोध।

5 प्राप्त संकलित सामग्री द्वारा शोध अध्ययन।

6 अध्ययन एवं अन्वेषण/व्याख्यात्मक शोध।

7 प्राप्त तथ्यों द्वारा नवीनतम सत्यों का उदघाटन।

### (ब) उद्देश्य, लक्ष्य—सर्वथा मौलिक विषय पर शोध परक अध्ययन

1 हिन्दी के आत्मकथा साहित्य विधा की शोधपरक प्रस्तुति।

2 साहित्यिक विधा आत्मकथा से अवगत होना तथा तत्संबधी सत्यों को उद्घाटित करना

3 हिन्दी साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य संसार का उद्घाटन।

4 यथार्थपरक विधा के अनुशीलन द्वारा साहित्यकारों के अमूल्य अनुभवों का आस्वादन करते हुए उनसे जीवन सम्बन्धित दिशा निर्देश प्राप्त करना।

5 अनछुए पहलुओं को प्रकाश में लाना।

6 विधा के श्रेष्ठतम परिरूप का परिदृश्य उपस्थित करना।

7 विषय से संबधित नवीन निष्कर्ष प्रस्तुत करना।

8 जिज्ञासु—वर्ग की जिज्ञासा का शमन करना।

9 अद्यतन रूप में समस्या का स्वरूप व समाधान प्रस्तुत करना।

### (स) साहित्य की समीक्षा—विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकों की समीक्षा

1 स्तर का ध्यान रखते हुए पुस्तक का चयन।

2 कथ्य के स्तर पर समीक्षा।

3 शिल्प के स्तर पर समीक्षा।

4 समीक्षात्मक अध्ययन से कृतियों का यथार्थ आकलन।

5 स्तरीय साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजना।

## (द) शोध प्रविधि

1 साहित्य का आकलन वैज्ञानिक पद्धति/यथाक्रम/गवेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति।

2 प्रविधि पद्धति का स्वरूप।

3 पद्धति की महत्ता।

4 व्यवस्थित अनुसंधान, सोद्देश्य, क्रमबद्ध, व्यवस्थित तथा तथ्यगत अनुसंधान द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति करना।

5 प्रविधि के विविध सोपानों द्वारा शोध अध्ययन करते हुए सत्य तक पहुंचना।

6 विशिष्ट प्रयोजन व दृष्टि द्वारा विषय का विश्लेषण करना तथा अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचना।

# द्वितीय पर्व :–आत्मकथा एक विधागत परिचय

## (अ) साहित्यक एवं तात्विक विवेचन–

**पृष्ठ संख्या 28–75**

आत्मकथा का परिचय

आत्मकथा का स्वरूप

आत्मकथा की परिभाषा

आत्मकथा के लक्षण

आत्मकथा के आधारभूत तत्त्व

आत्मकथा का लक्ष्य

आत्मकथा का महत्त्व

**(ब) आत्मकथा के अन्य रूपः–**

डायरी

जर्नल

संस्मरण

पत्र

**आत्मकथा एवं अन्य विधाएँ साम्य वैषम्य**

आत्मकथा और जीवनी

आत्मकथा और यात्रा साहित्य

आत्मकथा और शिकार साहित्य

आत्मकथा और रेखाचित्र

आत्मकथा और आपबीती

**(स) आत्मकथा– साहित्य के प्रतिमानः–**

भारतीय दृष्टि

पाश्चात्य दृष्टि

## तृतीय पर्व :– आत्मकथा साहित्य का इतिवृत्त

**(अ) विश्व स्तर पर – विभिन्न भाषाओं में प्रणीत** **पृष्ठ संख्या 76–118**

आपबीती– बेनजीर भुट्टो

मेरे बचपन के दिन–तसलीमा नसरीन

**(ब) भारतीय स्तर पर – भारतीय भाषाओं में प्रणीत**

बंदी जीवन–श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल

अभिनेत्री की आपबीती–हंसा वाड़कर

सत्य के प्रयोग–महात्मा गांधी

रसीदी टिकट–अमृता प्रीतम

माई स्टोरी–प0 जवाहर लाल नेहरू

यादों की बारात–जोश मलीहाबादी

## (स) हिन्दी का आत्मकथा साहित्य – अर्द्धकथानक से अद्यतन

## चतुर्थ पर्व :– हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य संसार

### (अ) आत्मकथा साहित्य–प्रस्थान काल

**पृष्ठ संख्या 119–149**

अर्द्धकथानक–बनारसी दास

### (ब) आधुनिक काल का आधुनिक सृजन

कुछ आपबीती कुछ जगबीती–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

पूना के व्याख्यान (मौखिक)– दयानन्द सरस्वती

निजवृत्तान्त–अम्बिकादत्त

आत्मकथा–राजेन्द्र प्रसाद

मेरी जीवन यात्रा–राहुल सांकृत्यायन

सिंहावलोकन–यशपाल

प्रवासी की आत्मकथा–भवानी दयाल

मेरा जीवन प्रवाह–श्री वियोग हरि

आत्मकथा अंक 'हंस' – स. प्रेमचन्द

आत्मकथा–आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

मेरी असफलताएं–बाबू गुलाबराय

### (स) उत्तर सृजन

क्या भूलूँ क्या याद करूं–डॉ0 हरिवंश राय बच्चन

अक्षरों के साये– अमृता प्रीतम

पंखहीन–डॉ0 विष्णु प्रभाकर

### (द) दलित सृजन

मैं भंगी हूँ–भगवान दास

अपने–अपने पिंजरे–मोहन दास नैमिशराय

जूठन–ओमप्रकाश वाल्मिकी

तिरस्कृत–सूरजपाल चौहान

संतप्त–सूरजपाल चौहान

## पंचम पर्व :– आत्मकथा साहित्य – संवेदना के स्वर पृष्ठ संख्या 150–215

वैयक्तिक

पारिवारिक

सामाजिक

राजनैतिक

आर्थिक

साहित्यिक

वैचारिक

स्थानीय

राष्ट्रीय

अन्तर्राष्ट्रीय

मानवीय

मूल्य बोध

सांस्कृतिक

नैतिक

आध्यात्मिक

जीवन दर्शन

## षष्ठ पर्व :– कलात्मक आकलन

### (अ) भाषा वैभव पृष्ठ संख्या 216–287

व्याकरण

शब्दावली

शब्द शक्ति

**भाषा सौष्ठव**

सामान्य

असाधारण

साहित्यिक

अति साहित्यिक

**लेखन भंगिमाएँ**

यथार्थ

कल्पना

## (ब) शैली

विशिष्टः आत्मपरक (उत्तम पुरूष)

पद्यात्मक

गद्यात्मक

गद्य–पद्यात्मक

काव्यात्मक

नवीनतम शैली

## सप्तम पर्व :– निष्कर्ष एवं अर्थवत्ता

**पृष्ठ संख्या 288–313**

- शोधार्थी की विशिष्ट उपलब्धियां :– विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं मे प्रकाशित लेख, कहानी एवं शोध पत्रों का विवरण।

- शोध के दौरान विषय से सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका में प्रकाशित शोधपत्रो " हिन्दी साहित्य के इतिहास पटल पर आत्मकथा का बदलता रूप" एवं "डॉ0 विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा युग का प्रतिबिम्ब "की छायाप्रति।

- दो राष्ट्रीय सेमीनार के प्रमाण पत्र की छायाप्रति।

- पुस्तकों की सूची।

# —: आभार :—

मेरी शोध–निर्देशिका आदरणीया डा0 (श्रीमती) प्रेम जैन, पूर्व व्याख्याता, हिन्दी–विभाग, राजकीय महाविद्यालय, कोटा की मैं हृदय से आभारी हूँ। वे कोटा विश्वविद्यालय कोटा की एम0 फिल0 हिन्दी 2007 की समन्वयक एवं वर्तमान में कोटा विश्वविद्यालय कोटा के प्रबन्ध मण्डल (बॉम) की सम्मानित सदस्या एवं श्रेष्ठ शिक्षाविद् हैं। वे हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा की कवयित्री, साहित्यकार एवं समीक्षिका हैं तथा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हैं। मेरे शोध कार्य की लम्बी यात्रा में विषय चयन से लेकर शोध प्रबन्ध की प्रस्तुति तक उनका अनवरत सहयोग अविस्मरणीय है। शोध अवधि में उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व के अनेक आयाम उद्घाटित हुए। शोध कार्य करते समय अनेक बार अनेक पड़ावों पर परिस्थितिवश जब भी कार्य अवरूद्ध हुआ तथा जब भी अनेक कारणों से मैं हतोत्साहित हुई, उस समय मेरी गुरूवर ने स्नेह के साथ श्रेष्ठ मार्गदर्शन करते हुए मुझे निराशा की भंवर से निकाला तथा मनोबल को बढ़ाते हुए पुनः शोध कार्य की ओर प्रवृत्त किया।

शोध के दौरान कई बार घर परिवार एवं कार्य की व्यस्तता की वजह से जब भी लम्बा समय गुजर जाता तो मैडम एक श्रेष्ठ गुरू की तरह मुझे मेरे अभीष्ट का ध्यान दिलातीं कि शोध से कैसे ध्यान भटक गया " तुम्हें शोध को अर्जुन तथा चिड़िया की आँख की तरह देखना है" उनकी वह प्रेरक वाणी ऐसा असर करती कि मैं दुगने उत्साह एवं शक्ति के साथ पुनः शोध कार्य में लग जाती तथा तब तक नहीं छोड़ती जब तक निश्चित लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाती।

मेरे शोध की गुणवत्ता भी मैडम की देन है। जब भी कुछ लिख कर ले जाती तो उस कार्य को तब तक बार बार लिखवातीं जब तक की वैज्ञानिक पद्धति अनुसार एक निश्चित सत्य तक नहीं पहुँच जाती। मैडम खुद मेरे साथ तर्क–वितर्क करतीं और मेरी अन्दर की प्रतिभा को निखारने का प्रयास करतीं। हमेशा यही कहतीं, जो भी कार्य करो उसे लगन, एकाग्रता, सत्य की कसौटी पर कस कर गुणवत्तापूर्ण बनाओ। सत्य का उद्घाटन करो जो पहले से विद्यमान है, उसके पूर्वाग्रह से बचो।

मैंने जब शोध कार्य प्रारम्भ किया तो सब लोगों ने डरा दिया कि शोध कार्य के लिये गाइड के चक्कर लगाने पडते हैं। वे समय नहीं देते हैं, लेकिन मैडम को इसके

विपरीत पाया। मैडम स्वयं साहित्यिक कार्यक्रमों, गोष्ठियों, समितियों की बैठकों इत्यादि में व्यस्त रहती हैं। इन सबके बावजूद मेरे शोध कार्य के लिये समय निकालतीं तथा पूरी तरह दिशा निर्देश देतीं।

जब भी गुरूवर के घर जाती तो शिष्य की तरह व्यवहार करतीं लेकिन शोध के अतिरिक्त वे अपने बच्चों की तरह आत्मीयता व स्नेहपूर्ण व्यवहार करतीं और साहित्यिक चर्चा करतीं। यह उनका तरीका था संवाद करने का जो मुझे आज महसूस हो रहा है। इसके द्वारा वह मेरी बुद्धि की थाह पा लेती थीं, फिर उसके अनुसार मुझे अपने विषय पर ले आती थीं। सम्माननीया, आदरणीया गुरूवर ने मेरा कदम कदम पर सहयोग किया। मेरी शोध निर्देशिका मेरे लिये पारस पत्थर रहीं जिसका स्पर्श पाकर मैं भी कनक समान हो गई वे मेरी शोध रूपी नाव की वह पतवार रहीं जिसने अपनी प्रतिभा एवं शिक्षा अनुभव से मेरे शोध कार्य रूपी नाव को किनारे लगाया।

जिस तरह किसी बीज को पौधे के रूप में पुष्पित पल्लवित करने का श्रेय उस बीज बोने वाले एवं उसकी देखभाल करने वाले का होता है। इसी तरह मेरे शोध प्रबंध का बीज बोने वाली मेरी परम आदरणीया, प्रेरणास्त्रोत मेरी माताजी श्रीमती पार्वती देवी हैं। मेरे पिता स्व0 राधेश्याम जोशी, ससुर स्व0 सुरेश चन्द्र औदिच्य, ताऊ जी स्व0 हरिशचन्द्र औदिच्य, चाचा ससुर स्व0 कृष्ण कान्त औदिच्य को मेरा शोध प्रबन्ध श्रद्धा सुमन के रूप में अर्पित है जिनके आशीर्वाद से मैं इसे पूर्ण कर पाई तथा सास श्रीमती सरस्वती देवी, चाची एव ंचाचा श्री कमललाल जोशी, पति श्री अरूण औदिच्य एवं समस्त परिवारजनों को मै श्रद्धा से नमन करती हूँ जिन्होंने कभी पारिवारिक क्रिया कलापों से मेरे शोध कार्य को बाधित नहीं होने दिया। उन्हीं की प्रेरणा एवं स्नेह के परिणामस्वरूप मैं यह कार्य सम्पन्न कर पाई। मेरे भाई–बहिन–बहनोई एवं मेरी पुत्रियां निधि और अदिति द्वारा प्राप्त अपेक्षित सहयोग हेतु उनका भी आभार ज्ञापित करती हूँ।

मैं अपने इष्ट मित्रों में परम मित्र एवं प्रेरणास्त्रोत श्री दिनेश कुमार, आयकर अधिकारी, राहुल जोशी, वरिष्ठ अध्यापक दिल्ली शिक्षा बोर्ड, प्रदीप सिंह हाड़ा, नरेन्द्र, श्री मानवेन्द्र जी, एम0 डी0 एस0 विश्वविद्यालय अजमेर का भी हृदय से धन्यवाद देना चाहूँगी। इनके द्वारा प्रतिक्षण मिलने वाली मदद से मैं हमेशा शोध कार्य में उद्यत रही।

उन सब आत्मकथाकारों, सुधी समीक्षकों तथा इतिहास लेखकों का हार्दिक आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ। इनके अमूल्य उद्धरणों तथा साक्ष्यों के द्वारा इस शोध कार्य को सम्पन्न करने में भरपूर सहायता प्राप्त हो सकी। जिन पुस्तकालयों, पुस्तकालयाध्यक्षों, पुरानी व नई पुस्तकों के विक्रेताओं व प्रकाशकों के सहारे सूचना संकलन में सफलता अधिगत हो सकी, उनकी भी मैं ऋणी हूँ। संदर्भ ग्रन्थ के विद्वान लेखकों की मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनके अमूल्य ग्रन्थ मेरे उपजीव्य बने व सहायक सिद्ध हुए।

मैं टंकण कर्ता सुश्री सोनू राठौड़ के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, मेरा यह शोध प्रबंध शोधार्थियों एवं ज्ञानार्थियों में ज्ञान का सिंचन करेगा तथा अन्य शोधार्थियों को शोध साधना में प्रेरित करने का मार्ग प्रशस्त करेगा मेरा यह विश्वास है।

इस अकिंचन कार्य की सफलता में माँ सरस्वती की परम अनुकम्पा और पितृचरण व गुरूजन का पुनीत आशीर्वाद है। अन्त में मैं अपनी श्रम साधना का यह पुष्प माँ सरस्वती को समर्पित करती हूँ।

**गायत्री औदिच्य**
**(शोधार्थी–हिन्दी)**

# <u>प्रथम पर्वः— शोध विषयक प्रकृति, लक्ष्य, समीक्षा एवं प्रविधि अध्ययन की प्रकृति —</u>

## <u>(अ) साहित्यिक शोध :— अध्ययन, नेचर ऑफ स्टडी :—</u>

1. **<u>हिन्दी के आत्मकथा साहित्य पर शोध —</u>** विश्व वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत, भारत में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के विभिन्न विश्वविद्यालयों में राजस्थान के कोटा विश्वविद्यालय कोटा के अन्तर्गत शोध विभाग के कला संकाय वर्ग में हिन्दी विषय में **"हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा—साहित्य : समीक्षात्मक आकलन"** समस्या पर अनुसंधान तथा सत्यान्वेषण करेंगे। आत्मकथा केवल आत्मप्रकाशन, आत्मदर्शन, आत्मसंप्रेषण और आत्मप्रख्यापन की विधा ही नहीं अपितु आत्म निरीक्षण, आत्म परीक्षण, आत्म विश्लेषण और आत्म विवेचन की श्रेष्ठ प्रक्रिया भी है, अतएव इसका विनियोजन आत्मप्रेषण के लिए ही नहीं आत्म विकास के लिए भी होता है, लेकिन आश्चर्य का विषय है कि यह विधा समीक्षकों तथा अन्वेषकों की दृष्टि में प्रायः ओझल रही है अतः इस पर हम शोध करेंगे।

2. **<u>हिन्दी के गद्य—साहित्य की आधुनिक विधा विशेष पर शोध —</u>** आधुनिक युग के वैज्ञानिक बोध ने विश्व मानवता को जो सबसे बड़ा वरदान दिया है, वह है सत्यानुसंधानात्मक दृष्टिकोण और उसके प्रति अदम्य अनुराग। इस नवीन दृष्टि—बोध ने दर्शन और चिंतन के क्षेत्रों के साथ—साथ कला और साहित्य के विविध आयामों को भी पूरी तरह प्रभावित किया है। इसी के फलस्वरूप साहित्य में आत्मकथा सदृश नूतन विधाओं का विकास हो रहा है। "आत्मकथा" का विशेष महत्त्व इसलिए भी है कि तथ्यात्मक साहित्य में ठीक वैसे ही आत्माश्रित और पराश्रित दो भेद होते हैं। आत्माश्रित आत्मानुभूत और आत्मानुभुक्त स्थितियों के चित्रण में भुक्त यथार्थ की वास्तविकता का जो विशुद्ध विनिर्लिप्त एवं सहज स्वाभाविक स्वरूप उपस्थित होते हैं। वह परार्थनुमान अथवा देखी सुनी में नहीं है, सूक्ष्म मनोभावों तथा गहन संवेदनाओं की जैसी प्रत्यक्ष अनुभूति और स्पष्ट अभिव्यक्ति "आप बीती" में संभव है "जग बीती" उसका सादृश्य कदापि उपस्थित नही कर सकती। अनुभूतिप्रवणता संवेदनशीलता तथा सहज विश्वसनीयता का जैसा सुदृढ़ आधार आत्मकथा प्रस्तुत करती है वैसा

साहित्य की किसी और विधा में संभव नहीं है, इसलिए शोधार्थी ने हिन्दी गद्य साहित्य की आधुनिक विधा विशेष पर शोध करने का मानस बनाया तथा अब कोटा विश्वविधालय, कोटा में रजिस्ट्रेशन (पंजीयन) भी हो गया है। अब मैं शोधार्थी के रूप में, इस दिशा में अध्ययन की ओर अग्रसर हो रही हूँ।

3. **<u>हिन्दी रचनाकारों, साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य का शोधपरक अध्ययन –</u>** आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में राजनेता, धर्म गुरु, विद्वान, व्यापारी, अभिनेता, क्रांतिकारी, शिक्षक, समाज सेवक, अर्थशास्त्री इत्यादि आगे आये है, लेकिन शोधार्थी के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु हिन्दी साहित्यकारों द्वारा रचित आत्मकथा साहित्य है। विहंगम दृष्टि से पढ़ना या अध्ययन करना अलग बात है और उसका शोध परक दृष्टि से अध्ययन करना और उसका विश्लेषण करना अलग। यदि सभी को सम्मिलित किया जाएगा तो अध्ययन विषय के साथ न्याय नहीं हो पायेगा। इसीलिए केवल हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य समीक्षात्मक आकलन शोध परक अध्ययन का विषय रहेगा।

**4. <u>वैज्ञानिक पद्धति द्वारा साहित्यिक शोध –</u>** यह युग विज्ञान का युग है अतः प्रत्येक समस्यामूलक तथ्य की परीक्षा वैज्ञानिक ढंग से की जाती है। वैज्ञानिक पद्धति निरीक्षण, विभाजन, और तथ्यों की व्याख्या है। हम दृष्टि पथ में आने वाली प्रत्येक वस्तु को सहज भाव से देखते ही रहते हैं पर जब किसी वस्तु को विशेष प्रयोजन से देखते हैं तब वह देखना वैज्ञानिक निरीक्षण कहलाता है। उदाहरणार्थ शोधार्थी ने अनेक आत्मकथा को पढ़ा होगा लेकिन जब उसका ध्यान उसमें निहित सौन्दर्य के विश्लेषण की ओर गया तब वह वैज्ञानिक अध्ययन की ओर प्रवृत्त होने लगा और उसे प्रतीत होने लगा कि अब उसके भाव पक्ष, कला पक्ष, भाषा, छंद, अलंकार आदि की परीक्षा करते हैं। तात्पर्य यह कि वैज्ञानिक निरीक्षण सोद्देश्य होता है सोद्देश्य निरीक्षण वैज्ञानिक।

1. तथ्यों का सतर्कता पूर्वक सम्यक विभाजन और क्रमानुसार उनके परस्पर सम्बन्ध का संयोजन।
2. सृजनात्मक कल्पना के आधार पर वैज्ञानिक नियम का निर्धारण वैज्ञानिक पद्धति से जो निष्कर्ष निकाला जाए। जो नियम निर्धारित किये जाए, वह सर्वदेशीय और

सार्वकालिक हो यह बात कही जाती है लेकिन प्रत्येक वैज्ञानिक नियम के सम्बन्ध में सत्यसिद्ध नहीं होती। परिस्थिति और कतिपय शर्तों के साथ ही वैज्ञानिक नियमों की अकाट्यता सिद्ध हो सकती है । साहित्य के निष्कर्ष युगाानुरूप और व्याख्यानुसार परिवर्तित होते रहते हैं। ज्ञान नव–नव अनुभवों के कारण विस्तृत या व्याख्यायित होता जाता है।

शोधार्थी भी वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण करते हुए सर्वप्रथम आत्मकथा का सहज भाव से निरीक्षण करेगा उसके पश्चात् सोद्देश्य क्रमबद्ध अध्ययन की ओर कदम बढायेगा, उस अध्ययन से जो भी काम चलाऊ परिकल्पना निर्मित होगी। वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार फिर तथ्यों के एकीकरण के साथ ही कामचलाऊ परिकल्पना का त्याग हो जाएगा क्योंकि इससे पूर्व निर्धारित नियम तथा सिद्धान्त की मात्र परीक्षा होगीं। परीक्षा के लिए नये–नये प्रयोग करेंगे और हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथा के संवेदना के स्वर तथा कलात्मक वैभव की परीक्षा कर सत्यान्वेषण और निष्कर्ष पर पहुँचेंगे।

5. **प्राप्त संकलित सामग्री द्वारा शोध अध्ययन –** साहित्यिक शोध के लिए तथ्यों का संकलन प्रमुखतः द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा ही होगा। इसके लिए हमें सजग रहने की आवश्यकता होगी और तथ्यों की सत्यता की जाँच करने के बाद ही उन्हें शोध में सम्मिलित किया जायेगा। जब तथ्यों की जाँच हो जाएगी उसके उपरान्त उनके विश्लेषण का कार्य प्रारम्भ करेंगे। वर्गीकरण से प्रबंध को व्यवस्थित ढंग से लिखने में सहायता मिलती है । समान तथ्यों के आधार पर विश्लेषण तथा निष्कर्ष निकालने पर कार्य आसान हो जायेगा। इसके लिए शोधार्थी आत्मकथाओं का वर्गीकरण विभिन्न सोपानों पर करेगा। जैसे विश्व स्तर की आत्मकथा का एक अलग वर्ग, भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवादित, हिन्दी साहित्य का आदिकाल से अब तक का समस्त आत्मकथा साहित्य, आधुनिक काल का सृजन, उत्तरार्ध का सृजन, दलित सृजन, वर्तमान का सृजन इत्यादि वर्गो में तथ्यों का वर्गीकरण करेंगे उसके पश्चात् हम इन सभी कृतियों पर शोधार्थी की दृष्टि से समस्याओं को सामने रखकर उसका समाधान खोजने का प्रयास करेंगे।

6. **अध्ययन एवं अन्वेषण व्याख्यात्मक शोध –** हिन्दी आत्मकथा साहित्य पर शोध करने के लिए हमने विभिन्न आत्मकथाओं को एकत्र कर उनका वर्गीकरण, विश्लेषण कर

लिया उसके पश्चात् अब हम इनका अध्ययन करेंगे तथा अपनी समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का अन्वेषण करेंगे चूंकि शोधार्थी का शोध विषय समीक्षात्मक आकलन है इसलिए वर्णनात्मक शोध में तथ्यों का संकलन मात्र न होकर उनकी व्याख्या और मूल्यांकन होता है। प्रायः सभी प्रकार के शोध में वर्णन व्याख्या होती है, अतः अब सभी आत्मकथाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण कर भाव पक्ष, कला पक्ष का मूल्यांकन कर सत्य तक पहुचं रहे है तथा उसकी उसकी व्याख्या कर रहे है।

7. **प्राप्त तथ्यों द्वारा नवीनतम सत्यों का उद्घाटन –** शोध के इस पड़ाव पर हम समस्या के विभिन्न चरणों को पार करते हुए उनसे प्राप्त तथ्यों द्वारा नवीनतम सत्यों का उद्घाटन करेंगे जिसमें साहित्यकारों का वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, साहित्यिक, वैचारिक, स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, मानवीय मूल्य बोध, सांस्कृतिक, नैतिक आध्यात्मिक, जीवन दर्शन, भाषा–वैभव, शैली इत्यादि पक्षों के सत्य का उद्घाटन करेंगे जिनसे आगामी आने वाले विद्यार्थियों के शोध के लिए एक दिशा मिलेगी।

## (ब) उद्देश्य, लक्ष्य–सर्वथा मौलिक विषय पर शोध परक अध्ययन :–

1. **हिन्दी की आत्मकथा साहित्य विधा की शोध परक प्रस्तुति –** शोधार्थी का उद्देश्य वैज्ञानिक पद्वति से अनुमानित परिकल्पना के आधार पर किसी तथ्य या सिद्धांत का शोध करना है। इसके लिए शोधार्थी ने ''हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन'' का चयन किया है क्योंकि आत्मकथा पर तो अध्ययन हुआ है लेकिन विशेष रूप से साहित्यकारों पर अध्ययन नहीं हुआ है और अनुसंधान हमेशा नवीन विषय एवं समस्या पर ही आधारित होना चाहिए तभी सर्वथा मौलिक विषय पर शोध परक अध्ययन किया जा सकेगा, और शोध के नवीनतम परिणाम प्रकट हो सकेंगे।

2. **साहित्यिक विधा आत्मकथा से अवगत होना तथा तत्सम्बन्धी सत्यों को उद्घाटित करना –** हिन्दी साहित्य मे अनुसंधान के अंतर्गत शोधार्थी का लक्ष्य साहित्य की विधा आत्मकथा से अवगत होना तथा तत्सम्बन्धी सत्यों को उद्घाटित करना । इसके अंतर्गत आत्मकथा का साहित्यिक एवं तात्त्विक विवेचन करते हुए उसका परिचय, स्वरूप, परिभाषा, लक्षण, तत्त्व, महत्त्व से अवगत होंगे तथा नवीन

सत्यों का उद्घाटन करेंगे। आत्मकथा के अन्य रूपों का भी रूपायन करेंगे। इसमें डायरी, जर्नल, संस्मरण, पत्र, आत्मकथा एवं अन्य विधाएं साम्य वैषम्य, आपबीती, इत्यादि रूप होंगे। इसके पश्चात् आत्मकथा विधा के साहित्यिक प्रतिमान भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से दोनों रूपों में प्रस्तुत करेंगे।

3. **<u>हिन्दी साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य संसार का उद्घाटन –</u>** शोधार्थी के शोध का उद्देश्य सर्वथा मौलिक विषय पर शोध करना है जिसमें हिन्दी साहित्यकारों पर विशेष रूप से केन्द्रित होना है। इसके लिए शोधार्थी विभिन्न आत्मकथाओं में से साहित्यकारों की आत्मकथा के साहित्य संसार का उद्घाटन करेगा। जिसमें हिन्दी साहित्य की प्रारम्भिक आत्मकथा से लेकर अद्यतन आत्मकथा साहित्य का अध्ययन, मनन, विश्लेषण करते हुए उन आत्मकथाओं का भी रहस्योद्घाटन करना जो अब तक प्रकाश में नही आ पाई।
4. **<u>यथार्थ परक विधा के अनुशीलन द्वारा साहित्यकारों के अमूल्य अनुभवों का आस्वादन करते हुए उनसे जीवन सम्बन्धित दिशा–निर्देश प्राप्त करना –</u>** हिन्दी आत्मकथा यथार्थपरक विधा है । इससे साहित्यकारों के स्वानुभूत अनुभवों से साक्षात्कार होने का अवसर मिलता है और यथार्थवादी अनुभवों से प्रत्येक व्यक्ति को जीवन सम्बन्धी कोई न कोई दिशा – निर्देश प्राप्त होता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का कार्य क्षेत्र अलग–अलग है। उसी के अनुसार जीवन अनुभव प्राप्त करेंगे। इसलिए शोधार्थी भी आत्मकथा की संवेदना के स्तर पर समीक्षा करते हुए जो भी जीवन सम्बन्धित दिशा–निर्देश प्राप्त करेगा उन्हें पाठकों तक पहुचानें की कोशिश करेगा और एक नवीन सत्य की अभिव्यक्ति करेगा।
5. **<u>अनछुए पहलुओं को प्रकाश में लानाः–</u>** हिन्दी साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य का समीक्षात्मक आकलन करते हुए साहित्यकारों के अनछुए पहलुओं को प्रकाश में लायेंगे । जो पहलू अब तक लेखक तक ही सीमित थे उन्हें आत्मकथा के माध्यम से पाठकों से रूबरू होने का मौका मिला लेकिन फिर भी कुछ संकेतात्मक, प्रतीकात्मक भाषा में लिखे हुए वक्तव्यों को शोध की दृष्टि से अन्वेषण करते हुए उनमे छिपी हुई भावना को कला की कसौटी पर प्रकाश में लाना शोधार्थी का लक्ष्य रहेगा।
6. **<u>विधा के श्रेष्ठतम परिरूप का परिदृश्य प्रस्तुत करना</u>:–** आत्मकथा विधा का श्रेष्ठतम परिरूप का परिदृश्य प्रस्तुत करना शोधार्थी का उद्देश्य है। जिसमें सामान्य से असाधारण तक की आत्मकथा का उल्लेख करना और उसका कारण देना।

इसके लिए शोधार्थी अपने अध्ययन से आत्मकथा का कला, शिल्प आदि में वह कलापूर्ण रेखाचित्र खींचना चाहता है जिसके आधार एवं अनुकरण पर श्रेष्ठतम आत्मकथा लिखी जा सके।

7. **विषय से सम्बन्धित नवीन निष्कर्ष प्रस्तुत करना** – हिन्दी आत्मकथा साहित्य के सम्बन्ध में अब तक के अनुसंधानों से इतर नवीन निष्कर्ष प्रस्तुत करना शोधार्थी का लक्ष्य रहेगा, तभी सर्वथा मौलिक अध्ययन की सार्थकता रहेगी। इसके लिए सम्पूर्ण अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं विषय की अर्थवत्ता का प्रतिपादन करेंगे।

8. **जिज्ञासु वर्ग की जिज्ञासा का शमन करना** – हिन्दी आत्मकथा साहित्य का अध्ययन करते हुए शोधार्थी को भी विभिन्न बिन्दुओं पर जिज्ञासा जाग्रत हुई कि आखिर ऐसा क्यों है, कैसे हुआ, कब हुआ, किस वजह से हुआ, इन सभी सवालों के उत्तर अध्ययन, अन्वेषण, विश्लेषण के द्वारा प्राप्त करेंगे। शोधार्थी की तरह ही आत्मकथा के सम्बन्ध में जिज्ञासु वर्ग को जिज्ञासा उत्पन्न होती होगी। उस जिज्ञासा का शमन इस शोध के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

9. **अद्यतन रूप में समस्या का स्वरूप व समाधान प्रस्तुत करना** – आत्मकथा साहित्य के अद्यतन रूप में समस्या का स्वरूप व समाधान प्रस्तुत करना शोधार्थी का मूल उद्देश्य है। जिससे विषय से सम्बन्धित समस्त बाधाओं का हल मिल सके और आत्मकथा विधा एक नवीन, परिष्कृत, रूप में पाठकों के सामने ला सके। जो भी निष्कर्ष आयें वह अति उत्तम रूप में सबके सामने आयें। विभिन्न सोपानों द्वारा समस्या का स्वरूप व समाधानों को प्रस्तुत एवं सत्यान्वेषण करेंगे।

## (स) साहित्य की समीक्षाः–विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकों की समीक्षा–

''हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन'' विषय के अनुसंधान की प्रकृति एवं उद्देश्य को स्पष्ट करने के पश्चात् विस्तृत अनुसंधान की ओर प्रवृत्त होने से पूर्व विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकों की समीक्षा करेंगे।

1. **स्तर का ध्यान रखते हुए पुस्तक का चयन** – शोधार्थी ने अपने शोध की रूप रेखा में यह तय किया वह पुस्तक समीक्षा (Review of Litrature) में स्तरीय, स्मरणीय, और उल्लेखनीय आत्मकथा का चयन कर उस पर स्तरीय समीक्षा कार्य किया जायेगा।

2. **<u>कथ्य के स्तर पर समीक्षा –</u>** हिन्दी साहित्य की स्तरीय आत्मकथा की कथ्य के स्तर पर समीक्षा करेंगें।

3. **<u>शिल्प के स्तर पर समीक्षा –</u>** विशिष्ट आत्मकथा की शिल्प के स्तर पर समीक्षा करेंगे।

4. **<u>समीक्षात्मक अध्ययन से कृतियों का यथार्थ आकलन –</u>** समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए आत्मकथा का यथार्थ आकलन किया जायेगा।

5. **<u>स्तरीय साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजना :–</u>** विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकों की समीक्षा करने के पश्चात् इन्हे स्तरीय साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजेंगे।

## (द) <u>शोध प्रविधि :–</u>

1. **<u>साहित्य का आकलन वैज्ञानिक पद्धति, समीक्षात्मक, गवेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति</u> –** शोध, खोज, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा सभी हिन्दी के पर्यायवाची शब्द हैं। इसी को मराठी में संशोधन और अंग्रेजी में रिसर्च कहते हैं। खोज में सर्वथा नूतन सृष्टि का नहीं अज्ञात को ज्ञात करने का ही भाव है।

साहित्य आकलन वैज्ञानिक पद्धति से करने से पूर्व शोधार्थी को वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ जानना होगा। साधरणतः उस पद्धति को वैज्ञानिक पद्धति कहा जाता है, जिसमें अध्ययनकर्ता तटस्थ या निष्पक्ष रहकर किसी विषय समस्या या घटना का अध्ययन करता है, इस हेतु वह अवलोकन करता है, तथ्य संकलित करता है, उसका वर्गीकरण एवं सारणीयन करता है, विश्लेषण एवं व्याख्या करता है, कार्य कारण सम्बन्धों का पता लगाता है, सामन्यीकरण करता है, वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालता और नियमों व सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है, उनका सत्यापन करता है। इससे उसकी पूर्वानुमान या भविष्यवाणी करने की क्षमता बढ़ जाती है। साहित्य का आकलन वैज्ञानिक पद्धति से करते हुए समीक्षात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति द्वारा भी किया जायेगा क्योंकि मानव जीवन की सभी वर्तमान समस्याओं पर चाहे वे साहित्य, समाज विज्ञान या शुद्ध विज्ञान से सम्बन्ध रखती हो अनुसंधान किया जाता है। वर्णनात्मक शोध में तथ्यों का संकलन मात्र न होकर उनकी व्याख्या होती है और मूल्यांकन होता है । यह समीक्षात्मक पद्धति द्वारा ही संभव हैं। समीक्षा पद्धति में अध्ययन विश्लेषण

द्वारा गुण–दोष का विवेचन किया जायेगा और आवश्यकता अनुरूप व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए व्याख्या प्रस्तुत करेंगे।

**2. <u>प्रविधि पद्धति का स्वरूप</u> –** शोधार्थी को अध्ययन करने से पूर्व उसका स्वरूप स्पष्ट होना आवश्यक है। शोध, समीक्षा नहीं है, पर उसमें समीक्षा का अंश रहता है। जब तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है तब उनका मूल्यांकन भी किया जाता है। इस दृष्टि से शोध में समीक्षा का समावेश अवश्यम्भावी हो जाता है । इसके विपरीत 'समीक्षा' मे 'शोध' का अंश आवश्यक नहीं है । जहां शोध में तटस्थता की अनिवार्यता होती है वहां समीक्षा में समीक्षक का समीक्ष्य कृति के प्रति तटस्थ भाव धारण करना आवश्यक नहीं है। समीक्षा आत्मपरक अधिक होती है। प्रभाववादी समीक्षा तो स्वयं एक साहित्य का रूप धारण कर लेती है। समीक्षक का 'वाद' प्रायः कृति की समीक्षा का आधार बनता है। आत्मपरकता शुद्ध शोध में प्रायः बाधक बनती है।

शोध का प्रस्तुतीकरण विशिष्ट प्रविधि के अनुरूप होता है। समीक्षा के प्रस्तुतीकरण की कोई निर्दिष्ट प्रविधि नहीं होती। प्रत्येक समीक्षक अपने ढंग से उसे प्रस्तुत करने में स्वतंत्र है।

शोध की प्रस्तुतीकरण की प्रविधि विषय के अनुरूप भिन्नता धारण करती है। साहित्य की समीक्षा के प्रस्तुतीकरण में समीक्षक की अपनी रूचि प्रधान होती है। उसका माध्यम 'गद्य या पद्य' बन सकता है । शोध पद्य में नही गद्य में ही पूर्ण विश्लेषणात्मक निष्कर्ष सहित प्रस्तुत होता है । निष्कर्ष यह है कि शोध समीक्षा सहित होता है परन्तु समीक्षा का शोध सहित होना बिल्कुल आवश्यक नहीं है और हमारा शोध समीक्षा सहित होगा।

**3. <u>पद्धति की महत्ता –</u>** साहित्यिक अध्ययनों में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है। इनमें तथ्य संकलन के लिए सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति, वैयक्तिक जीवन अध्ययन पद्धति, समाजस्थिति, अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली, आदि का उपयोग किया जाता है, इनमें से उपयुक्त पद्धतियों का प्रयोग करते हुए तथ्य एकत्रित कियें जाते हैं। साहित्य अध्ययनों में 'क्या है' में रूचि ली जाती है न कि ''क्या होना चाहिए'' में। तात्पर्य यह कि घटनाओं का वस्तुनिष्ठ तरीके से अध्ययन किया जाता

है। उनका यथार्थ चित्रण किया जाता है, उपदेशात्मक या आदर्शात्मक बातें नही बताता हैं।

साहित्यिक अध्ययनों में कार्य कारण सम्बन्धों की विवेचना की जाती है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है, नियम प्रतिपादित किये जाते हैं । उन नियमों का परीक्षण और पुनर्परीक्षण किया जाता है । समाज विज्ञानों के क्षेत्र में प्रतिपादित नियमों में सार्वभौमिकता का गुण पाया जाता है। केवल वर्तमान घटनाओं की विवेचना और व्याख्या नहीं की जाती बल्कि भविष्य में सम्भावित घटनाओं का उल्लेख भी किया जाता है। साहित्यिक अध्ययनों में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है अतः इनकी प्रकृति वैज्ञानिक है। हर शोध में व्यवस्थापरक क्रमबद्धता होती है इसलिए साहित्य में अधिकांशतः इसी पद्धति का प्रयोग होता है। इसी के आधार पर आकलन होता है। अनेक बार कई संदर्भ क्लिष्ट, दुरूह और अस्पष्ट होते हैं, उनको व्याख्या के द्वारा ही समझा जा सकता है । इन पद्धतियों की महत्ता इस तरह प्रतिपादित होती है। इसी के आधार पर हम निष्कर्ष निकालते हैं, हमारी समस्या का समाधान हो जाता है तथा हमारे उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है।

**4. <u>व्यवस्थित अनुसंधान, सोद्देश्य, क्रमबद्ध, व्यवस्थित तथा तथ्यगत अनुसंधान द्वारा लक्ष्य प्राप्त करना</u> —** प्रत्येक वैज्ञानिक अध्ययन क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित होता है। वैज्ञानिक निष्कर्षों तक पहुचने तथा नियमों एवं सिद्धांतों का प्रतिपादन करने हेतु अध्ययनकर्ता को निश्चित चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। जब वैज्ञानिक पद्धति की सहायता से कोई अध्ययन किया जाता है, तो इस हेतु अध्ययनकर्ता को विभिन्न चरणों या सोपानों से होते हुए सैद्धान्तीकरण की अवस्था तक पहुंचना होता है। शोधार्थी भी वैज्ञानिक पद्धति के विभिन्न चरणों का पालन करते हुए, शोध को निष्कर्ष तक पहुंचायेगा। ये निम्नलिखित चरण होंगे–

1. समस्या का चुनाव – आत्मकथा साहित्य या उपलब्ध वाद समस्या का चुनाव काफी सोच विचार के पश्चात् पूर्व ज्ञान एवं अवलोकन को ध्यान में रखकर करेंगे।
2. अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण करेंगे। ये उद्देश्य सामान्य और विशिष्ट दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

3. प्राक्कल्पना का निर्माण (जो अध्ययन की दिशा और क्षेत्र निर्धारित करने में योग देती है)।
4. अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन की इकाई का निर्धारण भी वैज्ञानिक पद्धति का एक प्रमुख चरण है ताकि अध्ययनकर्ता स्वयं यह जान ले कि उसे किस क्षेत्र का अध्ययन करना है, ताकि व्यर्थ की सामग्री एकत्रित करने से बच सकें। शोधार्थी अपने शोध अध्ययन के लिए साहित्यकारों की आत्मकथा का ही अध्ययन की इकाई के रूप में चयन करेगा, ताकि शोध की दिशा निर्धारित हो सकें।
5. शोधार्थी अध्ययन के उद्देश्यों एवं प्रकृति को ध्यान मे रखकर यह निश्चित करेगा कि उसे सूचनाएं एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार विधि, अनुसूची अथवा प्रश्नावली या वैयक्तिक अध्ययन पद्धति या किसी अन्य विधि का प्रयोग करेगा।
6. इसके पश्चात् विषय सामग्री या घटना का सूक्ष्म एवं सावधानी पूर्वक अवलोकन किया जायेगा एवं तथ्य संकलित किये जायेंगे। संकलित तथ्यों को लिखा जायेगा।
7. तथ्यों का वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या भी वैज्ञानिक पद्धति का प्रमुख चरण है । एकत्रित तथ्यों को समानताओं के आधार पर अलग–अलग वर्गों में बांटेंगे फिर सारणी तैयार कर तथ्यों का विश्लेषण करेंगे और कार्य–कारण सम्बन्धों का पता लगायेंगे।
8. वर्गीकृत तथ्यों के प्रतिमान के आधार पर निष्कर्ष निकाले एवं सामान्य नियम बनाये जाएंगे। इन्ही सामान्य नियमों को वैज्ञानिक सिद्धांत कहा जाता है।
9. निष्कर्षो एवं नियमों की जांच करेंगे। यह पता लगायेंगे कि वे सार्वभौमिक रूप से सही है या नहीं अथवा उनमें किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है।
10. तत्पश्चात् एकत्रित तथ्यों से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर भविष्यवाणी की जाएगी तथा भविष्य की घटनाओं के सम्बन्ध में पूर्वानुमान लगायेंगे।

**5. प्रविधि के विविध सोपानों द्वारा अध्ययन करते हुए सत्य तक पहुँचना –**

शोधार्थी के शोध का विषय "हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन" है। शोधार्थी वैज्ञानिक पद्धति के विविध सोपानों का प्रयोग करते हुए उस सत्य तक पहुँचेगा जो अनावृत्त है, जिसे अब तक कोई नही जानता था, एक नवीन सोच, विचार, सिद्धांत, दिशा को प्रकट करेगा। प्राक्कल्पना का सामान्यीकरण करेगा।

**6. विशिष्ट प्रयोजन व दृष्टि द्वारा विषय का विश्लेषण करना तथा अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचना –** शोधार्थी अब तक के अध्ययन को एक विशिष्ट प्रयोजन व दृष्टि के द्वारा विश्लेषित करेगा इसके लिए सामान्य नियमों की जाँच एवं पुनःपरीक्षण करेगा। निष्कर्षो एवं नियमों की जाँच करेगा। यह पता लगायेगा कि वे सार्वभौमिक रूप से सही है या नहीं अथवा उनमें किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है क्या ? तत्पश्चात् एकत्रित तथ्यों से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर संभावनाएँ व्यक्त की जाएँगी।

# द्वितीय पर्व :– आत्मकथा : एक विधागत परिचय

## (अ) साहित्यिक एवं तात्त्विक विवेचन

### आत्मकथा का परिचय

हिन्दी साहित्य में 'आत्मकथा' आज से चार सौ वर्ष पूर्व प्रकाश में आई थी। यह उसका शैशवकाल था। कदम दर कदम सफर तय करते हुए साहित्य की समृद्ध विधा के रूप मे अपनी पहचान कायम कर चुकी है। प्रारम्भ में आत्मकथा काव्यात्मक रूप में ही लिखी गई। शनैः शनैः गद्य का विकास होने पर गद्य–पद्यात्मक लिखी जाने लगी। क्रमिक विकास करते हुए आधुनिक काल में गद्य की विभिन्न विधाओं के विकास के साथ ही पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से आत्मकथा का रूप भी निखरने लगा। साहित्यकारों में आत्मकथा लेखन की होड़ सी चल पड़ी, परिणामस्वरूप वर्तमान में आत्मकथा हिन्दी साहित्य में विकसित ही नहीं, अति विकसित विधा के रूप में स्थान बना चुकी है।

आत्मकथा, हिन्दी साहित्य की वह विधा है, जिसमें किसी व्यक्ति की जिंदगी का (अद्यतन) वर्णन होता है। आत्मकथा शब्द दो शब्दों के मेल से बना है जिसमे आत्म एवं कथा दोनों हैं अर्थात् व्यक्ति की स्व की कहानी जिसमें उसकी आत्मा का सम्पूर्ण अंश समाहित होता है उसकी आत्मा पर पड़े विभिन्न प्रभावों का अक्षरशः वर्णन होता हैं। आत्मकथा, व्यक्ति की स्वयं के सत्य की अनुभूति है, जिसमें जीवन का आनन्द, आशा, उमंग, उल्लास, अंतर्द्वन्द्व, निराशा, हताशा, उपेक्षा, इत्यादि, सम्पूर्ण जीवन में जिस भी तरह की अनुभूति होती है उन्हीं सबको मिलाकर जो दस्तावेज तैयार होता है, उसी को आत्मकथा कहते है।

आत्मकथा उस बाग की तरह हैं जिसमें विभिन्न तरह के फूल खिलतें हैं जैसै– चम्पा, चमेली, जूही, मोगरा, गुलाब, रातरानी, इत्यादि। आत्मकथा रूपी बाग में विचरण करते हुए जिस भी पुष्प की क्यारी के पास से निकलते हैं तो उसमें लगे पुष्पों की सुगंध तन, मन, को सुगंधित कर देती है और अगले ही पल दो कदम पर अन्य फूल की सुगंध मन मस्तिष्क को झकझोर देती है। इन्हीं विभिन्न पुष्पों के बाग का नाम आत्मकथा है।

आत्मकथा किसी एक व्यक्ति (स्वयं) का (अद्यतन) वर्णन होने के साथ ही उसके आसपास के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, व्यापारिक, रीति

रिवाज, संस्थाओं, कलाओं, प्राकृतिक वातावरण का भी जीवंत साक्ष्य होता है, जो लेखक को किसी भी तरह प्रभावित करते हैं अतः आत्मकथा विधा स्वंय में अन्तः बाह्य दोनों संसार को समेटे रहती है।

## आत्मकथा का स्वरूप

हिन्दी के आधुनिक गद्य साहित्य में आत्मकथा का एक स्वतंत्र विधा के रूप में उद्भव अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है। आत्मकथा एक संस्मरणात्मक गद्य विधा है फिर भी इसे पूरा संस्मरणात्मकता के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि साहित्यकार का जीवन कल्पना के बिना अधूरा है। वह अपने साहित्यिक जीवन में अधिकांश समय कल्पनालोक में साहित्य सृजन करते हुए व्यतीत करता है और इसी समय को वह अपनी आत्मकथा में पाठकों के समक्ष भी प्रस्तुत करता है तो इस तरह पाठक उसमें संस्मरणात्मक जीवन का ही नहीं बल्कि उसके कल्पनालोक का भी विचरण कर लेता है। आत्मकथा लेखन के विषय मे कोई बँधा बँधाया नियम नहीं है इस विषय में केवल इतना ही कहा जा सकता है, जब भी कोई लेखक या साहित्यकार अपनी जीवन यात्रा में हुए अनुभवों को दूसरे के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता है तब वह आत्मकथा लिखता है उस आत्मकथा का स्वरूप कुछ भी हो सकता है।

आदिकाल के कवि बनारसीदास कृत "अर्द्धकथानक" को हिन्दी साहित्य की पहली आत्मकथा होने का गौरव प्राप्त है। यह आत्मकथा पद्यात्मक रूप में लिखी गई है। इससे पूर्व भी अनेक पद्यमय रचनाओं में आत्मकथात्मकता देखने को मिलती है किन्तु उनका स्वरूप सुनिश्चित व क्रमबद्ध नहीं था। आधुनिक काल में प्रमुखतः गद्यमय आत्मकथाएँ ही लिखी जाती हैं जो कि निबंध, संस्मरण, डायरी एवं पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित अंशो के रूप सामने आने लगी हैं।

बाबू गुलाबराय ने अपनी आत्मकथा "मेरी असफलताएँ" को निबंधात्मक रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है । जिसमें उन्होंने अपने जीवन की असफलताओं को प्रकाश में लाते हुए सम्पूर्ण जीवन का वर्णन किया है उन्होंने पुस्तक की भूमिका में स्वयं अपने शब्दों में लिखा है–

"इसमे मेरे गुण दोषों के साथ मेरी शैली के गुण दोषों का समावेश हो गया है। इस पुस्तक के निबंध मेरी शैली का पूर्ण प्रतिनिधित्व करते है। भगवान की सृष्टि की भांति यह पुस्तक भी गुण दोषमय है। इस पुस्तक को जैसी है तैसी अपने सह्रदय पाठकों को सौंपता हूँ"–

"जड चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार

संत हंस गुन गहहि पय, परिहरि वारि विकार " – 1

आत्मकथा एक लेखक के व्यक्तिगत जीवन का वर्णन है किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि लेखक आत्मकथा में अपने जीवन की समस्त घटनाओं का क्रमवार वर्णन प्रस्तुत करता है बल्कि अन्य साहित्यिक विधाओं के समान आत्मकथा लेखक का भी एक निश्चित उद्देश्य निहित रहता हैं और उसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वह अपने जीवन की घटनाओं का चयन करता हैं घटनाओं का चयन भी कुछ इस प्रकार होता है कि उनके माध्यम से लेखक के व्यक्तित्व का विकास परिलक्षित होता है ।

हिन्दी साहित्य के विद्वान् मनीषी, विश्व भ्रमण करने वाले यात्री श्री राहुल सांकृत्यायन ने अपने जीवन मे विभिन्न यात्राएँ कीं और उन यात्राओं के दौरान आने वाली कठिनाई, आनन्द, उस स्थान विशेष का परिवेश, रीति रिवाज़, सभ्यता, संस्कृति, लोक कथाएँ, लोक गीत, लोक व्यवहार इत्यादि अनुभवों से अन्यों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से अपनी आत्मकथा "मेरी जीवन यात्रा" लिखी। श्री राहुल सांकृत्यायन ने स्वयं महसूस किया था कि उनसे पूर्व इस राह से गुजरने वाले यात्री यदि इस यात्रा का वर्णन कर गये होते तो उनका बहुत लाभ हुआ होता, ज्ञान के ख्याल से नहीं, समय के परिणाम मे भी। यहाँ आत्मकथा का स्वरूप एक यात्रा वृत्तांत के रूप में सामने आया है। जिसमें लेखक ने स्वयं महसूस किया कि यदि पूर्व में किसी ने ऐसा प्रयास किया होता तो उनकी यात्रा सरल हो जाती अर्थात् जिन जीवनानुभवों को किसी अन्य ने महसूस किया हो चाहे वह अच्छा अनुभव हो या बुरा यदि लिखित रूप में प्राप्त हो जाये तो पाठक के जीवन में उन अनुभवों के प्रति सतर्कता उत्पन्न हो जाती है, तथा उस पर उपकार यह होता हैं कि वह उन परिस्थितियों का उपाय पूर्व में ही तैयार कर लेता है। आत्मकथा में केवल बीते

हुए जीवन की घटनाएँ ही नहीं संजोयी जाती बल्कि उनके द्वारा आत्ममूल्यांकन किया जाता है। अतीत कालीन घटनाओं का यह आत्म मूल्यांकन वर्तमान जीवन के संदर्भ में किया है, यही कारण है कि प्रत्येक आत्मकथा में अतीत का वर्तमान से एक अनिवार्य सम्बन्ध होता है। यह जितना अधिक मजबूत होगा उतना ही प्रभावी और सशक्त रचना लिखी जा सकेगी। आत्मकथा में लेखक अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्त्व प्रतिष्ठापित करता है। आत्मकथा में लेखक को स्वयं को दर्पण के सामने रखना पड़ता है। आत्म मूल्यांकन का सबसे सशक्त माध्यम ''डायरी'' होता है। जिसमें व्यक्ति का आंतरिक और बाह्‌य व्यक्तित्व दोनों प्रकट होते हैं। व्यक्ति दूसरों के बारे मे क्या सोचता हैं तथा अपनी गलती का पश्चात्ताप किस तरह करता हैं। जो कमजोरी किसी को नही बताना चाहता उसे भी अपनी डायरी में लिखकर आत्म निसृत होता है।

हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर ने ''मोहन राकेश की डायरी'' की भूमिका में ''डायरियाँ एक लेखक का अपना रेगिस्तान'' में लिखा है कि ''डायरियाँ लेखक का अपना और अपने हाथ से किया हुआ पोस्टमर्टम होती है, एक लेखक कैसे तिल–तिल जीता और मरता है अपने समय को सार्थक बनाते हुए खुद को कितना निरर्थक पाता जाता है और अपनी निरर्थकता में से कैसे वह अर्थ पैदा करता है इसी रचनात्मक आत्मसंघर्ष को डायरियाँ उजागर करती हैं'' – 2

आत्मकथा के स्वरूप के रूप में निजी डायरी वह दस्तावेज है जिसमें व्यक्ति डूबता, उतराता, गोते लगाते हुए, पारदर्शी रूप में पाठक के सामने प्रकट होता है। हिन्दी में डायरी लिखने और प्रकाशित करने का प्रचलन कम है, जबकि अंग्रेजी और दूसरी पश्चिमी भाषाओं में इन्हें निःसंकोच छापा जाता है और साहित्य का जरूरी हिस्सा माना जाता है।

आधुनिक काल में गद्य की अन्य विधाओं के विकास के साथ ही पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन में भी वृद्धि हुई तथा प्रतिस्पर्धात्मक युग का प्रारम्भ हुआ, इससे साहित्य अधिक समृद्ध हुआ। इसी क्रम मे प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित "हंस" पत्र के आत्मकथा विशेषांक ने हिन्दी आत्मकथा के स्वरूप को नवीन रूप प्रदान किया। इसी अंक में स्वयं प्रेमचन्द की आत्मकथा "जीवनसार" भी प्रकाशित हुई थी, जिससे आत्मकथा पद्यात्मक, संस्मरण, आदि स्वरूपों की खोल को उतार कर "लेख" के रूप में साहित्याकाश में उदित हुई थी।

**निष्कर्ष –** आत्मकथा के विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि आत्मकथा में लेखक अपने जीवन में उत्पन्न विविध स्थितियों, परिस्थितियों के दौरान अपने मानसिक एवं भावनात्मक विकास की कथा प्रस्तुत करता है। वह इस कथा की पृष्ठभूमि के रूप में अपने जीवनकाल की पारिवारिक, सामाजिक, तथा राजनीतिक परिस्थितियों का भी चित्राकंन करता है। लेखक का जीवन जिन सुखद, दुःखद परिस्थितियों से संचालित प्रभावित होता है, वह उनका वर्णन करते समय भी संकोच नहीं करता फिर भले ही वह अपनी बात डायरी, संस्मरण, निबन्ध, पद्य, लेख, यात्रा वृत्तांत, आदि किसी भी स्वरूप मे आत्म मंथन, विश्लेषण, सृजन, को प्रकट करे।

## आत्मकथा की परिभाषा

आत्मकथा की परिभाषाएँ भारतीय एवं पाश्चात समीक्षकों ने प्रस्तुत की है और आत्मकथा को निश्चित और सटीक रूप से समझने के लिये परिभाषा का अध्ययन परम आवश्यक है। सर्वप्रथम पाश्चात्य समीक्षकों की दी हुई परिभाषा से प्रारम्भ करते है।

1 The story of one's life written by himself (oxford dictionary) – 3

2 "Auto-Biography (Auto+Biography) The Writing of one's own History- The Story of one's life written by himself "(shorter oxford Dictionary) - 4

3 "Autobiography is the narration of men's life by himself- (cassell's Encyclopedia of Literature by S.H. Steinsburg)"- 5

4 As the suggestive nomenclature of Southey implies is the biography of a person written by himself." (Encyclopedia of Britannica, Eleventh Edition) – 6

5 Autobiography : - The life of a person written by himself. The first famous Autobiography in European literature is the " confession of St. Augustin, Encyclopedia Britannica.vol-2" - 7

6 “It is an effort to give a view of the invisible World within the personality of the artist- ( Art of Autobiography: D.G. Naik) - 8

7 “The autobiography proper is connected Narrative of the author’s life with stress laid on introspection or on the significance of his life against a wider background” (Dictionary of World literary Terms : JT Shipley) - 9

8 “Honesty is the greatest stumbling block of the autobiographer. The resolution to tell the truth about one self takes a sparton rigor of character and ability to do so requires a more than common insight .(one mighty torrent by Johnson) - 10

9 If I did not take an immense interest in life through the medium of myself, I should not have embarked upon this analysis. ( Experiment in Autobiography H.G. wells,) Vol.II - 11

10 “Within this boundless realm of human enquiry & meditation autobiography has its place, it is not merely what its modern name might suggest, a sub division of biography.” (A History of Autobiography in Antiquity, Vol - I by george Misch, ) - 12

11. "हर व्यक्ति के पास कहने के लिए अपनी जीवन गाथा है और कोई भी आत्मचरित्र कभी भी यथार्थ में बुरी पुस्तक नहीं होती है।" (ऑटो बायोग्राफी की विस्काउंट स्नोडन, भूमिका) – 13

12. "जीवन चरित्र में किसी व्यक्ति के पक्ष या विपक्ष मे वकालत नहीं होनी चाहिए और यही बात आत्मचरित के सम्बन्ध में भी सत्य है।" (आत्मचरित– मार्गरेट एसक्विथ भूमिका) – 14

13. बूढ़े आदमियों में एक प्रवृत्ति होती है........अपनी और बीते दिनों के अपने कारनामों की बातें करना।" (आत्मकथा– बैंजामिन फ्रैंकलिन) – 15

14. "आत्मकथा लेखक के अपने जीवन का संबद्ध वर्णन है।" (हिन्दी साहित्य कोश, सपा0 धीरेन्द्र वर्मा) – 16

"यह आत्मन शब्द का समास में व्यवहृत रूप हैं जिसका अर्थ है अपना, निज का, आत्म का, मन का ,कथा का अर्थ है जीवन कहानी। अतः आत्मकथा का अर्थ हुआ स्वलिखित जीवन चरित''। (वृहद् हिन्दी कोश–संपा0 कालिका प्रसाद)

15 "साधारणतः आत्मकथा में व्यक्ति के अपने अनुभव अधिक से अधिक प्रामाणिक और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत होते है, पर कई कारणों से कभी–कभी ऐसा नहीं हो पाता।" (मानविकी पारिभाषिक कोश साहित्य खण्ड) – 17

16. "आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं, सफलताओं आदि का वह संतुलित और व्यवस्थित चित्रण है, जो उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्‌घाटन में समर्थ होता है। (शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त–गोविन्द त्रिगुणायत) – 18

17. आत्मकथाकार अपने सम्बन्ध में किसी मिथक की रचना नहीं करता, कोई स्वप्न सृष्टि नहीं रचता, वरन अपने गत जीवन के खट्‌ठे मीठे, उजले–अन्धेरे, प्रसन्न, विषष्ण, साधारण–असाधारण, संचरण पर मुड़कर एक दृष्टि डालता है, अतीत को पुनः कुछ क्षणों के लिए स्मृति में जी लेता है और अपने वर्तमान तथा अतीत के मध्य संबंध सूत्रों का अन्वेषण करता है।" (आस्था के चरण डा0 नगेन्द्र) – 19

18. आत्मकथा जीवन की कुछ घटनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यंजना हैं। (मेरा जीवन प्रवाहः श्री वियोगी हरि) – 20

19. "आत्मकथा जीवन की एक तस्वीर है.......। आत्मकथा का अर्थ है आत्मचित्रण"।' (क्या भूलूँ क्या याद करूँ : डा0 हरिवंशराय बच्चन) – 21

20. "आत्मकथा व्यक्ति के संघर्षमय जीवन का वह सत्यांकित इतिहास है जो स्वयं मेघ की तरह उमड़ कर बरस जाता है – जो स्वयं फूल की तरह खिल कर झड़ जाता है। अनासक्त अभिव्यक्ति के बिना साहित्य की यह सत्यधर्मी विधा अपनी स्पष्ट प्रमाणिकता नहीं स्थापित कर सकेगीं। आत्मकथा का शाब्दिक जल प्रपात बुद्धि से नहीं, अंतः करण से निकलता है ।''

(अरूणायन– एक आत्मकथा–पोद्दार रामावतार अरूण भूमिका) – 22

21. "आत्मकथा यथार्थ से यथार्थ तक पहुंचने की प्रक्रिया है।" (रसीदी टिकटः अमृता प्रीतम) – 23

22. "आत्मकथा लिखना सुखद कार्य तो है, क्योंकि उसमें व्यक्ति को अपने विषय में कहने का अवसर मिलता है, पर वह कठिन इसलिये है कि उसमे लेखक को निष्पक्ष होना पड़ता है, कटु सत्यों का उद्घाटन करना पड़ता हैं। अपने दोषों को भी प्रस्तुत करना पड़ता है, जो सहज कार्य नहीं।" (डा0 शांति स्वरूप गुप्त–पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त) – 24

23. "व्यक्तित्व को प्रकट करने की लालसा ने जहां उपन्यास, नाटक, प्रबंध, कहानी अथवा गीतिकाव्य को जन्म दिया है, वही आत्मकथा, जैसी वस्तु की भी वही जननी है। अपने को व्यक्त करने की गुंजाइश उपन्यास, नाटक में कम है। यह गुण कविता में कुछ ज्यादा है परन्तु आत्मकथा द्वारा हम सही या गलत, अपने को ही व्यक्त करते हैं।" (हंसवाणी–कृष्णानन्द गुप्त (हंसआत्म कथांक), जनवरी–फरवरी 1932) – 25

24. आत्मकथा समय प्रवाह के बीच तैरने वाले व्यक्ति की कहानी है। इसमें जहां व्यक्ति के जीवन का जौहर प्रकट होता है, वहां समय की प्रवृत्तियाँ और विकृतियाँ भी स्पष्ट होती हैं। इन दोनों के घात–प्रतिघात से ही आत्मकथा में सौन्दर्य और रोचकता का समावेश होता है।" (साहित्य के नये रूप–डा0 श्याम सुन्दर घोष) – 26

25. "आत्म वृत्तांत आयुष्य की स्मृतियों के संयोग से गुंथा हुआ जीवन का इतिहास नहीं है वरन वह अज्ञात चितेरे द्वारा उसकी कल्पना के अनुसार बनाया हुआ चित्र है।" (श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर कृत 'जीवन स्मृति',अनु सूरजमल जैन प्रस्तावना से उद्धृत हैं।)– 27

इन सभी परिभाषाओं का सूक्ष्म अध्ययन करने से निष्कर्ष रूप में जो तथ्य उभर कर सामने आये हैं इनमे विविध शब्द योजन के अंतर से आत्मकथा की निम्नलिखित विशेषताओं पर बल देने का प्रयास किया गया है–

1. आत्मकथा का नायक स्वयं लेखक होता है।
2. आत्मकथा स्वयं का स्वलिखित इतिहास है।
3. आत्मप्रकाशन, आत्म विश्लेषण और आत्मविवेचन की चेष्टा।
4. व्यक्तिगत मानवीय अनुभवों के प्रकाशन का श्रेष्ठ साधन।

5. अपने गुप्त मनोभावों को परखने और व्याख्यायित करने का साधन।
6. आत्मकथा में ईमानदारी, तटस्थता, सत्यता का होना आवश्यक है।
7. व्यक्तिगत अनुभवों से समाज को लाभ पहुंचाने का प्रयास।
8. आत्मकथा एक व्यक्ति के जीवन का लेखा जोखा होती है।
9. अतीत का पुनराख्यान।
10. एक स्पष्ट, निर्भीक, निष्पक्ष, निश्छल सहज अभिव्यक्ति का सशक्त साधन आत्मकथा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निरपेक्ष, आत्मोन्मुख, अनुभूति–प्रवण, तथ्याश्रित, स्मृत्यवलम्बित, सुसम्बद्ध–कथात्मक, चरित्र प्रधान विधा आत्मकथा कहलाती है। आत्मकथा साहित्य का वह प्रकार है जिसमें लेखक अपने भोगे हुए यथार्थ का, आत्म परीक्षण, निरीक्षण, विश्लेषण, करते हुए विभिन्न अभिव्यक्ति स्तरों से मार्ग बनाते हुए साधारणीकरण की प्रक्रिया द्वारा पाठक को उसी संसार में ले जाता है। जहां लेखक ने अपना अतीत व्यतीत किया था।

## आत्मकथा के लक्षण

आत्मकथा में लेखन के द्वारा लेखक या साहित्यकार अपनी जीवन यात्रा में हुए अनुभवों को दूसरे के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता है तब वह आत्मकथा लिखता है लेकिन विभिन्न हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथा रूपी सागर का मंथन करने पर अमृत रूप में जो विचार उभर कर प्राप्त हुआ वह यह है कि कभी कभी मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए भी आत्मकथा लिखी जाती है। सुखद अनुभवों की अपेक्षा दुखद अनुभव या बैचैन करने वाली अतीत की स्मृतियां दूसरों के सम्मुख प्रकट करने पर संतोष का अनुभव होता है आत्मकथा लेखक यदि इस प्रयोजन से आत्मकथा लिखता है तो इसमे बुरा क्या है ?

मानव जीवन सुख–दुख, गुण–अवगुण, शांति–अशांति, आदान–प्रदान, न्याय–अन्याय, सम्मान–अपमान, अच्छाई–बुराई के विभिन्न तानों बानों से बुना एक जाल हैं जिसमे मनुष्य एक मकड़ी की भांति उसी मे उलझ कर अपनी जीवन लीला देखता, भोगता, समाप्त कर लेता है लेकिन इससे बाहर नही निकल पाता है मृत्यु ही वह वैतरणी है जो उसे इस संसार रूपी सागर से पार कराती है। इस तरह संसार सागर में गोते

लगाते हुए कभी कभी अपने जीवन में की गई गलती का पश्चात्ताप करने के लिए भी व्यक्ति आत्मकथा लिखने को विवश हो जाता है। पाश्चात्य लेखक रूसो ने अपनी आत्मकथा 'कन्फैशन' लिखी जिसमें रूसो ने अपने पाप पुण्य कर्म को आत्मकथा के माध्यम से ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत करने का साहस किया है। इस तरह आत्मकथा लेखक अपनी आत्मकथा के माध्यम से क्या प्रस्तुत करना चाहता है, यह तो वही बता सकता है लेकिन साहित्य की अन्य विधाओं की तरह ही आत्मकथा के भी लक्षण होते हैं जो किसी भी आत्मकथा को पढ़ने पर प्रमुख रूप से उभर कर प्रकट हो जाते हैं जिनमें मुख्य लक्षण इस प्रकार है–

**1 <u>प्रामाणिकता</u> –** आत्मकथा का प्रमुख लक्षण है 'प्रामाणिकता' जो भी लेखक या साहित्यकार अपने जीवन का लेखा जोखा आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत करता है वह उस घटना–दुर्घटना का प्रमाण भी आत्मकथा मे प्रस्तुत करता है तभी तो पाठक उसे जीवंत रूप मे स्वीकार करता है अन्यथा प्रामाणिकता के अभाव मे साहित्य की अन्य विधाओं में और आत्मकथा मे अंतर करना नामुमकिन है। प्रसिद्व आत्मकथा लेखक बाबू गुलाबराय ने अपनी आत्मकथा 'मेरी असफलताएँ' की भूमिका में ''दो शब्द बकलम खुद'' मे लिखा हैं

''मैं अपने जीवन की असफलताओं पर स्वयं हंसा हूँ यदि आप इस पुण्य कार्य मे मेरा सहयोग देंगे तो मैं अपनी असफलताओं के वर्णन में अपने को सफल समझूंगा (28) ' और इसी वाक्य का प्रमाण उन्होंने 'मेरी असफलताएँ' के प्रथम निबन्ध 'जब मैं बालक था' की प्रथम पंक्ति में दिया है ''मेरे जीवन की सबसे बडी असफलता यह थी कि मैनें बसंत पंचमी से एक दिन पहले इस पृथ्वी को भाराक्रान्त किया मेरे जीवन का श्री गणेश ही कुछ गलत हुआ किन्तु इतना संतोष है कि पीछे आने की अपेक्षा आगे आना श्रेयस्कर है इसमे अग्रदूत कहे जाने की संभावना रहती है।'' – 29

इस तरह आत्मकथा लेखक जो भी लिखता है उसका उदाहरण देकर उस सत्य की पुष्टि करता है। चाहे वह समुदायगत संस्कृति हो या स्थानीय लोक देवता, लोक गीत, त्यौहार या कोई समारोह जिसका भी वर्णन किया जाता है। उसके प्रमाण स्वरूप कोई घटना जुड़ी होती है जैसे प्रसिद्व साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा 'पंखहीन' में अपने बचपन की घटनाओं का वर्णन किया हैं जिसमें एक स्थान पर उन्होंने लिखा है।

“उन दिनों एक त्यौहार होता था ‘डंडा चौथ’ ” “इस त्यौहार के सम्बन्ध में डॉ0. सत्यगुप्त ने अपने शोध प्रबंध 'खड़ी बोली का लोक साहित्य में जो कुछ लिखा है उससे प्रमाणित होता है कि मेरी स्मृति मुझे धोखा नहीं दे रही है'' – 30

"एक त्यौहार डंडा चौथ होता है वैसे तो जीवन के प्रत्येक अंग पर ही "चौपाई" कही जाती है किन्तु यह अवसर चपल बालको के आमोद प्रमोद का होने के कारण इन मे अधिकांशता या तो प्राचीन, पौराणिक, ऐतिहासिक कथाओं से सम्बन्धित चौपाई होती हैं या फिर हास्य व्यंग्य अथवा सम सामायिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन रहता है।" – 31

इस तरह आत्मकथा मे कोई भी घटना परिस्थिति संस्कृति कपोल कल्पित नहीं हो सकती है क्योंकि लेखक जो भी लिखता है वह जीवंत घटना पर आधारित होता है। उसमें कल्पना लोक का विचरण नही हो सकता है। आत्मकथा उस समय, काल, युग की जुबानी होती है। ''जो लेखक ने स्वयं जिया है।''

**2 <u>प्रायश्चित :–</u>** आत्मकथा किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का जीवंत वर्णन होता है । जीवन सुख–दुख, रंज–खुशी, लाभ–हानि, अत्याचार–विरोध, हार–जीत की कहानी है जो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न पड़ावों पर महसूस करता है। इसी जीवन को जीते हुए इंसान बहुत–सी बार ऐसी गलतियां भी कर बैठता है जिन को वह उस समय किसी से नहीं कह सकता लेकिन वक्त के बीतने के बाद उसे अहसास होता है कि वह अपनी गलती को किसी से कह कर प्रायश्चित करे तो उसके मन का बोझ हल्का हो जायेगा और अपनी उसी गलती को वह आत्मकथा के माध्यम से पाठक के सामने प्रस्तुत कर के प्रायश्चित करता है ऐसी कृतियों मे अतिरिक्त विनम्रता और अपने दोषो की कहानियां कहने का क्रम दिखाई देता हैं प्रभा खेतान की आत्मकथा “अन्या से अनन्या” में भी उन्होंने कई स्थलों पर अपना प्रायश्चित प्रकट किया हैं।

प्रभा जी ने अपनी आत्म कथा में लगभग सभी स्थलों पर प्रायश्चित महसूस किया हैं चाहे वह डॉ. साहब की पत्नी के प्रति, बच्चो के प्रति, अपने परिवार, समाज, संस्कारों

धर्म सभी के प्रति प्रायश्चित प्रकट किया हैं क्योंकि प्रभा जी  ने भारतीय समाज निरपेक्ष कार्य को अंजाम दिया था और उसकी सजा उन्होंने जीवन के विभिन्न पड़ावों पर स्वयं ने भोगी है। भारतीय समाज में एक स्त्री माँ, बहन, बेटी, पत्नी, बुआ, ताई, चाची, प्रेमिका, सभी रूपों में स्नेह एवं सम्मान पाती है लेकिन ''अन्या से अनन्या'' के अनुसार प्रभा जी ने स्त्री के किसी भी रूप में वह स्नेह और सम्मान नहीं पाया जो उनकी जटिलताओं को कम कर सकता था।  इन्हीं जटिलताओं को उन्होंने अपनी आत्मकथा में प्रायश्चित के रूप में वर्णन किया है। डॉ. साहब से मिलने के बाद जब प्रभा जी गर्भवती हो जाती है और डॉ. साहब उन्हें गर्भपात कराने की सलाह देते हैं और सारी व्यवस्था करते है उस स्थिति का प्रभा जी ने प्रायश्चित के रूप में बखूबी वर्णन किया हैं।

"लेकिन यदि किसी को पता चल गया, कोई जान पहचान वाला मिला गया तब............?''

मैने सूखे होठों पर जीभ फिराते हुए अंजू दी से पूछा।

"उस समय तुमने क्यों नही सोचा...........?

अंजू दी की कड़वाहट मुझसे छुपी नहीं थी ,

मेरा सर झुक गया।" – 32

स्वयं प्रभा जी ने उस स्थिति को स्वीकारते हुए लिखा हैं।

"खुद अपनी ही नज़र मे मेरी कोई इज्जत नहीं बची, डॉ. साहब ने मना ही किया था ,यह मेरी करनी थी ............मैंने ही पहल की थी ,मैने ही उनसे सब कुछ मांगा था ,मुझे लगा मैं चक्कर खाकर गिर पंडूगी।" – 33

प्रभाजी ने अपनी गलती का अहसास हर पहलू हर स्तर पर किया हैं। उनकी आत्मकथा स्वयं को दोषी मानते हुए कलुषित होते हुए पश्चात्ताप् में आंसू रोते गिराते हुए लिखी गई है।

"अंजू दी क्या सब कुछ खत्म हो गया...... ?"

"हाँ सब कुछ।"

सुनते ही आंसुओं की सजा थी। वे राहत और प्श्चात्ताप से मिल जुले आंसू थें। – 34

"जो कुछ भी घटा उसके लिए मै ही तो दोषी थी

पता नही क्यो डॉ.साहब मुझे त्राण कर्ता लगे"

"एक अजीब तरह की रूग्ण निर्भरता थी उन पर, जिसे मैं प्यार का नाम दे रही थी।"—35

प्रभाजी एक भारतीय नारी है इसीलिए अपनी नियति के लिए डॉ0 साहब को जिम्मेदार नहीं ठहराती थी क्योंकि भारतीय नारी जिसे मन से अपना पति मान लेती हैं ,उसकी बुराई करना भी अधर्म मानती है। इसीलिए प्रभा जी ने चाहे अपना पूरा जीवन कांटों पर चल कर, अंगारो पर जलकर बिताया लेकिन हमेशा स्वंय को ही कोसती रहती थी कि ये पल ,समय, परिस्थितियाँ ,प्रताड़ना, समाज निरपेक्षता सब कुछ उसकी स्वंय की चुनी हुई है ,जिसके लिए कोई भी उत्तरदायी नहीं है।

"जिन्दगी को कोई चिन्ह नहीं, धड़कन भी नहीं, मानो मैं जीवाश्म थी, हमेशा के लिए कब्र में रहने को मजबूर ...........मेरी यही नियति थी ............. क्योंकि मैने यही चाहा था।" — 36

इस तरह प्रभाजी की आत्मकथा "अन्या से अनन्या" का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत होता है। जैसे लेखिका ने उसके जीवन मे जो कुछ भी अप्रत्याशित घटित हुआ उसी का पश्चात्ताप अपनी आत्मकथा में लिख कर मन का कुलष धोना चाहा है। जो बात कह कर नहीं समझा सकते उसके लिए सबसे बेहतर है लिख कर समझाना। कह कर थोड़े व्यक्तियों को बताया जा सकता हैं, लेकिन लिखकर समाज को अपनी व्यथा बता सकते हैं। यही प्रभा जी ने किया हैं।

**3. <u>ऐतिहासिक तथ्य विवेचनः—</u>** आत्मकथा किसी भी साहित्यकार/लेखक का जीवन वृत्त होता है जिसमे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, परिस्थितियों का वर्णन होता हैं। साहित्यकार/लेखक के आस पास जितनी भी घटनाएँ घटित होती हैं वे एक दिन इतिहास का हिस्सा बन जाती हैं और पाठक को उस पृष्ठभूमि मे ले जाकर खड़ा कर देती हैं जंहाँ साहित्यकार ने अनुभूत किया है जैसै किसी लेखक का जन्म स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हुआ होगा तो उसकी आत्मकथा मे स्वतंत्रता संग्राम की उन परिस्थितियों का वर्णन होगा जिनसे गुजर कर देश ने स्वतत्रंता प्राप्त की यदि लेखक उन परिस्थितियों का वर्णन करता हैं तो पाठक साधारणीकरण के द्वारा उस पृष्ठभूमि का आभास कर सकता हैं।

प्रसिद्ध आत्मकथाकार डा0 हरिवंश राय बच्चन ने तो अपनी आत्मकथा मे अपने पूर्वजों की सात पीढ़ी का वर्णन करते हुए एक खण्ड अलग से दिया है। "क्या भूलूँ क्या याद करूँ" इसमे बच्चन जी ने अपनी सात पीढ़ी के साथ साथ कायस्थ जाति के उद्‌भव विकास का वर्णन भी किया है। "क्या भूलूँ क्या याद करूँ" में आधे से कुछ अंश अपने पुरखों की सात पीढ़ियों के इतिहास का अत्यंत रोचक शैली में वर्णन किया गया हैं। उनके जीवन के घात प्रतिघात, धार्मिक विश्वासों, पारिवारिक रूढ़ियों एंव सामाजिक बाह्‌याचारों के चित्रण से लेकर उनकी मनोदशाओं भावनाओं तथा स्वानुभवों स्वभाव गुणों तक का वर्णन अत्यंत आकर्षक शैली में किया गया है। सभी घटनाओं के सूत्रों के ताने बाने से विनिर्मित इस खण्ड की कथावस्तु अत्यंत, आकर्षक, रोचक, रोमांचक, कलापूर्ण, और प्रभावोत्पादक बन पडी है।

आत्मकथा मे ऐसे संकेत प्राप्त हैं जो भविष्यवाणियों, संत वरदानों तथा धार्मिक रूढ़ियों पर पुष्टि की मोहर लगाते हैं। इस हेतु भी सात पीढ़ियों के वर्णन की उपयोगिता हैं जैसै लेखक ने आदि पुरूष मनसा को प्रदत्त वरदान मे कहा 'जहाँ से तुम्हारे पांव आगे न उठे वही रात बिताना और सवेरे वही अपनी झोंपडी डाल लेना, तुम्हारी सात पीढियाँ उसी जगह पर निवास करेगी' इस तरह लेखक की आत्मकथा मे लेखक से जुड़ने से पहले उसके इतिहास से जुड़ना आवश्यक है क्योंकि लेखक जिस धर्म, संस्कारों, रीति रिवाजों, परिवेश, सभ्यता, संस्कृति से निर्मित हुआ है वही उसके निर्माण घटक हैं जिनसे लेखक के आंतरिक एंव बाह्‌य रूप को समझने में सरलता होगी।

ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन करना किसी भी आत्मकथा का आवश्यक लक्षण हैं क्योंकि किसी भी इमारत की खूबसूरती तो स्पष्ट रूप से नजर आ जाती है लेकिन उसकी नींव की ईंट को देखकर ही उसकी मजबूती, कलात्मकता, स्थायित्व, स्थापत्य को आंका जा सकता है कि ये कैसी होगी। इसी तरह आत्मकथा लेखक जब तक अपने इतिहास की जानकारी नहीं देगा तब तक उसके अस्तित्व की व उसकी पारिवारिक स्थिति आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों को कैसे ज्ञात किया जा सकता है।

डॉ. विष्णुप्रभाकर ने अपनी आत्मकथा "पंखहीन" मे डॉ. बच्चन की तरह ही पूर्व में अपनी जाति का वर्णन ही नहीं किया, बल्कि यह कहा है–

"अतीत हमेशा समृद्ध होता है, समृद्धि का अर्थ मांग, ऐश्वर्य और वैभव नही बल्कि दुःख, पीड़ा और दर्द भी है, बल्कि वही अधिक हैं"। – 37

डॉ. प्रभाकर ने अपनी पीढ़ियो का वर्णन करने मे भी सात पीढ़ी का वर्णन करते हुए जिस  तथ्य का वर्णन किया है उसमे बताया है–

"मैं केवल इतना ही जानता हूँ कि जब मैं पैदा हुआ था तब हमारा खानदान 'हकलो का खानदान' कहलाता था।"

इसी तथ्य का तर्क सहित वर्णन करते हुए, उन्होंने लिखा है कि "सुना था कि मुझसे सात पीढ़ी पहले के मेरे एक पुरखा लाला मंगूशाह से लेकर मेरी पीढ़ी तक कोई न कोई व्यक्ति हकला होता रहा है। यह रोग संक्रामक नही है और न पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है फिर भी हीन भाव का द्योतक यह रूप न जाने कैसे मेरी अगली पीढ़ी तक अपने अस्तित्व का बोध कराता रहा।"– 38

डॉ. प्रभाकर ने अपनी जाति का वर्णन करते हुए लिखा है–

"मैं सुप्रसिद्ध अग्रवाल जाति की एक शाखा 'राजवंश' अग्रवाल से सम्बन्ध रखता हूँ" । – 39

इसके बाद डॉ. प्रभाकर ने जाति के जन्म के बारे में बताया कि अन्तिम मुगलों के समय में इसका जन्म हुआ था, राजा अग्रसेन इसके आदि पुरुष थे।" अंत मे उन्होंने कहा हैं कि "हम तो यहां केवल यही कहना चाहते हैं कि अग्रवाल जाति का इतिहास बहुत पुराना है कम से कम पांच हजार साल पुराना" ।

डॉ. प्रभाकर ने अपनी जाति के वर्णन में किंवदन्तियां, कथाओं का वर्णन करके उनकी तर्क सहित व्याख्या की है। इसी क्रम में उन्होंने 'राजवंश' शब्द के लिये भी ऐसी ही कथा का वर्णन किया है।

अग्रवाल जाति का आचरण बड़ा कट्टर था तथा मुसलमानों का छुआ नहीं खाते थे लेकिन लाला रतनचन्द बहुत कुशाग्र बुद्धि थे इसलिये सैय्यद बंधुओं ने उन्हें अपने यहां खजांची रख लिया था। सैय्यद बंधुओं के साथ रहने के कारण लाल रतनचन्द कट्टर नहीं रह पाये थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें एक दिन अग्रवालों की मूल शाख से अलग हो जाना पड़ा। इस सम्बन्ध मे प्रभाकर जी ने लिखा है–

"एक प्रवाद यह प्रचलित है कि राजा रतन चन्द ने सैय्यद बंधुओं के साथ एक दस्तरखान पर बैठ कर खाना खा लिया था इस अपराध के दण्डस्वरूप अग्रवाल जाति के

नेताओं ने उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया। जिन लोगों ने जाति बहिष्कृत होने का खतरा उठाकर उनका साथ दिया। वे ही पहले 'राजा की बिरादरी' फिर 'राजा शाही' और अंत में राजवंशी के रूप मे जाने गये।" – 40

श्री विष्णु प्रभाकर जी ने इस कथा के अलावा भी अपनी जाति के सम्बन्ध में प्रचलित विभिन्न कथाओं का वर्णन किया है, जिससे अग्रवाल जाति के इतिहास को जानने व समझनें का पाठकों को मौका मिला है। इस तरह ऐतिहासिकता आत्मकथा का एक आवश्यक लक्षण है।

**यथार्थ की अभिव्यंजना :–** आत्मकथा में कोई भी लेखक साहित्यकार अपने भोगे हुए यथार्थ जीवन की ही अभिव्यक्ति सम्पूर्ण कलाओं में प्रकारान्तर से करता है, लेकिन आत्मकथा का यह अतिआवश्यक और वांछनीय लक्षण है। बच्चन जी की आत्मकथा में इसका स्पष्ट निदर्शन हैं। बच्चन जी ने स्वयं कहा हैं "मैने जीवन और काव्य को कब अलग माना हैं" यदि मेरा जीवन ही काव्य नहीं हैं तो कवित्व नाम की कोई चीज मेरे अन्दर नहीं हैं । पुनः लिखा जब मैं उन दिनों के अपने सृजन का अनुभव स्मरण करता हूँ तो मुझे लगता है जो व्यक्ति भोग रहा था वह वही व्यक्ति था जो सृजन कर रहा था"।

डॉ हरिवंश राय बच्चन ने "बसेरे से दूर" आत्मकथा के लिए तो लिखा ही हैं कि भुक्त यथार्थ को अत्यंत विस्तार से लिखने की आवश्यकता पड़ी "इस छोटी सी अवधि में जितना मैंने पढ़ा, देखा, सुना, जाना, पहचाना, भोगा, सहा, अनुभव अवगत किया उतना मैंने इतने ही काल माप में अपने जीवन में कभी नहीं किया। इसी से मुझे लगा कि यदि मैं इस अवधि की झांकी आपको कराना चाहूँ तो इसके लिये अपनी आत्मकथा का एक स्वतंत्र खण्ड देना पड़ेगा।" – 41

आत्मकथा किसी भी व्यक्ति के भुक्त यथार्थ की अभिव्यंजना ही होती है। यह स्वंय लेखक का निर्णय होता हैं कि वह किन–किन घटनाओं का यथार्थ वर्णन आत्मकथा में करना चाहता है, क्योंकि पाठक तो वही पढ़ेगा जो उसने लिखा है तभी तो कमलेश्वर जी ने अपनी आत्मकथा "जो मैने जिया" की भूमिका में लिखा है–

"मेरे लिये यह संस्मरण जीवन गाथा नहीं है। अनुभवों के यथार्थ से गुजरते हुए एक लम्बे साहित्यिक दौर के ये कुछ महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं, जो मेरे समय के सत्य को मेरे लिए निर्मित और उद्घाटित करते हैं। इसीलिये ये मेरी आधारशिलाएँ हैं। जिनकी सतह

पर मेरी वैचारिक और रचनात्मक भूमिका तय होती रही है। इन संस्मरणों की प्रमाणिकता इसी में निहित हैं कि ये आत्म सापेक्ष हैं।" – 42

इस तरह कमलेश्वर जी ने आत्मकथा के माध्यम से अपने साहित्यिक जीवन के सघंर्षो के सत्य को उद्घाटित किया हैं कि साहित्य जीवन में एक साहित्यकार को किन–किन विकट परिस्थितियों से गुजरने के बाद पहचान मिलती है। इसी यथार्थ की अभिव्यंजना की गई है।

यथार्थ की अभिव्यंजना किसी भी आत्मकथा का प्रमुख लक्षण होता है और हिन्दी साहित्य की लेखिका प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा ''अन्या से अनन्या'' तक में इसका बखूबी वर्णन तार्किक रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने विश्व के लगभग सारे स्त्रीवादी लेखन को घोंट ही नहीं डाला बल्कि अपने समाज में उपनिवेशित स्त्री के शोषण, मनोविज्ञान, मुक्ति के सघंर्ष पर विचारोत्तेजक लेखन भी किया जिसे समाज में एक बोल्ड और निर्भीक आत्मस्वीकृति की साहसिक गाथा के रूप में अकुंठ प्रशंसाएँ मिली हैं वही बेशर्म और निर्लज्ज स्त्री द्वारा अपने आपको चौराहे पर नंगा करने की कुत्सित बेशर्मी का नाम भी दिया गया है' क्योंकि भारतीय समाज कितना भी आधुनिक होनें का दम भरे लेकिन फिर भी अपनी मान्यता, मूल्य, धर्म, संस्कृति, रीति रिवाजों से अलग नहीं हो सकता और प्रभा जी ने समाज के रीति रिवाजों को तोड़कर स्वयं को एक जलती हुई आग में झोंक दिया था । इसका वर्णन उन्होंने स्वयं अपनी आत्मकथा में किया है कि डॉ. साहब ने स्वंय प्रभाजी से कहा–

"तुम जानती हो मैं एक विवाहित पुरुष हूँ मेरा परिवार है समाज है, तुम इस आग मे मत कूदो यह मेरा नरक है। मुझे इसमें अकेला रहने दो।" – 43

लेकिन प्रभा जी स्वयं कहती हैं जैसा उन्होंने वर्णन किया हैं कि "नहीं जाऊंगी उस वक्त तक नही जाऊंगी जब तक की आप यह न स्वीकारे कि आप भी मुझसे प्यार करते हैं।"

ऐसा बेहद बेबाक, वर्जनाहीन और उत्तेजक यथार्थ वर्णन साहित्य की किसी भी विधा मे नहीं मिल सकता जिसमें साहित्यकार स्वंय को एकदम नग्न रूप में समाज के सामने प्रस्तुत कर उसके शब्द बाणों को झेलने के लिये तैयार रहता है क्योंकि समाज की प्रतिक्रिया किस रूप में आयेगी ये कोई भी पूर्व में नहीं जान सकता है।

# <u>आत्मकथा के आधारभूत तत्त्व</u>

व्यक्ति समाज का अंग है और साहित्य समाज का दर्पण है' इस मान्यता में बहुत कुछ सच्चाईं है, व्यक्ति अपने परिवार समाज और परिस्थितियों से प्रभावित होता हैं। यदि व्यक्ति में प्रतिभा हो, मौलिक चिंतन, विचारो की दृढता हो तो वह अपने प्रतिकूल पड़ने वाली बातों का भी विरोध ही करता है। इस प्रकार व्यक्ति परिस्थितियों और समाज से प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित भी करता है। नया मार्ग बनाना हमेशा ही कठिन होता है। लेखक की ईमानदारी अपनी अनुभूति की अभिव्यक्ति में है। अनुभूति उधार की नहीं हो सकती । लेखक समाज में रहकर जो कुछ देखता है, जानता हैं और जो उचित समझता है उसे ही वह अपनी अनुभूति बनाकर व्यक्त करता है लेकिन साहित्य के क्षेत्र में हर विधा की परख के लिए उसके कुछ तत्त्व निर्धारित किए गये हैं । उन तत्त्वों की कसौटी पर ही साहित्यिक विधा की परख होती है।

हिन्दी साहित्य की आत्म कथा विधा के लिए आवश्यक कसौटी तत्व निम्न प्रकार हैं। आत्म कथा के चार प्रमुख तत्व माने गए हैं–

1. **यथा तथ्य जीवन**
2. **स्वलेखन**
3. **तटस्थता**
4. **ईमानदारी**
5. **कलात्मकता**

<u>**यथा तथ्य जीवन–**</u> आत्मकथा आत्मनिरीक्षण आत्मपरीक्षण , आत्मविश्लेषण और आत्म विवेचन की सर्वश्रेष्ठ प्रक्रिया हैं। आत्मकथा लेखक स्वानुभूत ,आनंद ,उल्लास ,त्याग ,तिरस्कृत ,प्रलाप , प्रेरणा इत्यादि का वर्णन आत्मकथा में करता है, जीवन के प्रथम पदार्पण से लेकर जीवन पर्यन्त का वर्णन आत्मकथा में करता है । आत्मकथा, लेखक की आत्मा पर समाज द्वारा अंकित वह दस्तावेज है जो भविष्य में पुनः उसी समाज के लिए दर्पण का कार्य करता है क्योंकि आत्मकथा लेखन के लिए समाज में व्यतीत किये गए जीवन का यथातथ्य वर्णन करना आवश्यक है। डॉ हरिवंश राय बच्चन ने अपनी आत्मकथा में सम्पूर्ण जीवन का यथातथ्य वर्णन किया है। जिसमें प्रमुख रूप से जो वर्णन

किया है वह इस प्रकार है, जाति का इतिहास, कायस्थों के शूद्र कहलाने का कारण, परिवार की छठी पीढ़ी तक का वर्णन, रीति रिवाज, रहन सहन, अपने आस पास के लोगों का वर्णन, कर्कल ,चंपा ,श्रीकृष्ण प्रकाशो का वर्णन इस प्रकार बच्चन जी अपने जीवन का वर्णन करते हुए जिन घटनाओं का उल्लेख कर गए हैं। उनमें बिना कोई परिवर्तन किये अपनी जीवन यात्रा का वृत्तान्त सुनाते समय जो कुछ घटित हुआ था उसका उसी रूप में वर्णन कर दिया है।

**स्वलेखनः—** स्वयं के द्वारा स्वयं का मूल्यांकन समाज के समक्ष लिखित रूप में स्वयं प्रस्तुत करना आत्मकथा है। आत्मकथा में लेखक अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन कर एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्त्व प्रतिष्ठापित करता है। आत्मकथा में कथा साहित्य की समस्त विशेषताएँ न्यूनाधिक रूप में विद्यमान होती हैं किन्तु फिर भी आत्मकथा, कथा साहित्य अर्थात् उपन्यास और कहानी से पूर्णतः भिन्न होती हैं क्योंकि कहानी, उपन्यास का नायक या नायिका कोई भी हो सकता है लेकिन आत्मकथा का नायक या नायिका स्वयं लेखक होता है । आत्म कथा में लेखक अपनें जीवन में उत्पन्न विविध स्थितयों, परिस्थितियों के दौरान अपने मानसिक एवं भावनात्मक विकास की कथा प्रस्तुत करता है वह इस कथा की पृष्ठ भूमि के रूप में अपने जीवन कार्य की पारिवारिक ,सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रांकन करता है। उसका जीवन जिन–जिन स्थतियों परिस्थितियों से प्रभावित होता है वह उनका वर्णन करते समय भी कोई संकोच नहीं करता हैं स्वयं लिखी जाने से आत्मकथा विश्वसनीय हो जाती है तथा आत्मकथा में उसके लेखक की शैली की भी जानकारी मिल जाती है। स्वयं लिखने के कारण उसमें भावान्तर वर्णन नही आ पाता। लेखक के जीवन का क्या उद्देश्य रहा तथा समाज के लिए उसके जीवन का क्या योगदान रहा इसे वह बल देकर स्पष्ट कर देता है। बच्चन जी में बचपन से ही मौलिकता की विशेषता रही है।

**तटस्थता :—** आत्मकथाकार अपने जीवन का निसंग या तटस्थ भाव से चित्रण करें यह कार्य कठिन अवश्य होता है लेकिन आत्मकथा का आवश्यक तत्त्व तटस्थता हैं। व्यक्ति अपनी कमजोरियों बुराईयों को प्रकट करने में खुशी का अनुभव नहीं करता है, एक प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनें जीवन के काले धब्बे उजागर करें इसकी आशा कम ही की जाती

है, किन्तु आत्मकथा की विशेषता इस बात पर निर्भर हैं कि वह तटस्थ भाव से लिखी गई हैं' लेखक ने, न तो अपनी आत्मप्रशंसा बढा चढा कर प्रस्तुत कि हो और न ही अपनी कमजोरियों को छुपाया हो। डॉ हरिवंशराय बच्चन ने अपनी आत्मकथा में अपनी जाति को शूद्र कहे जाने का वर्णन तटस्थता से किया है तथा पूर्वजों का संघर्ष एंव अपनें प्रेम संबंधो का भी तटस्थ वर्णन किया है ।

**<u>ईमानदारी :–</u>**आत्मकथा गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है और इसके अन्य गद्य विधाओं से भिन्न प्रकार के अपने कुछ तत्त्व हैं। इन्हीं तत्त्वों में से एक तत्त्व है–ईमानदारी। आत्मकथा स्वयं के बारे मे लिखी जाती है और लेखक मे गुणों के साथ साथ अवगुण भी स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते ही हैं। लेखक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी उन कमजोरियों को न तो छिपाए और ना उन्हें परिष्कृत करके प्रस्तुत करे। इसी प्रकार वह अपनी अच्छाईयों को भी बढा चढा कर प्रस्तुत न करे। अपने जीवन पर प्रकाश डालते समय जीवन का उद्घाटन करने वाली घटनाओं आदि का वह ईमानदारी से वर्णन करे।

डा0 हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा '' क्या भूलुँ क्या याद करूँ '' का आरम्भ ही ईमानदारी शब्द के साथ हुआ है– '' पाठकों यह किताब ईमानदारी के साथ लिखी गई है।'' ईमानदारी का अर्थ यही है कि लेखक आत्म–श्लाघा से प्रभावित न हो तथा आत्मकथा समाज के लिए दिक सूचक की तरह हो। आत्मकथा के माध्यम से अपने आपको आईने के सामने संवारना है। अपनी कलात्मकता के माध्यम से उसे आकर्षक रूप प्रदान करना है।

आत्मकथा–लेखक जनजीवन का नहीं, किसी दूसरें का भी नहीं, अपनें जीवन का वर्णन करता है और यह वर्णन भी यथातथ्य होता है, उसमें घटा बढी नहीं कर सकता । किसी भी लेखक की आत्मकथा को पढते समय पाठक यही आशा करता है कि लेखक ने अपने जीवन की घटनाओं को बिना कोई परिवर्तन किये प्रस्तुत किया है। इसी विश्वास के आधार पर वह आत्मकथा का पठन करता है। आत्मकथा का वर्ण्य विषय स्वजीवन ही रहा है। लेखक ने अपनी जीवन यात्रा का वृत्तांत सुनाते समय जो घटित हुआ, उसका उसी रूप मे वर्णन कर दिया है। उसमें अपनी कल्पना का पुट नहीं दिया है। हिन्दी साहित्यकारों ने इसी ईमानदारी का निर्वाह करते हुए अपनी जाति, प्रेम सम्बन्ध,

कमजोरियों आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, शिक्षा के क्षेत्र की उपलब्धि इत्यादि का उसी रूप में वर्णन किया हैं जैसा कि उन्होंने महसूस किया था। हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथा में अनुभूति की ईमानदारी ही आत्मकथा की आत्मा है। इनकी आत्मकथाएँ स्वयं की अनुभूतियों की नैसर्गिक रूप में हुई अभिव्यक्ति हैं।

**कलात्मकता :–**आत्मकथा लेखन मे आवश्यक तत्व कलात्मकता भी है। आत्मकथा शीर्षक में कथा शब्द की उपस्थिति यह संकेत करती है कि वस्तु शिल्प की दृष्टि से यह विधा पूर्ण सम्पन्न हो तथा यह कथावस्तु के तत्त्व पर बहुलांश से निर्भर भी होती है। आत्मकथा का लक्ष्य ही आत्मचरित्र का उद्‌घाटन और कथानायक के व्यक्तित्व में विकास की संपूर्ण दिशाओं को चित्रित करना होता है लेकिन जिस तरह आभूषण किसी भी स्त्री की सुन्दरता को चार गुना बढा देता है उसी तरह साहित्य में भी उत्तम शब्द चयन, संचयन, वाक्य विन्यास, वस्तु वर्णन, भाव वर्णन, व्यक्ति वर्णन, किसी भी साहित्यिक रचना को रोचक और पाठक की रूचि के अनुकूल बना देता है। आत्माभिव्यक्ति के लिए भाषा शैली एक महत्त्वपूर्ण उपादानात्मक तत्त्व है जिसके अभाव में साहित्य विधा विरचित, विलसित एवं प्रकाशित नहीं हो सकती। इसके अभाव में लेखक के ,अन्तर में भावसूत्र केवल प्रसुप्तावस्था में ही विद्यमान रह सकते है। भाषाशैली के माध्यम से ही लेखक की भावनाओं, उद्‌भावनाओं, संवेदनाओं, संकल्पनाओं का प्रकाशन होता हैं। रसनिष्पति और उद्‌देश्य की अभिव्यंजना हेतु भाषा शैली को एक अनिवार्य साधना मानते हुए भी उसका स्थान आत्मकथा में गौण हो जाता हैं क्योंकि साहित्यकार के अलावा आत्मकथा लेखक राजनेता, धर्मगुरू, व्यापारी, बलिदानी, क्रांतिकारी, चिकित्सक, वकील, खिलाडी, अभिनेता, आम आदमी, समाज सेवक, शिक्षक, विप्लवकारी से उच्चस्तरीय, अलंकृत, सुसंस्कृत एवं परिनिष्ठत भाषा शैली की अपेक्षा नहीं की जा सकती जबकि इन सबसे भिन्न साहित्यकार होता है जिसकी आत्मकथा कलात्मक वैभव से परिपूर्ण होती है। एक साधारण आत्मकथा लेखक एंव साहित्यकार की आत्मकथा में वही अन्तर होता है जो कि एक साधारण मकान एवं महल में होता है क्योंकि महल की नक्काशी एंव कारीगरी बरबस ही देखने वाले का ध्यान अपनी ओर खींचती हैं जिससे व्यक्ति न चाहते हुए भी स्वतः ही उसकी तरफ खिंचा चला जाता हैं। इसी तरह सुगुंफित, सरस, घटनाओं में तारतम्यता, संयोजन, अनुभूत भावों का यथातथ्य वर्णन, रोचकता, इत्यादि किसी भी पाठक को आत्मकथा पढने के लिये

आकर्षित करती हैं और जब कोई भी व्यक्ति किसी रचना को पढेगा तब ही उसके महत्त्व एवं उद्देश्य तक पहुंच सकेगा। साहित्यकारों की आत्मकथाओं को विशेष आस्था अनुराग और श्रद्धा की दृष्टि से देखने, परखने और सराहने की वजह भाषाशिल्प ही है अतः आत्मकथा लेखन के लिए कलात्मकता भी एक आवश्यक तत्त्व है।

## आत्मकथा का लक्ष्य

हिन्दी साहित्य की हर विधा का सम्बन्ध उसके लेखक से होता है। चाहे वह उपन्यास हो, या कविता, या कहानी उसमें रचनाकार अपने अनुभवों, संवेदनाओं या विचारों को अभिव्यक्त करता है। लेखक की मानसिक सरंचना के अनुसार ही किसी रचना का रूपायन होता है। अधिकांश विधाओं में यह सम्बन्ध अप्रत्यक्ष रूप में है, लेकिन आत्मकथा जैसी विधा में लेखक का यह आत्मपक्ष प्रत्यक्षतः देखने को मिलता है। आत्मकथा में लेखक अपनी जीवन यात्रा में प्राप्त व्यक्तिगत अनुभवों को तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। लेखक की दृष्टि जितनी पैनी, उदार, भावुक, तथा संवेदनशील होती है, उसकी आत्मकथा उतनी ही प्रभावोत्पादक होगी।

लेखक की सौन्दर्य दृष्टि, विवके, बुद्धि आदि आत्मकथा को एक नया अर्थ प्रदान कर देते हैं। आत्मकथा–लेखक, आत्मकथा के माध्यम से जीवन जगत के विभिन्न अनुभवों को कलात्मक रुप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार अपने अनुभवों को पाठकों तक पहुँचाना उसका लक्ष्य है। इससे पाठक लेखक के साथ उसकी जीवन यात्रा का आभास कर सकें। प्रत्येक आत्मकथाकार का अपनी जीवन यात्रा का जीवंत वर्णन करने का एक निश्चित लक्ष्य होता है, जिसके माध्यम से वह पाठकों को यह बताना चाहता है कि उसने इस समाज से क्या प्राप्त किया तथा समाज ने उसे क्या दिया है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का जीवन इसी समाज में पुष्पित पल्लवित होता है तथा इसी समाज में सम्पूर्णता को प्राप्त होता है। व्यक्ति समाज सापेक्ष है, समाज निरपेक्ष नहीं, इसलिये प्रत्येक साहित्यकार का अपना एक लक्ष्य होता है, जिससे वह पाठको को एक नवीन दिशा देना चाहता है, चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो या ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक, वैयक्तिक कोई भी क्षेत्र हो सकता है।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न लेखकों ने अपनी आत्मकथा लिखी है लेकिन सभी के लक्ष्य अलग–अलग रहे हैं। किसी ने अपनी आत्मकथा अपने निजी व्यक्तियों की स्मृति के लिए लिखी है तो किसी ने अपनी आत्मा के दंश को उभारने के लिए आत्मकथा को सहारा बनाया है लेकिन सबसे अलग विशिष्ट पहचान के साथ बाबू गुलाबराय ने अपनी आत्मकथा लिखी है, जिसमें लेखक अपने गुण–दोषों को व्यंग्यात्मक निबंध के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने स्वंय ही लिखा है–

"मेरे पास ख्यातिनाम महापुरुषों के कोई अमूल्य अनुभव, राजनीतिक रहस्य, साहित्यिक सेवायें, जीवन–आदर्श और धार्मिक एवं नैतिक सिद्धांत बतलाने को नहीं हैं, फिर मैं अपनें पाठको का धन और समय क्यों नष्ट करूं" ?

"मन्दः कवियशः प्रार्थी गामिष्याम्युपाहस्यताम् ।

उपहास में भी मेरा लक्ष्य सिद्धि हो। – 44

(मेरी असफलताएँ की भूमिका दो शब्द)

इस तरह लेखक ने स्वयं को एक तुच्छ हीन प्राणी बता कर आत्म प्रशंसा के दोष से दूर रखते हुए उपहास का विषय बना कर भी समाज में अपने लेखन से नवीन बोध कराया है। आत्मकथा लेखक अपनी कथा का स्वयं नायक होता हैं। वह चाहे तो अपने गुणों का बखान अधिक कर सकता हैं और अपनी कमजोरियों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत कर सकता है लेकिन बाबू गुलाब राय ने अपनी आत्मकथा की भूमिका 'दो शब्द बकलम खुद में लिखा हैं कि "यदि आपुन बरनी भांति बहु बरनी' की बात न समझी जायें तो मैं कहूंगा कि इसमें साहित्यिक हास्य का काफी मसाला मिलेगाा। जो लोग इसमे धौल–गप्पे का और हू–हक का हास्य देखना चाहेंगे, उनको शायद निराश होना पड़े। मैनें आप लोगों के मनोरंजन के लिए स्वयं अपने को ही बकरा बनाया है।" – 45

इस तरह लेखक ने अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को माध्यम बनाकर समाज को हास्य व्यंग्य के माध्यम से नवीन दिशा देने की कोशिश की है।

प्रत्येक साहित्यकार का अपना जीवन दर्शन होता है। जीवन दृष्टि होती है' इसीलिये प्रत्येक के अपने लक्ष्य, सिद्धि, दिशा, रहस्य, परिवार, समाज, संस्कृति होती है।

प्रत्येक का अपना सोच, विचार, जीवन बोध होता है इसीलिए प्रत्येक लेखक का आत्मकथा लिखने का अपना लक्ष्य होता है जिसे वह अपनी पुस्तक के माध्यम से समाज में प्रकट करना चाहता है। इसी कम को मूर्धन्य साहित्यकार, विभिन्न साहित्यिक वादों को अपनें में समेटे व्यक्तित्व श्री विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा "मुक्त गगन मे" की भूमिका में अपनी आत्मकथा के लक्ष्य का उद्घाटन करते हुये लिखा है–

"इसी दूसरे कालखण्ड में जिसे मैंने नाम दिया है 'मुक्त गगन मे' हमें देश में बंटवारे जैसी त्रासदी को झेलना पड़ा, कितना पीड़ादायक था यह सब। इसका यत्किंचित वर्णन ही मैं कर सका हूँ, लेकिन इसके साथ ही मुझे ऐसे अनेक अवसर भी मिले जिन्होनें मुझे अपने मन की इच्छानुसार काम करने की शक्ति दी और शक्ति दी साहित्य की दुनिया में अपनी स्वतंत्र पहचान कराने की।" – 46

आधुनिक काल में प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर जिन्होंने अपनी लेखनी से हिन्दी सहित्य को समृद्ध किया हैं कहानी, उपन्यास, निबंध, पत्र, पत्रिका सम्पादन ,संस्मरण इत्यादि क्षेत्रों को अपनी कलम से रोशन करने वाले ने भी अपनी आत्मकथा 3 खण्डों में लिखी हैं। इसमें साहित्यकार ने अपने साहित्यिक जीवन के संघर्ष और अपने जीवन के छिपे हुए यथार्थ को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने का साहस किया है, जिसमें उनकी प्रेमिकाओं की लम्बी फेहरिस्त का भी वर्णन बेबाकी से किया हैं। लेकिन अपनी आत्मकथा के प्रथम खण्ड में 'जो मैंने जिया' की भूमिका से स्पष्ट किया हैं।

"मेरे लिये, मेरे यह संस्मरण जीवन गाथा नही है। अनुभवों के यथार्थ से गुजरते हुए एक लम्बे साहित्य के दौर में से कुछ महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं, जो मेरे समान के सत्य को मेरे लिए निर्मित और उद्घाटित करते हैं............ इसीलिये ये मेरी वह आधारशिलाएँ हैं, जिनकी सतह पर मेरी वैचारिक और रचनात्मक भूमिका तय होती रही है। इन संस्मरणों की प्रमाणिकता इसी में निहित हैं कि ये आत्मसापेक्ष हैं। बहरहाल.........." (जो मैंने जिया की भूमिका) – 47

इस तरह कमलेश्वर ने स्वयं स्वीकार किया है कि मेरी आत्मकथा का लक्ष्य सिर्फ यह है कि अपने साहित्यिक जीवन के यथार्थ में गुजरते हुए जो कुछ भी महत्त्वपूर्ण महसूस हुआ उसी को पाठको के सामने यथातथ्य रखने का साहस किया है। जिससे, किस तरह इस साहित्यिक संसार में गोते लगाते हुए एवं गोल गोल गुड़कते हुए तिकोने

पत्थर से गोल रूप प्राप्त कर साहित्य मे शिव शंकर बन पाये यही प्रस्तुत करना आत्मकथा का लक्ष्य रहा है।

साहित्यकारों में नाटक रूपी ध्रुवतारे के रुप में उदित "मोहन राकेश" जिन्होंने साहित्य की हर विधा पर अपनी लेखनी चलाई लेकिन नाटकों में विशेष सफलता अर्जित की। मोहन राकेश ने कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, इत्यादि साहित्यक विधाओं से हिन्दी साहित्य की सेवा की लेकिन अपनी आत्मकथा नहीं लिख पाये थे। उनके संसार से विदा होने के बाद उनकी पत्नी अनिता एवं उनके करीबी साहित्यिक दोस्त कमलेश्वर ने उनकी डायरी को छपवा कर हिन्दी साहित्य में आत्मकथा को एक नवीन रूप तो प्रदान किया ही, साथ ही मोहन राकेश के उस आंतरिक व्यक्तित्व चरित्र को पाठकों के लिये प्रस्तुत किया, जिसे पाठक शायद उनकी रचनाओं में महसूस नहीं कर पाये। मोहन राकेश की डायरी की भूमिका "डायरियाँ– एक लेखक का अपना रेगिस्तान" में कमलेश्वर ने लिखा है।

"एक बार राकेश ने कुछ तकलीफ के क्षणों मे कहा था–"डियर, एक बात बता........दुनिया के सारे सवालों के जवाब तो हम दे देते हैं और ले लेते हैं, पर अपने मन के सवालों के जवाब इस दुनिया से क्यों नही मिलते ? मन के जिन सवालों के जवाब वह जिस दुनिया से मांगना चाह रहा था, उसकी वह दुनिया कुछ व्यक्तियों की दुनिया थी– जहाँ वह ज्यादातर निराश ही रहा है, क्योंकि सब अपना अपना प्राप्य चाहते थे, पर राकेश क्या चाहता था, यह उन्होंने नहीं समझा जिन्हें वह चाहता था !

राकेश की ये डायरियां– उसकी अपनी रिपोर्ट हैं, जो उसके एकांतिक संताप और सच्चाई की दास्तान हैं।" – 48

इस तरह मोहन राकेश की डायरी को छपवाने का लक्ष्य यह है कि एक लेखक जो लिखता है तथा जो दिखाई देता है उससे अलग भी उसकी अपनी दुनिया होती है जहाँ उसका मन का संसार होता है जहाँ वह आत्म विश्लेषण, मनन, मंथन, प्रेषण करता हैं जिसे वह किसी से साझा नहीं करता है तथा मन के उन भावों को सभी से छिपा कर डायरी में लिख कर अपने मन को शांति, शीतलता, प्राणवायु प्रदान करता है।

हिन्दी साहित्य संसार में आत्मकथा लिखने का साहस पुरूष साहित्यकारों ने ही नहीं किया हैं बल्कि स्त्री साहित्यकारों ने भी बेहद बेबाक, निर्भीक, वर्जनाहीन

,मनोवैज्ञानिक रूप में आत्मकथा लिखने का साहस किया हैं तथा पुरूष प्रधान समाज में किस तरह उलझते हुए संघर्ष करते हुए अपनी एक अलग पहचान कायम की है इन सबका वर्णन स्त्रियों की आत्मकथा में स्पष्ट रूप में चित्रित हुआ है। स्त्रियों में आत्मकथा लिखने का एक लक्ष्य तो निश्चित रूप से स्पष्ट हो जाता हैं कि भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है और उसमे यदि स्त्री आत्मकथा लिखती है तो यह आशय है कि वह स्त्रियों की भारतीय समाज में क्या स्थिति है। इसका वर्णन तो करेगी ही लेकिन वह स्वयं एक अद्भुत चरित्र होगी जो इतने साहसिक कार्य को अंजाम देगी।

भारतीय साहित्य की विलक्षण बुद्धिजीवी डा0 प्रभा खेतान दर्शन ,अर्थशास्त्र ,समाज शास्त्र ,विश्व बाजार और उद्योग जगत की गहरी जानकार और सबसे बढ़कर सक्रिय स्त्रीवादी लेखिका रही हैं। उन्होंने विश्व के लगभग सारे स्त्रीवादी लेखन को घोट ही नहीं डाला बल्कि अपने समाज में उपनिवेशित स्त्री के शोषण ,मनोविज्ञान ,मुक्ति के संघर्ष पर विचारोत्तेजक लेखन भी किया है। इसी लेखन कर्म में लेखिका की आत्मकथा “अन्या से अनन्या” हंस पत्रिका में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हुई जिसे साहसिक गाथा के रूप में अकुंठ प्रशंसा मिली, वहीं बेशर्म और निर्लज्ज स्त्री द्वारा अपने आपको चौराहे पर नंगा करने की कुत्सित बेशर्मी का नाम दिया गया।

इस तरह प्रभा खेतान की आत्मकथा का अध्ययन करने पर प्रतीत होता हैं कि लेखिका ने भारतीय समाज में स्त्री की परिभाषा ही बदल दी है तथा स्त्री के एक नवीन रूप को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना ही उनका लक्ष्य रहा हैं। प्रभा खेतान की आत्मकथा ''अन्या से अनन्या'' की भूमिका में कुछ इस तरह लिखा है–

''एक अविवाहित स्त्री ,विवाहित डाक्टर के धुंआधार प्रेम में पागल है। दीवानगी की इस हद को पाठक क्या कहेंगें कि प्रभा, डाक्टर सर्राफ की इच्छानुसार गर्भपात कराती है और खुलकर अपने आपको डा0 सर्राफ की प्रेमिका घोषित करती है। स्वयं एक अत्यंत सफल सम्पन्न और दृढ़ संकल्पी महिला परम्परागत रखैल का सांचा तोडती है क्योंकि वह डा0 सर्राफ पर आश्रित नही है।'' – 49

इस तरह विभिन्न आत्मकथाओं का अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि आत्मकथा का लक्ष्य, लेखक के दृष्टिकोण पर आधारित होता है। वह आत्मकथा में अपने जीवन के किस बिन्दु पर पाठक का ध्यान एकत्रित करना चाहता है वह समाज को इसके माध्यम से क्या दृष्टि एवं संदेश देना चाहता है क्योंकि प्रत्येक साहित्यकार का अपना

जीवन, जीवन दर्शन, वैचारिकता, परिवेश, संस्कार होता है। अतः प्रत्येक के लक्ष्य में भी विभिन्नता होती है।

## आत्मकथा का महत्त्व

वर्तमान काल में हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाएँ अपने विकसित रूप में फल फूल रही हैं। फिर चाहे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, गाथा, वृत्तांत, संस्मरण आदि कुछ भी हो। साहित्यकार द्वारा रचित कोई भी रचना कभी भी व्यर्थ नही होती। उसका अपना महत्त्व होता है। भावनात्मक, मानसिक, समाज के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति के सन्दर्भ में कहीं न कहीं कोई महत्त्व अवश्य होता है, क्योंकि साहित्यकार के सम्बन्ध में कहा गया है–

"जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि"

अर्थात् जहाँ सूर्य का प्रकाश नही पहुँच सकता है वहाँ तक एक साहित्यकार की भावना विचारधारा पहुँच जाती है इसलिये साहित्यिक रचना अपने आप में महत्त्वपूर्ण होती है।

आत्मकथा के माध्यम से लेखक जीवन जगत के विभिन्न अनुभवों को कलात्मक रुप में प्रस्तुत करता है। उसमें रचनाकार अपने अनुभवों, संवेदनाओं या विचारों को अभिव्यक्त करता हैं। लेखक की मानसिक संरचना के अनुसार ही किसी भी रचना का रूपायन होता है। अधिकांश विधाओं में यह अप्रत्यक्ष रूप में होता है लेकिन आत्मकथा में लेखक का यह आत्मपक्ष प्रत्यक्षतः देखने को मिलता है। अन्य विधाओं की तुलना में आत्मकथा में वह अपनी जीवनयात्रा में प्राप्त व्यक्तिगत अनुभवों को तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। जीवन को जीते हुए जो स्थान घटना, पात्र या प्रसंग उसकी दृष्टि में आते है। वह अपनी संवेदनात्मक अनुभूति में ढ़ल कर आत्मकथा का हिस्सा बनते जाते हैं। प्रत्येक आत्मकथा की अपनी विशिष्टता है जो लेखक की विशिष्टता से जुड़ी हुई हैं। प्रत्येक आत्मकथाकार का जीवन अलग होता है। किसी का राजनीति से सम्बन्ध होता हैं, किसी का साहित्य से, किसी का उद्योग जगत, फिल्म जगत से इस तरह प्रत्येक के प्रतिमान, सरोकार, दृष्टि, सघंर्ष, पृष्ठभूमि अलग होगी इसलिये प्रत्येक आत्मकथा का

महत्त्व भी अलग–अलग व्यक्ति के लिये अलग–अलग रूप में होगा। फिर भी पाठक की सुविधा के लिए अक्सर लेखक आत्मकथा लेखन का महत्त्व उसकी स्वयं की दृष्टि में क्या है ? स्पष्ट कर देता हैं कि उसने यह आत्मकथा क्यों लिखी हैं तथा पाठक को वह इसके माध्यम से अपने जीवन की कौन सी झांकी के दर्शन कराना चाहता है।

श्री विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा "और पंछी उड़ गया" की भूमिका में अपनी आत्मकथा के महत्त्व को इस तरह प्रतिपादित किया है–

"मेरे इस 'दिशाहीन सफर' का यह खण्ड मेरे लिये असाधारण रूप से महत्त्वपूर्ण हो गया है। इसका आरम्भ एक ऐसी घटना से होता है जिसके बारे में मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। मेरा तात्पर्य बांग्ला के सुप्रसिद्व साहित्यकार श्री शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी से हैं। जीवनी लेखन मेरा विषय नहीं रहा, लेकिन आकाशवाणी से त्यागपत्र देकर जब मैं मुम्बई पहुँचा तो 'हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर' के स्वामी श्री नाथूराम प्रेमी ने मुझ से कहा "आप जानते हैं कि मैने सारा शरत–साहित्य हिन्दी में अनूदित करवा कर 43–44 भागों में प्रकाशित किया है। मैं चाहता हूँ कि उसका अंतिम भाग उनकी जीवनी के रूप में प्रकाशित करूँ। क्या आप मेरे लिये 200 पृष्ठ की शरतचन्द्र की एक जीवनी लिख सकेंगे ?" – 50

लेखक ने आत्मकथा की भूमिका में प्रमुख महत्त्वपूर्ण कारण का उल्लेख करने के बाद पुनः उन दो त्रासद घटनाओं का भी जिक्र किया हैं। जो उनके जीवन की सघनतम पीड़ादायक थी। जिन्होंने लेखक के मन मस्तिष्क को झकझोर कर लिखने को मजबूर किया। लेखक की जीवन संगिनी व बड़े भ्राता का सदा–सदा के लिये छोड़ कर चले जाना । इसके अलावा भी लेखक ने जो महत्त्वपूर्ण समझा वो इस प्रकार हैं–

"इन दोनों व्यक्तिगत घटनाओं के अतिरिक्त कुछ और भी ऐसी अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाएँ इस अवधि में घटीं, जिन्होंने देश में उथल पुथल मचा दी।" – 51

"और इस देश के लिये जिसे सबसे दुर्भाग्य पूर्ण घटना कहा जा सकता है वह आपातकाल इसी अवधि मे लगाया गया।" – 52

"कैसी कैसी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घट गईं इस अवधि में । इन सबकी झांकी मात्र ही दे पाया हूँ मैं । पर एक लेखक के लिए इन सबका क्या महत्त्व हैं, यह सभी जानते हैं।" – 53

इस तरह लेखक के लिए रचना का क्या महत्त्व है तथा पाठक के लिए कोई रचना किस तरह महत्त्वपूर्ण हो सकती है यह तो वह स्वयं ही महसूस कर सकता है कि उसके जीवन के लिए कौन सा नया मार्ग निकल सकता है ?

प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा संस्मरण के रूप में लिखी है। संस्मरण जो कि व्यक्ति की स्मृति पर आधारित होते हैं। जो कुछ भी व्यक्ति की यादों में छिपा रहता है उसको शब्दों में कलात्मक रूप में उभारना संस्मरण की रचना करता है।

कमलेश्वर जी ने अपनी आत्मकथा "जो मैंने जिया" की भूमिका में अपने संस्मरण के बारे मे कुछ इस तरह लिखा है–

"मेरे लिये, मेरे यह संस्मरण जीवन गाथा नहीं है। अनुभवों के यथार्थ से गुजरते हुए एक लम्बे साहित्यिक दौर में कुछ महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं, जो मेरे सत्य को मेरे लिए निर्मित और उद्घाटित करते हैं..........इसीलिए ये मेरी वह आधारशिलाएँ हैं, जिनकी सतह पर मेरी वैचारिक और रचनात्मक भूमिका तय होती रही है। इन संस्मरणो की प्रमाणिकता इसी में निहित हैं कि ये आत्मसापेक्ष हैं।'' – 54

अर्थात् साहित्यिक संसार में एक लेखक को किस तरह का सघंर्ष करना पड़ता है तथा किन परिस्थितियों से तराशा जाकर वह पत्थर से हीरा बनता है, यही आम आदमी को बताना लेखक का लक्ष्य रहा है। किस तरह एक साधारण इंसान से एक सफल लेखक बनकर साहित्याकाश में आच्छादित हुए। इस तरह प्रत्येक लेखक का अपना जीवन संसार होता है। उसी के अनुसार रचना का महत्त्व होता है। आत्मकथा साहित्य में विशेष महत्त्व रखने वाले साहित्यकार, कवि, 'डॉ. हरिवंशराय बच्चन' ने अपनी आत्मकथा 'बसेरे से दूर' मे उसका महत्त्व कुछ इस प्रकार प्रकट किया है–

"प्रस्तुत खण्ड में मैंने अपनी दृष्टि मुख्य रूप से अपने अध्यापक, शोधक, आलोचक पर रखने का प्रयत्न किया है क्योंकि इन्होंने भी मेरे जीवन को रूप देने में कम महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई।" – 55

इस तरह बच्चन जी ने इस खण्ड में शोधार्थी के रूप पर भी महत्त्वपूर्ण दृष्टि रखी हैं जो एक शोधार्थी के लिए कुतुबनुमा के समान पथ प्रदर्शन का कार्य कर सकती है कि एक शोधार्थी को कितनी पैनी, दृष्टि, धैर्य, आशावान, खोजी स्वभाव का होना चाहिये। जो किसी भी परिस्थिति में विचलित न हो तथा अपने लक्ष्य पर चिड़ियां की आंख की तरह नजर गड़ाये रहे। इस तरह हर आत्मकथा का महत्त्व प्रत्येक के लिये उसकी सोच, विचार, दृष्टि, नजरिये पर निर्भर करता हैं।

हिन्दी साहित्य के महान नाटककार, एकांकीकार, साहित्यकार "मोहन राकेश" ने जीवित रहते हुए तो अपनी आत्मकथा नहीं लिखी लेकिन अपने पीछे वे ऐसा दस्तावेज छोड़ गये हैं जो किसी लिखित आत्मकथा से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है । यदि वह आत्मकथा लिखते तो शायद उसमें कल्पना लोक का विचरण भी होता क्योंकि एक रचनाकार अपने जीवन में जो सृजन करता है उसका वर्णन भी करता है जो कि उसकी कल्पना का सर्जनात्मक रूप होती है लेकिन मोहन राकेश अपने पीछे अपनी निजी डायरी छोड़ गये है जो कि नितांत निजी दस्तावेज है। इसमे लेखक ने अपने मन की उन भावनाओं को लिखा है जिन्हें वो शायद किसी रचना के रूप में दुनिया के सामने नहीं ला सकते थे तभी तो कमलेश्वर ने "मोहन राकेश की डायरी" की भूमिका में लिखा है।

"राकेश की ये डायरियां– उसकी अपनी रिपोर्ट है, जो उसने अपने लिये तैयार की थी.........जो उसके एकांतिक संताप और सच्चाई की दास्तानें हैं।" – 56

आत्मकथा के इस रूप का महत्त्व इस तरह उभर कर सामने आया है कि यदि किसी व्यक्ति की आंतरिक थाह पाना हो तो डायरी ब्रह्मास्त्र है जो उसकी मन की समस्त कुंठा, पश्चात्ताप, ग्लानि, तिरस्कार, अकेलापन, विशेष, प्यार, नफरत, चाहत, जो कुछ भी जिसे वह जमाने से छिपाकर रखना चाहता है उसे वह डायरी में लिख कर अपने तमाम विचारों को विराम लगा देता है।

इस तरह डायरी का महत्त्व एक लेखक के लिए तो अपने भावों को निस्तृत करने का महत्त्वपूर्ण साधन हैं लेकिन एक पाठक के लिए उसका महत्त्व अनमोल है क्योंकि जिस इंसान की भावनाओं को वह अपने सामने महसूस नहीं कर पाया था उनको डायरी में जान लेता है। इंसान के बाहरी व्यक्तित्व को देखना, जानना, आसान है लेकिन उसके आंतरिक व्यक्तित्व को जांचने का डायरी सबसे अच्छा साधन है।

**निष्कर्ष** :— विभिन्न आत्मकथाओं का अध्ययन, मनन, विश्लेषण करने पर यही निष्कर्ष निकलता हैं कि आत्मकथा का महत्त्व लेखक के लिए उसकी सोच के अनुसार होता है तथा इसी तरह पाठक के लिए उसका महत्त्व उसकी अपनी सोच पर निर्भर करता है कि वो उसमें से क्या ग्रहण करता हैं। श्री विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा का महत्त्व इसलिये बताया कि उन्होंने उस काल में शरत्चन्द्र की जीवनी लिखी तथा देश में उथल पुथल मची हुई थी एवं आपात काल भी लगा था । पाठक इसमें से अपने महत्त्व की बात ग्रहण कर सकता है। जैसे किसी को जीवनी लिखनी हो तो वह उन परिस्थितियों का आकलन इससे कर सकता है। जीवनी के लिये कैसे तथ्य संकलन/संचयन किया जाता हैं तथा कैसे उनकी सत्यता की जांच की जाती हैं। इसी तरह इतिहास, राजनीति के पाठक के लिए तत्कालीन राजनैतिक परिस्थिति में से निकल कर देश इस आधुनिक विकसित रूप में पहुँचा है।

डॉ0 हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा का महत्त्व शोधार्थी के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। शोध के समय आने वाली परिस्थितियों का वर्णन करना, शोधार्थी का मार्गदर्शन करना है। इसी तरह विदेश में जाने पर आने वाली समस्याओं का वर्णन भी महत्त्वपूर्ण हैं बच्चन जी की आत्मकथा तो अपने आप में साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है जिसके चारों खण्ड ही भारतीय समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं क्योंकि उन्होंने अपनी आत्मकथा में अपनी जाति, पूर्वजों का वर्णन, तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, पौराणिक कथाओं, दंत कथाओं, लोक कथाओं आदि का समावेश किया है। जिससे प्रत्येक भारतीय का किसी न किसी रूप में कोई न कोई महत्त्व तो अवश्य ही होगा।

## (ब) आत्मकथा के अन्य रूप

**डायरी** — दैनन्दिनी अर्थात् दैनिक जीवनचर्या के लिखित प्रारूप को अंग्रेजी में डायरी कहते हैं। डायरी में लेखक वर्तमान में सफर करता है। जो कुछ उसने आज जिया होता है लेकिन वक्त के पन्नों पर लिखते चले जाने से वह इतिहास बन जाता है, जो किसी भी इंसान की बचपन जवानी की तस्वीर से हूबहू साक्षात्कार करवा सकता है। डायरी द्वारा आत्म साक्षात्कार होने की वजह से वस्तुतः विहंगम दृष्टि से देखने पर इन दो

विधाओं में इतनी अधिक समानता नजर आती हैं कि नगण्य से शैली भेद के अतिरिक्त कुछ प्रत्यक्ष अंतर लक्षित नहीं होता है। यदि आत्मकथा की प्रचलित परिभाषा लेखक द्वारा अपने जीवन में घटित अनुभव कथा को लिपिबद्ध करने को ले तब डायरी में भी तो लेखक यही करता है। स्थूल अंतर तो केवल लेखन काल का है। आत्मकथा स्मृति पर आधारित होती है जबकि डायरी लेखक को विस्मृति के गर्भ में से स्मृतियां खोजनी नहीं पड़ती दूसरी ओर हमारा अन्तश्चेतन प्रत्यक्षी–कृत अनुभवों के सूक्ष्म संस्कारों को निरन्तर परिपक्व करता चलता है। जिन्हें वही कालान्तर में पुनः प्रस्तुत भी कर सकता है। आत्मकथा लेखक का उद्‌बुद्ध अंतश्चेतन इन्ही स्मृतियों को भविष्य के लम्बे अंतराल के बाद संचित निर्वासित करके विशेष क्रम प्रदान कर आत्मकथा लेखन का मार्ग प्रशस्त करता है।

यदि डायरी को ही आत्मकथा कहा जाये तो एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि डायरी में तो लेखक वही लिखेगा जो कि सहजता से प्राकृतिक रूप से उसके जीवन में घटित होता रहा परन्तु यह स्पष्ट नहीं हो पायेगा कि इसके माध्यम से वह अपने जीवन के किन पहलुओं को प्रकाश में लाना चाहता है क्योंकि आत्मकथा स्मृति पर आधारित होती है, इसीलिये लेखक जीवन बगिया में से उन्हीं पुष्पों को विशेष रूप से चुनता हैं जिनकी माला बनाकर वह पाठक को पहनाता चाहता है। या तो डायरी लेखक का उद्देश्य पूर्व में ही निर्धारित करना होगा कि इसमें जीवन के किन पहलुओं पर आत्म प्रकाशन करना है जो कि असंभव है। यह जरुर संभव है कि आत्मकथा लिखते समय अपनी पुरानी डायरियों में से उन स्थलों को चुन ले जिनकी झांकी पाठक को कराना चाहता है, यदा कदा किसी आत्मकथा लेखक के पास ही उसकी डायरियां सुरक्षित मिलती होंगी क्योंकि निश्चित क्रम में जीवन को उतार कर सहेजना दुश्कर कार्य है। हिन्दी में भी स्वामी श्रृद्धानन्द ने यह प्रयोग किया हैं तथा वर्तमान में हिन्दी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकार श्री मोहन राकेश की डायरी उनके मरणोपरांत उनकी पत्नि श्रीमती अनिता ने छपवाई है, लेकिन उसमे भी बीच–बीच मे अंतराल आ गया है। इस प्रकार की श्रेष्ठ आत्मकथाओं के उदाहरण भी कम नहीं हैं जिनके लेखकों ने किसी डायरी की सहायता के बिना अपने मानस पटल पर उल्लिखित स्मृतियों के सहारे ही आत्मकथाओं का निर्माण किया क्योंकि उनका जीवन उन शूलों पर चल कर बीता था जिनकी चुभन कभी खत्म नहीं हो सकती है। भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर पं. नेहरु, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बिस्मिल इत्यादी ऐसे आत्मकथाकार है जिनका

सम्पूर्ण जीवन उस आग की तरह था जिनके अंगारे कभी शान्त नहीं हुए थे । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आत्मकथा के विषय में लिखा है।

"1940 में मैं स्वर्गीय जमना लाल के साथ थोड़े दिनों के लिये स्वास्थ्य लाभ के लिये सीकर गया था, वहां पर ही संस्मरण लिखने का आरम्भ मैंने बिना सोचे विचारे कर दिया। उसका एक छोटा अंश ही लिखा जा सका था। 1942–45 में मेरे साथी भाई मथुरा प्रसाद आदि ने आग्रह किया कि इसे पूरा कर देना चाहिये वहां समय भी मिला, वहां इसको ( बांकी पुर की जेल मे) लिखा गया" आत्मकथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रस्तावना।'' – 57

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता हैं कि डायरी के कुछ अंशों का आत्मकथा में उपयोग सहायक हो सकता हैं, किन्तु डायरी के प्रत्येक अंश को शब्दशः आत्मकथा में समाविष्ट करने का आग्रह किया जाए तो इससे नीरसता और विश्रृंखलता की अभिवृद्धि की संभावना है इसलिए डायरी के कुछ प्रमुख अंशों को ही आत्मकथा के रूप में दिया जाना उचित हैं।

**जर्नल :–** हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लिखने की प्रेरणा तथा उनका पथ प्रदर्शन करने का श्रेय मुंशी प्रेमचन्द को ही जाता हैं। जिन्होंने 1932 ई. में 'हंस' पत्रिका में आत्मकथांक के नाम से एक सहायक अंक प्रकाशित करना आरम्भ किया जिसनें हिन्दी साहित्यकारों के आत्म अनुभवों को पाठकों के साथ साझा करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया। जिससे पत्र–पत्रिकाओं के इतिहास में एक नवीन परम्परा का आरम्भ हुआ था। जिसमें सर्व प्रथम जयशंकर प्रसाद की 'आत्मकथा' कविता थी–

"छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ

क्या यह अच्छा नहीं, कि औरों की सुनता मैं मौन रहूं

इसमे कवि ने आत्म अनुभवों को कविता के माध्यम से प्रेषित किया है कि मैं मौन ही रहूँ तथा दूसरी तरफ अपने जीवन की बड़ी कथा भी सुनाना चाहा है। इस तरह द्वन्द्वात्मकता प्रकट की गई है। – 58

इसी जर्नल में मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी संक्षिप्त आत्मकथा 'जीवन सार' प्रकाशित कि थी। इसमें साहित्यकार के जीवन की निर्धनता, साधनहीनता, कठिन परिश्रम का वर्णन मिलता हैं। जिसमे एक जगह साहित्यकार ने स्वयं लिखा है–

" मेरे पैरों में लोहे की नही अष्टधातु की बेड़िया थी और मैं चढ़ना चाहता था पहाड़ पर " – 59

इस अंक के माध्यम से प्रेमचन्द ने अपनी अधूरी शिक्षा, शिक्षण व्यवसाय तथा "सोजे वतन" के जब्त होने इत्यादि का वर्णन किया हैं। हंस पत्रिका के आत्मकथा अंक मे प्रकाशित अहम अनुभवों को पुनः सम्पादित कर श्री मदन गोपाल ने 'प्रेमचन्द की आत्मकथा' के नाम से छपवाया जिसमें उनकी कहानियों को भी सम्मिलित किया गया था।

लेकिन पुनः किसी अन्य के द्वारा सम्पादित होने के कारण इसे आत्मकथा नहीं मान सकते। हंस के आत्मकथा अंक में विभिन्न साहित्यकारों ने अपने जीवन के उन अनछुए पहलुओं से अवगत कराया है, जो कि सरस, रोचक होने के साथ ही पथ प्रदर्शक प्रेरक के रूप में सहायता करते हैं।

हंस पत्रिका में प्रकाशित आत्मकथा अंक में निम्नलिखित साहित्यकारों ने भी अपने अनुभवों को पाठकों के साथ साझा किया है जिनमें प्रमुख रूप से विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' ने "मेरा यह बाल्यकाल" में से अपने शैशव का चित्र उपस्थित किया हैं। धीरेन्द्र वर्मा ने "डायरी के कुछ पृष्ठ" तथा जैनेन्द्र के "कश्मीर प्रवास के दो अनुभव" गोपाल राम गहमरी, तथा शिवपूजन सहाय ने "मतवाला पत्र का आरम्भ कैसे हुआ" इसका अनुभव पाठकों से बांटा है।

हंस में जो धरावाहिक रूप में प्रकाशित आत्मकथा है वो जगन्नाथ खन्ना की 'मेरी विचित्र कहानी' हैं। यह जनवरी 1932 से मई 1932 ई. तक प्रकाशित होती रही।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्यकारों में आत्मकथा के प्रति रुचि जाग्रत करने का श्रेय प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित 'हंस' पत्रिका को ही जाता है। इसमें लेखों के माध्यम से अपनी आप बीती को जग के सामने लाने का साहस साहित्यकारों को दिया। वर्तमान में साहित्यकार कमलेश्वर के संस्मरण 'सण्डे मेल' पत्रिका मे छपे थे जो

तरह–तरह के तर्क–कुतर्क, वाद–विवाद आक्षेपों और समर्थनों के केन्द्र बने लेकिन फिर पुस्तक रूप में ''जो मैनें जिया'' के रूप में सामने आये।

**<u>संस्मरण</u>** :– आत्मकथा के एक रूप में संस्मरण भी एक लघु आत्मकथा ही हैं। संस्मरण भी स्मृति पर आधारित होते हैं और आत्मकथा भी स्मृति पर ही आधारित होती हैं यदि जीवन के विभिन्न पड़ावों के संस्मरणों के खण्डों को जोडा जाये तो वृहद् आत्मकथा तैयार हो सकती है।

संस्मरण दो प्रकार के होते हैं आत्मपरक और अन्यपरक। आत्मपरक में व्यक्ति का केन्द्र स्वयं होता हैं। अन्यपरक में संस्मरण का केन्द्र अन्य होता हैं। आत्मकथा के लिये दोनों ही संस्मरण उपयोगी हैं क्योंकि अन्यपरक में भी कहीं न कहीं स्वयं लेखक भी सम्मिलित होगा तभी तो वह उसकी स्मृति में है, जिसे वह संस्मरण के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा है, तभी तो बिरला, पंत, अज्ञेय, शिवपूजन सहाय के संकलनों में दोनों प्रकार के संस्मरणों का समावेश हैं।

आधुनिक काल में साहित्यकार कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा संस्मरणात्मक रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत की हैं। इसमें साहित्यकार ने अपने लम्बे साहित्यिक जीवन का वर्णन किया हैं।

"स्मृति अतीतजीवी हो सकती है, पर वह अतीतमुखी नहीं होती–वह आंतरिक अनुभव की प्रगाढ़ आधारभूमि तैयार करती रहती है और अतीत से वर्तमान को और वर्तमान से भविष्य को जोड़ती जाती है, यानि भविष्य की रचनात्मक और वैचारिक अस्मिता को स्वरूप देती है। इन संस्मरणों ने मेरे लेखक के लिये वही भूमिका अदा की है इसीलिये मैनें इस पुस्तक का नाम 'जो मैने जिया' ही उचित समझा और तय किया।''
– 60

"इस तरह संस्मरण भी आत्मकथा का एक रूप हैं जिसे जीवन क्रमबद्धता के रूप में प्रस्तुत करना ही आत्मकथा है क्योंकि आत्मकथा भी स्मृति का संचित रूप हैं। यह निश्चित क्रमबद्ध रूप में मनुष्य के दिमाग में जीवित रहती है, जो वक्त की धूल से आबद्ध रहती है लेकिन सोच को जरा सी हवा लगते ही धूल उड़ने लगती है तथा स्मृति में संचित फिल्म आँखों के सम्मुख पुनः उसी रूप में प्रकट होने लगती है, अतः संस्मरण भी आत्मकथा का ही एक रुप हैं।

**पत्र :–** पत्र सर्वथा वैयक्तिक सामग्री होते हैं क्योंकि उनके प्रयोजन भी सर्वथा वैयक्तिक ही होते हैं। जब तक कि किसी पत्रिका आदि में प्रकाशित न हों क्योंकि पत्र लिखने वाला भी अकेला होता है तथा पढ़ने वाला भी अकेला होता है। वैसे तो पत्र के दो ही सिरे होते हैं एक सिरे पर लिखने वाला तथा दूसरे सिरे पर पढ़ने वाला लेकिन मध्य में स्वयं पत्र होता है जिसमें प्रमुख रूप से देख जाता है कि वर्णन किसका किया गया हैं क्योंकि पत्र में जो लिखा गया हैं वो किसी के बारे में भी हो सकता हैं इसीलिये आत्मकथा के रुप में आत्मपरक पत्रों को ही आत्मकथा का रुप मान सकते हैं, जैसे किसी लेखक को उनके लेखन के लिये पाठकों की प्रशंसाएँ मंगलकामनाएँ मिलना, आत्मकथा का एक अंश हो सकती है। आत्मकथा लेखक की आत्म संतुष्टियों व अहं की वृत्ति की पुष्टि हेतु ऐसे पत्र दृढ़ आधार बन सकते हैं, यदि लेखक उनको सहेजकर रख सके। इसके लिये रामअवतार अरूण ने अरुणायन की भूमिका में लिखा है, अरुण में पत्रों की साहित्यिक महत्ता से मैं अवगत नही था, दो चार वर्षो तक अपने पास रखने के बाद मैं स्वयं अपने हाथ से फाड़ देता था।"

श्री रामावतार अरुण ने अपनी आत्मकथा में पाठकों के पत्रों को अक्षरशः उद्धृत किया है। पत्र साहित्य के आत्मकथात्मक अंश आत्म संस्मरण की अपेक्षा भी अत्यंत संक्षिप्त एवं सीमित होते हैं, इसीलिये इनके लिये विश्रृखंल आत्मकथा संकेत संज्ञा का व्यवहार किया गया है। पत्र का उद्देश्य प्रेरणा देना, या ऐसे किसी रहस्य का उद्घाटन करना, जो किसी के भी सामने नही किया जा सकता हो के लिये भी पत्र एक सशक्त माध्यम हैं, लेकिन आत्मप्रकाशन एकांत वैयक्तिक स्तर का होने से आत्मकथा के समकक्ष नहीं होता है।

आत्मभिव्यक्ति, आत्मानुभूति, आत्मसंवेदना और आत्मकेन्द्रित होने के लिये सबसे सशक्त माध्यम हैं 'प्रेम पत्र' जिसमें लिखने वाला एक अलग ही दुनिया में पहुंच जाता है। जहां उसके सिवा कोई नही होता है। प्रेम पत्र एक मानसिक उलझन में लिखे जाते हैं। ऐसे में लेखक यथार्थ में न रहकर स्वप्न लोक में विचरण करने लगता हैं जो कि आत्मकथा का लक्षण नहीं हो सकता क्योंकि आत्मकथा के लिये यथार्थ की अभिव्यंजना होना आवश्यक हैं। इसीलिये पत्र आत्मकथा का एक अंश तो हो सकते हैं लेकिन सम्पूर्ण आत्मकथा पत्र पर आधारित नहीं हो सकती है।

# आत्मकथा एवं अन्य विधाएँः साम्य – वैषम्य

**आत्मकथा और जीवनी** :– आत्मकथा और जीवनी दोनों ही किसी प्रसिद्ध, महान, साहित्यकार, राजनेता, कलाकार के सम्पूर्ण जीवन वृत को पाठकों के सामने प्रस्तुत करती हैं। आत्मकथा में भी किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का यथा तथ्य वर्णन होता है तथा जीवनी में भी किसी व्यक्ति के जीवन का यथा तथ्य वर्णन होता हैं। आत्मकथा और जीवनी की समानता की भ्रान्ति का मुख्य आधार यह हैं कि दोनों में किसी विशिष्ट व्यक्तित्व की झांकी का दर्शन होता हैं अतएवं डॉ. सोमनाथ गुप्त ने भी आत्मकथा को एक विशिष्ट शैली की जीवनी के रूप मे प्रतिपादित किया है–

"इस शैली की जीवनियों का लेखक स्वयं चरित नायक होता है। लेखक के लिये अपने चरित्र का विश्लेषण सुगम कामना हैं, सब ओर से साहस बटोर कर लेखक आत्मविश्लेषण करने बैठता हैं।'' – 61

सूक्ष्म विवेचन से ज्ञात होता है कि जीवनी और आत्मकथा में शैली भेद या लेखक भेद ही नही हैं, अनेक अन्य स्पष्ट अंतर भी हैं, जैसे कि आत्मकथा तो व्यक्ति की एक ही होती हैं जबकि जीवनियां अनेक। आत्मकथाकार स्वयं लेखक होता है, जीवनी लेखक अन्य होता है। जीवनी के क्षेत्र में यह भी अलग संभावना हैं कि किसी एक ही प्रसंग के उल्लेख में विविध लेखकों की प्रतिपादन शैली आदि के भेद के कारण या उनके द्वारा प्राप्त किये गये प्रमाणों के कारण गहरा मतभेद हो जाये। क्या आत्मकथा के क्षेत्र में ऐसा एक भी विवादग्रस्त प्रंसग उठाया जा सकता हैं ? बल्कि जीवनी और आत्मकथा के तथ्यों में विरोध होने पर आत्मकथा में वर्णित तथ्यों को ही प्रामाणिकता मानना होगा। आत्मकथा का जीवनी व साहित्य की अन्य विधाओं के साथ चौथा स्पष्ट और प्रमुख अंतर यह भी हैं कि उपन्यास, कहानी आदि के समान ही अत्यंत निम्न स्तरीय अथवा निकृष्ट आत्मकथा प्राप्त नहीं हो सकती। जीवनियां भी उत्कृष्ट, अपकृष्ट, निकृष्ट कोटि की हों सकती हैं।

जबकि आत्मकथा के लिये प्रायः जब तक किसी लेखक, क्रान्तिकारी, समाज सेवक, राजनेता या धार्मिक महापुरूष को यह पूर्ण निश्चय न हो जाये कि उसका जीवन एक ऐसे स्थिर बिन्दु पर पहुंच चुका है जहां उसके अपने अनुभव और भाव दूसरों के

लिये आकर्षक अनुप्रेरक और प्रभावात्मक सिद्ध होंगे तब तक वह आत्मकथा लिखने की ओर प्रवृत्त ही नहीं होता।

आत्मकथा वही तक होती हैं जिस अवस्था में लेखक उसे लेखनी में आबद्ध करता हैं जबकि जीवनी सम्पूर्ण जीवन वृत्त होती है। जिसमें नायक की मृत्यु तथा दाह संस्कार का भी वर्णन मिल सकता हैं लेकिन आत्मकथा चाहे जीवन की संध्या में लिखी जाती हैं लेकिन फिर भी शेष जीवन की कथा अपूर्ण ही रह जाती हैं स्वामी श्रद्धानन्द ने तो ''कल्याण मार्ग का पथिक'' की भूमिका में लिखा हैं–

''मेरे जीवन के शेष अनुभव भी किसी न किसी रूप में जनता के सामने आते ही रहेंगें'' – 62

यदि हम ऐसी आत्मकथाओं के उदाहरण खोजे जिनके लिखने के बाद शेष जीवन अत्यल्प बचा हो तो भी जीवनी से विषमता तो रहेगी ही । भारत के साहित्य संसार में ऐसे आत्मकथाकार भी हैं जिन्होंने फाँसी लगने से पूर्व मृत्यु के साक्षात दर्शन करते हुए जीवन के चरम क्षणों में आत्मकथा लिखने का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया । प्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल ने फाँसी की कोठरी में बैठकर आत्मकथा लिखी । आत्मकथा हमेशा अर्धकथा ही रहती है।

आत्मकथाकार जब साहस बटोर कर आत्मकथा लिखने बैठता हैं तो वह अपने जीवन की उन छिपी माणिक मणियों के भी साक्षात दर्शन करवा देता है। जो कि उसे समाज के सम्मुख हेय भी बना सकते हैं। जीवनी साहित्य में तो लेखक कथा नायक के दुराचरणों, दोषों और अपराधों का यथा सम्भव मार्जन संशोधन करने का प्रयास करता हैं क्योंकि पराये दोषो का वर्णन करने पर निन्दा का अपराधी कौन बने ? महात्मा गांधी, नेहरू, बच्चन जी, प्रभा खेतान, अनीता, उग्र आदि ने अपने जीवन की विकृतियाँ स्पष्ट दर्शाई है।

अंततः आत्मकथा और जीवनी लक्ष्य भेद, यात्रा भेद, शैली भेद और लेखक भेद आदि के अनेक कारणों से एक दूसरे से इतनी अलग विधाएँ हैं कि इनके स्वरूप को किसी भी प्रकार से मिला कर देखना अज्ञान या भ्रान्ति को आमंत्रित करना हैं।

**<u>आत्मकथा और यात्रा साहित्य :–</u>** यात्रा साहित्य में लेखक प्रत्यक्षीकृत दृश्यों, घटनाओं तथा उनके प्रति निजी प्रतिक्रियाओं को ही अपनी लेखनी का विषय बनाते हैं इसीलिये

अनेक यात्रा विवरण आत्मकथा का आभास दे जाते हैं। इन कृतियों में यत्र–तत्र बिखरे हुए आत्मकथा प्रसंग भी मिल जाते हैं, लेकिन एक समान दिखने वाली दोनों विधाओं में मूल अंतर दृष्टिकोण का है। आत्मकथा लेखन स्वयं पर आधारित होता हैं जबकि यात्रा विवरण बाह्य जगत पर आधारित, आत्मकथा लेखक जब अपने आस पास के समाज और विश्व में घटित होनें वाली राजनैतिक, सामाजिक या धार्मिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करता हैं तब भी उसकी दृष्टि इस ओर लगी रहती है कि वह जिन घटनाओं का विवरण दे रहा हैं उन्होंने उसके जीवन को किस तरह प्रभावित किया तथा उसके निजी जीवन की दिशा के निर्माण में क्या प्रभाव हुआ ?

यात्रा वृत्तांत या साहित्य में किसी एक कालखण्ड का चित्रण होता है और वह बाहर के जीवन से सम्बन्धित होता है। यात्रा साहित्य में लेखक का अनुभव और यात्रा में मिले किसी अपरिचित व्यक्ति को महत्त्व दिया जा सकता हैं जो किसी आत्मकथा का अंश मात्र हो सकती हैं सम्पूर्ण आत्मकथा नहीं।

यात्रा विवरण लेखक जब भी अपने अनुभवों को बहिर्मुख दृष्टि रखकर प्रस्तुत करता है तो वह आत्मकथा के घेरे से बाहर हो जाता है। इसके विपरीत यात्रा विवरण को आत्म निर्माण के रूप में प्रस्तुत करता है तो वह आत्मकथा बन जाती हैं। आत्मकथा में लेखक का लक्ष्य अपने व्यक्तित्व का वर्णन, विश्लेषण, विवेचन और निजी अनुभूतियों और आंकाक्षाओं का संप्रेषण होता है तभी वह रचना आत्मकथा बन पाती हैं साहित्य के महान विश्व यात्री राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' तथा यात्रावृंत्तात 'मेरी तिब्बत यात्रा' एवं 'मेरी यूरोप यात्रा' मे यही मूलभूत अंतर हैं।

इसके अतिरिक्त दोनों के वर्ण्य विषय में भी स्पष्ट अंतर हैं। आत्मकथा का केन्द्र 'व्यक्ति' हैं । यात्रा विषय अनन्त विश्व संसार है। आत्मकथा में जीवन संघर्ष में विविध आयाम तथा यात्रा साहित्य से मार्ग पर्यटन, बाधाएं, समस्या, संस्कृति का ही वर्णन मिलता हैं। यात्रा साहित्य वर्तमान पर आधरित होता है जबकि आत्मकथा पूर्णतः स्मृति पर आधारित अतीतमुखी होती है। यात्रा साहित्य में पृथ्वी के भूगोल की झांकी के दर्शन होते हैं। आत्मकथा चरित्र प्रधान होती हैं। यात्रा वृंत्तात वातावरण प्रधान होते है।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता हैं कि आत्मकथा साक्षात्कार अनुभवों के अभिलेख से सम्बन्धित होकर भी यात्रा साहित्य आत्मकथा के नहीं है।

**आत्मकथा और शिकार साहित्य :–** हिन्दी साहित्य में शिकार–साहित्य भी लिखा गया है ,जिसमें साहित्यकार ने अपने शिकार के किस्से पाठकों के सामने प्रस्तुत किये हैं। शिकार के किस्सें आत्मकथा तो हो सकते हैं लेकिन कोई भी शिकारी आत्मोन्मुख होकर शिकार नहीं कर सकता। वहां तो उसे सजग ही रहना पड़ेगा अन्यथा शिकार, शिकारी पर भारी पड़ जायेगा।

आत्मकथा लेखक अपने शिकार के किस्सों को अपने व्यक्तित्व निर्माण तत्त्व के रूप में उपयोग लेता है तो शिकार साहित्य मात्र आत्मकथा का एक अंश हो सकता है। हिन्दी साहित्य में शिकार सम्बन्धी लेखन के रूप में प्रमुख हस्ताक्षर साहित्यकार " श्री राम शर्मा' को माना जाता हैं उनके शिकार सम्बन्धी अनेक लेखन प्रयासों को लेकर यह समस्या उठती हैं कि उन्हें कहानी माना जाये या कि निबन्ध, आत्मसंस्मरण माना जाये या आत्मकथा ? शिकार साहित्य आत्मकथा नहीं हो सकता बल्कि आत्मकथा की व्यापकता में वृद्धि करने के रूप में उसका उपयोग किया जा सकता है। शिकार साहित्य एक स्वतंत्र विधा हैं। न वह निबन्ध है, न आत्मकथा न कहानी, न संस्मरण। उसकी अपनी पृथक् दृष्टि और पृथक् अभिव्यक्ति है। "

**आत्मकथा और रेखाचित्र :–** आत्मकथा तथा रेखाचित्र दोनों में लेखक के सम्पर्क में आए किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्रण होता है जो लेखक की संवेदना को जगाते हैं। रेखाचित्र व्यक्ति या वस्तु चित्रों के अतिरिक्त अन्य बातों को गौण मानते हैं लेकिन आत्मकथा में स्वयं पर अधिक बल दिया जाता हैं। लेखक के सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों वस्तुओं का चित्रण तो होता हैं लेकिन उन्होंने किस तरह लेखक के जीवन, व्यक्तित्व को प्रभावित किया है, इतना ही वर्णन होता है। रेखाचित्र और आत्मकथा में स्पष्ट भेद इस प्रकार जान सकते हैं कि शान्ति प्रिय द्विवेदी की “" परिव्राजक की प्रजा” में अपने साथ अपनी बहनों का चित्रण होने पर भी उसे आत्मकथा माना जा सकता है किन्तु उन्हीं की दूसरी रचना 'पथचिन्ह' भगिनी वृत्तान्त प्रधान होने से रेखाचित्र कहलाती हैं आत्मकथा नही। महादेवी वर्मा के 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' तथा 'मेरा परिवार' आदि उदाहरण ममत्व और अपनत्व की मधुरिमा से आप्लावित होकर भी आत्मेतर पात्र चित्रण प्रधान होने के कारण रेखाचित्र ही माने जायेंगे।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता हैं कि रेखाचित्र में आत्मेतर चित्रण प्रधान होता हैं। आत्मकथा में आत्मचित्रण रेखाचित्र का नायक बहुधा आख्यातवृत होता हैं। आत्मकथा का प्रायः ख्यातवृत होता है।

हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाओं के नाम आत्मकथात्मक रूप में दिए गये हैं लेकिन वह आत्मकथा नहीं हैं, जैसे हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' शीर्षक को पढ़कर लगता हैं किसी की आत्मकथा होगीं लेकिन उपन्यास हैं।

इसी तरह श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' आत्मपरक एवं फ्लैश बैक शैली में लिखे जाने के कारण साहित्य जगत में भ्रम पैदा करता हैं कि यह आत्मकथा हो सकती हैं लेकिन यह उपन्यास हैं।

**आपबीती :–** आपबीती शब्द से ऐसा प्रतीत होता हैं कि किसी के साथ कोई घटना घटित होना। कोई अन्य तो उसको पढ़कर मात्र कल्पना ही कर सकता है लेकिन जो उसने भोगा, सहा, महसूस किया उसका अकल्पनीय वर्णन ही आप बीती में होता है।

हिन्दी आत्मकथा के विकास के प्रारम्भिक चरण में अनेक बलिदानियों की जेल सम्बन्धी आपबीतियों ने इस अनुभूतिजन्य, माध्यम निरपेक्ष एवं यथार्थाश्रित आत्म प्रकाशन की विधा का पथ प्रशस्त किया था। राजनैतिक कैदियों के जीवन में आये हुए जेल प्रसंग जहाँ उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय भाग होते हैं। वहां यातनापूर्ण व कष्टकर होने तथा किसी सिद्धांत हेतु समर्पित होने से पाठकीय सहानुभूति को अर्जित करने में भी सक्षम होते हैं।

सशस्त्र क्रान्तिकारियों या अहिसंक आंदोलनकर्ताओं को संत्रस्त करने का उपाय जेल या फांसी हीं होता है। फांसी वाले कैदी को भी जेल यातना भोगनी ही होती हैं। इन कष्टों और बलिदानों के कारण ही महान् विभूतियां जन, मन में प्रेम, आदर और श्रद्धा का स्थान प्राप्त करती हैं। जेल के नितान्त वैयक्तिक एवं अप्रत्याशित अनुभवों को लेखनी बद्ध करना भी लेखकों के लिये एक लोहमर्षक अनुभव होता है। भारतीय प्रथम स्वतंत्रता सग्रांम में प्रथम उत्थान के दिनों की प्रमुख आतमकथाएँ महात्मा गांधी की 'मेरे जेल के अनुभव', भवानी दयाल संयासी की 'हमारी कारावास कहानी' व भाई परमानन्द की 'काले पानी की कारावास कहानी', जेल आत्मकथा के क्रम में महिला क्रांतिकारियों ने भी अपनी जेल कथाएँ लिखीं, जिनमे प्रमुख हैं श्रीमती पार्वती देवी आदि।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् श्री झाबरमल्ल शर्मा एवं श्री उमादत्त शर्मा ने 'भारतीय देशभक्तो की कहानी' के नाम से क्रांतिकारियों के आत्मअनुभवों को प्रकाशित करवाया था। जिनमे प्रमुख क्रांतिकारी थे–बालगंगाधर तिलक, वीर सावरकर, विपिन चन्द्र, परमानन्द, महात्मा गांधी, भगवान दीन, उपेन्द्र नाथ, भवानी दयाल संयासी आदि। प्रसिद्ध लेखकों की रचनाएँ भी थी। भाई परमानन्द की आप बीती को प्रकाशित करने पर एक लम्बा शीर्षक दिया गया हैं। " काले पानी की करावास कहानी अर्थात् भाई परमानन्द की आपबीती " आश्चर्य की बात यह थी कि भाई परमानन्द ने कोई क्रांतिकारी आंदोलन नहीं किया था, क्योंकि ऐसा करना वे अपने मुख्य उद्देश्य आर्य समाज के प्रचार में बाधक समझते थे। अपनी स्थिति का वर्णन लेखक ने इन शब्दो में किया है–

''मेरे जीवन का उद्देश्य नियत था। मैंने दयानन्द कॉलेज में काम करने का संकल्प किया था। इग्लैण्ड में रहते हुये भी मुझे कॉलेज की ओर से सहायता मिलती थी। मैं अपने लिये यह असंभव समझता था कि मैं किसी ऐसे क्रांतिकारी पोलिटिकल काम में भाग लूं जिससे कि मैं समाज में काम करने के अयोग्य हो जाऊं" – 63

अतः उन पर प्रत्यक्ष में कुछ भी आरोप लगे हों परन्तु सत्य बात यह थी कि अग्रेंज सरकार आर्य समाज के आंदोलन से घबराई हुई थी। उनकी सत्यवादिता निराभिमानता और निर्भीकता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि जेलों के असहय कष्ट सह कर भी अपने मौलिक विचार प्रकट करने से वे पीछे नहीं हटे। अंततः यही कहा जा सकता हैं, आपबीती भी आत्मकथा का ही एक रूप हैं जो सम्पूर्ण तो नंही लेकिन लघु आत्मकथा अवश्य हो सकती है।

## (स) आत्मकथा–साहित्य के प्रतिमान

### भारतीय दृष्टि

गद्य की तथाकथित अनेक अल्प चर्चित विधाओं में अंत में जाकर रेखाचित्र , रिपोर्ताज, जीवनी, संस्मरण, डायरी आदि का वर्णन करते हुए अधिकतर समीक्षक आत्मकथा में जीवनी के एक उप विधा के रूप में ही उल्लेख करते हैं आत्मकथा को जीवनी के अन्तर्गत मानते हुए डॉ शान्ति स्वरूप गुप्त ने कहा है कि ''जीवन चरित्र के

रूप हैं – जीवनी और आत्मकथा। जीवनी दूसरे के द्वारा लिखी जाती है जबकि आत्मकथा का लेखक स्वयं चरित्रनायक होता है'' – 64

लगभग यही मान्यता अनेक भारतीय अभारतीय समीक्षकों की है–जैसे पूरे जीवनी साहित्य के विषय में समीक्षा का प्रारम्भ करते हुए डॉ0 त्रिगुनायत ने टिप्पणी की है साहित्य विधाओं के अन्तर्गत जीवनियों का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है । इस साहित्य विधा के शास्त्रीय पक्ष का वर्णन अभी तक हिन्दी में नहीं के बराबर मिलता है'' – 65

डॉ0 गोविन्द त्रिगुनायत – शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त आत्मकथा की व्युत्पति खोजते समय गद्य साहित्य के संकुचित तर्क आयाम दृष्टि पक्ष में आते हैं " आत्मनः विषय कथ्यते यस्या सा आत्मकथा।"

अर्थात् जहाँ अपने ही विषय में बात की जाए वही आत्मकथा है। अतः यह तो सुनिशचित हैं कि आत्मकथाकार की दिशा वही प्रमाण से मुडकर अन्तः प्रयोग की ओर होगी किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि आत्म के अन्तर्गत क्या क्या समाहित होगा। पंडित नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, यशपाल ने तो समस्त पर्यावरण को आत्म की संज्ञा दी है। स्वामी दयानन्द अपने शिव की खोज में यात्रा पथ पर नितान्त अकेले हैं, तो बच्चन, अमृता प्रीतम, की रंगीनियाँ अपने साथ अनेक इन्द्रधनुषी रंगो वाले संसार समेटे चलती हैं। कांतिकारी की आत्मकथा में उसके जीवन के कटु अनुभव में उसका आत्म झलकता है। विविध कार्य क्षेत्रों, सिद्धान्तों, आदर्शो, विश्वासों, सम्पर्को, आंदोलनों व किया कलापों आदि में परिणाम स्वरूप भी हमारे आत्म के अर्थ बदलते रहते हैं।

अतः अंततः यही निष्कर्ष निकलता है कि सर्वत्र विभिन्न संदर्भो और विभिन्न परिस्थितियों में विशिष्ट संस्कारों, आस्थाओं, रूढ़ियों तथा अपेक्षाओं आदि के साथ इस शब्द का व्यक्ति–सापेक्ष सीमाकंन किया जाये।

इस प्रकार जो व्यक्ति अपने 'मैं' और 'आत्म' के लिये जिस विशेष घेरे की सीमा रेखा को विनिर्मित करके जीवन यापन करे, उसे उसकी आत्मकथा के उसी वृत के अंतर्गत रहकर अपने आत्म का विवरण प्रस्तुत करने का अधिकार दिया जाये और उसी आधार पर उसके आत्म को परिभाषित किया जाये, क्योंकि रेशम का कीड़ा या मकड़ी आदि सूक्ष्म ही अपने चारो ओर एक आत्मनिर्मित जाल नहीं बुनते, अपितु प्रत्येक व्यक्ति अपनी आशाओं, आकांक्षाओं, भावनाओं, कामनाओं, सिद्धान्तों, संस्कारों और सम्बन्धों का

ताना–बाना बुन कर अपनी इच्छा शक्ति, साहस, सामर्थ्य और पुरूषार्थ के अनुसार अपने लिये एक विशेष वृत्त तैयार करता है, उस वृत के अंतिम किनारों तक गमन, उसके जीवन यापन का आधार रहता है। उस घेरे को तोड़ पाना या उससे बाहर निकलना उसके वश से बाहर की बात होती है।

आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का सजीव प्रतिन्यास, आचरण का यथार्थ प्रतिबिम्ब और मुक्त जीवन का सत्य इतिहास है तो भोगे हुए जीवन से न तो उसमें तनिक भी कम अपेक्षित है, न अधिक सहन।

अनेक आत्मकथा लेखकों ने अपनी कृतियों के लिये आत्मगाथा, आत्मचरित्र, आपबीती, आत्मचरित, आत्मवृत, निजवृतान्त, मेरी कहानी, आत्मविश्लेषण, आत्म जीवनी और अपनी कहानी आदि शीर्षक भी प्रयुक्त किये हैं हिन्दी के समीक्षकों और कोशकारों ने 'आत्मकथा' शब्द का ही व्यवहार सर्वाधिक किया है।

## पाश्चात्य दृष्टि

अग्रेंजी में आत्मकथा के लिये ऑटो बायोग्राफी शब्द प्रचलित हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ हिन्दी में ऑटो–आत्म एवं बायोग्राफी–जीवनी होता हैं। आत्मकथा और जीवनी मे तो प्रखर रूप से वैषम्य होता हैं। जीवनी आद्योपान्त सम्पूर्ण जीवन कथा होती हैं जब कि आत्मकथा अर्धकथा होती हैं। हिन्दी में अपवाद स्वरूप एक ही आत्मकथा ऐसी हैं जिसमें लेखक ने सद्य संभावित अपनी मृत्यु का भी वर्णन किया हैं और उसके बाद उसकी जीवन लीला सम्पूर्ण हो गई। प्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल फांसी से 3 दिन पूर्व अपनी आत्मकथा लिखने की ओर प्रवृत थे जैसा कि उन्होंने लिखा हैं–

" नियत समय पर इहलीला संवरण करनी होगी " – 66

पाश्चात्य जगत में महान् क्रांतिकारी जूलियस फ्यूविक ने भी इसी प्रकार फांसी की कोठरी में बैठ कर अपनी आत्मकथा लिखी थीं लेकिन साहित्य में यह उदाहरण अपवाद हैं। बारीतो लेखक अपनी आत्मकथा अपने जीवन की संध्या में ही लिखता हैं फिर उसके बाद वह कितना जीता हैं यह कोई नही जानता। रूस के क्रांतिकारी कोपाटकिन अपनी

आत्मकथा लिखने के बाद 22 वर्ष तक जीवित रहे। इन 22 वर्षो के जीवन को जी. ए. गार्डन ने उनकी जीवनी के रूप में लिखा था।

कमलादास ने अपनी आत्मकथा 'मेरी कहानी' के नाम से लिखी। जिस समय वह अस्वस्थ थी एवं मृत्यु निकट जान रही थी लेकिन उसके बाद वह स्वस्थ हो गई तो उसके बाद का जीवन कहां आत्मकथा में समाहित हो पाया अपूर्ण कथा ही रही।

इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि 'आत्मकथा' सीधे अर्थ में कभी भी आत्मजीवनी नहीं हो सकती हैं, क्योंकि वह निश्चित रूप से जीवन की अपूर्ण कहानी ही कहती है। इसीलिये उसे जीवनी के समान मानना असंगत हैं केवल अंग्रेजीं के प्रभाव स्वरूप ही लेखक या समीक्षक 'आत्म जीवनी और आत्मचरित्र' आदि शब्दों का व्यवहार करते हैं।

## संदर्भ


1. मेरी असफलताएं के संस्करण की भूमिका–पृष्ठ सं.–5
2. मोहन राकेश की डायरी की भूमिका– पृष्ठ सं.–11
3. आक्सफोर्ड डिक्शनरी वोल–ए पृष्ठ सं.–573
4. शोर्टर ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी–पृष्ठ सं.–126
5. कैसलस एनसाइक्लोपीडिया ऑफ लिटरेचर बाय एस. एच. स्टेनबर्ग–पृष्ठ सं.–62
6. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका इलेवन एडीसन
7. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका वोल–2
8. आर्ट ऑफ ऑटोबायोग्राफी–डॉ.डी.जी. नाईक –पृष्ठ सं.–11
9. डिक्शनरी ऑफ व्लर्ड लिटरेरी टर्मस–J.T. शिप्ले–पृष्ठ सं.–11
10. वनमाइटी टौरेन्ट बाय जॉनसन पृ.–97
11. एक्सपेरीमेन्ट इन ऑटोबायोग्राफी–एच.जी. वेल्स–वोल द्वितीय–पृ.–417
12. ए हिस्ट्री ऑफ आटोबायोग्राफी इन एन्टीक्यूटी–वोल प्रथम बाय जार्ज मिश्च–पृष्ठ सं. –8
13. ऑटोबायोग्राफी–विस्काउंट स्नोडन ए भूमिका
14. आत्मचरित्र मार्गन्यूट एसक्विथ, भूमिका
15. आत्मकथा–बैंजामिन फ्रेंकलिन पृष्ठ सं.–6
16. हिन्दी साहित्य कोष–सपा. धीरेन्द्र वर्मा– पृष्ठ सं.–98
17. मानविकी परिभाषिक कोष–साहित्य खण्ड– पृष्ठ सं.–29
18. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत–डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत– पृष्ठ सं.–508
19. आस्था के चरण–डॉ. नगेन्द्र– पृष्ठ सं.–202
20. मेरा जीवन प्रवाह–श्री वियोगी हरि– पृष्ठ सं.–3
21. क्यां भूलूं क्यां याद करूँ–डॉ. हरिवंष राय बच्चन– पृष्ठ सं.–1
22. अरूणायन एक आत्मकथा–पोद्दार रामावतार अरूण, भूमिका से उद्धृत
23. रसीदी टिकट–अमृता प्रीतम– पृष्ठ सं.–149
24. पाश्चात्य काव्यषास्त्र के सिद्वांत–डॉ. शांति स्वरूप गुप्त– पृष्ठ सं.–350
25. हंसवाणी–कृष्णानन्द गुप्त (हंस आत्मकथांक), जनवरी–फरवरी–1932
26. साहित्य के नये रूप–डॉ. श्याम सुन्दर घोष– पृष्ठ सं.–18
27. श्री रविन्द्रनाथ टैगोर कृत जीवन स्मृति, अनु. सूरजमल जैन प्रस्तावना से उद्धृत

28. मेरी असफलताएं–बाबू गुलाब राय की भूमिका मे – पृष्ठ सं.–4

29. मेरी असफलताएं–बाबू गुलाबराय– पृष्ठ सं.–7

30. पंखहीन विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–49

31. पंखहीन विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ सं.–49

32. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान–पृ.–96

33. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान – पृष्ठ सं.–96

34. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान – पृष्ठ सं.–97

35. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान – पृष्ठ सं.–97

36. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान – पृष्ठ सं.–99

37. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर–पृ.–6

38. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–8

39. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–6

40. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–10

41. बसेरे से दूर–डॉ. हरिवंष राय बच्चन अपने पाठको से– पृष्ठ सं.–5

42. जो मैनें जिया– कमलेष्वर भूमिका– पृष्ठ सं.–5

43. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान पृष्ठ सं.–76

44. मेरी असफलताएं–बाबू गुलाब राय–दो शब्द बलकम खुद– पृष्ठ सं.–3

45. मेरी असफलताएं–बाबू गुलाब राय– पृष्ठ सं.–4

46. मुक्त गगन में– विष्णु प्रभाकर–भूमिका– पृष्ठ सं.–5

47. जो मैने जिया–कमलेष्वर भूमिका– पृष्ठ सं.–5

48. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेष–भूमिका– पृष्ठ सं.–5

49. अन्या से अनन्या– डॉ प्रभा खेतान कवर पेज

50. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–5

51. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–6

52. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–6

53. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर–पृष्ठ सं.–7

54. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–5

55. बसेरे से दूर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृष्ठ सं.–6

56. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश भूमिका पृष्ठ सं.–13

57. आत्मकथा–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रस्तावना

58. हंस–आत्मकथांक–स. प्रेमचन्द– पृष्ठ सं.–1

59. हंस–आत्मकथांक स. प्रेमचन्द– पृष्ठ सं.–163

60. जो मैने जिया–कमलेश्वर भूमिका में– पृष्ठ सं.–5

61. आलोचना के सिद्धांत–डॉ. सोमनाथ गुप्त– पृष्ठ सं.–226

62. कल्याण मार्ग का पथिक–स्वामी श्रृद्धानन्द भूमिका– पृष्ठ सं.–4

63. भाई परमानन्द की आपबीती–भाई परमानन्द– पृष्ठ सं.–61

64. पाश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धांत–डॉ. शांति स्वरूप– पृष्ठ सं.–350

65. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत–भाग–1 डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत– पृष्ठ सं.–503

66. आत्मकथा–रामप्रसाद बिस्मिल– पृष्ठ सं.–350

# तृतीय पर्व– आत्मकथा साहित्य का इतिवृत्त

## (अ) विश्व स्तर पर – विभिन्न भाषाओं में प्रणीत

आत्मकथा साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन, विश्व के परिप्रेक्ष्य में इसकी चर्चा नहीं की जाये तो अध्ययन अधूरा प्रतीत होगा। आत्मकथा की प्रवृत्ति के जन्म में विदेशी प्रभाव को सहायक कहने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये क्योंकि आधुनिक युग के प्रारम्भ में जिन भारतीयों ने किसी भी भाषा में आत्मकथाएँ लिखीं उसमें से अधिकतर विदेश गमन कर के वहां की आत्मकथाओं से परिचित हो चुके थे, जैसे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, भाई परमानन्द व लाला लाजपतराय आदि। इस प्रथम उत्थान काल में ही बुकर टी. वाशिगंटन, कैसर, टॉलस्टाय, मक्सिम गोर्की और वीरा फिगनर आदि विदेशी लेखकों की उच्चस्तरीय आत्मकथाओं के अनुवाद भी प्रकाशित हो गये थे। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही विश्व की कुछ प्रसिद्ध आत्मकथाओं के अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित हो जाना यह सिद्ध करता हैं कि भारतीय चेतना का ध्यान उस प्रारम्भिक काल में ही आत्मकथा की उपयोगिता की ओर आकृष्ट होने लगा था।

श्री डा0 बुकर टी. वाशिंगटन की आत्मकथा का मूल अंग्रेजी शीर्षक "अपफ्राम स्लेवरी" था। हिन्दी में अनुवाद "आत्मोद्धार" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। म0 टालस्टाय के "एक कन्फैक्शन" का हिन्दी अनुवाद "टालस्टाय की आत्म कहानी" शीर्षक से हुआ। कुछ समय पश्चात् "मेरी आत्मकहानी" शीर्षक से भी हुआ। मैक्सिम गोर्की ने अपने बचपन तथा शिक्षण से सम्बंधित खण्ड की आत्मकथाएँ प्रस्तुत _____ की, जिनका हिन्दी अनुवाद उन्हीं दिनों विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को से हुआ। जर्मनी के प्रसिद्ध शासक कैसर की जीवन स्मृति का संक्षिप्त अनुवाद "कैसर की रामकहानी" शीर्षक से श्री पारसनाथ सिंह ने किया।

वीरा फिगनर की आत्मकथा का अनुवाद सुरेन्द्र शर्मा ने "देवी वीरा" के शीर्षक से किया। मूल पुस्तक रूसी भाषा में लिखी गई थी। चैकोस्लोवाकिया के शहीद जूलियस फ्यूचिक की आत्मकथा का अनुवाद "फांसी के तख्ते से" शीर्षक से नेमीचन्द जैन ने किया।

हर्बर्ट ए0 फिल्ब्रिक की आत्मकथा का अनुवाद "मेरा तिरंगा जीवन" शीर्षक से हुआ। हैंनरी डेविड थोरी अमेरिका के आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारक की आत्मकथा का अनुवाद "सरल जीवन की साधना" शीर्षक से हुआ।

हेलेन केलर की संक्षिप्त खण्ड आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद "मेरी जीवन कहानी" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। बर्नाड बोटेन की मूल अंग्रेजी पुस्तक "ट्रायलजज" का मेरी कहानी शीर्षक अनुवाद श्री केशव सागर द्वारा किया गया। मॉरिस फ्रैंक एवं ब्लैक क्लार्क की सयुंक्त आत्मकथा "लेडी ऑफ सींग आई" का अनुवाद "दृष्टिदागी" शीर्षक से श्री माया प्रसाद त्रिपाठी ने किया। प्रिंस क्रोपाटकिन की आत्मकथा के कुछ अंश सत्साहित्य प्रकाशन दिल्ली से "एक क्रांतिकारी के संस्मरण" शीर्षक से प्रकाशित हुए। अनतोली कुज्नेत्सोव की आत्मकथा का अनुवाद गोपी कृष्ण गोपेश के साहाच्य से "दास्तान चलती हैं" शीर्षक से विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को ने प्रकाशित किया।

कार्ल सेण्ड बर्ग की प्रख्यात खण्ड आत्मकथा "प्रेयरी टाउन ब्वाय" का अनुवाद "प्रेयरी नगरी का बालक" शीर्षक से श्री हरिवंश राय शर्मा ने किया। जेम्स ए0 मिचनर की मूल पुस्तक "दी ब्रिज ऑफ ए डांऊ" का अनुवाद विद्याभूषण ने "स्वातन्त्र्य सेतु" शीर्षक से किया। बैंजामिन फ्रैंकलिन की आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद रमेश वर्मा ने किया। "बैंजामिन फ्रैंकलिन, आत्मकथा" शीर्षक से प्रकाशित हुई। जार्ज मारडिकियन की आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद "धरती का स्वर्ग" शीर्षक से भारतीय प्रकाशन मण्डल वाराणसी से प्रकाशित हुआ। क्वामे एन्क्रूमा, घाना के गांधी कहे जाने वाले की आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद श्यामू सन्यासी ने "अफ्रीका जागा" शीर्षक से किया। वाल्टर पी0 ई0 क्रिइसलर की आत्मकथा अंग्रेजीं में "अमेरिकन वर्कमेन" शीर्षक से छपी थी। इसका हिन्दी अनुवाद "एक अमरीकी मजदूर की कहानी" शीर्षक से नवकेतन पब्लिकेशंस नई दिल्ली ने प्रकाशित किया।

यू0 टी0 हैंसू एक चीनी क्रांतिकारी थे। इनकी आत्मकथा "इनविजिबल कम फिलक्ट" शीर्षक का हिन्दी अनुवाद "अदृश्य संघर्ष'' के नाम से लोकप्रिय प्रकाशन दिल्ली ने प्रकाशित किया। ग0 अ0 तीखोव सोवियत संघ के विश्व प्रसिद्ध नक्षत्र विज्ञानी की आत्मकथा का अनुवाद "सितारो की खोज" शीर्षक से परमात्मा प्रकाश ने किया। जैड स्नोवांग की आत्मकथा का संक्षिप्त अनुवाद राजेन्द्र अवस्थी ने "पांच बेटी" शीर्षक से किया। एन्थनी सिल्वेस्टर की "लिविंग विद कम्यूनिज्म" पुस्तक का अनुवाद विजय श्री

भारद्वाज ने किया जो नेशनल अकादमी दिल्ली से "साम्यवाद के मेरे अनुभव" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। आर्थर लंदन की "ऑन ट्रायल" शीर्षक आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद "कुर्सी से कठघरे तक" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। मुहम्मद शाह रेजा पहलवी ईरान के प्रसिद्ध सम्राट थे। इसकी आत्मकथा "मिशन फॉर माई कन्ट्री" का हिन्दी अनुवाद डा0 युनुस जाफरी ने "देश के नाम मेरा संदेश" शीर्षक से किया। एवजेनिया एस0 जिन्झबर्ग की आत्मकथा "इन टू दि बिहर्ल विंड" से का हिन्दी अनुवाद लेखराम ने "अंधड़ की झपेट मे" शीर्षक से किया।

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा विधा का विकसित रूप प्रकाश में आ चुका हैं लेकिन अर्द्धकथानक से आज तक का सफर तय करने में सदियां लग गईं। आत्मकथा भारत में ही नही वरन विश्व के विभिन्न देशों में विभिन्न महान नेताओं, समाज सुधारकों, साहित्यकारों, क्रांतिकारियों, राजनेताओं, अभिनेता–अभिनेत्रियों द्वारा भी लिखी गई हैं जैसे– मक्सिम गोर्की, क्रोपाटकिन, कमलादास, रूसो, अब्राहम लिंकन, बेजनीर भुट्टो, तसलीमा नसरीन इत्यादि ने भी अपनी आत्मकथा लिखी हैं।

आत्मकथा साहित्य का इतिवृत्त लिखने के लिये विश्वस्तर की आत्मकथा का अध्ययन भी आवश्यक है। इसी क्रम में भारत के पड़ौसी राज्य की प्रधानमन्त्री बेनजीर भुट्टो जो कि इस्लामिक राष्ट्र की पहली महिला प्रधानमन्त्री थी, अपने राजनैतिक जीवन में जो संघर्ष किया है। उसको पाठकों तक पहुंचाना लक्ष्य है। इसी क्रम में बांग्लादेश की क्रांतिकारी महिला साहित्यकार की पुरूष प्रधान समाज से लोहा लेने की कहानी के क्रम में तसलीमा नसरीन की आत्मकथा का चुनाव किया गया है।

**मेरी आपबीती – श्रीमती बेनजीर भुट्टो–** श्रीमती बेनजीर भुट्टो पाकिस्तान में चुनी गई प्रथम महिला प्रधानमन्त्री थीं जिसने पुरूष प्रधान देश में विश्व स्तर पर एक निर्भीक, स्वतन्त्र, आधुनिक, परम्पराओं को तोड़ने वाली महिला लीडर के रूप में अपनी पहचान बनाई। बेनजीर भुट्टो स्वतन्त्र पाकिस्तान की प्रधानमन्त्री थीं। उन्होंने भी अपनी आत्मकथा 'मेरी आपबीती' लिखी जिसका हिन्दी में अनुवाद श्री अशोक गुप्ता, श्री प्रणयरंजन तिवारी ने किया एवं राजपाल एण्ड सन्स से 2008 में हिन्दी में प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा प्रथम अध्याय 'मेरे पिता की हत्या' से प्रारम्भ होकर 'प्रधानमन्त्री' पद और उसके बाद के अंतिम अध्याय पर समाप्त होती है।

मार्क सीगल ने 1988 में बेनजीर भुट्टो के साथ उनकी आत्मकथा में नये अध्याय जोड़ने के लिये काम किया था। इन अध्यायों में 1988 से 2007 तक, जब वे पाकिस्तान लौटी, का वर्णन है। मार्क सीगल ने इस पुस्तक का उपसंहार भी लिखा है, जो इसमें दिया गया हैं। इस आत्मकथा में लेखिका के राजनीतिक जीवन के संघर्ष की कहानी है। जिसमें जेल यात्रा, पिता की हत्या., देश निकाला, पारम्परिक इस्लामी औरत की बेड़ियों को तोड़ने की कहानी के साथ ही प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए, स्त्री के विभिन्न रूपों को भी जिम्मेदारी पूर्वक निर्वाह का वर्णन मिलता हैं जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है।

"मुझे बाद में पता चला कि मैं पहली ऐसी राष्ट्राध्यक्ष थी, जिसने काम काज के दौरान एक बच्चे को जन्म दिया था। इस तरह मैंने एक महिला प्रधानमंत्री की तरह, महिलाओं की उन्नति के रास्ते में आड़े आने वाली परम्परा की दीवार प्रधानमंत्री के पद पर रहते हुए तोड़ दी।" – 1

इस आत्मकथा में पाकिस्तान की सामाजिक, आर्थिक, अन्तर्राष्ट्रीय छवि तथा अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों का भी वर्णन किया गया है।

"सीमा पार मुम्बई के बम के धमाकों ने पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बंधों को धक्का पहुंचाया। इन हमलों के लिए दिल्ली में इस्लामाबाद पर इल्जाम लगाया। 1993 न्यूयार्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर पहली बार हवाई हमले हुए। नौबत यह आ गई कि पाकिस्तान को आतंकवादी राष्ट्र घोषित कर दिया जाये।" – 2

"मेरी आपबीती" आत्मकथा की लेखिका किसी राष्ट्र की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री होनें के अलावा वे एक स्त्री हैं और स्त्री के विभिन्न रिश्तों को उन्होंने जीवन के विभिन्न स्तरों पर जिया है। जिसे पढ़ने पर महसूस होता हैं कि स्त्री चाहे किसी भी देश, धर्म, रंग, कद, काठी की हो लेकिन उसका आंतरिक व्यक्तित्व लगभग समान ही होता हैं। जिसमें, प्रेम, दया, माया, ममता, सहानभुति, जूझने की शक्ति, समान रूप से ईश्वर के वरदान के रूप में प्राप्त हैं। स्त्री कितने भी ऊँचे पद पर पहुँच जाये लेकिन प्रकृति प्रदत्त स्त्री स्वभाव शायद नहीं बदलता हैं तभी तो लेखिका ने "मेरी आपबीती" में लिखा हैं ।

"दूसरी तरफ मैंने यह भी सोचा और अपने आप से यह सवाल किया, क्या शादी न करके अकेले रहने से मेरे लिए राजनीतिक रूप से, पाकिस्तान में और बाहर भी, मुश्किलें आएंगी? इस पुरूष–प्रधान समाज में किसी मर्द के बिना शादी किए रह जाने पर

कोई सवाल नही उठता, लेकिन अकेली औरत को हमेशा शक की नजरों से देखा जाता हैं।" – 3

अंततः कुल 420 पृष्ठों की आत्मकथा में लेखिका ने अपने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, पारिवारिक, स्त्रीवादी, आधुनिकता, अंतर्राष्ट्रीय, लोकतांत्रिक व्यवस्था की, धर्म निरपेक्ष राज्य की कल्पना, इस्लामी राज्य बनाने का विरोध करने की घटनाओं का जीवंत वर्णन किया गया हैं।

आत्मकथा को घटनाओं के आधार पर विभिन्न अध्यायों में बाट कर लिखा गया है। जिससे घटनाक्रम को समझने में आसानी रही हैं तथा उत्तम भाषाशैली में लिखी होनें से सहजता से पाठकों के मन में उतर सकती है लेकिन राजनैतिक संघर्ष को अधिक उभारने के कारण अन्य पहलुओं पर सीमित रूप में ही प्रकाश जा पाया, जिससे पाठकों को विभिन्न स्तरों पर नीरस लग सकती हैं।

**<u>मेरे बचपन के दिन– तसलीमा नसरीन :–</u>** बांग्लादेश की साहित्यकार तसलीमा नसरीन वह क्रांतिकारी लेखिका है। जिनको अपनें निर्भीक लेखन, के लिये जाना जाता है। तसलीमा नसरीन द्वारा लिखित संस्मरण 'मेरे बचपन के दिन' में उनके साहित्यकार बनने की पगडंडी से लेकर मंजिल तक पहुंचने का संघर्ष चित्रित किया गया है ।

यह पुस्तक मूलतः बांग्ला भाषा में लिखी गई। इसका हिन्दी अनुवाद श्री अमर गोस्वामी ने किया एवं वाणी प्रकाशन द्वारा 2008 में इसका पांचवा संस्करण प्रकाशित हुआ। कुल 296 पृष्ठ की पुस्तक में लेखिका ने अपने आस पास के समाज में जो कुछ देखा, सुना, महसूस किया और स्त्री होने का जो दंश उन्होंने झेला, उसका दिल दहलाने वाला वर्णन ने लिखकर, स्त्री समाज को सोचने पर मजबूर कर दिया कि स्त्री ,पुरूष की गुलाम नही है बल्कि वह एक शक्ति है जो अकेले ही पुरूष प्रधान समाज में लोहा ले सकती है।

इस पुस्तक में लेखिका ने अपने बचपन के दिनों में घटित ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जिसे कहने का साहस एक निडर, साहसी, दबंग महिला ही कर सकती है। किसी साधारण महिला के लिए यह असंभव है।

लेखिका ने समाज में प्रचलित विभिन्न सामाजिक मानकों का विरोध किया है जैसे स्त्री एवं पुरूष के पालन पोषण में बचपन से ही फर्क किया जाता है तथा बचपन से उसमें यह नींव डाली जाती हैं तथा बताया जाता हैं कि वह एक स्त्री है।

यही बात लेखिका के मानस पटल पर ऐसी अंकित हुई कि उन्होंने इस द्वैतवादी समाज व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगा कर समाज को सोचने पर मजबूर कर दिया कि स्त्री भी एक इंसान है कोई वस्तु नहीं ,जिसे जीवन के विभिन्न स्तरों पर रौंदा जाता है। उसे भी अपनी मर्जी की जिंदगी जीने का अधिकार है क्योंकि वह कोमल है लेकिन कमजोर नहीं है।

विवादित पुस्तक में लेखिका ने बचपन में अपने पारिवारिक पुरूषों द्वारा किये गये शोषण का बेबाकी एवं खुले शब्दों में वर्णन किया है। जो पुरूष प्रधान समाज की बखिया उधेड़ता हुआ प्रतीत होता है।

अंततः यह पुस्तक विवादित होने का प्रमुख कारण यही हैं कि इसमें सब कुछ इतने खुले रूप में लिखा हैं कि उसे सहन करना आसान नही है तभी तो बांग्लादेश में प्रतिबंधित कर दिया गया। इसीलिये वाणी प्रकाशन द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित होनें के कारण इस पुस्तक के किसी भी खण्ड का फुटनोट दिया जाना संभव नहीं है।

## (ब) भारतीय स्तर पर– भारतीय भाषाओं में प्रणीत

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा का सफर श्री बनारसी दास जैन की आत्मकथा 'अर्द्धकथानक' से प्रारम्भ होकर 'हंस' के आत्मकथांक में अपने चिरयौवन पर पहुंच गया और वर्तमान में हिन्दी साहित्य में अन्य विधाओं के समान ही समृद्ध विधाओं के रूप में अपनी पहचान हासिल कर चुका है।

शोधार्थी के शोध का विषय भी हिन्दी साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य का समीक्षात्मक आकलन है लेकिन भारतीय स्तर पर आत्मकथा साहित्य का इतिवृत्त प्रस्तुत करने हेतु भारत में प्रचलित अन्य भाषाओं में रचित एवं प्रसिद्ध हिन्दी में अनुवादित आत्मकथाओं का अध्ययन कर लेना भी उचित रहेगा।

## 1. (क) बंगला से हिन्दी में अनूदित :–

1. 'बंदी जीवन':– श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल, अनुवादक श्री बनारसी दास चतुर्वेदी।
2. 'तरूणाई के सपने:'– श्री सुभाष चन्द्र बोस, अनुवादक श्री छेदीलाल गुप्त।

## 2. (ख) मराठी भाषा से अनूदित :–

1. 'स्मृति के चित्र' (स्मृति चित्र)– लक्ष्मी बाई तिलक अनुवादक– रामचन्द्र रघुनाथ सर्वते
2. 'अभिनेत्री की आपबीती'– हंसा वादकर, अनुवादक श्री विजय बापट

## 3. (ग) गुजराती भाषा से अनूदित :–

1 'सीधी चढ़ान'–श्री के0 एम0 मुंशी, अनुवादक–मंजुला वीर देव

2 'स्वप्न सिद्धी की खोज मे'–श्री के0 एम0 मुंशी, अनुवादक–श्री प्रवासी लाल वर्मा मालवीय

3 'सत्य के प्रयोग'– महात्मा गांधी, अनुवादक–श्री हरिभाऊ उपाध्याय

## 5 (घ) पंजाबी भाषा से अनूदित :–

1 'रसीदी टिकट'– अमृता प्रीतम, अनुवादक–श्री बटुक शंकर नागर

2 'नंगे पैरो का सफर' (नंगे पैरो दा सफर)–दिलीप कौर टिवाणा, अनुवादक–श्री सुदर्शन चौपडा

## 6 (ड.) अंग्रेजीं भाषा से अनूदित :–

1 'मेरा जीवन संघर्ष'(फेस टू फेस)–श्री वेद मेहता, अनुवादक–डा0 शिवकुमार शर्मा

2 'मेरे बचपन की कहानी' (प्रिजन एण्ड चाकलेट केक)–नयनतारा सहगल, अनुवादक–श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

3 'एक क्रांतिकारी की आत्मकथा'–प्रिंस कोपाटकिन, अनुवादक–श्री बनारसी दास चतुर्वेदी

4 'माई स्टोरी'–श्री जवाहर लाल नेहरू, अनुवादक–श्री हरिभाउ उपाध्याय, सहयोगी श्री कृष्ण दत्त पालीवाल, श्री वियोगी हरि

5 'मेरी कहानी'–कमला दास, अनुवादक–श्री सुदर्शन चौपडा

## 5 (च.) उर्दू भाषा से अनूदित :–

1 यादों की बारात– श्री जोश मलीहाबादी

**बंदी जीवन– श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल–** श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल एक प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। इन्होंने क्रांतिकारी संगठन के प्रति युवा वर्ग का ध्यान आकर्षित करने हेतु बंगला भाषा की पत्रिका में एक लेखमाला आरम्भ की थी। यही लेख माला 'बंदी जीवन ' के प्रथम तथा द्वितीय रूप में प्रकट हुई। यह आत्मकथा श्री बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित है।

'बंदी जीवन' में लेखक ने स्वयं की शिक्षा, निवास स्थान, माता पिता का वर्णन आत्मकथा के तृतीय भाग में किया है जबकि क्रांतिकारियों एवं क्रांतिकारी गतिविधियों का वर्णन प्रथम एवं द्वितीय भाग में किया गया है।

क्रांतिकारी गतिविधियों के संचालन हेतु क्रांतिकारियों को संघर्ष के अलावा धनाभाव भी बहुत खलता था। जिसकी कमी की वजह से उन्हें कई बार अपनी योजनाएँ बदलनी पड़ती थी। सरकारी खजाने भी लूटे गये। इस पुस्तक में लेखक ने बहुत सी बातों का मात्र आभास ही दिया है क्योंकि परतंत्र भारत के वातावरण में खुलकर कहना असंभव था यद्यपि प्रथम तथा द्वितीय भाग में लेखक ने व्यक्तिगत बातें बहुत कम कही हैं। परन्तु उन घटनाओं में वे स्वयं भी एक चरित्र के रूप में निहित हैं अतः उनके व्यक्तित्व का परिचय भी मिलता रहता हैं। परतंत्र भारत की परिस्थितियों में अधिक न कहने का अंकुश तो था ही और उस पर घटनाओं का धरातल भी वही परिस्थितियां थीं। जो बातें अस्पष्ट रही उन्हें समय के संदर्भ में समझ पाना पाठक का कार्य हो गया था। लेखक का उद्देश्य अपनें कार्यो को दूसरे व्यक्तियों तक पहुंचाना था। इसमें वे पूर्ण सफल रहें।

इस कृति में लेखक ने जीवन को परखनें की एक से एक नवीन दृष्टियों की रचना की है। उनकी दृष्टि बिन्दु का मुख्य केन्द्र कर्म तथा ज्ञान का संतुलन था और जैसे वे आगे बढ़े कि हिंसा व अहिंसा के द्वन्द्व में पड़कर भी कुछ अशांति भोगी, कठिनाइयों का सामना किया, और भटकन आरंभ हुई, तब कही जाकर कम्यूनिज्म के भौतिकवाद इतिहास की आर्थिक व्याख्या तथा नयी राजनीतिक एवं दार्शनिक उलझनों में पड़कर जीवन में एक नयी जटिल समस्या उत्पन्न हुई। कम्यूनिजम के सिद्धान्त की कुछ बातें अस्वीकार करते हुए भी उसमें संस्पर्श से एक महान आदर्श की प्रेरणा का अनुभव इस कृति से प्राप्त होता है। पुस्तक सार्थक तथा रोचक है। अपने स्वतंत्र रूप में भी एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

**अभिनेत्री की आपबीती – हंसा वाडकरः–** हंसा वाडकर एक सफल तथा लोकप्रिय अभिनेत्री रही है। इन्होंने हिन्दी तथा मराठी फिल्मों में अभिनय किया है। इन्होंने अपनी आत्मकथा मराठी भाषा में 'सांगत्ये एका' नाम से लिखी है जिसे पढ़कर पाठक इस ऊपरी चकाचौंध की दुनिया से रूबरू होता है जिससे इस दुनिया के प्रति जो भी भ्रम होता है, वह दूर हो जाता हैं कि एक कलाकार जो पर्दे पर दिखाई देता है उसका निजी जीवन कितना संघर्ष पूर्ण एवं दुख दायी है।

हंसा का जीवन मुख्यतः एक व्यावसायिक स्त्री का था परन्तु उनकी आत्मकथा में उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक तथा सामाजिक अनेक पक्षों के सजीव चित्र उभरते हैं । जीवन में होने वाले छोटे से छोटे अनुभव, घुटन, पीड़ा, अत्याचार आदि को लेखिका ने बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है। सूक्ष्म से सूक्ष्म अनुभूति का वर्णन किया गया है।

हंसा जी ने आत्मकथा के तत्त्वों, लक्षणों का निर्वाह करते हुए ईमानदारी, तटस्थता के साथ अपनी आत्मकथा प्रस्तुत की है। इसमें अभिनेत्री ने अपने जीवन की उन सच्चाइयों को उजागर किया है, जिसे एक स्त्री जीवन पर्यन्त किसी से नही कह पाती हैं, कोई भी स्त्री बलात्कार जैसी घटनाओं को खुली अभिव्यक्ति देना पंसद नहीं करेगी । लेकिन अभिनेत्री को अपने जीवन में जो शारीरिक यातनाएँ भोगनी पड़ीं उनका चित्रण भी बेबाकी से किया गया है।

इस कला की सेवा के आकर्षण में ही लेखिका ने इतना सब सहा। इस कृति में लेखिका ने जीवन पथ में आने वाली हर परीक्षा को एक खरी कसौटी पर उतारने का प्रयत्न किया है, जिसमें वे भाव, क्षमता तथा भाषा की दृष्टि से पूर्णतया सफल हुई है।

हंसा जी की आत्मकथा में एक विशेष गति तथा रोचकता है। कृति की मूल भाषा की पारदर्शिता तथा संप्रेषणीयता के दर्शन अनुवाद में भी होते हैं। यह कृति आकार में छोटी है लेकिन जीवन दर्शन के विभिन्न दृष्टिकोणों को परखा जा सकता है। एकदम निर्द्वन्द्व और निस्पृह होकर उन्होंने इस क्षेत्र के अंतर्गत भविष्य में आने वाले लोगों के लिए एक विकट समस्या हल करने का रास्ता खोल दिया है।

**सत्य के प्रयोगः— महात्मा गांधीः—**भारतीय लेखकों की अनूदित कृतियों में सर्वश्रेष्ठ कहलाने की अधिकारिणी आत्मकथा हिन्दी में अनूदित होकर प्रारम्भिक काल में प्रकाशित भी हुई । हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा अनूदित महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' शीर्षक से सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन से प्रकाशित हुई । इसके पश्चात् काशीनाथ त्रिवेदी ने नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद से एक संस्करण छपवाया था।

महात्मा गांधी की आत्मकथा मूलतः गुजराती में लिखी गई थी लेकिन अद्वितीय लोकप्रियता के पायदान पर स्थापित होने के पश्चात् संसार की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ।

महात्मा गांधी की आत्मकथा 1926 में गुजराती में और 1927 में हिन्दी में प्रथम बार प्रकाशित हुई। आत्मकथा के शीर्षक 'सत्य के प्रयोग' से भी यह प्रतीति स्पष्टतः होती हैं कि लेखक अपने जीवन को प्रयोग स्थल बनाकर उस पर अनेक परिस्थितियों में बार–बार नये परीक्षण करके, उनके परिणाम संसार के सामने रखने की चेष्टा कर रहा है । जब सत्य के ही प्रयोग स्पष्ट करने हो तो उनमें किसी प्रकार का दुराव छिपाव असह्य होता है अतः इसमें छोटी से छोटी, घृणित, लज्जा, अपमान या आत्मग्लानि से सम्बन्धित घटना को भी छिपाया नहीं गया है। सत्य की व्याख्या भी उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है–

"मेरे मन में सत्य ही सर्वोपरि हैं" और उसमें अगणित वस्तुओं का समावेश हो जाता है। इसमें सत्य से भिन्न माने जाने वाले अहिंसा ब्रह्मचर्य इत्यादि के प्रयोग भी आ

जायेंगे। यह सत्य स्थूल वाचक सत्य नहीं है। यह तो वाणी की तरह विचार का भी है। यह सत्य केवल हमारा कल्पित सत्य ही नहीं बल्कि स्वतंत्र चिरस्थायी सत्य है, अर्थात परमेश्वर ही हैं '' – 4

''प्रयोगशाला की स्थिति इस प्रकार वर्णित की गई हैं'' पुजारी तो मैं सत्य रूपी परमेश्वर का ही हूँ। यह सत्य मुझे मिला नहीं है, लेकिन मैं इसका शोधक हूँ। इस शोध के लिये में अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु त्यागने को तैयार हूँ।'' – 5

अभिमान शून्यता, सरलता, विनीतता एवं अकिंचनता के भाव इस आत्मकथा में इसलिए भी अनिवार्यतः आ गये हैं क्योंकि लेखक इन्हीं के सहारे अपने प्रयोगों को आगे बढ़ा सका। इसलिये लेखक ने अपने परीक्षण–परिणामों की निर्दोषता का भी दावा नहीं किया।

''मैंने खूब आत्मनिरीक्षण किया है, एक, एक भाव की जांच की हैं, उसका पृथक्करण किया हैं, किन्तु उसमें से निकाले हुए परिणाम सबके लिये अंतिम ही हैं, वे सच हैं अथवा वे ही सच हैं ऐसा दावा मैं भी करना नहीं चाहता।'' – 6

महात्मा गांधी की आत्मकथा कुल पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में परम्परानुसार वंश परिचय, शैशव, जन्म, बाल विवाह, शिक्षा, वकालत की शिक्षा तथा वापसी का वर्णन है। द्वितीय में वकालत के प्रयोग, भारत में असफलता, दक्षिण अफ्रीका गमन, नेपाल में बसना, तथा वापसी का वर्णन है। तीसरे और चौथे भाग में राष्ट्रीय समस्याओं में कूदना, पारिवारिक उत्तरदायित्व, दक्षिण अफ्रीका में सक्रिय संघर्ष, फिनिक्स आश्रम की स्थापना, गोखले से सम्बन्ध आदि प्रसंग मिले जुले हैं। पांचवें भाग में लेखक द्वारा भारतीय समस्याओं का अध्ययन तथा सार्वजनिक जीवन में प्रथम प्रवेश का चित्रण हैं। इससे पूर्व दक्षिण अफ्रीका संघर्ष के अनुभवों की समृद्धि को लेकर वे संघर्ष कुशल हो चुके थे। प्रारम्भ में वे काग्रेंस में अपने को छोटा पाते थे। संघर्ष एवं अनुपम गुणों ने उन्हें सर्वोपरि बना दिया। अछूतोद्धार, स्वदेशी आंदोलन, स्वावलम्बन, सादगी, सत्याग्रह व अहिंसा, आदि के प्रचार द्वारा वे लोकप्रिय हो चुके थे। अमृतसर की कांग्रेस के समय से उन्होंने दृढ़ता के साथ कांग्रेस पार्टी में प्रवेश किया। असहयोग आंदोलन के साथ पूर्ण स्वराज्य के संकल्प का नारा देना उनके जीवन की ऐसी सफलता थी कि इससें वे खुलकर सार्वजनिक जीवन में आ गये।

**रसीदी टिकट– अमृता प्रीतमः–**पंजाबी कवयित्री अमृता प्रीतम ने अपनी आत्मकथा पंजाबी भाषा में लिखी। इसका अनुवाद 1977 ई. में बटुक शंकर भटनागर ने किया और यह पराग प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई। साहस पूर्वक आत्म सत्यों का उद्‌घाटन इस रचना में विशेषतः हुआ है। 'साहिर' और 'इमरोज' के साथ परकीय प्रणय सम्बन्धों की भावुकता पूर्ण अभिव्यक्ति के समय लेखिका स्वयं द्रवित हो उठती हैं । लेखिका ने अपने जीवन के विभिन्न सत्यों को बेबाकी से प्रस्तुत किया है । लेखिका ने अपनी सृजनात्मक कृतियों के निर्माण एवं पृष्ठभूमि का विश्लेषण एवं विवेचन किया है । यही इस आत्मकथा का श्रेष्ठ पक्ष है। लेखिका ने अपनी कृति को 'यथार्थ से यथार्थ' तक पहुंचने की प्रक्रिया बताया है। लेखिका ने आत्मकथा के तत्त्वों का निर्वाह करते हुये आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्लेषण का भी सुन्दर प्रयास किया है।

''यूं तो मेरे भीतर की औरत सदा मेरे भीतर के लेखक से दूसरे स्थान रही है......कई बार यहां तक कि मैं अपने भीतर की औरत का अपने आपको ध्यान दिलाती रही हूँ। 'सिर्फ लेखक' का रूप सदा इतना उजागर होता है कि मेरी अपनी आँखों को भी पहचान उसी में मिलती हैं'' – 7

लेखिका ने अपने औरत रूप से लेखक के रूप को अधिक महत्त्व दिया है। लेखिका के रूप पर औरत के रूप को हावी नहीं होने दिया है। पुस्तकान्त में लेखिका ने स्वयं अपनी कृति की उपयुक्त समीक्षा भी की है–

''केवल इस पार के किनारे का यथार्थ, जैसे कला की नदी को चीर कर, उस पार के किनारे का यथार्थ बनता है, वह प्रक्रिया इस आत्मकथा में भी है। यह रचना की अपनी प्रक्रिया हैं'' – 8

अनेक दृष्टियों से यह साहित्य की एक विशिष्ट रोमांचक आत्मकथा हैं।

**जवाहर लाल नेहरू – मेरी कहानीः–** स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा अंग्रेजी में ''माई स्टोरी'' के नाम से लिखी एवं बाद में इसका अनुवाद हरिभाऊ उपाध्याय ने कृष्णदत्त पालीवाल तथा वियोगी हरि आदि

के सहयोग से किया। महात्मा गांधी की आत्मकथा के समान ही यह आत्मकथा भी काफी लोकप्रिय हुई। 850 पृष्ठों की इस आत्मकथा को लेखक ने 70 अध्यायो में बांटा है। इस आत्मकथा में वंश परिचय के पश्चात् पिताजी के बारे में वर्णन किया गया है। उसके पश्चात् लेखक ने बचपन का वर्णन करते हुए लिखा हैं कि–

''मगर इन तमाम उत्सवों में मुझे एक सालाना जलसे में ज्यादा दिलचस्पी रहती, जिसका खास मुझी से ताल्लुक था–यानी मेरी वर्ष गांठ का उत्सव। इस दिन मैं बड़े उत्साह और रंग में रहता था। सुबह ही मैं एक बड़ी तराजू में गेहूँ और दूसरी चीजों के थैलों से तोला जाता और फिर वे चीजें गरीबों को बांट दी जाती और बाद को नये–नये कपड़ों से सजा धजा कर मुझे भेंट और तोहफे नजर किये जाते फिर शाम को दावत दी जाती। उस दिन का मानो, मैं राजा ही हो जाता ''–9

आत्मकथा में लेखक ने अपने लोक विश्रुत कश्मीरी घराने तथा दादा परदादा के दिव्य गुणों का वर्णन करके प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा राष्ट्रनेता मोतीलाल का वर्णन आदर भाव के साथ किया है जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव लेखक पर सर्वाधिक पड़ा। अपने जन्म से लेकर दूसरी नैनी जेल यात्रा तक का वर्णन किया है तथा परिशिष्ठों में 1935 तक की घटनाओं का वर्णन है। इस आत्मकथा का अधिकांश भाग जेलों में लिखा गया है । लेखक ने विनीतता वश लिखा है–

''मेरी यें जीवन घटनाएँ शायद बहुत अधिक रोमांचकारी नहीं हैं कई वर्षो का जेल निवास शायद साहसिक कार्य नहीं कहा जा सकता है ''–10

आत्मविश्लेषण तथा आत्मपरीक्षण का आश्रय ग्रहण करते हुये लेखक ने तथ्यात्मक घटनाओं को बहुधा चिन्तन प्रधान तथा दार्शनिक उच्च एवं विशिष्ट व्यक्तित्व के समान ही उनकी यह आत्मकथा भी चिरकाल तक लोक मानव को प्रभावित करती रहेंगी तथा भावी आत्मकथाकारों का मार्गदर्शन करेगी।

**<u>यादों की बारात – जोश मलीहाबादीः–</u>** जोश मलीहाबादी उर्दू के प्रसिद्ध शायर रहे है। 'यादों की बारात' उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा का संक्षिप्त रूप है। हिन्दुस्तान में वे एक उर्दू पत्रिका 'आजकल' का सम्पादन करते थे। यह पुस्तक जोश साहब ने अपने जीवन की पिचहत्तर वर्ष की अवस्था में लिखी।

जोश साहब लखनऊ से तेरह मील दूर मलीहाबाद के रहने वाले थे। उन्होंने हवेली के भीतर के बहुत से चित्र इस पुस्तक में खींचे हैं । उनकी बेधड़क भाषा ने कृति में पूरा प्रभाव जमाया है। शेरो, शायरी लिखने की प्रेरणा कहां से मिली तथा शायरी क्या चीज है, का वर्णन भी विस्तार से किया गया है। जोश साहब स्वाभिमानी इन्सान थे। उन्होंनें कम तनख्वाह में गुजारा किया लेकिन अपनी कलम नही बेची।

जोश साहब को राष्ट्रीय आंदोलनों से भी अत्यंत लगाव रहा। उन्होंने राजनीति के कई रंग बदलतें देखें परन्तु अपनी कलम के दम से उन्होंने बहुत शोहरत पायी। बाद में कुछ समय फिल्मी दुनिया में भी गुजारा। जोश की इस आत्मकथा में उनके जीवन के बचपन से लेकर पिचहत्तर वर्ष की आयु के चित्र संकलित हैं। लेखक ने स्वीकार किया हैं कि उनकी याद्दाश्त में आगे की घटनायें पीछे और पीछे की घटनायें आगे हो गयी हैं; फिर भी जिस मार्मिकता और फक्कड़पन से घटनाओं को प्रस्तुत किया है प्रशंसनीय हैं।

## (स) हिन्दी का आत्मकथा–साहित्य–अर्द्धकथानक से अद्यतन

**अर्द्धकथानक से अद्यतनः–** 'अर्द्धकथानक ' जैन कवि बनारसी दास का जीवन वृत्त हैं जो 1641 ई. में लिखा गया था। इसके पठन से ज्ञात होता है कि यह आत्मकथा लेखक ने प्रायश्चित एवं पश्चाताप स्वरूप लिखी है। श्री नाथूराम प्रेमी ने सन् 1943 ई. में उसे प्रकाशित करके साहित्य जगत को आश्चर्यचकित कर दिया था। क्योंकि इससे पूर्व तो यह कृति जैन ग्रन्थागारों की शोभा को बढ़ा रही थी। स्वरचित एवं लिखित होने के उपरान्त भी प्रकाशन से वंचित रहने के कारण साहित्य जगत की पहुंच से बाहर थी तभी तो इसके प्रकाशन के पश्चात् ही मनीषियों को ज्ञात हुआ कि हिन्दी साहित्य में आत्मकथा का उद्भव आधुनिक काल में ही नही बल्कि 1641 ई. में ही हो गया था। इसमें कवि ने आत्मकथा के तत्त्वों, लक्षणों का निर्वाह किया है। यह पद्यात्मक रूप में लिखी गई है जिसमें कवि ने अपने गुण दोष, वंश, जन्म, असफल व्यापारी, सफल कवि, एवं व्यावहारिक मनुष्य होने का वर्णन किया हैं। बनारसी दास ने मानव की आयु लगभग 110 वर्ष मानकर 55 वर्ष की आयु में अपने आधे जीवन का वर्णन इसमें किया है। 675 दोहों और चौपाइयों में अपने जीवन के सारे अनुभव लेखक ने इस आत्मकथा में प्रस्तुत किये है। एक के बाद एक तीन पत्नियों तथा नौ संतानों की मृत्यु से क्षुब्ध होकर अपनी परिस्थिति को लेखक ने इस तरह कलमबद्ध किया हैं।

"" नौ बालक हुए मुए, रहैं नारि नर दोई।

ज्यो तरवर पतझार हैं, रहैं ठूंठ से होई।।" – 11

वस्तुतः इस कृति में समाज, इतिहास, युग और स्वानुभूतियों का स्पष्ट और मार्मिक चित्रण हुआ है। सभी पक्ष जिस प्रकार प्रकाशित हुए है उसकी प्रभावान्विति इस कृति को महत्वपूर्ण कृति बना देनें में समर्थ हुई है।

सन् 1641 ई. के पश्चात् 1875 ई. में **महर्षि दयानन्द की आत्मकथा** प्राप्त होती है। पूना नगर की भाषण माला के अन्तिम दिन जनता के अनुरोध पर स्वामी दयानन्द ने अपने जन्म से लेकर आत्मकथा वर्णन के दिन तक की घटनाओं का उल्लेख अपने श्रीमुख से किया था। कुछ लिपिकों ने उसे लिपिबद्ध किया। यह जीवन चरित्र प्रारम्भ में उर्दू में लिखा गया और इसका अनुवाद महोपदेशक श्री कविराज रघुनन्दन सिंह निर्मल ने किया। संपादन का कार्य पण्डित हरिशचन्द्र विद्या अलंकार ने किया। ये पुस्तक आर्य समाज, नयाबाँस, दिल्ली–6 से सवंत 2028 विक्रमी में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के द्वितीय अध्याय में स्वामी जी के स्वकथित जीवन वृत्त के 24 पृष्ठ संग्रहित है, जिससे उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का परिचय प्राप्त होता है। इन्हीं 24 पृष्ठों को उनकी आत्मकथा का अंश माना जा सकता है। इस जीवन चरित्र में जो 24 पृष्ठ आत्मकथात्मक है वे भी महर्षि ने नहीं लिखे हैं किन्तु वे स्वकथित अवश्य है इसलिये इस प्रसंग में इस जीवन वृत्त का उल्लेंख किया जा रहा है। स्वामीजी की आत्मकथा के 24 पृष्ठ उनके जीवन पर पड़ने वाले नाना प्रभावों और परिवर्तनों की सही पीठिका को प्रस्तुत करते हैं।

बहन व चाचा की मृत्यु ने उन्हें विशेष रूप से खामोश कर दिया व उन्हें वैराग्य वृत्ति की ओर अग्रसर किया। विवेक विरोधी जड़ परम्पराओं को ये स्वीकार न कर सके। इस आत्मकथात्मक अंश से स्वामी जी के व्यक्तित्व का भव्य चित्रण प्रस्तुत होता है जैसे कि द्रव्य एवं गृहस्थ आश्रम के प्रगति अनासक्ति, मूर्ति पूजा में अनास्था, योग और अध्यात्म के प्रति आस्था यें सब मिलकर उनके जीवन की उपलब्धियों का चित्रण करते हैं।

**भारतेन्दु हरिश्चन्द्रः–** आधुनिक हिन्दी गद्य काल के जनक, उन्नायक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य में उस भास्कर के समान उदित हुए जिनकी आभा की रश्मियों ने साहित्य की विभिन्न विधाओं का रूप धारण किया। लेकिन आत्मकथा के क्षेत्र में कोई

विशिष्ट योगदान साहित्य को प्रदान नहीं कर सके। उम्र के जिस पड़ाव पर लेखक आत्मकथा की ओर अग्रसर होता है उस पड़ाव तक तो यशस्वी लेखक पहुँच ही नहीं पाये थे। आत्मकथा के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द के पूना व्याख्यान के कुछ वर्षो बाद 1876 ई. में 'कवि वचन सुधा' पत्रिका के माध्यम से उन्होंने केवल दो पृष्ठों में अपने विषय में कुछ कहना प्रारम्भ किया जिसमें केवल कुछ मित्रों के साथ एक दिन का अधूरा सा परिसंवाद हैं। इनकी आत्मकथा के सम्बन्ध में सिर्फ यही उल्लेख मिलता है।

**अम्बिकादत्त व्यासः–** भारतेन्दु काल के प्रसिद्ध लेखक अम्बिकादत्त व्यास ने अपनी आत्मकथा 'निज वृत्तान्त' नाम से लिखी है। जिसमें लेखक के 18 वर्षो के जीवन का लेखा है। यह पुस्तक 1901 ई0 में प्रकाशित रूप में पाठकों के सम्मुख प्रकट हुई।

इस आत्मकथा में लेखक ने अपने वंश, जन्म, बाल्यकाल, शिक्षा, जीवन संघर्ष, लेखक जीवन का वर्णन प्रस्तुत किया है। विस्तृत वर्णन आगामी पर्व में किया गया है।

**सत्यानन्द अग्निहोत्री – मुझमें देव जीवन का विकासः–**आर्यसमाज के प्रचारक सत्यानन्द अग्निहोत्री ने अपना आत्मचरित्र 'मुझमें देव जीवन का विकास' शीर्षक से लिखा है जो आत्मकथा कम एवं उपदेश अधिक प्रतीत होता है। लेखक ने स्वयं को अवतार सिद्ध करने की चेष्टा में चमत्कारिक शक्तियों का प्रदर्शन किया। इसमें वैदिक विचारधारा का खण्डन करके अपने वैज्ञानिक बोध का दम्भ भरने की कोशिश की गई है अतः इस कृति को स्तरीय आत्मकथा कहना कठिन है।

**भाई परमानन्द – आपबीती**–आर्यसमाजी भाई परमानन्द की आत्मकथा 1921 ई. में भाई परमानन्द की आपबीती राजपाल सरस्वती आश्रम लाहौर से प्रकाशित हुई। जिसमें लेखक ने शिक्षाप्राप्ति, आर्य समाज से सम्बन्ध, डी.ए.वी. संस्थाओं की सेवा, विवाह, अफ्रीका प्रवास, अमेरिका, न्यूयार्क, गायना की यात्रा आदि का वर्णन किया है। लेखक के जीवन के तीस वर्षो का वर्णन है। जिसमें लम्बी जेल यात्रा, काले पानी की सजा के दौरान विविध कष्टों के अनुभवों का वर्णन किया है। पुस्तक की भाषाशैली सरल, सरस, रोचक, प्रवाहशील, प्रभावपूर्ण और ऐतिहासिक है। कालक्रम की दृष्टि से भी इस रचना को 'हिन्दी की महत्वपूर्ण आत्मकथा' का स्थान प्राप्त है।

**भवानी दयाल सन्यासी–हमारी कारावास कहानीः–** भारतीय देशभक्तों की कारावास कहानी प्रसिद्ध आर्यसमाजी एवं हिन्दी सेवक भवानी दयाल सन्यासी ने अपनी

जेल यात्रा के अनुभव को "हमारी कारावास कहानी" के नाम से 1918 ई. में प्रकाशित करवाया। यह इनकी मौलिक कृति थी। जिसमें लेखक ने प्रवासी भारतीयों द्वारा दक्षिण अफ्रीका में किये गये संघर्ष, हिन्दी सेवा, बलिदानों की कथा कही गई है। 1921 ई. में श्री झाबरमल्ल के सुप्रयास से 25 देशभक्तों की जेल कथाएँ 'भारतीय देशभक्तों की कारावास कहानी' के अन्तर्गत लेखक के कारावास की कहानी के अंश बहुत कुछ आत्मकथा का आभास देते हैं। विस्तृत वर्णन आगामी पर्व में किया गया है।

**प्रताप नारायण मिश्रः—** आधुनिक काल के प्रमुख साहित्यकार प्रताप नारायण मिश्र ने आत्मकथा लिखने की राह में कदम तो बढ़ाया लेकिन इससे ज्यादा साहित्य का उपकार नही कर सके क्योंकि आत्मकथा लेखन में 'भूमिका' से आगे बढ़ नहीं पाये यदि उन्हें आगे लिखने का अवसर मिलता तो शायद आत्मकथा के रूप में एक अच्छी कृति साहित्य को उपलब्ध करा जाते।

**राधाचरण गोस्वामीः—** भारतेन्दु युग के प्रमुख हस्ताक्षर राधाचरण गोस्वामी ने अपने आत्मचरित को श्राधाचरण गोस्वामी का जीवन चरितश शीर्षक दिया था। इसमें भारतेन्दु युग की प्रवृतियों का वर्णन मिलता हैं। कुल बारह पृष्ठों की निबंधाकार कृति में आत्मवृत्तांत तो कम और युग की प्रवृतियों का वर्णन अधिक किया गया हैं। यह आत्मचरित सन् 1905 में मथुरा प्रेस मथुरा से प्रकाशित हुआ था।

**बालमुकुन्द गुप्त :—**बालमुकुन्द गुप्त ने भी सन् 1913 में 'आत्मकथात्मक निबंध' शीर्षक से संक्षिप्त आत्मपरिचय प्रस्तुत किया है।

**श्रीधर पाठकः—** हिन्दी साहित्य के छायावादी कवि लेखक श्रीधर पाठक की रचना 'स्वजीवनी' माधुरी पत्रिका में सन् 1927 में प्रकाशित हुई। जिसमें लेखक का जन्म, कुल आदि का परिचय दिया है, लेकिन हिन्दी के उच्च कोटि के शब्दों के साथ मनोमुग्धकारी शैली मंत्रमुग्ध करती है।

**वृन्दावन लाल वर्माः—** 'विशाल भारत' पत्रिका में सन् 1929 में श्री वृन्दावन लाल वर्मा के आत्म संस्मरण छपे जिनमें संक्षिप्त सा आत्मचित्रण था लेकिन जीवन के उत्तरार्ध में विस्तृत सम्पूर्ण आत्मकथा भी लिखी।

**<u>इलाचन्द जोशीः–</u>** "**सु**धा" पत्रिका में 1929 ई. में इलाचन्द जोशी की 'मेरे जीवन की प्राथमिक स्मृतियाँ' प्रकाशित हुई थी जो कि संक्षिप्त आत्मकथा थी।

**<u>आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीः–</u>** द्विवेदी युग के महान निर्माता, खड़ी बोली के परिमार्जक, आचार्य महावीर प्रसाद के द्वारा आत्मकथा लेखन के विषय में सूचना तो कम मिलती हैं लेकिन निर्मल तलावार द्वारा सम्पादित 'आचार्य द्विवेदी' पुस्तक में 'मेरी जीवन रेखा' नाम से केवल पांच पृष्ठों का आत्मवृंत्तात प्रकाशित हुआ है। प्रभात शास्त्री द्वारा संचयन में भी इसका समावेश है। सन् 1939 में नवशक्ति पटना के सम्पादक देवव्रत ने 'साहित्यकारों की आत्मकथा' के प्रारम्भ में 'जीवन गाथा' शीर्षक से 19 पृष्ठों का प्रसंग प्रकाशित किया था, इसके दसवें पृष्ठ के प्रारम्भ से अन्तिम पृष्ठ की नौ पंक्तियों से पूर्व तक का उद्धरण श्री सुमन ने अविकल रूप से उद्धृत किया है। केवल अभिभाषक द्वारा संक्षिप्त आत्मकथा कहने का यह तृतीय उदाहरण है। इससे पूर्व स्वामी दयानन्द एवं विवेकानन्द के आत्मविषयक व्याख्यान प्रकाशित हो चुके थे।

**<u>मुंशी प्रेमचन्द – जीवन सारः–</u>** हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु ने गद्य विधाओं के विकास में एवं द्विवेदी जी ने खड़ी बोली प्रतिष्ठित करने में योगदान दिया था। उसी तरह मुंशी प्रेमचन्द ने आत्मकथा को विकास पथ पर अग्रसर करने के पथ प्रदर्शक के रूप में हंस पत्रिका में "आत्मकथांक" प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। जिसने आत्मकथा विधा को विशेष सम्बल प्रदान किया। इसी अंक के माध्यम से मुंशी जी ने अपनी संक्षिप्त आत्मकथा 'जीवनसार' लिखी जिसमें लेखक ने अपने जीवन के संघर्ष के अभाव के साथ–साथ लेखकीय जीवन का परिचय भी प्रस्तुत किया है।

कुछ काल बाद सन् 1939 में श्री देवव्रत ने "साहित्यकारों की आत्मकथा" पुस्तक में जीवन सार संकलित करते हुए 'मेरी पहली रचना' शीर्षक आत्मकथात्मक निबंध की भी वृद्धि की जिसमें प्रेमचन्द ने अपने दूर के मामू की चमारिन पर आशिक होकर पिटने की कहानी को नाटक रूप में लिखकर 'मामू' को लज्जित किया था। संक्षिप्त होकर भी यह आत्मकथा उत्तम कोटि की है। भाषा की जादूगरी का अनुपम उदाहरण है।

**<u>हंस का आत्मकथांकः–</u>** इस आत्मकथा अंक के माध्यम सें साहित्यकारों को अपनें दिल की बात पाठकों से साझा करने का एक मंच मिल गया था। इसी क्रम में वैद्य

ठाकुरदत्त शर्मा की 'आत्मकथा' तथा वैद्य हरिदास व श्री गया प्रसाद श्री हरि की 'मेरी आत्मकथा' शीर्षक से लघु रचनाएँ छपी थी। कथाकार विनोद शंकर व्यास ने 'मैं' शीर्षक रचना से प्रकाशित करवाया। अन्नपूर्णा ने 'कल की बात' विश्म्भर नाथ शर्मा कौशिक ने 'मेरा यह बाल्यकाल' में अपने बाल्यकाल का वर्णन किया है। मौलवी महेश प्रसाद ने 'मेरी जीवन गाथा' में अपने व्यक्तित्व का चित्रण किया। 'जमाना' पत्र के सम्पादक दयानारायण निगम ने 'मेरे जीवन का एक अनुभव' लिखा। स्वामी आनन्द भिक्षु ने 'अपनी बात' तथा धनीराम प्रेम ने 'मेरा साहित्यिक जीवन' तथा धीरेन्द्र वर्मा की 'डायरी के कुछ पृष्ठ' एवं जैनेन्द्र के 'कश्मीर प्रवास के दो अनुभव' शैली की दृष्टि से आकर्षक था। गोपाल राम गहमरी, महाप्रसाद गहमरी, राधेश्याम कथावाचक, बद्रीनाथ भट्ट आदि की रचनाओं में भी आत्मकथा के अंश थे। इसके अतिरिक्त शिवपूजन सहाय ने ''मतवाला कैसे निकला '' शीर्षक से मतवाला के प्रारम्भ होने की योजना को अत्यंत रोचक शैली में प्रस्तुत किया। सुदर्शन की रचना ''एक चित्र दो आकृति'' उनके द्वारा आचरित् सपत्नीक त्रिदिवसीय उपवास की कहानी है।

इसी क्रम में ''एक बात मेरी भी'' रमाशंकर अवस्थी के आत्मीय अनुभव तथा सदगुरूशरण अवस्थी के ''दरिद्र दर्पण'' अनुभव भी प्रकाशित हुए। मनोरंजन प्रसाद, लक्ष्मीधर वाजपेयी, आदि लेखकों के आत्मपरक लेख भी प्रकाशित हुए। श्री राम शर्मा का ''बोल्ड फोर्स कैसे मिला'' और श्रीनाथ सिंह का ''मैं मौत के मुँह से बाहर लौट आया हूँ'' रहस्यात्मकता का पुट लिये हुए है। जगन्नाथ खन्ना की ''मेरी विचित्र कहानी'' वृहदायामी होने के कारण हंस में धारावाहिक रूप में प्रकाशित लम्बे समय तक प्रकाशित हुई थी।

इस प्रकार प्रेमचन्द ने 'हंस' का आत्मकथांक प्रकाशित कर आत्मकथा लेखन को एक नवीन मोड़ प्रदान किया। हिन्दी के साहित्यकार भी खुलकर आत्मकथा लिखने लगे।

हंस के आत्मकथांक के पश्चात् लघुआत्मकथा लिखने का क्रम चल पड़ा। अनेक पत्र–पत्रिकाओं में आत्मकथात्मक साहित्य छपने के अतिरिक्त कुछ संक्षिप्त कृतियाँ व लघु आत्मकथाओं के संग्रह भी सामने आए जैसे देवदत्त शास्त्री की "साहित्यकारों की आत्मकथा" तथा महावीर प्रसाद अग्रवाल की "कुछ आत्मकथाएँ" हीरानन्द शास्त्री की "आत्मकथा के कुछ पन्ने" सन् 1935 ई. में प्रकाशित हुई। मन्मथ नाथ गुप्त की पुस्तक "क्रांतियुग के संस्मरण" में काकोरी के शहीदों का वर्णन ही अधिक हुआ है। प्रो0 अक्षयवट

मिश्र ने गद्य पद्य मिश्रित शैली में आत्मचरित चम्पू लिखा। जो 1939 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसमें बाल्यकाल, शिक्षा, व्यवसाय तथा कलकत्ता में निवास आदि पर पृथक् अध्याय लिखे हैं।सन् 1939 में नवशक्ति प्रकाशन मन्दिर पटना से 110 पृष्ठों की "साहित्यकारों की आत्मकथा" प्रकाशित हुई। जिसमें आ0 महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचन्द, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, कृष्ण दत्त पालीवाल तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पाँचो की लघु आत्मकथाएँ संग्रहित थी एवं इनका सम्पादन देवदत्त शास्त्री ने किया था। अम्बिका प्रसाद वाजपेयी की आत्मकथा 18 पृष्ठों में लिखी गई। जिसमें लेखक ने वंश परम्परा से प्रारम्भ कर के 'नृसिंह' मासिक, 'भारतमित्र' दैनिक प्रारम्भ करने तथा स्वतंत्र पत्र जारी करने का अध्यापन, लेखन, शिक्षा वृद्धि और सम्पादनादि कार्य साथ साथ चले।

श्री कृष्णदत्त पालीवाल ने 19 पृष्ठों में 35 वर्ष का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत किया एवं बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' ने तीस पृष्ठों में "मेरी अपनी बात" शीर्षक से रोचक और व्यंग्य विनोदात्मक शैली में संक्षिप्त आत्मकथा लिखी जिसमें लेखक का निर्धनावस्था से उठकर साहित्य और राजनीति के शिखर तक पहुंचना एक कठोर साधना और सुदृढ़ अध्याय की कथा है। यह लघु आत्मकथा व्यंग्य विनोद पूर्ण, तथ्यात्मक, विनम्रतापूर्ण तथा प्रेरणास्पद है।

**डॉ0 श्याम सुन्दर दास :–** नागरी प्रचारणी सभा प्राणाधार श्री श्याम सुन्दर दास की आत्मकथा 'मेरी आत्म कहानी' सितम्बर 1940 से 1941 तक धारावाहिक रूप में हिन्दी साहित्य की प्राणदायिनी पत्रिका 'सरस्वती' मे 13 मास तक प्रकाशित होती रही तत्पश्चात् इसका प्रथम संस्करण इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।

इस आत्मकथा में निजी जीवन की बहुत ही संक्षिप्त झाँकी है एवं हिन्दी साहित्य की संस्था को समर्पित व्यक्ति का रूप अधिक उभरकर सामने आया है। कुल 284 पृष्ठ की आत्मकथा में प्रारम्भ के 20 पृष्ठों में वंश परिचय, शिक्षा, विवाह आदि का वर्णन हैं। बीच में कहीं कहीं पारिवारिक घटनाओं का उल्लेख है। लगभग 250 पृष्ठों में नागरी प्रचारिणी सभा से सम्बंधित वर्णन परिव्याप्त है। लेखक ने आत्मविश्लेषण तो किया है लेकिन वे आत्म निरीक्षण नहीं कर पाये। गहन, अध्ययन, मनन करने पर इस कृति पर अनात्म केन्द्रित होने का दोष लगाया जा सकता है क्योंकि लेखक समर्पण के फेर में अपने आत्म को पूरी तरह नही उभार पाये हैं। जिससे यह आत्मकथा रोचक न होकर अत्यंत शुष्क सी बनकर रह गयी है। इस आत्मकथा में कहीं कहीं सूक्ष्म आय व्यय

विवरणों की भरमार, पाण्डु लिपियों की सूचियां, पुस्तक प्रकाशन के प्रसंग रोचकता व सरसता में बाधक बनते हैं।

अंततः आत्मकथा में तटस्थता, यथार्थशीलता, तथ्यात्मकता, निर्भीकता व स्पष्टता आदि गुणों से युक्त होने से यह आत्मकथा प्रशंसनीय हैं।

**बाबू गुलाबराय–** "मेरी असफलताएँ" हिन्दी साहित्य के विशिष्ट, प्रख्यात साहित्यकार एवं आचार्य बाबू गुलाब राय ने आत्म विश्लेषण करते हुए स्वयं पर हंसते हुए निबंध शैली में संस्मरणात्मक रूप में अपनी आत्मकथा 'मेरी असफलताएँ' के माध्यम से पाठकों के सम्मुख अवतरित हुए। सन् 1941 ई0 से लेकर अब तक इस कृति के तीन संस्करण प्रकाश में आ चुके हैं, जिसमें तृतीय संस्करण में लेखक ने इसे आत्मचरित्र कहा हैं क्योंकि आत्मविश्लेषण करते हुए लेखक के व्यक्तिव का पूर्ण तथा खुले ढंग से उद्घाटन इस कृति में हुआ है। तृतीय संस्करण की भूमिका में लेखक ने लिखा है–

''इस पुस्तक में मेरा आत्मचरित्र है इसमें चाहे मेरी असफलताएँ ही क्यों न हो इसका संबंध मेरे अहं से है''

आत्मकथा को प्रारम्भ में जन्म माता पिता घर के अनुशासन तथा उसके धार्मिक वातावरण का वर्णन किया गया हैं उसके पश्चात् छत्रपुर राज्य में सेवाकार्य, मकान ढूढने, बनवानें, जलमग्न होने तथा व्यापार की असफलताओं व आगरे की बाढ आदि का सजीव एवं धार्मिक चित्रण करते हुए भी हास्य का माध्यम बना दिया ।

बाबू गुलाबराय की भाषा में स्पष्टीकरण का सौन्दर्य और वस्तुओं का दार्शनिक विवेचन बहुत प्रभावशाली है। 'विस्तृत विवेचन आगामी पर्व होगा।

**श्री रामप्रसाद रावी :–** ''बुकसेलर की डायरी'' (अपनों की खोज) यह पुस्तक एक बुकसेलर की डायरी है जिसने गरीबी के समय घर घर जाकर पुस्तकें बेचने का काम किया । इसका मुख्य कारण धनार्जन नहीं अपितु अपनें जीवन में आने वाले व्यक्तियों को परखना था। इसलिए उन्होंने इस पुस्तक को बुकसेलर की डायरी कहने के साथ–साथ इस कृति को दूसरा नाम भी (अपनों की खोज) देकर अपने मंतव्य को स्पष्ट किया है।

यह डायरी सन् 1911 ई के कुछ ही महीनो में लिखी गई है। 'विशाल भारत' के 5–4 अंको में इसका पूर्व कुछ संक्षिप्त रूपों में प्रकाशित हुआ था। बाद में यह पुस्तक के रूप में इंडियन प्रेस लिमिटेड से प्रकाश में आई। यह कृति डायरी है परंतु 104 पृष्ठों के भीतर मोती जैसे चुने गए वाक्य पाठक को भाव–विभोर कर जाते हैं। इस पुस्तक में डायरी का इतना ही काम रहा है कि, लेखक इन–इन तरीकों से अलग–अलग स्थानों पर फेरी लगाने गए और उन्हें ऐसे अनुभव हुए। संभव था कि लेखक फेरियों की बात यूं न कह कर मात्र अपनें अनुभवों की ही बात कहते। परंतु शायद उन्हें एकदम स्वतंत्र, निस्पृह होकर अपनी बात इसी प्रकार से पाठक तक पहुँचानी पसंद आई लगती है। आत्मकथा में लेखक का पूर्ण व्यक्तित्व उभरता है। इस साधारण सी पुस्तक से भी एक बड़े मूल्य की अपेक्षा रखते पाठक के जीवन को भी एक गहरी दृष्टि दे जाते हैं।

**महात्मा नारायण स्वामी– 'आत्मकथा'** 1943 ई0 में महात्मा नारायण स्वामी की आत्मकथा प्रकाशित हुई। जिसमें लेखक आर्यसमाज के प्रचार के अतिरिक्त अपनें जीवन की आशा, आकांक्षा आंदोलन कार्यों तथा वैराग्य भाव का वर्णन किया है। आर्यसमाज के सिद्धांतो का प्रभाव ही लेखक के व्यक्तित्व का बल था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से ही लेखक ने अपनें जीवन के सत्यों को पाया और उन्हीं से आत्मविश्वास की भावना जागृत हुई। आर्यसमाज की 50 वर्षो की गतिविधियों के पूरे चित्र इस कृति में प्राप्त होते हैं। यह आत्मकथा एक कर्मनिष्ठ तपस्वी की आत्मकथा है। उनके जीवन से पाठक के भीतर आत्मविश्वास की भावना जाग्रत करने का आह्वान मिलता है।

**नारायण स्वामी की आत्मकथा** भी 1943 ई0 में प्रकाश में आई। स्वामी सत्य भक्त की आत्मकथा 'जीवन सूत्र' सत्याश्रम वर्धा से प्रकाशित हुई।

**मूलचन्द अग्रवाल की आत्मकथा** विश्वामित्र कार्यालय कलकत्ता से "एक पत्रकार की आत्मकथा" सन् 1944 ई0 प्रकाशित हुई। लेखक को 'विश्वामित्र' का संचालक होने का गौरव प्राप्त है। किसी पत्रकार द्वारा विस्तारपूर्वक लिखी हुई यह प्रथम आत्मकथा है।

**हरिभाऊ उपाध्याय की आत्मकथा** "साधना के पथ पर" 1946 ई0 में प्रकाशित हुई। यह लेखक के अहिंसा सम्बन्धी अनुभवों का संचयन व संकलन हैं। लेखक ने स्पष्टता, निर्भीकता तथा तटस्थता का सहारा लिया है।

**महापण्डित राहुल सांकृत्यायन** की "मेरी जीवन यात्रा" का प्रथम भाग राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ। जिसमें लेखक का कुल 63 सालों का चित्रण है। राहुल सांकृत्यायन आत्मकथा साहित्य में इतना महान योगदान दे गये हैं कि उसकी स्पर्धापूर्ति निकट भविष्य में संभावित नहीं है।

**डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा** 1947 ई0 की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। राजेन्द्र बाबू के जीवन में विद्वता, विनम्रता, जनसेवा, परोपकारिता, राष्ट्रभक्ति, सत्य, अहिंसा स्वदेशी वस्तुओं के ग्रहण का आग्रह, गौ रक्षा, गौ संवर्धन, हिन्दू मुस्लिम एकता तथा मानवता आदि गुणों का वर्णन मिलता है।

**भवानी दयाल संन्यासी की आत्मकथा** "प्रवासी की आत्मकथा" का प्रकाशन राजहंस प्रकाशन दिल्ली से 1947 ई0 में हुआ। इस आत्मकथा में लेखक ने अपने माता पिता के दासता पूर्ण जीवन, अफ्रीका की स्वर्ण नगरी जोहांसबर्ग में 1892 ई0 में अपने जन्म, जन्मभूमि के चित्रण एवं शैशव के संस्कारों का वर्णन भी किया है।

**वियोगी हरि की आत्मकथा** "मेरा जीवन प्रवाह" सन् 1948 ई0 में सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। इसी वर्ष इसी प्रकाशक द्वारा विमल कुमार जैन और हरि प्रसाद द्विवेदी की आत्मकथाएँ भी प्रकाश में आईं।

**गणेश प्रसाद वर्णी** की "मेरी जीवन गाथा" सन् 1949 ई0 में जैन ग्रन्थ माला, काशी से प्रकाशित हुई। लेखक जैन धर्म के उपासक और प्रचारक थे। कुल 704 पृष्ठों की सुविस्तृत आत्मकथा में लेखक के जन्म वर्ष लेखन काल तक की घटनाओं का वर्णन हैं। जयपुर, खुरई, बम्बई तथा रामटेक आदि स्थानों के साथ साथ धर्म प्रचार हेतु विहित अनेक पर्यटनों का भी चित्रण किया गया है।

**विनोद शंकर व्यास** की उलझी स्मृतियों का प्रकाशन 1950 ई0 में हुआ।

**यशपाल** की आत्मकथा 'सिंहावलोकन' (सशस्त्र क्रांति की कहानी) का प्रथम खण्ड 1957 ई0 में प्रकाशित हुआ। उसके बाद 1951 एवं 1955 में द्वितीय एवं तृतीय खण्ड भी प्रकाश में आये। इस कृति का अच्छा सम्मान हुआ। इसका विस्तृत वर्णन आगामी पर्व में करेंगे।

**अजीत प्रसाद जैन** की आत्मकथा 'अज्ञात जीवन' सन् 1951 ई0 में प्रकाशित हुई। इसी वर्ष अलगू राय शास्त्री का 'मेरा जीवन' सरस्वती पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद से तथा स्वामी सत्यदेव परिव्राजक की आत्मकथा 'स्वतंत्रता की खोज में' ज्ञान धारा कार्यालय ज्वालापुर से प्रकाशित हुईं।

**शांतिप्रिय द्विवेदी की आत्मकथा** "परिव्राजक की प्रजा" इंडियन प्रेस इलाहाबाद से सन् 1952 ई0 में प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने अपनें 41 वर्षो की करूण कथा को समेट कर संक्षेप में 278 पृष्ठों में लिखा है। यह आत्मकथा विश्रृंखल शैली में लिखी होने से आत्मसंस्मरण संग्रह सी प्रतीत होती हुई भी एक सरल सुललित रचना है। यह रचना सहृदय पाठकों को रस मग्न करने में समर्थ है।

**देवेन्द्र सत्यार्थी की आत्मकथा** 'चांद सूरज के वीरन' शीर्षक से सन् 1952 ई0 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में बाल्यकाल के संस्कारों, लोकगीतों, व चांद सूरज की कहानियों आदि का भावुकतापूर्ण चित्रण है। लेखक की शिक्षा सम्बंधी यात्राओं एवं साहित्यिक प्रतिभा के प्रस्फुटन के चित्र भी हैं।

**भगवान दास केला** की खण्ड आत्मकथा 'मेरा साहित्यिक जीवन' भारतीय ग्रन्थ माला इलाहाबाद से सन् 1953 ई. में प्रकाशित हुई। भाषा शैली की दृष्टि से गाम्भीर्य, परिनिष्ठता एवं विषयानुकूलता इसकी विशेषताएं हैं । **किशोरीदास वाजपेयी** की रचना 'साहित्य जीवन के अनुभव' साहित्य एजेन्सी कनखल से प्रकाशित हुई। इसमें कथानायक के लेखकीय जीवन के संघर्ष का चित्रण है। भाषा संस्कृतनिष्ठ, परिमार्जित अलंकृत है । **कालीदास कपूर** की आत्मकथा 'मुदर्रिस की रामकहानी' शीर्षक से इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से सन् 1953 ई. में प्रकाशित हुई। अध्यापकों के जीवन पर लिखित तथ्य कथा के रूप में इस रचना की प्रसिद्धि है। लेखक की शैली तथ्यात्मक, विवरणात्मक, रोचक, मनोरंजक और स्पष्टतापूर्ण होनें से प्रभावात्मक है।

**गंगाप्रसाद रिटायर्ड चीफ जस्टिस** की 'मेरी आत्मकथा' आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर से सन् 1954 ई. में प्रकाशित हुई। कुल 224 पृष्ठों की आत्मकथा में लेखक का अनेक प्रशासकीय पदों पर रहते हुए भी निर्भीकतापूर्वक आर्य समाज के प्रचार को अपना लक्ष्य घोषित करके अनेक आर्य संस्थाओं का संचालन किया। पुस्तक की शैली कुछ आत्मप्रशंसात्मक है।

**गंगाप्रसाद उपाध्याय की आत्मकथा** 'जीवनचक्र' शीर्षक से कला प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। लेखक स्वयं मंगलाप्रसाद पुरस्कार विजेता थे एवं यह आत्मकथा भी यू0पी0 सरकार द्वारा पुरस्कृत हुई थी। कुल 500 पृष्ठों की इस आत्मकथा में शिक्षा संस्थाओं के निर्माण धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों के निर्माण व सत्याग्रहों में जूझने आदि के कार्य विवरण प्रस्तुत किए हैं।

**जानकी देवी बजाज की आत्मकथा** 'मेरी जीवन यात्रा' सन् 1956 ई. में सस्ता साहित्य मण्डल से प्रकाशित हुई। इसमें लेखिका की धर्मभीरूता, भावुकता और प्रणय निमग्नता का वर्णन हुआ है। लेखिका के अशिक्षित होने के कारण रिषभदेव रांका ने इसे लिपिबद्ध किया। नरदेव शास्त्री की आत्मकथा 'आपबीती जगबीती' सन् 1957 ई0 में ज्वालापुर महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की गई। कुल 607 पृष्ठों की आत्मकथा में जीवन के प्रत्येक मोड़, आस्था के प्रत्येक चरण और संघर्ष के प्रत्येक पड़ाव की कहानी लेखक ने स्मरण शक्ति और डायरियों की सहायता से लिखी है।

**धीरेन्द्र वर्मा की आत्मकथा** 'मेरी कालिज डायरी' शीर्षक से साहित्य भवन इलाहाबाद से सन् 1958 ई0 में छपी। इस आत्मकथा में लेखक के यौवन के दिनों की तात्कालिक स्थिति, वातावरण तथा महत्त्वाकांक्षाओं का चित्रण किया गया है। विगत स्मृतियों का पुनर्प्रत्यक्षीकरण करने के स्थान पर इसमें तात्कालिक प्रतिक्रिया का प्राधान्य है।

**देवराज उपाध्याय** ने सन् 1958 ई. में अपनी आत्मकथा 'बचपन के दो दिन' मंगल प्रकाशन जयपुर से प्रकाशित करवाई। इस खण्ड आत्मकथा में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के द्वारा उन्होंने शेष जीवन की प्रवृत्तियों के मूल शैशव में खोजे हैं। इनकी एक खण्ड आत्मकथा 'यौवन के द्वार पर' सन् 1970 ई. में प्राप्त हुई। यह कृति भी मनोविश्लेषणात्मक शैली का उदाहरण है तथा इसकी भाषा परिष्कृत, परिमार्जित, प्रांजल और परिनिष्ठित है।

**पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी** की आत्मकथा सन् 1958 ई. में इंडियन प्रेस 'इलाहाबाद से' 'मेरी अपनी कथा' शीर्षक से प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने निजी व्यक्तित्व पर प्रकाश नहीं डाल कर अन्य साहित्यकारों का परिचय अधिक दिया है।

**सेठ गोविन्द दास की आत्मकथा के तीन भाग 'प्रयत्न, प्रत्याशा और नियताप्ति'** 34 शीर्षकों सहित 'आत्म निरीक्षण' शीर्षक से 1957 ई. में भारतीय विश्व प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुए। यह आत्मकथा तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक, निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता आदि गुणों के कारण एक आदर्श आत्मकथा भी है। सन् 1963 ई0 में सेठ गोविन्द दास की दूसरी आत्मकथात्मक रचना 'उथल पुथल का युग' सूचना और प्रसारण मंत्रालय दिल्ली से प्रकाशित हुई । यह कृति अपेक्षाकृत अनात्म केन्द्रित है और 'आत्मनिरीक्षण' की उपलब्धियों से आगे जा सकने में असमर्थ है।

**वेदानन्द तीर्थ** की संक्षिप्त आत्मकथा "जीवन की भूलें" शीर्षक से विरजानन्द वैदिक संस्थान दिल्ली से प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा संक्षिप्त, स्पष्टतायुक्त, विनोदात्मक तथा हृदयहारिणी हैं।

**उपेन्द्रनाथ अश्क** ने अपनी विश्रृंखल आत्मकथा 'ज्यादा अपनी कम परायी' शीर्षक से लिखी थी। इसमें यात्रा, डायरी, पत्र आदि के अतिरिक्त 57 पृष्ठों में जीवनी के नोट लिखे हैं। अश्क जी ने आत्मकथा के क्षेत्र में नवीन प्रयोग करते हुए नीलाभ प्रकाशन इलाहाबाद से 'चेहरे अनेक' कृति प्रकाशित करवाईं।

**प्रिन्सीपल दीवानचन्द** की कृति "मानसिक चित्रावली" कानपुर से प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने 80 वर्षो के जीवन का लेखा जोखा प्रस्तुत किया हैं। दयानन्द कॉलेज कानपुर के प्राचार्य पद पर रहते हुए लेखक ने अनेक शिक्षा सुधार किए। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय के वैयक्तिक निबंधों का संग्रह 'आत्मनेपद' भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली से 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। इसके अंतर्गत लेखक ने अपनी रचना प्रक्रिया तथा साहित्य लेखन सम्बन्धी विषयों पर प्रकाश डाला है।

**बेचन शर्मा उग्र** की बहुचर्चित आत्मकथा 'अपनी खबर' 1960 ई. में प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने अपने जीवन की अनगढ़ कहानी, व्यंग्यपूर्ण शैली में सम्पूर्ण विद्रूपताओं के साथ प्रस्तुत की हैं। 'बच्चा महाराज' सदृश दुश्चरित्र गुरू का सहवास भोगते सहते हुए भी लेखक की सहज प्रतिभा कुंठित न हुई। लेखक का समस्त लेखन तो क्रांतिपूर्ण है ही, यह आत्मकथा भी उसका अपवाद नहीं अपितु उग्रता की चरम सीमा का निदर्शन ही है।

**इन्द्र वाचस्पति** की आत्मकथा 'पत्रकारिता के अनुभव' सन् 1960 ई0 में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस से प्रकाशित हुई। इस खण्ड–आत्मकथा में लेखक ने अपने 30 वर्षो के पत्रकार जीवन का वर्णन विश्लेषण किया हैं। पत्र सम्पादन के व्यवसाय सम्बंधी आत्म अनुभवों का विशिष्ट दर्शन कराने के कारण इस रचना की अपनी विशेष महत्ता है।

**महात्मा भगवान दीन** की संक्षिप्त और विश्रृंखल आत्मकथा 'जीवन झांकी' सन् 1962 ई. में पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई। इसमें लेखक के जन्म, शैशव की स्मृतियों से लेकर अध्ययन, अध्यापन, पारिवारिक स्थितियों, देशभक्ति, असहयोग आन्दोलन इत्यादि का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया गया है । इस रचना में सत्यप्रियता, स्पष्टता, तथ्यात्मकता, संक्षिप्तता के गुणों के विशेष दर्शन होते हैं।

**सन्तराम की आत्मकथा** 'मेरे जीवन के अनुभव' हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी से प्रकाशित हुई। जिसमें लेखक के जीवन संघर्ष का वर्णन मिलता है। जिसमें 'जांति–पांति तोड़क मण्डल' नामक संस्था का निर्माण और उसके संचालन हेतु अगणित विरोधों को झेलना लेखक के जीवन की विशेष उपलब्धि रही है। भाषा शैली सरल, सरस, तथा विनम्रता पूर्ण है।

**बलदेवराज धवन** की संक्षिप्त एवं अपूर्ण आत्मकथा 'काश्मीर से कावेरी' शीर्षक कृति के अंतर्गत संकलित हुई। लेखक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक थे। इनकी कृति का संपादन और प्रकाशन उनके बलिदान के तत्काल बाद लेखक के अग्रज कृष्ण कुमार धवन, चण्डीगढ़ के द्वारा किया गया।

**आचार्य चतुरसेन** की 'मेरी आत्मकहानी' चतुरसेन साहित्य समिति शाहदरा से सन् 1963 ई0 में प्रकाशित हुई। प्रथम दो अध्यायों के अतिरिक्त शेष आत्मकथा अप्रमाणिकता के घेरे में आबद्ध है क्योंकि दिवंगत होने से पूर्व लेखक ने आत्मकथा लिखने के लिए कुछ पृष्ठों पर सन्, सम्वत् तथा संक्षिप्त नोट्स अवश्य लिखे थे किन्तु अपनी लेखनी से लिखते हुए वे दो अध्यायों से आगे न बढ़ सके थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके अनुज चन्द्रसेन ने इस आत्मकथा को उनके नाम से तैयार किया।

**पृथ्वी सिंह आजाद** की आत्मकथा 'क्रांतिपथ का पथिक' 1964 ई0 में प्रज्ञा प्रकाशन चण्डीगढ़ से प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा अत्यंत रोचक, आकर्षक, सुगठित एवं

सुगुम्फित है। आत्मकथा की भाषा शैली विवरणात्मक, आकर्षक, प्रभावपूर्ण, सरस तथा मार्मिक है।

**गणेश वासुदेव मावलंकर** की खण्ड आत्मकथा 'मेरा वकालती जीवन' शीर्षक से सन् 1964 ई0 में प्रकाशित हुई। इसमें अनेक मुकदमों के सूक्ष्म विवरण देकर सत्य और अहिंसा आदि गांधीवाद के सिद्धान्तों की सफलता की प्रमाणावली संप्रस्तुत करने की अपूर्व चेष्टा की गई है। विशिष्ट कार्य क्षेत्र के पक्ष को आलोकित करने की दृष्टि से इसका महत्त्व है।

**घनश्याम दास बिड़ला** की पुस्तक "कुछ देखा : कुछ सुना" सस्ता साहित्य मण्डल से प्रकाशित हुई। इसके काफी बड़े अंश खण्ड–आत्मकथा के प्रतिरूप हैं, जैसे वे दिन, मेरा शिक्षण, मेरे जीवन मे गांधी जी इत्यादि अध्यायों में लेखक के अपने व्यक्तित्व पर सीमित प्रकाश ही डाला है।

**प0 दामोदर सातवलेकर** की आत्मकथा, स्वाध्याय मण्डल पारडी से प्रकाशित हुई जिसमे लेखक ने अपने साहित्यिक तथा धार्मिक आन्दोलनो की व्यापक चर्चा की है।

**गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी** की पुस्तक "आत्मकथा और आत्म संस्मरण" शरद प्रकाशन वाराणसी में प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा उन्होंने जीवन की अंतिम घड़ियों में डायरियों तथा पन्नों की सहायता से रूग्णावस्था में बोलकर लिखवाई थी। संस्कृत भाषा के अध्ययन व शास्त्रार्थों के विवरण अधिक हैं पुस्तक की प्रस्तावना मे इसे 'हमारे इतिहास में संस्कृत विद्वान की आत्मकथा का सबसे पहला प्रयास घोषित करना भी दोषपूर्ण हैं।

**क्षेमकरण त्रिवेदी** आत्मकथा प्रयाग से प्रकाशित हुई। लेखक साधारण परिवार से शिक्षा के बल पर रेल्वे की सेवा में नियुक्त होकर, अथर्ववेद का भाष्य लिखकर कैसे आपने प्रसिद्ध वेद विद्वान के रूप में ख्याति पाई इसका वर्णन किसी आश्चर्यकृत्य से कम नही हैं

**भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र** की आत्मकथा "जीवन के चार अध्याय" शीर्षक से 1967 ई0 में प्रकाशित हुई। इसमे लेखक, छात्र, बन्दी, सम्पादक, अध्यापक के रूप में अवतरित हुए हैं।

**एम0 विश्वश्वरैया** की खण्ड आत्मकथा 'मेरे कामकाजी जीवन' के संस्मरण शीर्षक से नेशनल ट्रस्ट इण्डिया से प्रकाशित हुई। लेखक ने इसमें अपने जीवन के कार्यक्षेत्र "सिंचाई इंजीनियरिंग" के विशेष अनुभव कलमबद्ध किए हैं एवं दक्षिण भारतीयों द्वारा हिन्दी में लिखित यह खण्ड आत्मकथा भाषा शैली की दृष्टि से भी तथ्य युक्त तटस्थतापूर्ण, प्रभावात्मक, प्रेरणास्प्रद हैं।

**आबिद अली** की आत्मकथा "मजदूर से मिनिस्टर" सन् 1968 ई0 में विधा प्रकाशन भवन नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई। लेखक ईश्वर की कृपा से तथा अपने परिश्रम से जीवन के प्रगति पथ पर अग्रसर रहा। इस आत्मकथा से संघर्षमय जीवन, ईश्वर विश्वास एवं त्याग की सफलता और हिन्दू मुस्लिम एकता पर प्रचुर प्रकाश पड़ता हैं इस आत्मकथा की भाषा हिन्दुस्तानी है तथा इसे हिन्दी और उर्दू में एक साथ लिप्यान्तर करके प्रकाशित किया गया है।

**हरिवंशराय बच्चन** हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध छायावादी कवि, साहित्यकार लोकप्रिय व्यक्तित्व के धनी होने के साथ ही आत्मकथा लेखन में भी नवीन कीर्तीमान स्थापित किए हैं। 1963 ई0 से 1969 तक लिखित आत्मकथा का प्रथम खण्ड **"क्या भूलूँ क्या याद करू"** 1969 ई0 मे राजपाल एण्ड सन्स ने प्रकाशित किया। 1970 ई0 में द्वितीय खण्ड **"नीड़ का निर्माण फिर"** इसी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई। इसका प्रथम संस्करण 1977 ई0 में प्रकाशित हुआ। प्रथम खण्ड में अपने कुल, परिवेश तथा यौवन, पूर्व पुरूषों का भी अत्यंत रोचक तथा सरस शैली में वर्णन किया गया है। नीड का निर्माण फिर में लेखक ने आत्म विश्लेषण करते हुए पंत, नरेन्द्र शर्मा व यशपाल का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। तेजी के साथ द्वितीय विवाह की परिस्थितियों, रचना प्रक्रिया, आइरिस के प्रति आकर्षक, तेजी जी के आकर्षक व्यक्तित्व, कलात्मक रूचियों का भी उपयुक्त चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

लेखक की आत्मकथा का तृतीय खण्ड **"बसेरे से दूर"** मे प्रयाग विश्वविद्यालय में अग्रेंजी का अध्यापक बनने और सहअध्यापको की ईर्ष्या वृत्ति का चित्रण किया गया हैं इस खण्ड में लेखक ने एकत्तोर प्रेयसी "मार्जरी" से मुलाकातो का वर्णन किया है। वह देह की अपेक्षा काव्य प्रेम अधिक था। अंतिम 60–70 पृष्ठों में लेखक ने स्वदेश लौटकर आने के पश्चात् की स्थितियों, घटनाओ का भी चित्रण किया है, जो कि शीर्षक के अनुकूल प्रतीत नहीं होता है।

**<u>वृंदावन लाल वर्मा</u>** की "अपनी कहानी" का प्रकाशन मयूर प्रकाशन झांसी से सन् 1972 ई0 में हुआ। लेखक ने अपने जीवन की विकट संघर्षो की कहानी प्रस्तुत की है। क्रीड़ावृत्ति, सिद्धांतवादिता, प्रयोगधर्मिता और आपत्तियों को निमन्त्रण देना उन्हें सुहाता था। शिकार, खेती, बागवानी, व्यायाम और संगीत उनकी रुचिया रही हैं।

**<u>मोरारजी देसाई</u>** का "मेरा जीवन वृत्तांत" हिन्दी व अंग्रेजी मे एक साथ नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद से प्रकाशित हुआ। आत्मकथा के प्रथम भाग में बाल्यकाल, शिक्षा, नौकरी तथा सत्याग्रह संग्राम मे प्रवेश के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्ति व संविधान निर्माण काल तक की घटनाओं का सविवरण वर्णन है। भाषा शैली की दृष्टि से यह रचना अत्यंत आकर्षक, मनोरम तथा प्रभावपूर्ण हैं। हिन्दी आत्मकथा साहित्य में इसका एक विशिष्ट स्थान है।

**<u>हंसराज गुप्त</u>** का अभिनन्दन ग्रन्थ "विनय और विवेक" शीर्षक सहित प्रकाशित हुआ। इसमे हंसराज की संक्षिप्त आत्मकथा "अपनी दृष्टि में भी सहसंकलित हैं। जिसमे लेखक ने अपने जन्म से 1957 ई0 तक की घटनाओ का संक्षिप्त चित्रण किया हैं

**<u>सुमित्रानन्दन पन्त</u>** की रचना "साठ वर्ष और अन्य निबन्ध" राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई यह आत्मकथा 'प्रकृति का अंचल', 'जीवन कथा', 'परिवेश', 'प्रेरक ग्रन्थ' आदि शीर्षको में विभाजित होकर प्रस्तुत हुई हैं।

**<u>रामावतार पोद्दार अरूण</u>** की अरूणायन शीर्षक आत्मकथा अनुपम प्रकाशन पटना से प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने अलकृंत शैली में अपने कुल परिवार के सम्बन्धो, शैशव, यौवन, नवयौवन, काव्य लेखन के विभिन्न चरणो तथा पंत बच्चन, अज्ञेय, के0 एम0 मुंषी, प्रभाकर माचवे, दिनकर आदि के साथ अपने घनिष्ट सम्बन्धों का चित्रण करने के साथ–साथ अपनी कृतियों के प्रकाशन तथा प्रंशसात्मक प्रतिक्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया हैं। यह कृति कलात्मक और आत्मविश्लेषणात्मक होते हुए भी अमर्यादित आत्मश्लाघा और अंहवादिता परिपूरित हैं।

**<u>बलराज साहनी</u>** प्रसिद्ध अभिनेता तथा कहानीकार थे। इनकी दो आत्मकथात्मक कृतिया प्रकाशित हुई। पहली 'मेरी फिल्मी आत्मकथा' राजपाल एण्ड सन्स से दूसरी 'यादो के झरोखे से' आत्माराम एण्ड सन्स से प्रकाशित हुई। पहली आत्मकथा में सौ से

अधिक फिल्मो में कार्य करने के अनुभवों का संक्षिप्त विवरण दिया हैं। दूसरी रचना मे 11 प्रंसगों में आधी यादें वैयक्तिक हैं। दोनों कृतियां आर्कषक एवं प्रभावपूर्ण हैं।

**योगानन्द की आत्मकथा** "योगीकथामृत" हिन्दी व अंग्रेजीं मे एक साथ जैको पब्लिकेशन्स हाऊस बम्बई से प्रकाशित हुई। योग चमत्कारों को किसी योगी द्वारा आत्म संस्मरणों के रूप में प्रकाश में लानें वाली प्रथम आत्मकथा हैं। क्षेत्र विशेष का प्रतिनिधित्व करने के कारण इस आत्मकथा का महत्त्व हैं किन्तु लेखक का उद्देश्य आत्म विकास के चित्रण की अपेक्षा आत्माख्यान सहित योग विद्या के चमत्कारों एवं उनके प्रभावों का प्रदर्शन मात्र हैं।

**गयाप्रसाद द्विवेदी** की आत्मकथा इस काल की एकमात्र पद्यात्मक आत्मकथा हैं किन्तु उसका गद्यात्मक रूप भी परिशिष्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस संक्षिप्त आत्मकथा में लेखक ने अपनें व्यक्तिगत गुण दोषों, परिवार संम्बन्धों, राष्ट्रीय, साहित्यिक परिस्थितियों का संक्षिप्त चित्रण किया गया हैं।

**धर्मेन्द्र गौड़** ने अपनी खण्ड आत्मकथा "मैं अंग्रेजी का जासूस था" लिपि प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित करवाई। इससे पूर्व इसके कुछ अंश पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके थे, रहस्य रोमांच प्रधान होनें से यह कृति कौतूहल वर्धक अवश्य हैं।

**अनीता राकेश** ने प्रख्यात नाटककार और कहानीकार 'मोहन राकेश' की आत्मकथा 'मोहन राकेश की डायरी' शीर्षक से प्रकाशित करवाई। जिसमें मोहन की अपनी रचनाओं की भूमिका में या निबंधों मे कुछ आत्मपरक बातें कही हैं लेकिन वे आत्मकथा नही लिख पायें। इसकी रिक्तपूर्ति करते हुए उनकी अविवाहिता पत्नी अनीता राकेश ने उनके देहावसान के तत्काल बाद सारिका पत्रिका में धारावाहिक रूप में अपनी लेखमाला "चन्द संतरे और" शीर्षक से प्रकाशित करवानी आरम्भ की। यही लेखमाला पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई। भाषा शैली की दृष्टि से भी पुस्तक सरल, सरस, आकर्षक और सुरोचक है।

**वीरेन्द्र की आत्मकथा** पंजाब के प्रसिद्ध पत्रों 'प्रताप' और 'वीरप्रताप' में हिन्दी और उर्दू में एक साथ सर्वाधिक किस्तों में "कुछ आपबीती–कुछ जगबीती" शीर्षक से धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुई। इसमें गांधी, नेहरू व पटेल आदि महान व्यक्तित्वों की

विस्तृत झांकियाँ देते हुए यत्र तत्र निजी सम्पर्कों का चित्रण भी किया गया हैं। भाषा आदि सरल और आकर्षक है।

**स्वामी सोमानन्द** की आत्मकथा हैदराबाद से उर्दू तथा हिन्दी में एक साथ "जीवन की धूपछावं" शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। इस कृति में लेखक के निजी घटनाचक्र की अपेक्षा आर्य समाज के विविध आंदोलनों की चर्चा अधिक हुई हैं विशेषकर आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रही एवं हिन्दुओं की धार्मिक स्वतंत्रता का मनोंमुग्धकारी वर्णन प्राप्य हैं।

**डा0 सरनाम सिंह अरूण** की विश्रृंखल आत्मकथा "जब मौत मेरे पास आई" राजपाल एण्ड सन्स से प्रकाशित हुई। लेखक ने नागों, साँपों, बिच्छुओं, भेड़ियों, व्याघ्र और भूत से घातक भिडन्तें होनें से लेकर बाढ़, समुद्र, पहाड़, नदी व कुओं सम्बन्धी दुर्घटनाओं के प्रसंगों में मृत्यु से टकराकर भी जीवित बचे रहने की विस्मयकारी स्थितियों का चित्रण किया हैं। लेखक ने एक अद्‌भुत उल्लास सहित इन विश्रृंखलित आत्मचित्रों को प्रस्तुत किया हैं।

**काका हाथरसी** की संक्षिप्त आत्मकथा अभिनन्दन ग्रन्थ बिजनौर के प्रारम्भ में दी गई हैं । जिसे गिरिराज शरण अग्रवाल ने सम्पादित किया था।

**स्वामी विद्यानन्द विदेह** के दिवंगत होनें पर उनके द्वारा संस्थापित वेद संस्थान अजमेर ने "सविता" पत्रिका का "विदेह स्मृति" प्रकाशित किया। इस विशेषांक में उनकी चर्चित आत्मकथा "विदेह गाथा" में भी अनेक महत्वपूर्ण अंश और चुने हुए 15 जीवन प्रसंग प्रकाशित हुए साथ ही इस आत्मकथा के प्रकाशित होनें की घोषणा भी की गई।

**कृष्न चन्दर की आत्मकथा** "आधे सफर की पूरी कहानी" उनके दिवंगत होनें के पश्चात् उनकी सहधर्मिणी सलमा सिद्दीकी द्वारा लिखित अंतिम अध्याय तथा भूमिका सहित प्रकाशित हुई। रूग्णता और व्यस्तताएं बीच बीच में बाधाएं डालती रही और अपनी इस कहानी का लेखन अधूरा छोड़कर वे चल बसे।

**डॉ. भगवान दास** ''मै भंगी हूँ'' – प्रथम दलित आत्मकथा, डॉ. भगवान दास कृत ''मैं भंगी हूँ'' का हिन्दी में पहला प्रकाषन 1981 में संभव हो सका। इस आत्मकथा से दलित आत्मकथाओं का बीजारोंपण हो चुका था पर लेखक ने इसे आत्मकथा के स्थान पर एक पुस्तक के रूप में ही प्रकाषित करवाया क्योंकि इसे वह एक तरह से अपनी कम भंगी समाज की आत्मकथा ज्यादा मानते हैं। यह 1957 में उर्दू ''भीम पत्रिका'' में

धारावाहिक रूप में छपी थी। लेखक ने आत्मकथा का प्रारम्भ भंगी कौन, क्या, कैसे को समझाते हुए किया है जैसा कि पुस्तक में लिखा हैं।

"जी हां मेरा नाम भंगी हैं मैं आज अपनी कहानी सुनाना चाहता हूँ। अपनी कहानी, अपनी जुबानी। आप ने मेरी कहानी सुनी होगी। कौन सुनाता? किसी ने लिखी भी तो नहीं। मैं समाज की सीढ़ी का आखिरी डंडा हूँ कूड़ादान, जिसमें हर वह चीज फेंक दी जाती हैं जो गंदी हो, बेकार हो, फालतू हो। समाज का ऐसा सदस्य हूँ जिसे समाज ने गूंगा, बहरा, बनाकर दहलीज का पायदान बनाकर रखा हुआ हैं, जिस पर हर आने वाला अपना पांव पोंछ कर मकान में दाखिल होता हैं – 12

इस आत्मकथा में ईमानदारी, साफ गोई, सरलता, ऐतिहासिक खोज, मानवीयता, आत्मविष्लेषण, दोषों को न छिपानें की प्रवृति आदि गुण सहजता से मिल जाते हैं। एक और जहां शोषक के अत्यचारों की आलोचना की गई हैं। वहीं दूसरी ओर स्वयं के अवगुणों या बुराइयों को भी बिना किसी लाग लपेट के व्यक्त कर दिया हैं फिर भी आत्मकथात्मक तत्वों का पूरी तरह से समावेष नही हो पाया हैं तथा बहुत से वाक्यों का बार–बार प्रयोग, भाषा में विवरणात्मकता धूम फिर कर वापस उसी बात को दोहराना, जो पहले कहा गया है। इसके पीछे लेखक का हिन्दी भाषा के ज्ञान का अभाव भी कहा जा सकता हैं फिर भी लेखक का प्रथम प्रयास सराहनीय हैं।

**<u>मोहन दास नैमिशराय –</u>** दलित आत्मकथाओं की सम्यक् सृष्टि मोहनदास नैमिष्राय कृत 'अपने–अपने पिंजरे' 1995 से ही मानी जाती है। आत्मकथा की कथावस्तु मेरठ के चकार गेट से लेकर दिल्ली तक फैली हुई है। इसका केन्द्र बिन्दु चकार गेट हैं तो परिधि के अन्तर्गत करोल बाग और मेरठ के आस–पास का क्षेत्र है। इसका मुख्य पात्र हैं मोहन, लेखक के जीवन को छूकर निकलने वाले पात्र भी इसका अभिन्न हिस्सा हैं। जिनमें बा, ताई, पिता, बहिनें, भाई आदि परिवार के सदस्यों के साथ समाज के लोग भी सम्मिलित हैं। इस आत्मकथा का मुख्य बिन्दु है– अर्थभाव, शोषण, बेगारी के साथ होने वाला अमानवीय व्यवहार जो हीनताबोध और अपमानबोध के दंष से सरोबार हैं। यह स्थिति केवल आत्मकथाकार की ही नही हैं अपितु उसके जाति बंधु भी ऐसी ही स्थिति के षिकार है।

यह आत्मकथा भाव बोध का अच्छा उदाहरण हैं विचारों का उत्कर्ष भी देखने को मिलता हैं। दलित चेतना पर जगह–जगह प्रकाश डाला गया हैं। लेखक की जीवन

दृष्टि से सरोबार हैं। कहीं–कहीं रचनाकार का आत्ममंथन भावोत्कर्ष की सीमा तक पहुंच जाता हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि 'अपने–अपने पिंजरे' दोनों भाग आत्मकथा के रूप में पूरी तरह से सही हैं। भूमिकाकार का इसे आत्मवृत्त कहना कुछ उचित नहीं लगता। परम्परागत आलोचना की कसौटी पर इसे कसना रूढ़िवादिता को ही प्रश्रय देना है। नवीन मानवतावादी दृष्टि से आलोचना करने पर ही इसके साथ न्याय सम्भव है। मानवीय मूल्य इसकी अन्तर्वस्तु है। दलित विमर्श और दलित चेतना के स्वर इसके भाव बोध को मावनतावादी दृष्टि देते हैं, साथ ही जीवन संघर्ष की प्रेरणा इसे साहित्यिक ऊँचाई प्रदान करती है।

**<u>डॉ. हरिवंश राय बच्चन</u>** डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के तीन खण्ड अब तक प्रकाषित हो चुके थे आत्मकथा के चतुर्थ खण्ड के रूप में 1985 में ''दशद्वार से सोपान तक'' कृति प्रकाश में आयी जिसमें बच्चन जी ने बेटों, बहुओं, पोते पोतियों के भरे पूरे परिवार से दूर रहने का दंश, पल–पल अनुभव करते हुए जो भी स्मृति यात्रा की है, उसी का वर्णन करने का प्रयास किया है। पुस्तक की भूमिका में लेखक ने इसके शीर्षक के प्रति पाठकों की जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास किया हैं।

''यह दशद्वार क्या हैं ?

''यह सोपान क्या हैं ?

तो शीर्षक ने आपकी जिज्ञासा जगाई।

शाब्दिक अर्थ तो सभी जानते होंगे 'दशद्वार' जिसमे दस दरवाजे हों, 'सोपान–सीढ़ी'

पर इनके ऊपर दोनों ओर लगे उल्टे सीधे कोमाओं ने आभास दिया होगा कि इनसे मैं विषिष्ट अर्थ की ओर संकेत कर रहा हूँ

निश्चय।

'दशद्वार' और 'सोपान' मेरे द्वारा दिए गये दो घरों के नाम हैं'' – 13

आत्मकथा के इस खण्ड में बच्चन जी ने इलाहाबाद से निकल कर जो जीवन बिताया उसका वर्णन है। इसमें उनके विदेष मंत्रालय से सम्बन्धित संस्मरण दिल्ली की राजनैतिक गतिविधियों, अभिताभ का सिनेमा जगत में उदय और करोड़ो लोगों का चहेता अभिनेता बनने की कहानी है। यह उनके जीवन का सबसे खुशहाल समय भी रहा। इन क्षणों में वे इलाहाबाद की अच्छी बातों को याद करते हैं और कहीं न कहीं उसके अहसान मन्द भी दिखते हैं।

अभिताभ ने जिन ऊँचाइयों को छुआ वह किसी भी पिता के लिए एक हर्ष की बात हो सकती हैं और इस भाग में बहुत कुछ अभिताभ बच्चन के बारे में हैं। अभिताभ के इंजीनियर बनने के सपने के बारे में वे लिखतें हैं।

''अभिताभ अपने इंजीनियर का सपना से रहें थे।

तीन वर्ष बाद कम्पार्टमेन्टल से उन्होंने बी.एस.सी. की।

इंजीनियर बनने का सपना पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था।

''तब किसी फार्म की नौकरी की तलाष में 63 में कलकता गये। बर्ड और ब्लैकर्स कम्पनी में छः वर्ष रहे शौकिया नाटक में भाग लेते रहे–पर वे फिल्म के लिए बने हैं यह बात कभी मन में न उठी'' – 14

इस तरह ''दषद्वार से सोपान से सोपान तक'' में लेखक के जीवन के उत्तरार्ध पलों की झांकी है एवं पुस्तक भाव तथा अभिव्यक्ति दोनों ही रूपों में उत्तम हैं । जिसमें गद्य के साथ–साथ पद्य का भी समावेष है।

**ओमप्रकाश वाल्मिकी** श्री ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा ''जूठन'' का प्रथम संस्करण सन् 1997 में राधाकृष्ण प्रकाषन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। दलित आत्मकथा साहित्य में ''जूठन'' दलित चेतना का ठोस दस्तावेज है। इसमें लेखक के बचपन, किशोरावस्था और युवावस्था तक का जीवन वृत्तान्त शब्दबद्ध किया गया है।

इस आत्मकथा का केन्द्र बिन्दु बालक ओमप्रकाश न होकर दलित विमर्श और दलित चेतना है। यह आत्मकथाकार के निजी अनुभव हैं साथ ही इससे आत्मकथा के

स्वरूप पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। दलित विमर्श को रेखांकित करने के लिए आत्मकथा के प्रारम्भ में ही छूआछूत को स्थान दिया गया है।

''शादी ब्याह के मौकों पर, जब मेहमान या बराती खाना खा रहे होते थे तो चूहड़े दरवाजे के बाहर बड़े–बड़े टोकरे लेकर बैठे रहते थे । बारात के खाना खा चुकने पर झूँठी पत्तलें उन टोकरें में डाल दी जाती थी, जिन्हें घर ले जाकर वे झूठन इकट्ठी कर लेते थे। पूरी के बचे खुचे टुकड़े एक आध मिठाई का टुकड़ा या थोड़ी बहुत सब्जी पत्तल पर पाकर बाछें खिल जाती थी, जूठन चटखारे लेकर खाई जाती थी'' – 15

कुल मिलाकर आत्मकथा का पूर्वान्ह दलित विमर्श से पूरी तरह सरोबार है। स्कूल में रचनाकार को पढ़ाने की जगह झाडू लगाने में लगाया जाता था ऊपर से गालिया गिफ्ट में मिलती थी।

लेखक की आत्मकथा का उद्देश्य दलित चेतना रहा है यह आत्मकथा की कमजोरी रही है क्योंकि जीवन के प्रति एकांगी दृष्टि या एक पक्ष को अधिक महत्त्व देने से रचनाकार के जीवन के विविध पक्षों का रूपायन होनें में बाधा ही उत्पन्न हुई है।

लेकिन जब कोई व्यक्ति मानवता जैसे महान् उद्देष्य को ध्यान में रखकर लेखन करता हैं तो इस तरह की छोटी कमियां रह ही जाती हैं। इस आत्मकथा पर सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद इसे एक 'कम्पलीट आत्मकथा' कहा जा सकता हैं।

**सूरजपाल चौहान** ''तिरस्कृत''– दलित आत्मकथाकार सूरजपाल चौहान की पहली आत्मकथा है । यह आत्मकथा सन 2002 में अनुभव प्रकाशन द्वारा प्रकाश में आई, इसमें लेखक के बचपन से लेकर युवावस्था एंव प्रौढावस्था तक का जीवन शब्दबद्ध किया गया हैं । इस आत्मकथा के कुछ अंश देश की कई साहित्यिक पत्रिकाओं में पहले से ही प्रकाशित हो चुके थे, 'कल के लिए' दिसम्बर, 98 दलित विषेषांक में 'दलित चेतना और दलित लेखक' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित अंश पर दिल्ली और दिल्ली से बाहर के कई दलित साहित्यकारों ने अपनी नाक भौंह सिकोड़ी थी।

इस आत्मकथा में लेखक ने दलित जीवन की विभिन्न झांकियों के दर्शन करवायें हैं लेकिन सबसे वीभत्सपूर्ण वर्णन है, ताऊ सरूपा की बेटी रूमाली की शादी में बरातियों और नाते रिश्तेदारों को दावत के लिए सूअर का मारा जाना।

"सूअर को दौड़ा–दौड़ा कर थका देना फिर उसे धर दबोचना और गांव के मुबासी नाम के अधेड़ उम्र के व्यक्ति द्वारा लोहें की पैनी नोंक वाले एक हथियार को सूअर की बगल में भौंक देना। उफ। सूअर का भयंकर पीड़ा के साथ तड़पना और थोड़ी देर बाद उसके शरीर का ठंडा पड़ जाना।" – 16

इसके अतिरिक्त मौसी चमेली का प्रेम विवाह, भंगी मोहल्ले के छोटे–छोटे बच्चों द्वारा पैसों के अभाव में वीडियो से जुआ खेलना, स्कूल में बालक सूरज व उसके दलित साथियों से शिक्षकों द्वारा छूआछूत, हालातों से मजबूर होकर चौहान गोत्र का प्रयोग, बाद में हकीकत सामने आने पर सामन्ती मानसिकता वाले दोस्तों से अपमानित तिरस्कृत होना आदि घटनाओं का चित्रांकन देखते ही बनता है।

आत्मकथा में क्रमबद्धता का अभाव खलने वाला है। भाषा में संश्लेषणात्मकता के स्थान पर विवरणात्मकता के प्रयोग को कमजोरी कहा जा सकता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि अपनी कमियों के बावजूद 'तिरस्कृत' मानवता की प्रतिष्ठा के लिए उल्लेखनीय है।

**सूरजपाल चौहान –** सूरजपाल चौहान की दूसरी आत्मकथा **"संतप्त"** है। रचनाकार ने इसे पहली आत्मकथा "तिरस्कृत" का दूसरा भाग न कहकर दूसरी आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किया हैं। यह हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व है । यह आत्मकथा सूरजपाल के चारों ओर घूमती है। आत्मकथाकार ने इसे विभिन्न शीर्षको के अन्तर्गत विभक्त किया हैं। हिन्दी साहित्य की सबसे बोल्ड एवं व्यक्ति निरपेक्ष आत्मकथा है। यह बेहद रोचक एवं दिलचस्प है।

दलित पीड़ा के दंष, दलित चेतना, समानता, तीव्रता, समरसता का प्रयास अर्द्धांगिनी द्वारा विश्वासघात और जीवन के विविध पहलुओं का जैसा सुखद वर्णन 'संतप्त मे दृष्टि गोचर होता हैं वैसा अन्य दलित आत्मकथा मे देखने को नहीं मिलता हैं पूरी पारदर्षिता के साथ सब कुछ कह दिया गया है। 'एक बार फिर' अध्याय तो इतना नाजुक हैं कि पढ़ते–पढ़ते ही व्यक्ति की रूह कांप जाती है–

'रूखे–सूखे निवालों के बीच' अध्याय गरीबी के आगे विवष बालक की कहानी है । जिसे सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सूरज को रोटी के लिए चोरी करनी पड़ती है।

आत्मकथा में क्रमबद्धता का अभाव है। जीवन की विभिन्न घटनाओं को यथास्थान प्रस्तुत करने के बजाय अपने अध्यायों की सुविधानुसार प्रस्तुत किया है। जो पाठकों को बौद्धिक व्यायाम के लिए बाध्य करता है। कला कौशल की दृष्टि से सादगी, सरलता का गुण इसमें विद्यमान है। वाक्य छोटे–छोटे, कहीं–कहीं, बड़े–बड़े यथावसर उचित हैं। लेखक ने अपनी भावुकता को रोककर वैचारिकता को अवसर प्रदान किया है, जिसका प्रयोग प्रभावी रहा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि संतप्त दलित आत्मकथाओं में सर्वोत्कृष्ट हैं । सहजता, सरलता, त्रासदी, प्रमाणिकता, संवेदनशील और जीवन का सांगोपांग वर्णन खुली हुई किताब की तरह हैं।

**मन्नू भण्डारी –** हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' का पहला संस्करण सन् 2007 में राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा प्रकाषित किया गया। यह आत्मकथा लेखिका ने अपनी पुत्री टिंकू एवं उसके पति दिनेष को समपर्ति करते हुए लिखी है–

आत्मकथा में लेखिका के भावात्मक और सांसरिक जीवन के उन पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, जो उनकी रचना यात्रा में निर्णायक रहे हैं । एक ख्यातनाम लेखक की जीवन–संगिनी होने का रोमांच और एक जिद्दी पति की पत्नी होनें की बाधाएँ, एक तरफ अपनी लेखकीय जरूरतें और दूसरी तरफ एक घर को संभालने का बोझिल दायित्व, एक धुर आम आदमी की तरह जीने की चाह और महान उपलब्धियों के लिए ललकता, आस–पास का साहित्यिक वातावरण ऐसे कई विरोधाभासो के बीच से मन्नू भण्डारी लगातार गुजरती रहीं लेकिन उन्होंने अपनी जिजीविषा, अपनी सादगी, इन्सानियत और रचना संकल्प को टूटने नहीं दिया। यही सब आत्मकथा में उभर कर आया है।

लेखिका ने प्रेम विवाह किया, लेकिन जैसे वैवाहिक जीवन की उन्होंने कल्पना की थी उसके अनुरूप अपना जीवन नहीं बिता पाई और सम्पूर्ण जीवन संघर्ष करते हुए ही बिताया जैसा कि लेखक ने लिखा हैं–

"लेकिन राजेन्द्र जिंदगी तो केवल अपनी शर्तो पर जीना चाहते थे, हां मुझसे जरूर अपेक्षा करते थे कि मैं इनकी हर बात या हरकत को सहज भाव से स्वीकार करूं।

नहीं जानती इसे अपना धैर्य कहूं ......बेशर्मी कहूं या कौन जाने मेरे मन में राजेन्द्र के प्रति लगाव के कुछ ऐसे सूत्र बचे हुए थे जो इतना सब बर्दाष्त करने के बाद भी टूटते नही थे और मैंने राजेन्द्र के साथ एक निहायत ही असंतुलित जिन्दगी जीते हुए पूरे 30 साल गुजार दिए'' – 17

यह अभिव्यक्ति के स्तर पर भी उत्तम रचना है। लोक प्रचलित सरल, सहज, सम्प्रेष्णीय भाषा का प्रयोग किया गया है। सामान्यजन के समझने में सक्षम है, दुरूह एवं क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से लेखिका ने परहेज किया है। यथावसर, प्रतीक, मुहावरे, कहावतें, शब्द शक्ति, कल्पना, इत्यादि का प्रयोग किया हैं। निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि लेखिका ने समस्त नारीवादी लेखन को छोड़कर एक उत्तम आत्मकथा के रूप में अपनी कहानी को पाठकों के समक्ष उपस्थित करने का प्रयास किया है।

**प्रभा खेतान –** डॉ. प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' का प्रकाषन सन् 2007 में राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा किया गया। कुल 287 पृष्ठों की पुस्तक में लेखिका ने समाज में स्त्री की स्थिति एवं जीवन के विभिन्न पड़ावों पर संघर्ष करने, हर क्षण अग्नि परीक्षा देते हुए स्वयं को सही साबित करने की कोशिश की है ।

लेखिका ने बेहद बेबाक, वर्जनाहीन और उत्तेजक रूप में आत्मकथा लिखी। जिसमें एक स्त्री द्वारा समाज निरपेक्ष होकर जीवन जीना कितना दुश्कर है, का वर्णन किया है। एक अविवाहित लड़की का एक विवाहित डॉ. के तूफानी प्यार में डूबकर या एक बोर्जुआ प्यार से मुक्त होने की यातना जीती हुई कहानी है 'अन्या से अनन्या'।

''सती को प्रणाम! सती माँ ! तेरा आदर्श मेरे सामने रहा, मैनें खुद को उसी परम्परा में ढालनें की कोशिश की । मेरे लिए सती का अर्थ था, पति की एक निष्ठ भक्ति, सूचना समर्पण किसी पराए मर्द की ओर आंख उठाकर भी नही देखना, लेकिन आज मेरे भीतर की बची हुई स्त्री को प्रणाम ! तेरे रूपों में बहुत दिन जी चुकी हूँ और आज साठ की हो चुकी हूँ।'' – 18

भाव के साथ ही अभिव्यक्ति के स्तर पर भी रचना उत्तम है। लेखिका ने हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी, लोक भाषा के शब्दों का यथायोग्य प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त, शब्द शक्ति, छन्द, अलंकार, प्रकृति वर्णन मनोदशाओं का वर्णन, अन्तर्द्वन्द्व,

इत्यादि को शब्दों के माध्यम से बहुत अच्छी तरह उभारने की कोशिश की है। कुल मिलाकर 'अन्या से अनन्या' आत्मकथा की दृष्टि से एक उत्तम रचना है, जिसमें आत्मकथा के तत्त्वों का निर्वाह किया गया हैं।

**कमलेश्वर –**हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा के तीन खण्ड 'जो मैनें जिया', 'यादों के चिराग', 'जलती हुई नदी' सन् 2008 में राजपाल एण्ड सन्स नई दिल्ली से प्रकाशित हुई।

''जो मैनें जिया'' जीवनपरक संस्मरण शैली में लिखी गई पुस्तक है । जिसका प्रारम्भ 'कमरा नम्बर पांच सौ बारह' संस्मरण से होकर 'नई कहानियों को अलविदा' पर समाप्त होता है। इन संस्मरणों के लिए लेखक ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है–

''मेरे लिए यह संस्मरण जीवन गाथा नहीं है अनुभवो के यथार्थ से गुजरते हुए एक लम्बे साहित्यिक दौर के ये कुछ महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं'' – 19

लेखक के संस्मरण पुस्तक के रूप में आने से पूर्व सण्डे मेल में छपने लगे थे। लेखक की आत्मकथा का दूसरा खण्ड ''यादों के चिराग'' शीर्षक से प्रकाश में आया।

प्रसिद्ध लेखक कमलेश्वर की आत्मकथा के दो खण्ड प्रकाशित होकर बहुत लोकप्रिय हो चुके हैं। ये एक व्यक्ति से जुड़े होने पर भी अपने आप में स्वतंत्र हैं और समय के क्रम में मोटे तौर पर ही चलते हैं। तीसरे खण्ड 'जलती हुई नदी' की थीम भी एक रहस्यमयी स्त्री से बंधी आरम्भ से अंत तक चलती है। उसी के साथ उन व्यक्तियों और घटनाओं को अपनी विशिष्ट ईमानदारी और बेकारी के साथ साहित्य कला और फिल्म की कहानी कहते चलते हैं। बम्बई के फिल्म जगत में प्रतिष्ठित होनें वाले कमलेश्वर हिन्दी साहित्य के पहले अग्रणी लेखक हैं। इस दुनिया का चित्रण भी उनका सबसे अलग और विशिष्ट है, ये झांकिया बहुत आकर्षक बन पड़ी हैं।

रहस्यमयी स्त्री का वर्णन करते हुए लेखक ने शब्दों के माध्यम से स्त्री को स्पष्ट करने का प्रयास किया। जिसमें लेखक सफल भी रहा है। स्त्री को जानने समझने की कोशिश में लेखक ने स्त्री के विशिष्ट स्वभाव मनोवृति के दर्शन कराने में सफलता हासिल की हैं जैसा कि उन्होंने लिखा है–

"पर औरत जब असुरक्षित महसूस करती है तो वह कुछ भी कह सकती है और कुछ भी कर सकती है। यही उच्चतम उदात्तता और विनम्रतम क्रूरता का पल होता है। वह या तो त्याग और विराग का कोई अनहोना आदर्श स्थापित कर जाती है या फिर अपने प्रस्तावित इरादों का मूल्य मांगते हुए प्रतिशोध का कोई असहनीय संघात दे जाती हैं।" – 20

निष्कर्षतः लेखक की आत्मकथा हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक नवीन कलेवर के रूप में प्रकट हुई है। भाव और कला दोनों ही स्तर पर उत्तम रचना है।

**विष्णु प्रभाकर –** यशस्वी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' शीर्षक से सन् 2010 में राजपाल एण्ड सन्स खण्ड नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। यह आत्मकथा लेखक के जीवन का वृत्तान्त होने के साथ–साथ बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से देष और उसके समाज में चले सामाजिक, राजनीतिक आन्दोंलनों का तथा इन सबके साथ साहित्य की विविध गतिविधियों का चारों ओर नजर डालता आइना है। समूची पिछली सदी को अपने में समेटता यह जीवन वृत्त एक प्रकार से उस युग का गहराई से किया चित्रण तथा विश्लेषण का लेखा–जोखा है।

लेखक ने प्रारम्भ में अपनी जाति के इतिहास की जानकारी दी कि किस तरह राजवंष जाति का उद्भव हुआ एवं अपने वंष वृक्ष की जानकारी दी ।

"इसी अग्रवाल जाति का सम्बन्ध राजवंशी अग्रवालों से है, राजवंश अग्रवाल शब्द को लेकर भी बहुत मतभेद हैं लेकिन इस मतभेद को सुलझाने के लिए मैं पहले अपने वंश की कहानी, जितनी मैं जान सका उतनी बताना चाहूँगा। मेरे पास ग्यारह पीढ़ियों का वंश वृक्ष है" – 21

इसके अतिरिक्त लेखक ने अपने आस–पास के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक मनोरंजन के साधन इत्यादि का भी बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। कुल मिलाकर आत्मकथा की कसौटी पर इसे एक उत्तम आत्मकथा कह सकते हैं।

**मुक्त गगन में** विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में जिसे लेखक ने आत्मकथा का दूसरा खण्ड माना है। इसका प्रथम संस्करण सन् 2011 में राजपाल एण्ड सन्स नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। इसमें लेखक ने देश के बंटवारें की त्रासदी का पीड़ा दायक वर्णन किया है। जिन्होंने लेखक को इच्छानुसार काम करने की शक्ति दी

साहित्य की दुनिया में अपनी स्वतंत्र पहचान कराने की । लेखक ने बंटवारे की त्रासदी के बहुत ही पीड़ा दायक चित्र खींचे हैं–

''नहीं, नहीं ऐसा लगता हैं कि माफियों ने इनके बच्चों को इसके सामने आग में भून दिया हैं या भालों की नोंक पर टिका कर तब तक घुमाया हैं, जब तक उनकी चीख पुकार बिल्ली की मिमियाहट से चिड़ियां के बच्चों की चीं चीं में पलटती हुई खत्म नहीं हो गईं। वही खौफ इसके लूट में इतना घुल मिल गया कि इसे देखकर डर लगता है।'' – 22

**<u>और पंछी उड़ गया</u>** विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा का तीसरा खण्ड ''और पंछी उड़ गया'' का प्रथम संस्करण सन् 2009 में राजपाल एण्ड सन्स नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया।

आत्मकथा के इस खण्ड में लेखक में स्वतंत्र भारत की सामाजिक , राजनैतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, साहित्यिक, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितयों का वर्णन किया है, जिसमें आपात काल, शरतचन्द्र की जीवनी लिखने का अनुभव पत्नी एवं बड़े भाई की मृत्यु का वियोग, राजनेताओं से सम्पर्क, साहित्यिक गतिविधियों का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है।

विष्णु प्रभाकर अपने सुदीर्घ जीवन में साहित्य के अतिरिक्त सामाजिक नवोदय तथा स्वतंत्रता संग्राम से भी पूरी अंतरंगता से जुड़े रहे रंगमंच, रेडियों तथा दूरदर्शन सभी में वे आरंभ से ही सक्रिय रहे। शरतचन्द्र चटर्जी के जीवन पर लिखी उनकी बहुप्रशंसित कृति 'अवारा मसीहा' की तरह यह भी अपनें ढंग की विशिष्ट रचना है।

# सन्दर्भ

1. मेरी आप बीती–बेनजीर भुट्टो– पृष्ठ सं.–13, हिन्दी संस्करण–2008

2. वही.................................................. – पृष्ठ सं.–15, हिन्दी संस्करण–2008

3. वही.................................................. – पृष्ठ सं.–345, हिन्दी संस्करण–2008

4. सत्य के प्रयोग– महात्मा गांधी– पृष्ठ सं.–7–8

5. वही.................................................. – पृष्ठ सं.–8

6. वही.................................................. – पृष्ठ सं.–7

7. रसीदी टिकट–अमृत प्रीतम– पृष्ठ सं –26

8. वही.................................................. – पृष्ठ सं –7

9. मेरी कहानी–जवाहर लाल नेहरू–अनु. हरिभाऊ उपाध्याय– पृष्ठ सं.–15 संस्करण–2009

10. मेरी कहानी–जवाहर लाल नेहरू– पृष्ठ सं.–204 संस्करण–2009

11.अर्द्धकथानक–स.नाथूराम प्रेमी–पृष्ठसं.–71,दोहा 643, द्वितीय सं0–1956

12. मैं भंगी हूँ – डॉ. भगवान दास – पृष्ठ सं –1 चतुर्थ संस्करण–2011

13. दशद्वार से सोपान तक –डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठसं–7 सं0–2013

14. दशद्वार से सोपान तक–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठसं–164 सं0–2013

15. जूठन – ओम प्रकाश वाल्मिकी – पृष्ठ सं – 19 चौथा संस्करण–2012

16. तिरस्कृत – सूरजपाल चौहान – पृष्ठ सं – 23 द्वितीय संस्करण–2005

17. एक कहानी यह भी–मन्नू भंडारी – पृष्ठ सं – 172 दूसरी आवृति–2009

18. अन्या से अनन्या– डॉ. प्रभा खेतान – पृष्ठ सं – 5 पहली आवृति–2008

19. जो मैंने जिया – कमलेश्वर – पृष्ठ सं – 05 संस्करण–2008

20. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृष्ठ सं – 165 संस्करण–2008

21. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं – 8 संस्करण 2010

22. मुक्त गगन में – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं – 78 संस्करण 2011

# चतुर्थ पर्वः—हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य संसार

## (अ) आत्मकथा साहित्य—प्रस्थान काल

**अर्द्धकथानक —बनारसी दास :—** हिन्दी साहित्याकाश मे ध्रुव तारे के समान उदित होने वाली प्रथम आत्मकथा कवि बनारसी दास की है। बनारसी दास, गोस्वामी तुलसीदास और अकबर के समकालीन थे । इनका जन्म लगभग सन 1586 ई0 में हुआ तथा 1643 ई में मृत्यु । अर्द्धकथानक में कवि के 55 वर्ष के निजी जीवन के अनुभवों का लेखा जोखा है । कवि के पुत्र श्री हेमचन्द्र के अनुरोध पर श्री नाथूराम प्रेमी ने इसका प्रथम संस्करण सन 1943 में प्रकाशित करवाया।

यह आश्चर्य का विषय है कि जब भारत में कोई आत्मकथा लिखे जाने की कल्पना भी नहीं कर सकता था उस काल में हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि ने उत्कृष्ट आत्मकथा लिखी ,जो उच्च स्तरीयता के निकष पर प्रत्येक दृष्टि से खरी उतरती है।

आदिकाल में इस तरह का कोई ग्रन्थ प्रकाश में नहीं आया था। उनके सम्मुख किसी अन्य भाषा का कोई अन्य ग्रन्थ आदर्श रूप में प्रतिष्ठित नहीं था। उसके उपरान्त भी कवि ने आत्मकथा के तत्त्वों ,लक्षणों के साथ आत्मकथा को प्रस्तुत किया था। लेखन प्रेरणा के विषय में कवि ने स्वयं लिखा हैं।

"नगर आगरे मे बसे , जैन धर्म श्री माल
बनारसी बिहोलिया , अध्यात्मी रसाल
ताके मन आई यह बात
अपनौ चरित कहौ विख्यात" – 1

लेखक ने गुणदोष वर्णन के आधार पर क्रमशः उत्तम मध्यम और अधम लेखकों की कसौटी निर्धारित करते हुए अपनी आत्मकथा के उदाहरण से स्वयं को मध्यम कोटि का प्रमाणित किया था।

"जे भाखही पर दोष गुन , अरू गुन दोष सुकीउ
कहहि सहज ते जगत मैं हमसे मध्यम जीउ"

बनारसी दास ने केवल हमसे मध्यजीउ कह कर आत्मगुण दोष कथन की प्रतिज्ञा ही नहीं की अपितु अपने जीवन के सुख–दुख, उत्थान–पतन, भूलों –स्खलनों व दूषित आचरणों का उल्लेख किया है । यहां तक कि यौवन काल की विलासिता के कारण शरीर में कोढ़ फूटने , गुप्त रोग के होने तथा चार मास तक पत्नी व सास द्वारा सेवा और एक नाई के इलाज से स्वस्थ होने का वर्णन किया है, इतना ही क्यों ,पिता द्वारा कुवचन कहने पर भी विशेष असर नहीं हुआ कुछ दिन बाद ही फिर से आशिकी होने लगी।

खरगसेन लज्जित भये , कुवचन कहे अनेक,

रोए बहुत बनारसी ,रहे चकित छिन एक ,

दिन दस बीस परे दुखी , बहुरि गए पो साल

के पढना कै आसिखी , पकरी पहिली चाल – 3

जीवन के उतार चढाव अमीरी, गरीबी, सरकारी लूट खसूट आदि का भी लेखक ने यथातथ्य वर्णन किया हैं। उस की कवि–सुलभ, भावुकता और संवेदनात्मकता का उदाहरण है अकबर की मृत्यु के समाचार से मूर्च्छित हो जाना। अध्यात्म ज्ञान का परिचय इस दोहे मे मिल सकता है–

''नौ बालक हुए मुए , रहे नारि नर दोई

ज्यौ तरबर पतझार ह्वै रह ठूंठ से होई'' – 4

नौ संतानों की मृत्यु को इतने सहज भाव से अध्यात्म प्रवीण व्यक्ति ही कह सकता हैं। व्यापार के मामले में कभी बनारसी दास सीधे या भोले नहीं थे। यह किस्मत की बात हैं कि घाटे पडने से वे असफल व्यापारी सिद्व हुए । उन्होंने लिखा–

''मोती हार लियो हुतौ , दै मुद्रा चालीस

सौ बैच्यौ सत्तरि उठे ,मिले रूपइया तीस'' – 5

इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि कवि को जीवन का व्यवहारिक आत्मज्ञानी होने के साथ ही व्यवसायिक ज्ञान भी था, चाहे वह असफल ही रहे लेकिन साथ ही सफल कवि के रूप में आज से 400 वर्षो पूर्व ही साहित्य को एक ऐसी नवीन विधा दे गये जो आज अपने विकसित रूप में प्रतिष्ठापित है।

कवि की आत्मकथा में तत्कालीन सामजिक, राजनैतिक, आर्थिक, व्यावसायिक शासको के अत्याचार, घरेलू परिस्थितियों का भी सुन्दर वर्णन मिलता है। आत्मकथा वर्ण्य विषय की तथ्यात्मकता, घटनाओं की रोचकता तथा कथानायक के जीवन की घटनाओं की विविधता से समृद्ध है। इसमें प्राकृतिक आपदाओं तथा दैनिक जीवन की समस्याओं का भी चित्रण मिलता है।

एक तटस्थ स्थितप्रज्ञ एवं कर्म योगी के समान निर्द्वन्द्व भाव से कवि ने अपने गुण और दोष इस प्रकार लिखे हैं–

**कवि गुण**

"भाषा कबित अध्यातम मांहि। पटतर और दूसरों नांहि।।

छमावंत संतोषी भला । भली कवित पढिवे की कला।।

मिठबोला सबहि सौं प्रीती। जैन धरम की दिढ़ परतीति।।

सहनशील नहि कह कुबोल । सुथिर चित नहीं डावाडोल।।" – 6

**कविदोष :–**

कहे बनारसी के गुण जथा। दोष कथा अब बरनौ तथा।।

कोध मान माया जलरेख पै। लछिमी कौ लोभ बिसेख।।

थोरे लाभ हरख बहु धरै। अलप हानि बहु चिन्ता करै।।

मुख अवद्य भाषत न लजाई । सीखे भण्डकला मन लाई।।

भाखे अकथकथा बिरतंत। ठानै नृत्य पाई एकंत।।

अनदेखी अनसुनी बनाई। कुकथा कहै सभा महिं आई।।

होई निमग्न हास रस पाई। मृषावाद बिनु राह न जाई।। – 7

अंततः यही कहा जा सकता हैं कि हिन्दी की प्रथम आत्मकथा, सरलता सत्यता चारूता और संक्षिप्तता की दृष्टि से अद्वितीय रचना जीवन की प्रौढावस्था में लेखक ने अपनें जीवन का पूर्ण तटस्थता के साथ वर्णन किया है। इस प्रथम रचना का आस्वादन करने पर प्रतीत होता है कि कथा प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप से युक्त है। निश्छलता पूर्वक आत्मकथा प्रकाशन की प्रवृत्ति के कारण ही लेखक ने अपने कथनानुसार मध्यम वर्गीय मनुष्य होने के नाते अपने और पराये गुण दोष, शिशु सुलभ सरलता से अभिव्यक्त कर दिये हैं। बनारसी दास के जीवन और कृतित्व पर शोध करते हुये डॉ. रविन्द्र कुमार जैन ने लिखा है–

"ऐतिहासिकता, सरलता जीवन घटनाओं का यथावत निरूपण, संक्षेपण, संक्षिप्तता आदि आत्मकथा की कसौटी पर यह जीवन वृत्त पूर्ण रूपेण खरा उतरा हैं। हिन्दी में ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं में यह सर्वप्रथम अनुपम तथा पद्यबद्ध आत्मकथा काव्य हैं।"–8

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता हैं कि यह हिन्दी साहित्य की अनमोल कृति हैं क्योंकि इतनी प्राचीनतम होने पर भी तात्त्विक गुणों से भरपूर होने के साथ ही आत्मकथा के मानदण्डों पर खरी उतरती है। परवर्ती साहित्यकारों के लिये एक दिशासूचक का कार्य करती है।

## (ब) आधुनिक काल का आधुनिक सृजन

**कुछ आपबीती कुछ जगबीती – श्री भारतेन्दु हरिशचन्द्र :–** भारतीय हिन्दी साहित्य के पितामह, गद्य विधा के सूत्रधार कवि शिरोमणि लेखक, नाटककार, श्री भारतेन्दु हरिशचन्द्र 35 वर्ष की अल्प आयु में ही साहित्य की ऐसी सेवा कर गये जो कि आज भी अविस्मरणीय है। इन्होंने गद्य की अन्य विधाओं की तरह ही स्वयं तथा अपने सहयोगियों के जीवन के बारे में लिखने को लेखनी उठाने का प्रयास भी किया लेकिन सफल नहीं हो पाये। आत्मकथा लेखन के लिये 35 वर्ष की आयु सटीक भी नहीं होती क्योंकि यह

जीवन का चरम काल होता है तथा आत्मकथा प्रायः जीवन की संध्या में ही, लेखक लिखने की सोचता हैं।

आत्मकथा की प्रारम्भिक वेला में भारतेन्दु प्रतापनारायण मिश्र, श्रीधर पाठक, राधाचरण गोस्वामी, जगन्नाथ दास, बालमुकुन्द गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्रयास किया लेकिन पाठकों की जिज्ञासा शांत करने में असमर्थ रहे। उस युग में आत्मकथा लिखने की ओर प्रवृत्त होना ही साहित्य पर उपकार था।

श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मात्र दो पृष्ठों में अपनी आत्मकथा को लिखा है जो कि लघु आत्मकथा ही हो सकती है। जीवनवृत्त इतना छोटा तो नहीं होता कि दो पृष्ठों में ही समा जाये।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने कवि वचन सुधा में दो पृष्ठों का एक लेख, एक कहानी, ''कुछ आपबीती, कुछ जगबीती'' शीर्षक से लिखा जो बाद में भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग–3 पृष्ठ 813 से 815 पर भी छपा। इसमें अपने नाम तथा कुल परिचय विषय में कोई जानकारी नही दी तथा 23 वर्ष की आयु में खिड़की पर बैठकर बसंत ऋतु की ठण्डी हवा में जवानी की उमंगों में चूर, रसिकाई के नशे में मस्त होकर मुफ्तखोर सिफारिशियों से अपनी तारीफ सुनने का। सारी तारीफ का मुखिया है– 'होली' इसकी समाप्ति इस प्रकार हुई हैं–

''होली आजकल मेरे बहुत मुहँ लग रहा है इससे जो बात किसी को मुझ तक पहुंचानी होती हैं वह लोग होली से कहते हैं। रेवड़ी के वास्ते मस्जिद गिरानी इसी का काम है'' – 9

यह लेख आत्मकथा नहीं हो सकता। उसकी झलक मात्र हो सकता हैं।

**<u>पूना के व्याख्यानः– महर्षि दयानन्द सरस्वती</u>**– बम्बई में आर्य समाज की स्थापना के बाद पूना नगर की भाषण माला के अंतिम दिन 04.08.1875 को जनता के अनुरोध पर स्वामी दयानन्द ने अपने जन्म से लेकर आत्मकथा वर्णन के दिन तक की घटनाओं का उल्लेख अपने श्री मुख से किया था इसे लिपिबद्ध किया गया था तथा उसी काल में '' पूनाप्रवचन अर्थात् उपदेश मंजरी'' के नाम से भाषण माला को प्रकाशित कराया गया । उसके बाद उनका अनुवाद कई भाषाओं में किया गया। पूना के प्रवचन के गुजराती संस्करण की 1881 ई. से पूर्व की विद्यमानता का भी प्रमाण प्राप्य है–

अहमदाबाद की वर्नाक्युलर सोसायटी के पुस्तकालय में 'स्वामी दयानंद सरस्वती भाषण नामक की गुजराती पुस्तक विद्यमान थी। इसका निर्देश 'चीखली' जिला सूरत सुखराम त्रयबंकराम ने अपने 26–12–1881 को ऋषि दयानन्द के नाम लिखे पत्र में किया है।'' – 10

इस पुस्तक के 1893 ई. में प्रकाशित एक हिन्दी संस्करण की प्रति युधिष्ठिर मीमांसक के संग्रह में विद्यमान है। जिसे वैदिक यंत्रालय अजमेर ने ट्रैक्ट के रूप में मुद्रित किया था। इस आत्मकथा की मूल हिन्दी प्रति की प्रथम दो किश्तें जो सन् 1879 में लिखी गई थी, शोधपूर्वक समप्राप्त करके परोकारिणी सभा, अजमेर के मंत्री डॉ. भवानीलाल भारतीय ने आर्यसमाज स्थापना शताब्दी ग्रंथमाला का प्रारंभ करते हुए, सन् 1975 ई. में प्रकाशित की। इस पुस्तक में मूल पाण्डुलिपियों की फोटोस्टेट प्रतियाँ भी छापी गई। प्रथम किश्त पर कुछ संशोधन व हस्ताक्षर स्वामी दयानन्द सरस्वती के हैं। द्वितीय किश्त सारी स्वामी दयानन्द की अपने हाथ की लिखी हुई है तथा तृतीय अभी भी अप्राप्य है। उसका केवल प्रत्यानुवाद एवं थियोसोफिस्ट के नवम्बर 1880 ई0 के अंक में प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद प्राप्य हैं।

इससे प्रमाणित होता हैं कि 4.8.1875 ई में को स्वामी दयानंद ने भक्त लोगों की रूचि को देखते हुए अपने जन्म, शैशव, शिक्षा वैराग्य और गुरू गिरिजानंद की प्राप्ति और बाद मे शास्त्रार्थो व धर्मप्रचार के पश्चात, आर्यसमाज की स्थापना का वर्णन तो कुछ विस्तार से किया था। किन्तु अपनी कष्टकथा से युक्त दुर्गम यात्राओं का वर्णन केवल संकेत रूप में कर दिया। क्योंकि इससे श्रोताओं की रूचि में विषयांतर व अनपेक्षित आत्माख्यान होनें की आशंका थी। इसके पश्चात् का वर्णन वे थियोसोफिस्ट में विस्तारपूर्वक भेजते किन्तु धर्मप्रचार की व्यस्तता, संघर्षपूर्ण जीवन तथा अकाल मृत्यु ने उन्हें ऐसा अवसर नहीं दिया उनकी आत्मकथा पूर्ण करने की ईच्छा भी थियोसोफिस्ट में प्रकाशित हुई थी।

''यद्यपि मेरी बड़ी इच्छा है कि मेरा स्वलिखित जीवनवृत्त जिसे आप आपने पत्र में प्रकाशित कर रहें हैं पूर्ण हो जाए पर अभी तक में उसके लिए यथोचित समय नहीं दे सका, परन्तु यथासंभव शीघ्र ही जीवनकथा भेजूगाँ'' – 11

पूना प्रवचन में कथित और थियोसोफिस्ट हेतु लिखित मूल प्रतियों की भाषा सरल , सुललित, चित्रात्मक, वर्णनात्मक, परिष्कृत तथा प्रांजल खड़ीबोली है। यथार्थ वर्णन,

आत्मकेन्द्रित स्वरूप, आत्मविश्लेषण की रूचि, सत्यप्रतिपादन एवं स्मृति सम्पादन की कुशलता के कारण कथ्य और शिल्प के आधार पर इस आत्मकथा को स्तरीय आत्मकथा कहा जा सकता है।

**<u>निजवृत्तान्त – अम्बिकादत्त–</u>** आधुनिक काल के गद्यविधाओं के जनक, भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध लेखक अम्बिकादत्त व्यास ने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्षो का वर्णन "निजवृत्तान्त" नाम से लिखा।

श्री अम्बिका दत्त व्यास संस्कृत गद्य काव्य की परम्परा को पुनर्जीवित करने वाले तथा हिन्दी व संस्कृत के साहित्य लेखन में समान गति रखने वाले लेखक थे। निजवृत्तान्त कुल 56 पृष्ठों की सुगठित, सुललित संक्षिप्त एवं रोचक आत्मकथा है, जिसमें लेखक ने अपने वंश, जन्म, शैशव तथा शिक्षा के वर्णन के साथ–साथ जीवन संघर्ष व साहित्यलेखन का वर्णन वर्षक्रम से प्रस्तुत किया हैं। इनसे पूर्व में प्रकाशित आत्मकथओं में लेखक ने अपने विषय में कुछ ज्यादा नहीं लिखा था उसी की पूर्ति उन्होंने अपनी आत्मकथा निजवृत्तान्त में पूरी की थी जैसा कि उन्होंने अपने आत्म चरित मे लिखा।

"यह देख हम लोग इस अंश में उनकी भी चूक कहते हैं । ऐसे ही यदि मैं भी अपने ग्रन्थ में निज विषय में कुछ न लिखूँ तो मुझे विद्वान लोग उनकी अपेक्षा भी अधिक दूषित समझेंगे। इस कारण में किंचित निजी वृत्तान्त लिखता हूँ"। – 12

यह रचना भाषा, भाव, वर्णन, कौशल, तथ्यात्मकता एवं विषय प्रतिपादन की दृष्टि से भी स्तरीय है। अम्बिका दत्त व्यास सनातनधर्मी विचारधारा के थे और यथासम्भव पौराणिक धर्म का प्रचार भी करते थे । स्वामी दयानन्द के तत्काल पश्चात् उनकी आत्मकथा के प्रकाशन से प्रतीत होता है कि आत्मकथा के लेखन में प्रतिस्पर्धा की भावना का भी आंशिक योगदान हो । ये आत्मकथा खड्ग विलास प्रेस बॉकीपुर पटना से विधाविनोद पत्रिका के अष्टम भाग के रूप में सन् 1901 ई0 में छपी थी।

**<u>आत्मकथा – राजेन्द्र प्रसाद–</u>** स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के जीवन और तात्कालिक जीवन मूल्यों एवं रीति नीति का आईना प्रस्तुत करती हैं उनकी आत्मकथा। इस आत्मकथा में राजेन्द्र बाबू के बाल्यकाल के बिहार के सामजिक रीति रिवाजों को संकुचित प्रथाओं से होने वाली हानियों को उस समय के ग्राम जीवन

का धार्मिक व्रतों, उत्सवों व त्यौहारों, उस जमाने के बच्चों के जीवन का और उस समय की शिक्षा की स्थिति का हूबहू चित्र देखने को मिलता हैं। उस चित्र में सादगी और खानदानियत के साथ विनोद और खेद उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों का मिश्रण हुआ है। साथ ही आजकल हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भेदभाव की जो खाई बड़ी हुई नजर आती है, इसके अभाव का और दोनों जातियों के बीच शुद्ध स्नेह का जो चित्र इस आत्मकथा में है, वह दुर्भाग्य से आज लुप्त होता जा रहा है।

सन् 1943 ई0 की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि डॉ राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा है । इस 869 पृष्ठ की विशालकाय आत्मकथा का प्रकाशन सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली द्वारा हुआ। पुस्तक का लेखन 08.01.1947 को पूर्ण हुआ था। 1956 में द्वितीय तथा 1965 में चतुर्थ संस्करण प्रकाशित होने पर देश की परिस्थतियों के परिवर्तन के बाद भी लेखक ने इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया। इस रचना में 1917 से 1947 ई0 तक के 30 वर्षो का इतिहास इस प्रकार का हैं कि उनका जीवन राष्ट्र की समस्याओं के साथ एकाकार हो गया हैं। महात्मा गाँधी के विशेष प्रभाव के कारण सुभाष की आलोचना तक की गई है। अहिंसा प्रेम के कारण क्रान्तिकारियों की प्रशंसा भी नहीं की गई है। अपने प्रारंभिक जीवन तथा व्यक्तित्व के विकास को लेखक ने तटस्थ दृष्टि से प्रस्तुत किया है। किन्तु सूक्ष्म आत्मविश्लेषण का अवसर बहुत मुश्किल से मिला हैं। वस्तुतः उन्हें इन समस्याओं से एकाकार होने के कारण ऐसा अधिकार भी था। राष्ट्र के अनुसार आने आपको ढालने का उदाहरण इस प्रकार है–

“मैने स्वयं अपने देशव्यापी दौरे में देखा है कि मुझे दो प्रकार की हिन्दी बोलनी पड़ती है। जब मैं सीमा प्रांत और पंजाब में गया विशेषकर ऐसी सभाओं में जहाँ मुसलमानों की संख्या अधिक थी, तो मैं फारसी मिश्रित हिन्दी बोलकर अपने विचारों को व्यक्त कर सका। बंगाल, महाराष्ट्र इत्यादि और दक्षिण भारत मे भी जहाँ कुछ हिन्दी समझी जाती थी, मैं संस्कृत बहुल हिन्दी बोलकर ही अपना काम कर सका।” – 13

राजेन्द्र बाबू के जीवन मे विद्वता, विनम्रता, जनसेवा, परोपकारिता, राष्ट्रभक्ति, सत्य, अहिंसा, स्वदेशी वस्तुओं के ग्रहण का आग्रह, गौरक्षा, गौसंवर्धन, हिन्दू मुस्लिम एकता तथा मानवता प्रेम आदि गुणों की झलक पदे–पदे प्राप्त होती है। उनके महान् व्यक्तित्व में आश्चर्य की सीमा तक परिव्याप्त सादगी, सहजता, सरलता, भोलापन, विनीतता तथा परिश्रमशीलता अनुकरणीय है। अतिवादों के विरूद्ध समन्वयवादी दृष्टि

समस्याओं के समाधान में किस प्रकार सिद्ध होती है इस आत्मकथा से प्रमाणित हो सकता हैं।

**<u>मेरी जीवन यात्रा – राहुल सांकृत्यायन–</u>** हिन्दी साहित्य में घुमक्कड़ शास्त्र का प्रणयन करने वाले महान, विद्वान, यशस्वी विश्व यात्री श्री राहुल सांकृत्यायन ने अपनी जीवन यात्रा में देश विदेश की यात्रा की और विभिन्न परिवेश, वातावरण भौगोलिक सभ्यता, संस्कृति का रसास्वादन किया तथा प्रत्येक यात्रा का आनन्द स्वयं ने ही नहीं उठाया बल्कि परोपकारी स्वभाव के होने के कारण यात्रा के मध्य आने वाली कठिनाइयों को सहज सुलभ रूप में अन्य को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से यात्रा वृत्तांत के रूप में पाठकों की सहायता की ।

"मेरी जीवन यात्रा" आत्मकथा में लेखक के 63 वर्षो के जीवन का चित्रण हैं। प्रारम्भ में वशं परिचय, जन्म, शैशव, जवानी, शिक्षा दीक्षा, दक्षिण भारत की यात्रा महात्मा गांधी का प्रभाव, आर्य समाज से सम्पर्क आदि का वर्णन किया गया है। इससे अगले खण्ड में लंका तिब्बत, जापान, रूस, व यूरोप आदि की यात्रा का वर्णन है। किसान आंदोलन, सत्याग्रह जलयात्रा, बौद्ध धर्म, साम्यवाद के प्रभाव इत्यादि का वर्णन है। आत्मकथा के तीसरे खण्ड में लेखक के तीन वर्षो तक सोवियत प्रवास का वर्णन हैं। लेखक सन् 1944 से 1947 तक सोवियत रूस में ही निवास करते रहे। इस दौरान लेखक को नवीन सांस्कृतिक वातावरण का ज्ञान हुआ। चतुर्थ खण्ड में सन् 1947 से 1950 तक की घटनाओं का वर्णन है, जिसको संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस काल में उनका विवाह कमला के साथ सम्पन्न हुआ तथा हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने में योगदान दिया एवं साहित्य लेखन द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। अंतिम खण्ड में 1951 से 1957 तक की घटनाओं का वर्णन मिलता है। इस खण्ड में गृहस्थ जीवन का वर्णन एवं उसकी समस्याओं को प्रमुखता दी गई है।

वैवाहिक पृष्ठभूमि पर महापण्डित जी की दृष्टि सदैव ही गत्यात्मक रही है। क्रमशः पौराणिक, आर्य समाजी, बौद्ध और साम्यवादी बने। उनके यायावरी जीवन का एकमात्र लक्ष्य था मानवता की खोज करना जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है–

“आर्य समाज के स्वतंत्र विचारों के बाद मैं बुद्ध के पास पहुँचा और उनके अनीश्वर वाद, विचार स्वातन्त्र्यवाद, आर्थिक समतावाद से बहुत प्रभावित हुआ। उसके बाद मार्क्स के विचारों को अपनाना मुझे स्वाभाविक सा मालूम हुआ।” – 14

इस विशाल और व्यापक आत्मकथा में लेखक की साहित्यिक आभिरूचियों, वैयक्तिक गुण दोषों, अनुभूतियों भावनाओं, यात्राओं, तथा विशिष्ट उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन हुआ है। प्रथम दो खण्डों का लेखन केवल स्मृति के बल पर हुआ है। शेष में पत्रों और डायरियों को आधार बनाया गया है। यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि महापण्डित राहुल के जीवन और साहित्य के समान ही निरन्तर गत्यात्मक, संघर्षशील और विवेकपूर्ण होने के साथ साथ उनकी आत्मकथा के ये खण्ड उनके साहित्य की सर्वश्रेष्ठ निधि हैं। उनकी कृति आत्मकथा साहित्य के लिए मील का पत्थर है, उसकी स्पर्धापूर्ति निकट भविष्य में संभव नहीं है।

**<u>सिंहावलोकन – यशपाल –</u>** हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के मार्क्सवादी, क्रान्तिकारी, लेखक यशपाल ने अपनें जीवन के महत्त्वपूर्ण तथ्यों, घटनाओं, स्वतंत्रता संग्राम की गाथा, आर्य समाज के प्रभावों इत्यादि गतिविधियों को समेट कर एकमाला में पिरोकर सिंहावलोकन के रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

''सिंहावलोकन'' का प्रथम खण्ड 1951 द्वितीय खण्ड 1952 एवं तृतीय खण्ड 1955 ई में प्रकाशित हुए। प्रत्येक खण्ड के पांच छः संस्करण प्रकाशित हुए। प्रथम खण्ड में लेखक के बाल्य, शिक्षा तथा क्रान्तिकारी दल के कार्यो का उल्लेख होने से वैयक्तिक जीवन पर प्रचुर प्रकाश पडा। जैसे

“सात आठ वर्षो की अवस्था में मेरी माता ने मुझे स्वामी दयानन्द के आदर्श के अनुकूल आर्य धर्म का तेजस्वी और ब्रह्मचारी प्रचारक बना देने की आशा से गुरूकुल कांगडी में भरती करा दिया था। उस उम्र में ही जाने किस प्रेरणा से हम लोगो को यह विश्वास था कि हम अंग्रेजों को अपने देश से मार भगायेंगे।” – 15

लेखक ने आत्मकथा में पूरे क्रातिंकारी दल और गतिविधियों को समेट लिया है। इसीलिए भाई परमानन्द, भगतसिंह, सुखदेव राजगुरू, चन्द्रशेखर, भगवतीचरण, लाला लाजपत, स्वामी श्रद्धानन्द, पृथ्वीसिंह आजाद, और रामप्रसाद बिस्मिल आदि क्रान्तिकारियों तथा शहीदों का चित्रण विस्तार पूर्वक किया है। यशपाल जी का अपना चरित्र ही इतना

आकर्षक और रहस्यमयी अद्भुत था कि भारत में प्रथम बार किसी दम्पति की शादी जेल परिसर में हुई जिसके लिए जेल प्रशासन को अपने नियमों में परिवर्तन करना पड़ा था। जैसा कि लिखा है–

"जेल में पहली बार विवाह होना असाधारण नयी बात थी, इसलिए सभी अखबारों ने स्टेट्समेन आदि ने भी इस समाचार को महत्त्व देकर मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया था।" – 16

यशपाल की भाषा शैली रोचक और मर्मस्पर्शी है विषय वस्तु तथ्यात्मक होने के साथ साथ रहस्य रोमांच प्रधान भी है। यदा कदा तो कटाक्ष प्रधान भी; जैसे हंसराज वायरलेस को लोभी तथा असत्यवादी सिंद्ध करने का प्रयास आत्मेतर पात्रों की प्रचुरता ने इसके विधा रूप को संयमित बना दिया हैं।

**<u>प्रवासी की आत्मकथा – भवानी दयाल संन्यासी – </u>:–** भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले क्रान्तिकारी, महात्मा गाँधी के समकक्ष जेल यातना भोगने वाले, स्वतंत्र भारत के स्वप्न संजोने वाले भवानी दयाल संन्यासी ने अपनी आत्मकथा "प्रवासी की आत्मकथा" के रूप में लिखकर सम्पूर्ण स्वतंत्रता संग्राम के समय स्वतंत्रता सैनानियों के साथ जो कुछ भी घटित हुआ उसका वर्णन इस में प्रस्तुत किया गया है।

सन 1921 ई0 में श्री झाबरमल्ल शर्मा के सुप्रयासों से 25 देशभक्तों की जेल कथा को भारतीय देशभक्तों की कारावास कहानी के अन्तर्गत छापा गया था। जिसमें भवानी दयाल संयासी के जो अंश छपे थे वो आत्मकथा का आभास देते हैं । इसमें लेखक द्वारा दक्षिण अफ्रीका में अप्रवासी भारतीयों हेतु किए गये संघर्ष, उसकी हिन्दी सेवा और आर्य समाज अनुराग तथा अनेक बलिदानों की कारूणिक कथा निष्ठा पूर्वक की गई हैं इसे खण्ड आत्मकथा माना जा सकता है।

इसके बाद पत्रकार ठाकुर राजबहादुर सिंह ने लेखक से सुनी हुई घटनाओं के आधार पर 1939 ई में "प्रवासी की कहानी" लिखी थी स्वयं भवानी दयाल सन्यासी ने लिखा है–

“मेरी गाथाएं सुनकर जो कुछ आवश्यक बातें लिख ली थी उनके ही आधार पर प्रवासी की कहानी की सृष्टि हुई। यह पुस्तक जितनी उतावली में लिखी गई थी उतनी ही जल्दी में छपी और खप भी गई थी पर उससे मुझे संतोष न हुआ। उतावली के कारण उसमें और भी अनेक त्रुटियां रह गई थी ठाकुर साहब की यही राय और सलाह थी कि मुझे स्वंय अपनी आत्मकथा लिखनी चहिए।” – 17

इस प्रकार 1945 से 1947 ई0 तक के दो वर्षो में लिखकर, लेखक ने आत्म स्मृतियों को आत्मकथा का रूप प्रदान किया। दक्षिणी अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों की व्यथा और करूणा से पूर्ण इस आत्मकथा को लिखते हुए लेखक ने कहा–

“बडे प्रयत्न से हिम्मत करके कहने चला कहानी पर अव्यक्त हृदय भावों को कैसे कहे जबानी” -18

इस आत्मकथा में प्रवासी भारतीयों की कष्टकथा, समस्याएं, कुरीतियां, सुधारात्मक, कार्य तथा संघर्ष का चित्रण है लेखक के माता पिता का दासता पूर्ण जीवन, जोहान्सबर्ग में 1892 ई0 में अपने जन्म, जन्म भूमि का चित्रण, एवं अपने शैशव संस्कारों का वर्णन किया है। हिन्दू धर्म की कुरीतियों से घबराकर वे ईसाई होना ही चाहते थे कि स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों व स्वामी श्रद्धानन्द के प्रभाव से आर्य समाजी बन गये। उन्होंने लिखा हैं –

“मैं कट्र आर्य समाजी बन गया और नया मुल्ला अल्ला ही अल्ला की लोकोक्ति चरितार्थ करने लगा ” – 19

दक्षिण अफ्रीका के समाज सुधार व जन जागरण में लेखक का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। नेपाल में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना तथा दयानन्द शताब्दी का अयोजन यदि लेखक की निजी सफलताएँ थी तो 1938 ई0 में नेपाल में भारतीय परिषद् की स्थापना भी उन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप हुई। 1939 ई0 में हुई प्रवासियों की दुर्दशा का करूणार्द्र चित्र भी आत्मकथा में मिलता हैं।

**मेरा जीवन प्रवाह – वियोगी हरि –** हिन्दी की आत्मकथा साहित्य में प्रसिद्ध समाज सेवी लेखक, कवि तथा समाज सुधारक वियोगी हरि की 420 पृष्ठों की आत्मकथा "मेरा जीवन प्रवाह" शीर्षक से सन् 1948 ई में प्रकाश में आई। इसका प्रकाशन सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली के द्वारा किया गया। लेखक की चारित्रिक विशेषताओं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व और सहज स्पष्ट शैली एवं जमीन से जुडाव के कारण आत्मकथा को विशिष्ट महत्त्व प्राप्त हो सका। लेखक ने परम्परानुसार आत्मकथा के प्रारम्भ में अपनी वशं परपंरा, जन्मभूमि, छत्रपुर के घुटनशील वातावरण, नाना के प्रेम तथा आर्थिक अभावों का वर्णन करते हुए जीवन आरम्भ की दशा को चित्रित किया हैं। साहित्य सम्मेलन की शिक्षा, विभाग व हरिजन संघ आदि क्षेत्रों से सबंधित कार्यो का परिचय देते हुए आत्मविश्लेषण आत्मपरीक्षण का उदाहरण प्रस्तुत किया है। लेखक ने स्वयं हरिजन बस्ती में अपने निवास व अछूतोद्धार कार्यक्रम पर प्रकाश डाला है। साहित्य के अध्ययन लेखन व गद्य पद्य की रचनाओं की रचनाधर्मिता को भी प्रकाश में लाया गया है। 1952 ई0 में उन्होंने पुनः एक आत्मकथात्मक लघु रचना लिखते हुए अपने जीवन का विहंगम निरीक्षण किया। यह रचना प्रेमचन्द्र सुमन की जीवन स्मृतियाँ में छपी । इसकी भाषा सरल, सपाट व सर्वमान्य हैं–

"अब दिल्ली यहाँ रहते आज 20 साल होने को आए। सन् 1932 से 1952 तक। यहाँ पूज्य बापू सें सम्पर्क बढ़ा, ठक्कर बापा का पुण्य स्नेह मिला, हरिजन, निवास को बसते हुए देखा दो चालकों को पुत्र रूप मे स्वीकार किया और जीवन के बहाव को ममता भरी दृष्टि से देखा। " – 20

**आत्मकथा अंक 'हंस' सं. प्रेमचन्द :–** आधुनिक काल में आत्मकथा की विकास यात्रा का शुभारम्भ करने का सम्पूर्ण श्रेय उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द व उनके द्वारा संपादित हंस पत्रिका के आत्मकथांक को जाता है। भारतेन्दु व द्विवेदी ने जिस प्रकार अथक प्रयत्न करके अपने गुणों से हिन्दी गद्य और खड़ी बोली को सम्बल प्रदान किया, प्रेमचंद ने भी सन् 1932 ई0 मे "हंस के आत्मकथांक" द्वारा वैसा ही प्रयास किया है। इसका उद्देश्य आत्मकथा लेखन की प्रवृत्ति की अभिवृद्धि था। पत्र पत्रिका के माध्यम से आत्मकथा की प्रस्तुति प्रेमचंद से पूर्व एवं पश्चात् विशेषांक रूप में इतनी सामग्री एकत्रित करके निकालने का प्रयास शायद नहीं हुआ हैं। इस अंक में प्रकाशित आत्मकथाएँ अत्यतं संक्षिप्त लघु और प्रायः निबन्धाकार थीं। इस अंक की लोकप्रियता से श्री नन्द दुलारे

वाजपेयी ने प्रेमचन्द को आत्मविज्ञापक सिद्ध करते हुए 'भारत' पत्र में तथा रामेश्वर शुक्ल अंचल ने "माधुरी" नामक पत्रिका में उनका घोर विरोध किया। जिसका प्रेमचंद को हंसवाणी मे क्रमिक उत्तर देना पड़ा। इस आत्मकथांक में वैद्य ठाकुर दत्त शर्मा की आत्मकथा तथा वैद्य हरिदास व श्री गया प्रसाद श्री हरि की "मेरी आत्मकथा" शीर्षक से लघु रचनाएँ छपी थी जो अधिकतर परिचयात्मक ही थी। विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक ने ''मेरा ये बाल्यकाल'' में अपने शैशव का चित्र उपस्थित किया। 'जमाना' पत्र के संपादक दया नारायण निगम ने "मेरे जीवन का एक अनुभव" लिखा। भाई परमानंद तथा प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी के जेल संबधी अनुभव भी 'एक जेल से दूसरी जेल तक' तथा 'मेरी गिरफ्तरी' शीर्षक से इस अंक मे संकलित हुए। इस संकलन में जहाँ रमाशंकर अवस्थी सदगुरूशरण अवस्थी यशोदा देवी व इकबाल वर्मा सेहर के ''एक बात मेरी भी'' 'दरिद्र दर्पण' मेरा एक अनुभव 'मेरा हिन्दी उर्दू संबधी अनुभव' सदृश आत्मीय अनुभव प्रकाशित हुए।

**<u>आत्मकथा– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी –</u>**द्विवेदी युग के महान निर्माता खडी बोली के प्रतिष्ठापक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की लघु आत्मकथा सन् 1929 ई0 के आसपास मिलती हैं।

वस्तुतः आचार्य द्विवेदी ने काशी में अपने अभिनन्दन के उत्तर मे जो भाषण दिया था उसमें प्रसंगवश तथा विनम्रता प्रदर्शनार्थ आत्मकथात्मक तत्त्व आ गए थे। सरस्वती के संपादन संबधी संक्षिप्त अनुभव तथा जीवन की अन्य सरस अनुभूतियां भी उसमें आ गई थी। इसी भाषण के प्रकाशन ने क्रमिक रूप से उनकी आत्मकथा का रूप ग्रहण किया। केवल अभिभाषण द्वारा संक्षिप्त आत्मकथा कहने का यह तीसरा उदाहरण है कि इससे पूर्व स्वामी विवेकानन्द एवं स्वामी दयानन्द के मौखिक आत्माख्यान को सम्पादित कर आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किया जा चुका था।

नव शक्ति पटना के सम्पादक देव व्रत ने साहित्यकारों की आत्मकथा के प्रारम्भ मे जीवन गाथा शीर्षक से उन्नीस पृष्ठों का प्रसंग प्रकाशित किया था, जिसमें लेखक की नम्रता निरभिमानिता का उदाहरण इस प्रकार है–

"मेरी झूठी विज्ञता के आवेश ने, मुझसे पूर्वावस्था में अनेक अनुचित काम करा डाले उस दशा में मुझसे जो दुष्कृत्य हो गये, उन्होंने मेरी आत्मा को कलुषित कर दिया।" – 21

उनके इस कथन से आत्मकथा के विषय में उस युग के लेखकों की प्रवृत्ति, अभिरूचि, संकोच और साहस का संक्षिप्त परिचय प्राप्त होता है।

**मेरी असफलताएँ – बाबू गुलाब राय :–** हिन्दी साहित्य के विद्वान, मनीषी, व्यग्यंकार श्री बाबू गुलाब राय ने अपनी आत्मकथा 'मेरी असफलताएँ' मे स्वयं खुद पर हँस कर पाठकों का मनोरंजन करते हुए अपने आत्माख्यान का वर्णन किया है। इसके अंतर्गत लेखक ने स्वयं को दीन, दलित, पतित कहते हुए आत्मकथा के लक्षण, गुण, दोष प्रकटीकरण का निर्वाह किया है, जैसा कि स्वयं उन्होंने लिखा है–

यह युग साम्यवाद का है। व्यावहारिक रूप से तो नहीं, सैद्धान्तिक रूप से अवश्य गंगू तेली राजा भोज की बराबरी कर सकता है। इसी समता भाव के कारण, समाज के अभिशाप गिने जाने वाले दीन–दलित, पतित और लांछित अस्थि पंजरावशेष, जर्जरित, वैभव विहीन मनुष्य भी आधुनिक काव्य के आलम्ब बनते हैं। यदि मुझ जैसा कोई "मति अतिरंक , मनोरथ राऊ" व्यक्ति बिना किसी साधना और योग्यता के महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर रविन्द्र नाथ ठाकुर या राय बहादुर डॉक्टर श्याम सुन्दर दास जी की भांति आत्मकथा का नाम बन कर अपने को पांचवा सवार गिने जाने की स्पर्द्धा करे तो सहृदय पाठकगण उसको युग की प्रवृत्ति का शिकार समझ कर दया और उदारता के साथ क्षमा करेंगे।" – 22

यह आत्मकथा अत्यंत रोचक एवं व्यंग्य विनोद पूर्ण है, किन्तु साथ ही लेखक के व्यक्तित्व, चरित्र, स्वभाव, कार्यक्षमता, योग्यता उत्साह तथा विद्वता पर परोक्ष रूपेण प्रकाश डालती है। लेखक ने स्वयं अपनी हँसी उड़ाकर दूसरे को हसंने का अवसर दिया, किन्तु अपनी सफलताओं के उल्लेख से सदा परहेज किया है। इस आत्मकथा में, छत्रपुर राज्य में सेवाकार्य मकान ढूँढने, बनवाने, जलमग्न होने तथा व्यापार की असफलताओं व आगरे की बाढ़ आदि का सजीव चित्रण किया है।

# (ब) उत्तर सृजन

**क्या भूलूँ क्या याद करूँ– डा0 हरिवंश राय बच्चन–**हिन्दी साहित्य के छायावादी युग के हालावादी कवि, लेखक, साहित्यकार, प्रबुद्ध मनीषी डा0 हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा ने साहित्य संसार में आत्मकथा लेखन में नवीन कीर्तिमान स्थापित किये हैं। बच्चन जी के आत्मकथा के प्रथम खण्ड 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' का प्रकाशन 1969 में राजकमल प्रकाशन से किया गया। जिसके बाद उसके प्रतिवर्ष नव संस्करण निकले।

प्रथम खण्ड में जहाँ बच्चन जी ने अपने भावजगत और यौवनारम्भ के प्रथम अभिसारों का चित्रण किया हैं, वहाँ अपने कुल, परिवेश तथा पूर्व पुरूषों का भी अत्यंत रोचक तथा सरस शैली में वर्णन किया है। लेखक की इच्छाओं, आकांक्षाओं, स्वप्नों और कल्पनाओं तथा शैशव और नवयौवन की ऊँची उडानों का इस भाग में सुन्दर दिग्दर्शन है। कहीं कर्कल चम्पा प्रसंग है, कही श्री कृष्ण प्रकाशो प्रसंग लेखक ने सत्य और तथ्य की रक्षा करते हुए अपने नियमित और अनियमित प्रेम प्रसंगों का वर्णन किया हैं। श्यामा की रूग्णता और मृत्यु ने बच्चन के हृदय पर जो ठेस पहुँचाई उनकी कविता तथा आत्मकथा में समान रूप से सुनी जा सकती हैं।

लेखक ने अपनी रचना प्रक्रिया के सम्बन्ध में कहा भी है "मेरा कवि, यदि उसे कभी सही रूप में देखा जाये तो वह मेरे जीवन से ही जुड़ा, प्ररोहित, प्रादुर्भूत और उसका ही प्रक्षिप्त अंग प्रतीत होगा।..... यदि मैं कही समझी जाने योग्य इकाई हूँ तो मेरे कविता से मेरे जीवन और मेरे जीवन से मेरी कविता को समझना होगा। मुझे ऐसा स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं है कि जैसे मेरी कविता आत्मकथा संस्कारी है, वैसे ही मेरी आत्मकथा भी कविता संस्कारी है।" – 23

कृति के आरम्भ में ही लेखक ने "क्या भुलूँ, क्या याद करूँ" को अपनी योजना का एक तिहाई भाग बतलाया है। इतना कह देने के बाद जब कृति पुरखों के यशोगान तथा उनके उत्थान पतन की कहानी से आरंभ होती है तो आत्मकथा के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में अनपेक्षित नहीं लगता । लेकिन डेढ़ सौ पृष्ठों तक लेखक सिवाय पुरखों के इतिहास के कोई अन्य बात नहीं करते, अतः पाठक का सारा समय सम्बंधों का जोड़ तोड़ करने में ही लग जाता है जिससे प्रभावान्विति को चोट पहुंचती है ।

आत्मकथा के प्रारंभ में ही बच्चन जी ने फ्रांस के महान लेखक मानतेन की आत्मकथा के शब्दों को उद्धृत किया है जिससे उन्होंने अपना यह मत स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि उन्होंने यह आत्मकथा किस मनोवृत्ति से लिखी है ? वास्तव में मानतेन ने स्वंय को एक सीमा में रखकर इस बात की ओर ध्यान दिलाया है कि लेखक अपने गुण दोषों का बखान करेगा लेकिन लोकशील मर्यादा में रहकर। बच्चन जी की मनोवृति यही रही है तो कर्कल, चम्पा, प्रकाशो के प्रसंग किस लोकशील मर्यादा के निर्वाह को भंग करते हैं ?

जहां तक कथा का सम्बन्ध है एक सतही ढ़ंग से अपने जीवन की सब घटनाएं लेखक ने ईमानदारी से प्रस्तुत कर दी हैं। आत्मकथा–लेखक की महानता इससे नहीं कि वह अपने जीवन की सब घटनाएं ज्यों की त्यों कह डाले, अपितु वह महानता इसमें है कि वह अपने जीवन को कितनी अर्थवत्ता दे पाया है ?

लेखक का व्यक्त्वि साहित्य की उत्ताल तरंगों में से ही उदित हुआ है फिर उनकी अनुभूतियां भी उनके व्यक्तिव को सजीव बनाती हैं, बच्चन जी ने स्वंय कहा है–

"अनुभूति का सत्य वस्तुगत सत्य से कहीं अधिक सजीव होता है।" – 24

बच्चन जी अपनी रचना में अधिक से अधिक अपनी संवेदना का विस्तार करना चाहते है और ऐसा करने में उन्हे भरपूर सफलता भी मिली है। प्रायः आत्मकथा लेखक का उद्देश्य अपने जीवन में पाठक की रूचि पैदा करना होता है। परन्तु यदि इस रूचि को उत्पन्न करने के साथ साथ जीवन की अर्थवत्ता भी उसी मापदण्ड से प्रस्तुत हो सके तो जीवन और कृति का तौल सम रहेगा।

पुस्तक यद्यपि अलग अलग अध्यायों में विभक्त नहीं है तथापि उसमें ठहराव और गतिशीलता अवश्य है। घटनाएं चलचित्र की भांति रफ्तार से दौडती सी लगती हैं। लेखक की भाषा पर कहीं कहीं प्रादेशिक प्रभाव भी झलकता है। भाषा साहित्यिक प्रांजल एवं प्रभावोत्पादक है। वाक्य रचना मे शब्द लाघव बनाये रखने की क्षमता है। बच्चन जी की शैली विवेचनात्मक है।

साहित्य विधा की दृष्टि से यह रचना सर्वांगीण आत्मकथाओं के अभाव की पूर्ति करती है। अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर आत्मकथा के द्वारा ही ऐसा प्रकाश पड़ सकता है। यह आत्मकथा कुछ बातों का संकलन मात्र ही नहीं है, अपितु वस्तु के स्तर

पर घटनाएँ क्रमिक, सुव्यवस्थित व प्रभावोत्पादक बन पड़ी हैं। यद्यपि घटनाएं कहते समय लेखक अपने से अलग नहीं हो पाता, तथापि उसके लिए यही आवश्यक है कि निरपेक्ष होकर अपना जीवन वृत्तांत प्रस्तुत करे।

**अक्षरों के साये– अमृता प्रीतम–** बीस वर्ष पूर्व प्रकाशित 'रसीदी टिकट' के बाद "अक्षरों के साये" अमृता प्रीतम की एक और आत्मकथांकन केवल उनके आज तक के समग्र जीवन को अपने कथा वृत्त में समेटती है बल्कि एक बिल्कुल नये अध्यात्म से जुड़े धरातल पर उसका विवरण प्रस्तुत करती है।

अमृता प्रीतम की आत्मकथाकंन "अक्षरों के साये" एक अन्तर्यात्रा राजपाल एण्ड सन्स द्वारा 2011 में प्रकाशित की गई । बचपन से आज तक के अपने जीवन के सभी अध्यायों और अनुभवों को वे किसी न किसी साये के तले जिया गया मानती हैं। जैसे जन्म लेते ही मौत के साये, फिर हथियारों, अक्षरों, सपनों, स्याह ताकतों और चिंतन के साये और यह पाठक के सामने एक नितांत नवीन दुनिया के भीतर झांककर देखने की उनकी अदम्य इच्छा को व्यक्त करता है। आत्मकथा के आरम्भ में स्वयं अमृता प्रीतम ने लिखा है–

"घर, समाज, मजहब और सियासत के नाम पर

दरो–दीवार पर जो साये लिपटते रहे.....

कुछ उनकी बात करती यह पुस्तक–

एक उस मुकाम पर पहुँचती है–

जहां अंतर्चेतना के साये अक्षरों मे उतरते हैं

चेतना का नादमय होना अक्षरों में ढ़लता नहीं

फिर भी उसकी बात हुए यह कुछ पृष्ठ है

जिन्हें एक अंतर्यात्रा कह सकती हूँ"

अमृता – 25

आत्मकथा का आरम्भ 'मौत के साये' से होता है तथा शक्ति कणों के साये पर समाप्त होता हैं। कुल 13 अध्यायों में प्रत्येक अध्ययन में कोई न कोई साया लेखिका के साथ रहा है। पूर्वजन्म का साया अध्याय में लेखिका ने अपने और साहिर के प्रेम को जवाहर लाल नेहरू और एडविना के प्रेम के समान उच्च कोटि का रूहानी प्रेम माना है जिसमें सिर्फ मन है तन नहीं। जैसा कि उन्होंने लिखा है–

"नेहरू और एडविना के–बरसो लम्बे रिश्ते में, कभी खंडहरात में, कभी फूलों की वादियों में बैठी हुई–वह घड़ियां आई, जिनको किसी रिश्ते का नाम नहीं दिया जा सकता–उनके रिश्ते में तन नहीं रहे थे, सिर्फ मन था, जिसे धड़कते हुए कुछ धरती ने सुना, कुछ आकाश ने........." – 26

मेरा और साहिर का रिश्ता भी कुछ इसी रोशनी में पहचाना जा सकता है–जिसके लम्बे बरसो में कभी तन नहीं रहा था–सिर्फ मन था–जो नज्मों में धड़कता रहा.....

लेखिका ने आत्मकथा में विभिन्न जगह अपनी भावनाएँ नज्म के रूप में लिखी हैं। दुनिया में रिश्ता एक ही होता हैं तड़प का, विरह का, हिचकी का और शहनाई का जो विरह की हिचकी में भी सुनाई देता है–यही रिश्ता साहिर से भी था, इमरोज से भी है–यह साहिर की मुहब्बत थी,जब लिखा–

"फिर तुम्हें याद किया,

हमने आग को चूम लिया

इश्क जहर का प्याला सही,

मैने एक घूंट फिर से मांग लिया "

इमरोज के लिये लिखा–

"कलम ने आज गीतों का काफिला तोड़ दिया

मेरा इश्क यह किस मुकाम पर आया है

उठो! अपनी गागर से–पानी की कटोरी दे दो

मैं राहों के हादसे, उस पानी से धो लूंगी " – 27

अनेक दृष्टियों से यह साहित्य की एक विशिष्ट रोमांचक आत्मकथा है, जिसमें बचपन से आज तक के उनके क्रमवार फोटो चित्र दृष्टि के स्तर पर भी उनकी अपनी छाया को उद्भासित करते नजर आते हैं।

**पंखहीन – डॉ0 विष्णु प्रभाकर –** मूर्धन्य साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की यह आत्मकथा उनके अपने जीवन का वृत्तांत होनें के साथ–साथ बीसवीं शताब्दी के आरंभ से देश और उनके समाज में चले सामाजिक–राजनीतिक आन्दोलनों का तथा इन सबके साथ साहित्य की विविध गतिविधियों का, चारों ओर नजर डालता आईना हैं। समूची पिछली सदी को अपने में समेटता यह जीवन वृत्त एक प्रकार से उस युग का गहराई से किया गया चित्रण तथा विश्लेषक लेखा जोखा हैं जिसमें देश ने उसके जन में एक बिल्कुल नया आधुनिक निर्माणशील जीवन जीना आरंभ किया हैं।

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य के मनीषी प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने भी अपनी आत्मकथा एक दिशाहीन सफर 'पंखहीन' शीर्षक से लिखी जो' राजपाल एण्ड सन्स द्वारा सन् 2010 में प्रकाशित की गई। कुल 206 पृष्ठों की पुस्तक में 31 अध्याय दिये गयें हैं जो कि घटना क्रम पर आधारित हैं। आत्मकथा का आरम्भ लेखक की जन्म भूमि मीरापुर के वर्णन से होता हैं। जिसमें मीरापुर की भौगोलिक स्थिति, वातावरण, संस्कृति बसावट के बारे में जानकारी दी गई हैं। उसके पश्चात अपने पारिवारिक वंश का संस्कारों का वर्णन किया गया है। जैसा कि लिखा गया है–

"उन दिनों सभी संस्कार समारोह पूर्वक सम्पन्न होते थे। जब हम दोनों भाइयों के पाठशाला जाने का समय आया, तब भी विधिवत पूजन किया गया था" – 28

पंखहीन में लेखक ने बहुत ही सूक्ष्म दृष्टिबोध प्रयोग करते हुए जीवन की हर छोटी घटना को बहुत ही कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। बचपन की स्मृतियों, मेले, तीज, त्यौहार, स्थानीय रीति–रिवाजों, लोक कला इत्यादि का सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन किया गया है–

> "मेले हमारे कस्बे के आसपास बहुत भरते थे। छड़ियो का मेला, गुग्गा पीर का मेला, शाकम्भरी देवी का मेला और चेलहम। इनकी मुझे धुंधली सी याद हैं।"–29

पंखहीन में लेखक ने जाति, वंश, ग्राम, परिवार से लेकर स्वंतत्रता संग्राम, गाँधी जी के बारे में अपने साहित्यिक व कर्मयोगी जीवन, यात्रा, नौकरी का भी वर्णन किया है।

साहित्यिक गतिविधियों के अंतर्गत प्रेमचंद के 'हंस' के आत्मकथांक के बारे में भी लिखा है।

"सन् 1932 मे जब प्रेमचंद ने 'हंस' का 'आत्मकथा–अंक' निकाला था तब आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने उसका विरोध करते हुए लिखा था– 'इससे हिन्दी साहित्य में पहले से ही प्रबल, आत्म विज्ञापक भाव प्रबलतर होगा।'' –30

अंततः यही कहा जा सकता है कि यह साहित्यिक स्तर की आत्मकथा है जिसमें लेखक ने समग्र जीवन की घटनाओं को संजोकर प्रस्तुत करने की कोशिश की हैं। भाषा की कसौटी पर भी उत्तम कहा जा सकता है। शब्दावली में तत्सम, देशज, तद्भव, उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यह आत्मकथा विष्णु प्रभाकर के अपने जीवन के उतार चढ़ाव के साथ साथ भारतीय समाज के ऐतिहासिक परिवर्तन का भी रोमांचक दस्तावेज है।

## (स) दलित सृजन

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा साहित्य आधुनिक काल की विधाओं मे परिगणित है। प्रारम्भ में आत्मकथा को अपने जीवन की राम कहानी मान लिया गया। शीघ्र ही यह विधा सत्य की प्रभावी ढ़ंग से अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई।

दलित साहित्यकारों ने इस सत्य की कसौटी पर अपने जीवन की कटु सच्चाइयों को अभिव्यक्त करने का दृढ़ निश्चय किया। परिणामस्वरूप अस्सी के दशक के लगभग दलित आत्मकथाओं का अस्तित्व प्रकट हुआ। अभिव्यक्ति से टकराने का दुस्साहस हर किसी में नहीं होता। यही कारण रहा कि दलित आत्मकथाओं की संख्या गिनी चुनी है। हिन्दी क्षेत्र में दलितो की पहली आत्मकथा डॉ0 भगवान दास की "मैं भंगी हूँ" है मगर इसे वह एक तरह से अपनी कम 'भंगी' समाज की आत्मकथा मानते है। यह 1957 में उर्दू "भीम पत्रिका" में धारावाहिक रूप में छपी थी परन्तु "मैं भंगी हूँ" का हिन्दी में पहला प्रकाशन 1981 में ही संभव हो सका। इस आत्मकथा से दलित आत्मकथाओं का बीजारोपण हो चुका था पर लेखक ने इसे आत्मकथा के स्थान पर एक पुस्तक के रूप में ही प्रकाशित करवाया अतः दलित आत्मकथाओं की सम्यक् सृष्टि 'मोहनदास नैमिशराय'

कृत 'अपने–अपने पिंजरे' 1995 से ही मानी जाती है फिर ओमप्रकाश वाल्मिकी अपनी 'जूठन'(1999) लेकर आये तो सूरजपाल चौहान पहले 'तिरस्कृत' (2002) और फिर 'संतप्त' से इस समाज का वास्तविक चेहरा हमारे सामने लेकर आये।

अन्य आत्मकथाकारों में श्रवण कुमार– मेरे गुनाह, 'के0 नाथ –तिरस्कार', "डी0 आर0 जाटव–मेरा सफर–मेरी मंजिल; मेरी जिंदगी, माता प्रसाद–झोंपड़ी से राजभवन", कौसल्या बैसन्त्री–दोहरा अभिशाप" आदि के नाम सम्मान के साथ याद किये जाते हैं। कुछ आत्मकथाएँ अन्य भाषाओं से अनूदित होकर हिन्दी में अपना प्रभाव दिखा रही हैं। इनमें पंजाबी से अनूदित "छांग्या रूख–बलवीर माधोपुरी" "पगडंडियाँ" बंचित कौर और अंग्रेजीं से अनुवादित "आई वाज एन आउट कास्ट इण्डियन"– हजारी और "एन–अनटोल्ड स्टोरी ऑफ ए भंगी वाइस चांसलर–प्रो0 श्याम लाल जैदिया के नाम उल्लेखनीय हैं। यहां कुछ चर्चित दलित आत्मकथाओं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है।

**मैं भंगी हूँ–भगवान दास–** "मैं भंगी हूँ" भगवान दास की आत्मकथा न होकर दलित या भंगी की आत्मकथा है। यह व्यक्तिनिष्ठ न होकर वस्तुनिष्ठ है। प्रतीकात्मकता इसका विशिष्ट गुण हैं। भंगी यहां पर 'दलित' का प्रतीक है। दलित व्यक्ति या समाज के दुख–दर्द को आद्योपान्त इसमें वाणी मिली है। लेखक का इसे आत्मकथा के स्थान पर एक पुस्तक रूप में अभिव्यक्ति देना उचित है, क्योंकि पहली आत्मकथा होने के कारण इसमें आत्मकथात्मक तत्वों का पूरी तरह से समावेश नहीं हो पाया है। लेखक के शब्दों में–

"कुछ लोगो ने पुस्तक का नाम पढ़कर यह अन्दाजा लगा लिया कि यह महाराष्ट्र में जन्में प्रसिद्ध और पुरूस्कृत दलित लेखक दया पवार जी के 'बलूते' की तरह मेरी आत्मकथा हैं परन्तु यह मेरी आत्मकथा नहीं हैं।" – 31

यह दलित की आह कराह को शब्द बद्ध करने वाली आत्मकथा है। आत्मकथा का उद्देश्य भी स्पष्ट है। भारतीय इतिहास मे अछूत कैसे पैदा हुआ? उसकी कहानी कहां से शुरू होती हैं और कहां खत्म होती है ? पराजित व्यक्ति के साथ विजेता कैसा व्यवहार करता है ? इन सब प्रश्नों का उत्तर ही इसकी कथावस्तु है। कथानक के रूप में दलित व्यक्ति या समाज को प्रस्तुत किया गया है।

इस आत्मकथा में प्रतीकात्मकता का सहारा लिया गया है। भेदभाव, शारीरिक एवं मानसिक शोषण, दलित विमर्श तथा कथित ब्राह्मणों की दोगली नीति का भण्डाफोड़, झूठा इतिहास लिखकर, छल कपट करना आदि विचारों को इसमें स्थान प्राप्त हुआ है। ब्राह्मणों को भगवान का एजेंट कहना उचित ही है कारण, उस ब्राह्मण ने धर्म के नाम पर और भगवान के नाम पर दलित का खूब शोषण किया है।

इस आत्मकथा में आदि से अन्त तक 'भंगी' यानि 'दलित' की व्यथा की कहानी बताई गई है। इतिहास के पन्नों में दबी हुई वास्तविकता को भी ईमानदारी के साथ इसमें अभिव्यक्त किया गया है। आत्मकथा के मध्य में महात्मा बुद्ध और बौद्ध दर्शन की मानवतावादी विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है। मानवता, समानता और प्रेम की गौतम बुद्ध की विचारधारा की प्रंशसा की गई है, जो मानवीय गरिमा की सूचक है।

इतना कुछ होने के बाद भी कुछ अवगुण हैं इस आत्मकथा में जो स्वाभाविक है। इसमें आत्मकथात्मक तत्त्वों का पूरी तरह से समावेश नहीं हो पाया है। इसके पीछे लेखक का तर्क उचित हैं कि, मैंने इसे आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत न कर एक पुस्तक के रूप में लिखा है। इसके अतिरिक्त यह पहली आत्मकथा होने के कारण ये सभी दोष इसमें आ गये हैं। जैसे बहुत से वाक्यो का बार–बार प्रयोग, भाषा में विवरणात्मकता पुनः उसी घटनाक्रम को दोहराना जो पहले कहा गया है। इसके पीछे लेखक का हिन्दी भाषा के ज्ञान का अभाव भी कहा जा सकता है–

"हिन्दी का मेरा ज्ञान केवल लिपि तक सीमित है।" – 32

"मैने इस पुस्तक मे उसी रोजमर्रा की जुबान का इस्तेमाल किया है जिसे आम लोग समझते और बोलते हैं। संस्कृत बोझिल हिन्दी न मैं जानता हूँ और न लिख सकता हूँ।" – 33

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि वास्तव में इसे दलित की पहली आत्मकथा में स्थान मिलना चाहिये क्यों कि इसका कथा नायक 'भंगी' यानि 'दलित' ही हैं। भंगी को प्रतीक रूप में प्रस्तुत कर लेखक ने कला कौशल का परिचय दिया है। यह इसकी मौलिकता भी है और विशिष्टता भी।

**अपने–अपने पिंजरे –दोनों भाग–मोहनदास नैमिशराय–** मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा "अपने–अपने पिंजरें" का मुख्य पात्र मोहन है। मोहन के इर्द–गिर्द रहने

वाले सभी व्यक्ति इसके अभिन्न हिस्से हैं, जिनमें बा, ताई, पिता, बहिन, भाई आदि परिवार के सदस्यों के साथ समाज के लोग भी सम्मिलित हैं। इस आत्मकथा का मुख्यकेन्द्र हैं, अर्थाभाव, शोषण, बेगारी के साथ होनें वाला अमानवीय व्यवहार जो हीनता बोध और अपमान बोध के दंश से सराबोर है।

रचनाकार ने बचपन से लेकर वैवाहिक जीवन की घटनाओं को चित्रित किया है। जीवन में आर्थिक समस्या कुछ अधिक ही रही है। लेखक ने मेरठ शहर के वास्तविक जीवन का भी वर्णन किया है जिसमें बताया गया है कि इनका घर मुसलमान बहुल इलाके में था, सारा वातावरण मांस–मदिरा की बदबू से भरा रहता था, फिर भी मुसलमान स्वयं को बड़ा समझ कर दलितों का अपमान करते थे। नैमिश्राय जी के शब्दों में –

"हमारे मुसलमान पड़ौसी भी अधिकांश मजदूरी पेशा थे। उनमें कोई सैय्यद, शेख, पठान था पर उनके तेवर पठानों से कम न थे। वे बात–बात पर हमें चमट्ट कहते थे और महिलाओं को चमट्टी'' – 34

यह आत्मकथा भाव बोध का अच्छा उदाहरण है विचारों का उत्कर्ष भी देखनें को मिलता है। दलित चेतना पर जगह–जगह प्रकाश डाला गया है। यह आत्मकथा नैमिश्राय जी की जीवन दृष्टि से सरोबार हैं। कहीं–कहीं रचनाकर, आत्मकथा में भावोत्कर्ष की सीमा तक पहुँच जाता है।

लेखक ने ईमानदारी दिखाते हुए किशोरावस्था में आने वाले रसवन्ती, सूरजी आदि के अंतरंग प्रसंगों का भी वर्णन किया है, जिससे लेखक का व्यक्तित्व एक 'रसिक' मिजाजी की तरह झलकता है इन प्रसंगों का अध्ययन करने पर ये दलित व्यक्ति के दब्बूपन को रेखांकित करते हैं।

"भूरी अब वहां नंगे बदन नहीं नहाती थी, पर सिहानी के मकान के नीचे मैं अभी भी बिरजों के साथ खेलता था।" – 35

लेखक का स्त्रियों के प्रति आकर्षण इस आत्मकथा का कमजोर पक्ष है, क्योंकि अति सर्वत्र वर्जित है, और इस आत्मकथा में लेखक ने स्त्री के प्रति आकर्षण में अति की है तभी तो तृप्ति, विमला आदि नाम आत्मकथाकार के साथ जुड़ गयें हैं।

लेखक की पत्नी का महत्त्वाकांक्षी होना भी लेखक के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक है। जैसा कि मोहन दास जी ने लिखा है–

"गांव से ही एक बार मैं दिल्ली ससुराल आया। शगुन घर पर ही थी। मैंने उसे गांव चलने को कहा तो उसने अजीब सा मुहँ बनाते हुए पूछा" कितनी तनख्वाह मिलती है, तुम्हे उस जन्नत में, मैंने जवाब में बतलाया दो सौ रूपया। फिर वह सुनकर बोली इस दो सौ रूपल्ली में खुद अपना खर्चा, करोगे या मेरा और बच्चों का भी।'' – 36

इसी कारण लेखक ने अनेक नौकरियां बदली है जैसे होमगार्ड, क्लर्क, बैंक अधिकारी से लेकर शिक्षक और लेक्चरर तक।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता हैं कि अपने–अपने पिंजरे–दोनों भाग आत्मकथा के रूप में पूरी तरह से उचित है। मानवीय मूल्य इसकी अन्तर्वस्तु है। दलित विमर्श और दलित चेतना के स्वर इसके भावबोध को मानवतावादी दृष्टि देते है साथ ही जीवन संघर्ष की प्रेरणा इसे साहित्यिक ऊँचाई प्रदान करती है। विषय वस्तु की नवीनता और मौलिकता इसका विशिष्ट गुण हैं। कल्पना के स्थान पर यथार्थ का वैभव इसकी धरोहर हैं। नाम की सार्थकता भी देखी जा सकती है।

**जूठन – ओमप्रकाश वाल्मिकी** – श्री ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा 'जूठन' का पहला संस्करण सन् 1997 में प्रकाशित हुआ। उसके पश्चात् इसकी चौथी आवृत्ति सन् 2012 में राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा की गई। कुल 160 पृष्ठो की पुस्तक मे दिल दहला देने वाली एक दलित लेखक की सच्ची कहानी है। **'जूठन'** आत्मकथा का केन्द्र बिन्दु दलित विमर्श और दलित चेतना हैं। लेखक का बचपन किशोरावस्था और युवावस्था तक का जीवनवृत्तांत इसमें शब्दबद्ध किया गया है।

इस आत्मकथा का प्रारम्भ बालक के माता पिता से होता है। पिता स्कूल के हैड मास्टर को खरी खोटी सुनाता है, तो माँ जूठन को ठुकरा कर अपनी चेतना को स्वर देती है। अंत में दलित चेतना के फलस्वरूप उत्पन्न अस्मिता बोध को स्थान प्राप्त हुआ है। दो टूक शब्दों में कहा जा सकता है कि यह आत्मकथा भावबोध का उत्तम निदर्शन है। जिसका यथास्थान रचनाकार ने परिचय दिया है। अश्लील दृश्यों को भी पूरी मानवीयता के साथ आबद्ध किया हैं। यह रचनाकार का कला कौशल ही हैं।

"रात के अंधेरे मे ही नहीं, दिन के उजाले में भी पर्दो में रहने वाली त्यागी महिलाएँ घूँघट काढ़े, दुशाले ओढ़े इस सार्वजनिक खुले शौचालय में निवृत्ति पाती थी। तमाम शर्म लिहाज छोड़कर वे डब्बों वाली के किनारे गोपनीय जिस्म उघाड़ कर बैठ जाती थी।" – 37

मनु की स्मृतियों को पढ़नें व पढ़ाने वाले ब्राह्मणवादी लोग किस तरह से दलितों का मर्दन करते रहे हैं। चमार और भंगियों की यह अछूत जीवन गाथा हमें जूठन में दिखाई पड़ती हैं। अंधविश्वासो पर तीखा प्रहार, उनका खण्डन कर जीवन में नई प्रेरणा का संचार भी इस आत्मकथा में अंतर्निहित हैं। बड़े बेटे की शादी पर सलाम प्रथा का विरोध इसका अच्छा उदाहरण है क्यों कि सलाम प्रथा के नाम पर यह नवीन पीढ़ी को गुलामी सिखानें की प्रथम सीढ़ी है। जिस पर चढ़कर वह नई पीढ़ी गुलामी की जंजीरो में जकड़ जायेगी। यह आत्मकथा आदि से अंत तक रचनाकार की दलित चेतना को ओजस्विता के साथ प्रकट करती है, जो उसकी भोगी हुई जिन्दगी को कटु सत्य के रूप में हमारे सामने लाती हैं।

कलात्मकता की दृष्टि से भी यह खरी उतरती है। छोटे–छोटे वाक्यों में अपनी बात अच्छी तरह से अभिव्यक्त करना, यह कौशल रचनाकार का ही है। शब्दावली में देशज शब्दों की भरमार है, इसके पीछे ग्रामीण परिवेश और निरक्षर पात्रों की उपस्थिति रही हैं। जैसे– कौणसी, जाकत, भड़ास, चूहरा आदि।

रचनाकार ने आत्मकथा में अपनी पत्नी को बहुत कम जगह दी है और स्वयं एक अच्छे मुकाम पर पहुँच कर अपने समान लोगों के लिए लेखक ने क्या कदम उठाये इनकी कमी अखरती है। इस आत्मकथा पर सभी पहलुओं से विचार करने के बाद इसे एक सम्पूर्ण आत्मकथा कहा जा सकता हैं।

**तिरस्कृत – (सूरज पाल चौहान) –** दलित कथाकार सूरजपाल चौहान की पहली आत्मकथा 'तिरस्कृत' का अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद से प्रथम संस्करण सन् 2002 में प्रकाशित हुआ। इस आत्मकथा के कुछ अंश देश की कई साहित्यिक पत्रिकाओं में पहले ही प्रकाशित हो चुके थे।

इस आत्मकथा में जीवन के विविध पहलुओं पर गहराई से प्रभाव डाला गया है। 'सूरजपाल के बचपन से लेकर युवावस्था, प्रौढ़ावस्था तक का जीवन शब्दबद्ध किया गया हैं। भारतीय समाज की भेदभाव पूर्ण व्यवस्था पर सीधे सीधे प्रहार हैं, जो सामाजिक समरसता एवं न्याय की अवधारणा पर अवलंबित है।

आत्मकथा के प्रारम्भ में सूरजपाल की माँ के दर्शन होते हैं, जो गरीबी, किल्लत तथा कथित ब्राह्मणों के शोषण के कारण जवानी में बूढ़ी हो जाती है और झाड़ फूक अंधविश्वासो के कारण काल कवलित हो जाती है। जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"भगतो के पाखण्डों से जब माँ ठीक न हो पाई तो पिता ने उसे छर्रा कस्बे जाकर कई वैद्य हकीमों को दिखाया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। माँ की बीमारी ने भयंकर रूप धारण कर लिया था। भंगी भगत सुअर के माँस और दारू की बोतलों के साथ–साथ मेरी माँ के शेष जीवन को भी लील गए।" – 38

जातीय उत्पीड़न की मार्मिक घटनाएँ, आर्थिक शोषण, फूट डालो राज करो का सामन्ती आचरण, शिक्षा से वंचित रखने की अमानवीय कोशिशे, गरीबी, बेगार और बेगार न करने पर जलील करते हुए जानवर से भी ज्यादा मारपीट इन दृश्यों को देखकर रोना आता हैं। ऐसा लगता हैं हम मनुष्यों के समाज में नहीं जंगली भेड़ियों के समाज में रह रहे हैं। जहां मानवता नाम की कोई चीज ही नहीं दिखाई देती।

जूठन के लिये इन्सान और कुत्तों की जद्दो जहद का दृश्य हृदय विदारक है। कितना घटिया होगा वह समाज जहां इंसान को कुत्ते बिल्ली से नीचे का दर्जा प्राप्त है कल्पना मात्र से मस्तिष्क फटने लगता हैं तो यथार्थ कितना भयावह होगा जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"माँ जैसे ही जूठन से भरा टोकरा सिर पर रखकर चलने लगी तभी राधे लोधे ने माँ से कहा कि पहले वह जूठी पत्तलें इकट्ठा करके घूरे पर फेंक आये। माँ ने राधे से हाथ जोड़कर कहा कि वह पहले जूठन तो घर पर छोड़ आये फिर आकर पत्तलों को ठिकाने लगा देगी लेकिन राधे नहीं माना।'' – 39

चेतना का प्रभाव, एकता की शक्ति, प्रेरणा, बाल विवाह का अभिशाप, दुख में कोई साथी नहीं, सवर्ण अफसरों द्वारा उल्टा चोर कोतवाल को डाटे जैसा व्यवहार, इन्दिरा गांधी की हत्या, आदि का जीवन चित्रण किया गया हैं। राजनीति पर कटाक्ष, दलितों

द्वारा रूढ़िवादिता को प्रश्रय, मानवता की प्रतिष्ठा गैर दलित साहित्यकारों का बौद्धिक विमर्श, लिंग भेद करना आदि इस आत्मकथा के मुख्य बिन्दु हैं। यह आत्मकथा बेहद रोचक, प्रशंसनीय एवं क्रांतिकारी विचारों से ओत–प्रोत है। आत्मकथा के सभी गुण परिलक्षित हैं फिर भी कुछ कमियां दिखाई देती हैं। जैसे लेखक के पिताजी दिल्ली कैसे गये, इसका भी विवरण नहीं मिलता है। शादी के बारे में भी सिर्फ इतना ही बताया गया कि 11वी कक्षा में उनकी शादी हो गई थी उसके बाद मौन धारण कर लेना अर्थात् क्रमबद्धता का अभाव लगता है।

अंततः यही कहा जा सकता है यह आत्मकथा छुआछूत का विरोध करती हुई मानवता के लिए समर्पित सभी दृष्टिकोणों से श्रेष्ठ दलित आत्मकथा है।

**<u>संतप्त – सूरजपाल चौहान –</u>** सूरजपाल चौहान की तिरस्कृत आत्मकथा के बाद दूसरी आत्मकथा 'संतप्त' शीर्षक से प्रकाश में आई। यह आत्मकथा हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व रचना है क्योंकि हिन्दी साहित्य की यह रचना बोल्ड एवं व्यक्ति निरपेक्ष होने के साथ ही बेहद रोचक एवं दिलचस्प है।

इस आत्मकथा में ग्रामीण परिवेश की दीन हीन स्थिति, साथी रचनाकारों की ओछी मानसिकता, माँ की दुर्दशा, भतीजे का पत्नी के साथ बदतमीजी, बेटे भानू का रूखा व्यवहार, अंत में पत्नी का बेटे सहित अलग होना, मकान मालिक के यहां के खुले दृश्य, पिता की मृत्यु, डा0 धर्मवीर की वैचारिक महानता का दृश्य आदि इस आत्मकथा के प्रमुख अंश हैं। यह आत्मकथा सच्चे अर्थो में रचनाकार का आईना है। जिसमें आत्मकथाकार का व्यक्तित्व आसानी से पहचाना जा सकता है।

इस आत्मकथा में 'एक बार फिर' अध्याय तो ऐसा हैं कि पढ़ते–पढ़ते ही व्यक्ति की रूह कांप जाती है। दलित पीड़ा के अंश, दलित चेतना, समानता, तीव्रता, समरसता का प्रयास, अर्द्धांगिनी द्वारा विश्वासघात और जीवन के विविध पहलुओं का जैसा जीवन्त और दुखद वर्णन 'संतप्त' में दृष्टिगोचर होता है, पूरी पारदर्शिता के साथ सब कुछ कह दिया गया है। वास्तव में यह 'कालजयी' रचना है, शब्द की सार्थकता है।

'तस्वीर का दूसरा रूख' साहित्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण अध्याय है। दलित साहित्यकारों की वास्तविकता से परिचित होने पर लगा जैसे सदियों तक दलितों की

दुर्दशा का कारण उनकी यह ओछी मानसिकता भी रही है। दलित साहित्यकारों की यह मानसिकता दलित साहित्य के लिए शुभ संकेत नहीं है।

कुछ इधर–उधर की जीवन की आम घटनाओं का जिक्र है, जो किसी के भी साथ कहीं भी हो सकती है। 'मौत से सामना' ईश्वरीय या प्रकृति का वरदान है। समय–समय पर जीवन में इंसान को उपहार स्वरूप जीवन मिलता ही रहता है। सूरज भी इस प्रकार जीवन का उपहार प्राप्त करता रहा है।

आत्मकथा में घटनाओं को विवरणात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। कला कौशल की दृष्टि से सादगी, सरलता का गुण विद्यमान है। वाक्य छोटे–छोटे, कहीं कहीं, बड़े बड़े यथावसर उचित हैं।

अंततः निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि 'संतप्त' दलित आत्मकथाओं में सर्वोत्कृष्ट हैं। सहजता, सरलता, त्रासदी, प्रामाणिकता संवेदनशीलता और जीवन का सांगोपाग वर्णन खुली हुई किताब की तरह है।

# सन्दर्भ


1. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–671,672 पृष्ठ सं.–74–75, द्वितीय संस्करण–1956
2. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–668 पृष्ठ सं.–74, द्वितीय संस्करण–1956
3. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–195,196 पृष्ठ सं.–22, द्वितीय संस्करण–1956
4. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–643 पृष्ठ सं.–71, द्वितीय संस्करण–1956
5. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–342 पृष्ठ सं.–44, द्वितीय संस्करण–1956
6. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–647–649 पृष्ठ सं.–72, द्वितीय संस्करण–1956
7. अर्द्धकथानक– सपा. नाथूराम प्रेमी दोहा–652–656 पृष्ठ सं.–73, द्वितीय संस्करण–1956
8. बनारसीदास जीवनी कृतित्व–रवीन्द्र कुमार जैन–पृष्ठ सं.–295, संस्करण–1966
9. कुछ आपबीती कुछ जगतबीती–भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग–3 सपा. ब्रजरत्नदास काशी, पृष्ठ सं.–815
10. ऋषि दयानन्द पत्र व्यवहार, स. मुंशीराम भाग–1, पृष्ठ सं.–292
11. थियोसोफिस्ट अप्रैल,1880 ई. पृष्ठ सं.–190
12. विद्या विनोद, अष्टम भाग, बाबू चण्डी प्रसाद सिंह द्वारा सपा. 'निजवृत्तान्त' खडग विलास प्रेस बांकीपुर, भूमिका
13. आत्मकथा–राजेन्द्र प्रसाद, पृष्ठ सं.–706
14. मेरी जीवन यात्रा–भाग–4, राहुल सांकृत्यायन– पृष्ठ सं.–4,5
15. सिंहावलोकन–भाग–यशपाल– पृष्ठ सं.–44
16. सिंहावलोकन–भाग–3, यशपाल – पृष्ठ सं.–167
17. प्रवासी की आत्मकथा–भवानी दयाल सन्यासी, भूमिका
18. प्रवासी की आत्मकथा–भवानी दयाल सन्यासी–पृष्ट सं.–12
19. प्रवासी की आत्मकथा–भवानी दयाल सन्यासी पृष्ठ सं.–71
20. जीवन स्मृतियां, सपा.–क्षेमेन्द्र सुमन, पृष्ठ सं.–75
21. साहित्यकारों की आत्मकथाएं के अन्तर्गत, जीवनगाथा–महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ सं. –3,4
22. मेरी असफलताएं–बाबू गुलाब राय, भूमिका दो शब्द–बलकम खुद–पृष्ठसं.–3,माघ शुक्ला 4,स. 2014
23. बसेरे से दूर – डा. हरिवंशराय बच्चन – पृ.स. 6 संस्करण–2004
24. हिन्दी आत्मकथा स्वरूप एवं साहित्य–कमलेश सिंह–पृ.स.196,प्रथम संस्करण–1989
25. अक्षरों के साये–अमृता, प्रीतम भूमिका– पृष्ठ सं.–5, संस्करण–2011

26. अक्षरों के साये–अमृता, प्रीतम भूमिका पृष्ठ सं.–30, संस्करण–2011

27. अक्षरों के साये–अमृता, प्रीतम भूमिका पृष्ठ सं.–44–45, संस्करण–2011

28. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–46, संस्करण–2010

29. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–69, संस्करण–2010

30. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–194, संस्करण–2010

31. मैं भंगी हूँ–भगवान दास–पृ.सं.–**II,** द्वितीय सं0 के बारे में भूमिका, संस्करण–2011

32. मैं भंगी हूँ–भगवान दास–पृ.सं.–**I,** द्वितीय स.0 के बारे में भूमिका, संस्करण–2011

33. मैं भंगी हूँ–भगवान दास–पृ.सं.–**II,** द्वितीय सं0 के बारे में भूमिका, संस्करण–2011

34. अपने–अपने पिंजरे–भाग 1, मोहनदास नैमिश्राय पृष्ठ सं.–18,

35. अपने–अपने पिंजरे–भाग 1, मोहनदास नैमिश्राय पृष्ठ सं.–71,

36. अपने–अपने पिंजरे–भाग 2, मोहनदास नैमिश्राय भाग–2 पृष्ठ सं.–137,

37. जूठन–ओमप्रकाश वाल्मीकि– पृष्ठ सं.–11, संस्करण–2012

38. तिरस्कृत–सूरजपाल चौहान– पृष्ठ सं.–14, संस्करण–2005

39. तिरस्कृत–सूरजपाल चौहान– पृष्ठ सं.–19, संस्करण–2005

# पंचम पर्व – संवेदना के स्वर

आत्मकथा  आज के साहित्य का सबसे अधिक संभावनाओं से युक्त रूप हैं। जिसके द्वारा सामूहिक मानव जीवन अपनी समस्त भावनाओं एवं चिन्ताओं के साथ समग्र रूप में अभिव्यक्त हो सकता है। मानव जीवन की विविध समताओं, विषमताओं, और समस्याओं को चित्रित करने का जितना अवकाश आत्मकथा में है उतना अन्यत्र नहीं। हिन्दी साहित्यकारों द्वारा रचित आत्मकथा के आँचल में संसार की सभी समस्याएँ–समाधान समा गये हैं और अपनी सरलता एवं व्यापकता के कारण जनजीवन की जीवित शास्त्र बन गई हैं। रचनात्मक स्तर पर आत्मकथा का विश्लेषण करने पर उसमें अनेक नवीन प्रवृतियां परिलक्षित होती है। युग संवेदन एवं बौद्धिक वैचारिकता के कारण ऐसी प्रवृतियों का प्रभाव स्वाभाविक हैं क्योंकि रचनाकार का अपना एक दृष्टिकोण अदृश्य होता है। जिसके माध्यम से वह यथार्थ को अन्वेशित करता है। वर्तमान आत्मकथा लेखक दृष्टि का परिप्रेक्ष्य सर्जनात्मक रूप में सामयिक यथार्थ बोध से उत्पन्न मूल्यों, प्रवृतियों, एवं युगीन स्थितियों को निरूपित करता हैं। ये प्रवृतियां आज के ही नहीं अपितु पूर्व के जीवन परिवेश से भी उद्‌भूत हैं। आत्मकथा में भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों में ही इस प्रकार की वैचारिक प्रक्रिया दिखाई पड़ती है– यथा–यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, आदर्शवाद लेकिन यहां यें प्रवृतियां सर्जनात्मक धरातल की आवश्यकता के रूप में न आकर लेखकीय चिंतन के रूप में मुखरित हुई हैं अर्थात् आज के रचनात्मक अनुभवों पर आरोपित न होकर सामयिक मूल्य स्थितियों एवं वस्तु परक दृष्टिकोण में व्यंजित हुई हैं। जीवन की जटिल विविध एवं पारम्परिक बोध की रूढियों से सम्बद्ध भाव चेतना के परिवर्तित स्वरूप को वैचारिक धरातल पर साहित्यकारों ने विवेचित किया हैं। युग परिवर्तन के साथ मानव मूल्यों, आस्थाओं, एवं विचारों में परिवर्तित धारणाओं के प्रत्यक्ष दर्शन आत्मकथा में होते हैं।

रचना के दो पक्ष हैं – अंतर्बोध और अभिव्यक्ति। अंतर्बोध रचना की आत्मा हैं और अभिव्यक्ति उसका शारीरिक प्रतिमान। अभिव्यक्ति का उपादान तत्त्व है भाषा, और भाषा अपनें जिस व्याकरण व विज्ञान से अंतर्बोध को स्वरूप प्रदान करती है, वह है, उसका शिल्प। वस्तुतः भाव या विचार को भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जाता हैं और शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम हैं जो उस विषय वस्तु की

अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभाव पूर्ण बनाते हैं। इस प्रकार भाषा और शैली के माध्यम से भावाभिव्यक्त कियें जाते है। एक लेखक के अनुसार–एक अच्छी रचना में कृतिकार के भाव, भाषा एवं शैली तीनों का समुचित समन्वय होना आवश्यक हैं। इन तीनों का पारस्परिक संबंध होते हुए भी ये तीनों प्रायः एक दूसरे से भिन्न हैं। भाव की अनुभूति व्यक्ति के संवेदक हृदय से होती है। जिस व्यक्ति का हृदय जितना अधिक संवेदक होगा, हृदय के भावों का उद्वेग उतना ही तीव्र होगा। एक ही घटना व्यक्तियों के स्वभाव, व्यापार, की दृष्टि से भिन्न–भिन्न लोगों को भिन्न–भिन्न ढंग से प्रभावित करती है। भाषा व्यक्तियों को उसके चारों ओर के परिवेश से प्राप्त होती है। अतः भाव और भाषा का इतना निकटता का संबंध होता है कि लेखक के जितने सुन्दर भाव होंगे उतने ही सुन्दर वाक्यों का समावेश होगा और दोनों के संयोजन से ही आत्मकथा की मूल संवदेना पाठकों तक उसी रूप में पहुंच पायेगीं। जिस भाव से लेखक ने लिखा हो उसी भाव भूमि पर पाठक को ले जा पायेगा। आत्मकथा लेखक, विभिन्न सामाजिक, परिवेशगत, भौगोलिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक क्षेत्र के होते है, अतः आत्मकथा की संवेदना में भी विभिन्नता होगी। प्रत्येक लेखक के दृष्टिकोण पर ही आत्मकथा की संवेदना आधारित होगी।

## वैयक्तिक

वैयक्तिक का शाब्दिक अर्थ हैं व्यक्तिगत अर्थात व्यक्ति का नितांत निजी कोना, जिसका साक्षी वह स्वयं होता है। ''अपने को महत्त्व देने का सिद्धान्त।'' – 1

डॉ0 प्रभा खेतान की आत्मकथा "अन्या से अनन्या" की मूल संवेदना वैयक्तिक तनाव, संघर्ष, पीड़ा और अकेलेपन की पीड़ा से अनुप्राणित है। यह स्त्री पुरूष के सम्बन्धों को ईमानदारी से व्यक्त करने वाली सशक्त आत्मकथा है, वस्तुतः ''अन्या से अनन्या" एक ऐसी स्त्री की कथा है, जो मारवाड़ी पुरूषों की दुनिया मे घुसपैठ करती है। कलकत्ता ऑफ कॉमर्स की अध्यक्ष बनती है वहीं दूसरी तरफ एक अविवाहिता स्त्री, विवाहित डॉक्टर के धुंआधार प्रेम में पागल है। दीवानगी की इस हद को पाठक क्या कहेंगे कि प्रभा डॉक्टर सर्राफ की इच्छानुसार गर्भपात कराती हैं और खुलकर अपने आपको डॉ0 सर्राफ की प्रेमिका घोषित करती हैं। स्वयं एक अत्यंत सफल, सम्पन्न और दृढ़ संकल्पी महिला परम्परागत 'रखैल' का सांचा तोड़ती हैं क्योंकि वह डॉ0 सर्राफ पर आश्रित नहीं है। वह

भावनात्मक निर्भरता की खोज में एक असुरक्षित निहायत रूढिग्रस्त परिवार की युवती हैं। प्रभा जानती हैं कि वह व्यक्तिगत रूप से ही असुरक्षित नहीं हैं बल्कि जिस समाज का हिस्सा हैं वह भी आर्थिक और राजनैतिक रूप से उतना ही असुरक्षित उद्वेलित हैं। तत्कालीन बंगाल का सारा युवा वर्ग इस असुरक्षा के विरूद्ध संघर्ष में कूद पड़ा है और प्रभा अपनी इस असुरक्षा की यातना को निहायत निजी धरातल पर समझना चाह रही हैं। एक तूफानी प्यार में डूबकर या एक बोर्जुआ प्यार से मुक्त होने की यातना जीती हुई.......

''मुझे कभी अपनें बेबसी और लाचारी पर गुस्सा आता तो कभी मैं भी पलटकर वार किए बिना नही मानती। मुझे अपनें स्त्रीपने से चिढ हो रही थी, आखिर हम स्त्रियां अपनें प्रिय पुरूष की अहं संतुष्टि के लिये खुद का अवमूल्यन क्यों करती हैं, किसलिए गुलाम की तरह उस पुरूष की हर मूर्खता एवं कुंठा को झेलती रहती हैं। मैं ही आखिर क्यों और किसलिए यह सब बर्दाश्त करूं? क्या मैं मेहनत नहीं करती? क्या मैं पैसे नहीं कमाती?''– 2

भारतीय समाज में विवाह पूर्व बनाये गये शारीरिक सम्बंध को समाज मान्यता नहीं देता। उस पर किसी विवाहित पुरूष का कुंवारी लड़की से शारीरिक सम्बंध बनाना और उसे जीवन पर्यन्त निभाना भारतीय समाज के धर्म, संस्कारों, सभ्यता, संस्कृति, आचार–विचार के खिलाफ है लेकिन अपनें को **महत्त्व** देने के कारण उन्होंने उसे इस रूप में प्रस्तुत किया कि "तुम्हें और कोई नहीं मिला, इस विवाहित व्यक्ति के अलावा। जानती हो ईसाई धर्म में ऐसे नाजायज सम्बंधों को यानि एडल्ट्री को पाप की संज्ञा दी है।"

"हमारे हिन्दू धर्म में इसे पाप नहीं कहा गया। मैनें अपने हिन्दू पंडित से पूछा है। हमारें शास्त्रों में बहु विवाह का प्रचलन है।"

"मगर तुमने तो इस व्यक्ति से शादी नही की"

"मन से वरन करने को हम गंधर्व विवाह कहते हैं। यह तो 1952 में हिन्दू मैरिज एक्ट के कारण एकल विवाह का प्रचलन बढ़ा लेकिन कानून बना देने से कोई परम्परा खत्म नहीं हो जाती" – 3

''अन्या से अनन्या'' में लेखिका ने अपने आंतरिक ही नही वरन बाहरी व्यक्तित्व को भी उभारने की कोशिश की है। अपने जीवन की एक भूल या खुशी के लियें उन्होंने

उम्र भर कांटे चबाये तथा खून को थूका हैं। भारतीय नारी होने के नाते एक बार जिसे मन से वरण किया उसी भावनात्मक डोर से बंधकर सम्पूर्ण जीवन गर्म रेत पर नंगे पैर चल कर गुजार दिया लेकिन कभी किसी से कोई अपेक्षा नहीं की तथा अपनी आत्मशक्ति, इच्छाशक्ति, स्वालम्बन के बल पर एक सफल, निर्यातक, उद्यमी बनकर व्यापार की दुनिया में अपना परचम फहराया और अपनी पहचान विश्व स्तर पर बनाई। इस तरह समग्र आत्मकथा तनाव, पीड़ा, संघर्ष, ऊब, अकेलेपन, चरित्र की कैफियत देते हुए भी विवाहित कर्तव्यों का भार ढोती हुई पाठक के मानस को झकझोर देती है। लेखिका ने जीवन के तनावों, संघर्षो और उनसे सम्बन्धित संवेदनो को उजागर किया है। यही इस आत्मकथा की मूल संवेदना है।

## पारिवारिक

हिन्दी शब्द कोश के अनुसार पारिवारिक शब्द का शाब्दिक अर्थ हैं "परिवार से सम्बंध रखने वाला" – 4

आत्मकथाकार जब आत्मकथा लिखता हैं तो उसमें उससे सम्बन्धित समग्र निर्जीव–सजीव गतिविधियां स्वतः सम्मिलित हो जाती हैं। मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक परिवार की आवश्यकता होती है लेकिन पारिवारिक सम्बन्धों को निभाते हुए जीवन जीना सबसे बड़ा त्याग हैं क्योंकि स्वयं की इच्छाओं, आंकाक्षाओं को नजर अंदाज करते हुए अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाना मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। मनुष्य जीवन की पहली कड़ी व्यक्ति है तो दूसरी परिवार होता है।

किसी भी व्यक्ति का मानसिक, शारीरिक विकास परिवार के बीच ही होता है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो माता–पिता, भाई–बहिन, दादा–दादी, चाचा, ताऊ, यही उसका परिवार होता हैं। जब इन सबके बीच वो परिवक्व हो जाता है तो वह स्वयं अपने परिवार का निर्माण करता है, पत्नी जिसमें उसके अपनें सम्बन्ध होते हैं जिनका निर्माण वह स्वयं करता है जैसा पति, पत्नी, बेटा, बेटी, सास, ससुर, साला, देवर इत्यादि। परिवार वह संस्था है जिसमें व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक अपनी सभ्यता, संस्कार, अध्यात्म, शिक्षा, मूल्य, नैतिकता, दर्शन को सीखता रहता है। यहां से उसे वह मजबूती मिलती है जिससे वो समाज का मुकाबला करता है।

हिन्दी साहित्यकार, मन्नू भंडारी की आत्मकथा "एक कहानी यह भी" की मूल संवेदना नारी जीवन का प्रेम परिवार की समस्याओं के संदर्भ मे चित्रित हुई है। बदलते हुए सामाजिक सन्दर्भ में वह परम्परागत मूल्यों का विरोध करती है। उनकी आत्मकथा में आधुनिक संचेतना के अनुरूप सहज अनुभूतियों का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण मिलता है। मन्नू भंडारी की आत्मकथा में नारी मन की व्यथा, अनुभूतियों और संवेदना के स्वर प्रभावशाली शैली में व्यक्त हुए हैं। परिवर्तित सामाजिक संदर्भ और पारम्परिक मूल्यों के चित्रण में आधुनिक बोध के अनुरूप सहज अनुभूति का सहानुभूतिपरक चित्रण मिलता है।

मन्नू भंडारी इस आत्मकथा में अपनें लेखकीय जीवन की कहानी कह रही हैं लेकिन इसमें उनके भावात्मक और सांसारिक जीवन के उन पहुलओं पर भरपूर प्रकाश पड़ता है, जो उनकी रचना यात्रा में निर्णायक रहे। एक ख्यातनाम लेखक की जीवन संगिनी होनें का रोमांच और एक जिद्दी पति की पत्नी होने की बाधाएं जैसा कि उन्होंने लिखा है–

"अप्रैल में हमने साथ–साथ अपनी ग्रहस्थी में कदम रखा। बहुत सपने देखे थे इस जिन्दगीं को लेकर बहुत उमंग भी थी, लेकिन जल्दी ही राजेन्द्र की 'लेखकीय अनिवार्यताओं' और इस जीवन से मेरी अपेक्षाओं का टकराव शुरू हो गया जो फिर कभी सम पर आया ही नहीं। सब लोग सोचते थे और मुझे भी लगता था कि एक ही रूचि एक ही पेशा कितना सुगम रहेगा जीवन। मुझे अपनें लिखने के लिये तो जैसे राजमार्ग मिल जाएगा, लेकिन एक ही पेशे के दों लोगों का साथ जहाँ कई सुविधाएं जुटाता है, वही दिक्कतों का अम्बार भी लगा देता है। कम से कम मेरा यही अनुभव रहा।" – 5

"पर असलियत को ईमानदारी से स्वीकार करने का साहस तो राजेन्द्र में कभी रहा ही नहीं (कम से कम मेरे सन्दर्भ में) इसलिये अपने हर झूठ, अपनी हर जिद बल्कि कहूं कि अपनी हर नाजायज हरकत को ढकने के लिये आदत से मजबूर राजेन्द्र हमेशा कोई न कोई सूत्र ढूंढ ही लेते हैं।" – 6

पति–पत्नी दोनों का लेखक व्यवसाय से जुड़े रहने पर भी हमेशा टकराव की स्थिति रही क्योंकि जैसा कि मन्नू भंडारी ने लिखा हैं कि उनके पति का अहंवादी एवं सामन्ती संस्कारों से ओतप्रोत चरित्र उनकी गृहस्थी में हमेशा बाधक रहा।

"मुझे इनकी नौकरी न करने से न कोई शिकायत थी न तकलीफ। तकलीफ थी तो केवल इस बात से कि जब आप नौकरी कर ही नहीं सकते........ करना ही नहीं चाहते तो कम से कम फिर मेरे नौकरी करने और घर चलाने पर इतनी कुंठाए पाल कर मेरा और अपना जीवन तो इतना असहज और तकलीफदेह मत बनाइये। पर अपने अहं और सामन्ती संस्कारों से लाचार राजेन्द्र करें भी तो क्या करें ?" – 7

एक तरफ लेखिका की अपनी लेखकीय जरूरतें और दूसरी तरफ एक घर, परिवार को संभालनें का बोझिल दायित्व, एक तरफ आदमी की तरह जीने की चाह और महान् उपलब्धियों के लिये ललकता आस–पास का साहित्यिक वातावरण ऐसे कई–कई विरोधाभासों के बीच से लेखिका लगातार गुजरती रहीं, लेकिन उन्होंने अपनी जिजीविषा अपनी सादगी, अहमियत और रचना संकल्प को नहीं टूटने दिया। यह आत्मकथा जीवन की स्थितियों के साथ–साथ उनके दौर की कई साहित्यिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर भी रोशनी डालती है। साथ ही उन परिवेशगत स्थितियों को भी पाठक के सामने रखती है, जिन्होंने उनकी संवेदना को झकझोरा है।

शोधार्थी को एक बात समझ में नहीं आती कि जब व्यक्ति अपने जीवन साथी का चुनाव स्वयं करता हैं तो उसके साथ बिताये पलों में क्या वह उसके आंतरिक व्यक्तित्व का विश्लेषण नहीं कर पाता? जो बाद में अचानक उसके सामने प्रकट होने लगता है या वह दूरदर्शिता से यह नहीं सोच पाता है कि इस व्यक्ति के साथ जीवन बिताने पर किन–किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है तब इस व्यक्ति का चरित्र किस रूप में उभरेगा? खैर वक्त परिस्थिति पर सारी बातें निर्भर होती है।

## **सामाजिक**

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार सामाजिक का अर्थ

1. समाज का (जैसे सामाजिक सुधार)
2. समाज से संबंधित (जैसे सामाजिक रीति–रिवाज) – 8

आत्मकथा किसी भी व्यक्ति के जिये गये सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्धित हैं। आर्थिक जीवन के अलावा मनुष्य एक सामाजिक भावानात्मक प्राणी के रूप में भी अपना जीवन बिताता हैं। आत्मकथा में उसकी बहुत सी आदि भावनाएं प्रतिफलित होती हैं जो उसे प्राणी मात्र से जोड़ती हैं उसमें मनुष्य का इन्द्रिय बोध उसकी भावानाएं, आंतरिक प्रेरणाएं भी व्यंजित होती हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहकर भी व्यक्ति का उत्थान–पतन, उन्नति–अवनति, पाप–पुण्य, नैतिक–अनैतिक कार्य सम्पादित होते हैं। सृष्टि के आदि काल से ही सभ्यता के साथ मनुष्य ने समाज संरचना में परिवर्तन भी किया है ताकि मानव जीवन सुखमय एवं निर्बाध गति से चल सके। आत्मकथा का सम्पूर्ण चिन्तन समाज सापेक्ष है इसमें भी व्यक्ति मूल्य प्रमुख है। जब समाज में सर्वत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष है चाहे वह व्यक्तिगत क्षेत्र में हो, वर्ग विशेष में हो, अथवा सामाजिक क्षेत्र में, तब यह भी निश्चित है कि आत्मकथा की मूल संवेदना में सामाजिक पक्ष अवश्य प्रकट होगा ।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन का परिवार समाज से बहिष्कृत था, इसलिए उनका अपनें जाति बंधुओं से मेल मिलाप लगभग खत्म हो चुका था। मनुष्य जब तक अकेला होता है तब तक उसे कोई चिंता नहीं होती है लेकिन जब वह अपने नीड़ का निर्माण कर लेता है तो उसे समाज की आवश्यकता महसूस होती है क्योंकि किसी भी व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास एवं सुरक्षा के लिए समाज एक आवश्यक संस्था है। इससे व्यक्ति को सभ्यता, संस्कृति, अस्तित्व, रीति–रिवाज, इत्यादि पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित रहते हैं। लेखक की आत्मकथा नीड़ का निर्माण फिर से लेखक ने समाज के प्रति जो भाव व्यक्त किए है वो इस प्रकार है–

''मैनें नीड़ का निर्माण कर लिया था पर नीड़ को किसी डाल, किसी पेड़ का आधार चाहिए। परिवार कितना संगठित सुखी, सम्पन्न क्यों नही हो, उसे किसी समाज की आवश्यकता होती है, मैं अपने निकट सम्बन्धियों से बहुत पहले कट चुका था जाति से बाहर करने पर मैं अपने दूर के संबंधियो से भी कट गया, यानि जाति वालो ने पूरी तरह मेरा बहिष्कार कर दिया।'' – 9

लेखक के विचार के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसको सुख–दुख में समाज की आवश्यकता होती है। बिना समाज के मनुष्य पंगु होता हैं क्योंकि जब मनुष्य अपने सुख–दुख में किसी को भागीदार नहीं बनायेगा तो या तो बैरागी हो

जायेगा या फिर सामाजिक प्राणी नहीं रहेगा। लेखक ने अपना यही भाव आत्मकथा में प्रकट किया है–

"शायद मैं एकाकी होता तो इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की बात न सोचता पर ऐसा जीवन कुछ दिनों के बाद न तो तेजी के लिए सुखकर होता और न अमित के लिए स्वस्थ, मनुष्य मूलतः सामाजिक प्राणी है कह सकते हैं कि सिविल लाइंस मे भी एक प्रकार की सामाजिकता विकसित हुई हैं जो व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता स्वीकार करते हुए भी उसके सुख–दुख में औपचारिक अथवा शिष्ट भागीदार होने से पीछे नहीं हटती। इस प्रकार की सामाजिकता से आबद्ध होने मे तेजी ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। – 10

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' में भी लेखक ने व्यक्ति के सामाजिक प्राणी होने के संकेत देने के साथ ही उन दिनों सामाजिकता बढ़ाने वाले अवसरों का भी उल्लेख किया है आत्मकथा में लेखक ने त्यौहार और मेलों को भी सामाजिक अभिव्यक्ति का एक माध्यम बनाते हुए अपने भावों को इस प्रकार लिखा है–

"मैं सबसे पहले त्यौहार और मेलो को लेना चाहूंगा वे हमारी संस्कृति के प्रतीक भी हैं और मनोभावों की अभिव्यक्ति का एक सहज और सशक्त माध्यम भी। व्यक्ति और समाज के अंतरंग सम्बन्धों को भी नियंत्रित करते हैं ये, उस युग में तो विशेष रूप से व्यक्ति इन त्यौहार और मेलों में ही सामाजिक बन पाता था मनोरंजन के साधन भी वे ही थे। उतने समय के लिए यें हमें ईर्ष्या और द्वेष, राग औेर मोह के वातावरण से मुक्त करके आनन्द, उल्लास और सामाजिक वातावरण में पहुँचा देते थे।" – 11

मन्नू भण्डारी की आत्मकथा' एक कहानी यह भी' में लेखिका ने छोटे शहरो की सामाजिकता के साथ–साथ बड़े शहरो की सामाजिकता के भावों को भी प्रकट किया हैं। छोटे शहरों में जहाँ आस–पास के लोगों में आपस में परिवार की तरह प्रेम होता है वही महानगरों में व्यक्ति संकुचित, स्वार्थी, असहाय, असुरक्षित महसूस करता है क्योंकि लेखिका ने दोनों ही संस्कृतियों को करीब से देखा और जाना था, जैसा कि लेखिका ने आत्मकथा में अपने भावों को स्पष्ट किया है–

"यों खेलने को हमनें भाइयों के साथ गिल्ली डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, कांच पीसकर मांजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर, हां इतना जरूर था कि, उस

जमाने में घर की यें दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थी, बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थी, इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबन्दी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालो को हमारे इस परम्परागत 'पड़ौस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित असहाय और असुरक्षित बना दिया हैं। – 12

व्यक्ति और समाज अन्योन्याश्रित हैं। एक दूसरे के पूरक हैं व्यक्ति के बिना समाज की कल्पना तथा समाज के बिना व्यक्ति की कल्पना निराधार है। व्यक्ति है तो समाज का अस्तित्व है। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा "और पंछी उड़ गया" शरत जीवनी सृजन पर आधारित है। जिसके अंतर्गत शरत बाबू का चरित्र एक शराबी, नशेबाज, आदि के रूप में प्रकट हुआ है लेकिन उस व्यक्ति की प्रतिभा तो देखिये कि वह समाज से बुराइयां मिटाने की कोशिश कर रहा था। वह एक स्वस्थ, समाज की कल्पना कर रहा था, स्त्री मुक्ति की, नारी उत्थान की कहानियां उपन्यास लिख रहा था लेकिन समाज उसी लेखक में बुराइयां देख रहा था वह उसके पीछे निहित कारणों को नहीं देख पा रहा था कि इस व्यक्ति के ऐसे हालात का जिम्मेदार समाज है जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"स्त्रियों को लेकर भी अनेक अतिरंजित कहानियां उनके संबंध में प्रचलित हो गई थीं। जिस व्यक्ति को परिवार का प्रेम नहीं मिला जिसे रिश्तेदारों ने ठुकरा दिया, जिसे दर–दर की ठोकरें खानी पड़ीं वह व्यक्ति यदि सामाजिक दृष्टि से कुछ अनैतिक कर बैठता हैं या बदनाम बस्ती में आश्रय ढूंढता हैं तो आश्चर्य क्यों ? – 13

**निष्कर्ष –** समस्त अध्ययन, मनन एवं विश्लेषण करने पर अंततः इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि व्यक्ति एक मोती है तो समाज एक माला। यदि मोती माला से अलग होता है तो अपना अस्तित्व खोता है और मालाभी विखण्डित और बदसूरत हो जाती है। यही हाल व्यक्ति का है। यदि व्यक्ति समाज निरपेक्ष जीवन की कल्पना करता है तो उसमें वो अपनी मर्जी का जीवन तो जी सकता है लेकिन सामूहिक, समारोह, आनन्द, खुशी, गम, इच्छाएँ सुख–दुख, आस्थाएँ, विश्वास मूल्यों को साझा करने से वंचित रहता है फिर चाहे उसके पास कितनी भी उपलब्धि, प्रतिभा, सम्पन्नता हो वह अपने आपको एकाकी ही महसूस करेगा। समाज उसकी प्रतिभा की प्रशंसा करेगा उसका लाभ उठायेगा लेकिन

बहिष्कृत व्यक्ति में उसकी बुराइयों का बखान करना नहीं भूलेगा जबकि उसकी उस स्थिति का जिम्मेदार स्वयं समाज है। इतने बड़े समाज में किसी एक इंसान की नवीन विचारधारा को नवीन परिवर्तन की पुकार समझकर नहीं अपनाया जा सकता।

'साहित्यकार भी इसी समाज में पुष्पित पल्लवित होता है तथा जीवन से लेकर मृत्यु तक इसी समाज में रीति, रिवाज, संस्कृति, धार्मिक निष्ठा, परोपकार, दान और समर्पण की भावना को निभाते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

मनुष्य एवं पशु को भिन्न करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कड़ी समाज है। यदि समाज का भय न हो तो मनुष्य पशु के समान है। जिसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं है। मनुष्य भी पशु के समान कहीं भी कुछ भी, जो भी मिलें खाले, बैठ जाये, उठ जाये, सो जायें और कहीं भी शारीरिक तृप्ति शान्त करें और चल दे, लेकिन मनुष्य इस सभ्य समाज का अंग हैं जो समाज के बनाये नियमों से चलता है। धर्म, संस्कार, त्यौहार, रीति रिवाज सामाजिक समस्याओं जैसे विवाह, परिवार इत्यादि का निर्वाह करता है। अपने बुजुर्गो से मिले संस्कारों का पालन करता है तथा वहीं सीख अपने आने वाली पीढ़ी को भी देता है और यह समाज अनवरत इसी तरह अपने पथ पर चलता रहता है।

## राजनीतिक

अरस्तू के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और हम जिस युग में रह रहें है, वह राजनीतिक युग हैं। ''हमारे दैनिक जीवन में राजनीति की व्याप्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता हैं कि विज्ञान साहित्य, धर्म, उद्योग, नीति कूटनीति आदि क्षेत्रों में तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वजनीन सम्बन्धों में राजनीति की पैठ हो गई हैं। अस्तु साहित्य की अभिव्यक्ति में राजनीतिक चेतना का समाहार एक अपरिहार्य स्थिति बन गई है। – 14

हिन्दी शब्द कोश में राजनीतिक का शाब्दिक अर्थ राजनीति से सम्बन्धित जैसे राजनीतिक क्षेत्र, राजनीतिक पुरूष। – 15

अर्थात् यदि किसी रचना में राजनीति के पुरूष की बात हो या राजनीति के क्षेत्र की इस तरह का राजनीतिक वर्णन कहलायेगा। साहित्यकार धरती पर अपना सम्पूर्ण

जीवन जीते हुए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों व पड़ावों से रूबरू होता हैं। उसमें से राजनीति भी एक पहलू है जिससे वह अछूता नहीं रह सकता क्योंकि चाहें राजनीति उसका क्षेत्र न हो लेकिन देश की राजनीति में उथल–पुथल तो अवश्य ही उसको प्रभावित करती है क्योंकि वो भी इस देश की एक इकाई है।

मूर्धन्य साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा "मुक्त गगन में" उनके अपने जीवन का वृत्तान्त होने के साथ–साथ बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से देश और उसके समाज में चले सामाजिक, राजनीतिक आंदोलनों का तथा इन सब के साथ साहित्य की विविध गतिविधियों का चारों और नजर डालता आइना है। समूची पिछली सदी को अपने में समेटता यह जीवन वृत्त एक प्रकार से उस युग का गहराई से किया चित्रण तथा विश्लेषण लेखा–जोखा है। जिसमें देश और उसके जन ने एक बिल्कुल नया, आधुनिक निमार्णशील जीवन जीना आरम्भ किया है। यह आत्मकथा विष्णु प्रभाकर के अपने जीवन के उतार–चढ़ाव के साथ–साथ भारतीय समाज में ऐतिहासिक परिववर्तन का भी रोमांचक दस्तावेज हैं।

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा मुक्त गगन में की मूल संवेदना में देश की राजनीति का स्वरूप भी उभर कर आया हैं क्योंकि इसमें जिन घटनाओं का वर्णन किया गया हैं। उनमें देश का बंटवारा जैसी त्रासदी को झेलने का तथा **दे**श के बंटवारे के बाद जब कबालियों ने कश्मीर पर आक्रमण किया एवं वह घटना जिसने देश को हतप्रभ कर दिया था। 30 जनवरी 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की निर्मम हत्या जैसी घटनाएं इस आत्मकथा की मूल संवेदना हैं जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"गांधी जी'' देश  के बटवारे को मानने को तैयार नहीं थे। दूसरी ओर चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसें नेता थे जो बंटवारे को अवश्यम्भावी मान कर उसकी वकालत कर रहें थे। साम्प्रदायिक दंगों का तांडव नृत्य निरन्तर बढ़ रहा था।" – 16

लार्ड माउन्टबेंटन ने भारत आकर स्थिति का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया और वे समझ गये कि भारत जून 1948 तक स्वतंत्रता की प्रतीक्षा नहीं कर सकता यह देखकर वे फिर लन्दन गये और 3 जून को लौटकर उन्होंने घोषणा की कि "15 अगस्त 1947 के दिन भारत को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया जाएगा। मुस्लिम लीग को पाकिस्तान दे दिया जायेगा। इसके लिये पंजाब और बंगाल को दो भागों में बांटा जायेगा।" – 17

''देश स्वतंत्र हो रहा था पर खण्डित होकर। यह पीड़ा भी कम त्रासदायक नहीं थी।'' – 18

''और इस प्रकार 15 अगस्त 1947 को दो स्वतंत्र राष्ट्रों का जन्म हुआ। यद्यपि पैशाचिकता की छाया अभी दूर नहीं हुई थी, विशेष कर वीरों की भूमि पंजाब में हिंसा प्रतिहिंसा के शोले भड़क रहे थे।'' – 19

इस प्रकार साहित्यकार राजनेता तो नहीं थे लेकिन तत्कालीन घटनाओं में गवाह तो थे, जिन्होंने देश के ऐसे बुरे हालात देखे तभी तो इतना सजीव वर्णन कर पाये जो पाठक को उस काल की भावभूमि पर ले जाकर खड़ा करने की क्षमता रखता है। इसी तरह लेखक ने महात्मा गांधी की हत्या का वर्णन किया है–

''गांधी जी.......''भाई का स्वर रूंध गया। रेडियो से वेदना का स्वर गूंज रहा था। पागलों की तरह मेरी माँ और दूसरे लोग कमरें में दौड़ते हुए आए, क्या ! क्या हुआ गांधी जी को, कि रेडियो फिर बोला, हमें बड़े खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा हैं कि पांच बजे के कुछ पश्चात् गांधी जी का स्वर्गवास हो गया। वह सदा की तरह प्रार्थना सभा में जा रहे थे कि एक व्यक्ति ने तीन या चार बार पिस्तौल से गोली चलाई। गोली छाती में लगी और वह बेहोश हो गये। ईश्वर की इच्छा......''।

''जैसे शब्द नाग ने पृथ्वी को पटक दिया, जैसे सागर मर्यादा छोड़कर उमड़ पड़ा। जैसे विश्व के समस्त ज्वालामुखी एक साथ भभक उठे, जैसे उनचास पवन एक साथ इन्द्र के बंधन से मुक्त हो गये। किसी को कुछ नहीं सूझा। मस्तिष्क की गति कालगति से तीव्र हो उठी। अर्द्धविक्षिप्त सब ने एक दूसरे को देखा, देखते रह गये – यह क्या हुआ? गांधी जी मर गये'' – 20

इस तरह मुक्त गगन में राजनीतिक संवेदना के स्वर प्रमुख रूप से प्रकट हुए जिन्होंने युवा पाठकों की सोई हुई संवेदना को झकझोरने की पूरी कोशिश की है कि युवा पाठक भी उस काल को जानें और समझें कि हमें यह आजादी कितने राजनीतिक उतार चढाव के बाद प्राप्त हुई है, जिसे सहेजना युवाओं का दायित्व है।

प्रसिद्ध लेखक कमलेश्वर की आत्मकथा ''जलती हुई नदी'' में भी राजनीतिक संवेदना के स्वर मुखरित हुए है, जिसमें उन्होंने **दे**श की राजनैतिक अस्थिरता का वर्णन

करते हुए देश की आपात स्थिति में घटित कुछ रोचक घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया है–

"सारिका ने जब दलित साहित्य को लेकर विशेषांक निकालने शुरू किये तो जाहिर हैं कि 'मेरा पन्ना' में दलितों हरिजनों के सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक सवाल भी उठाए गये। सदियों से विषमता पीड़ित इस वर्ग के मानसिक और आत्मिक सन्ताप का विश्लेषण भी किया गया।" – 21

"इसी समय देश में आपात स्थिति की घोषणा हुई और अत्यन्त वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री के घर पर कुछ उत्साही राजनीतिक लोगों ने यह विचार पेश किया कि 'मेरा पन्ना' सवर्णों के खिलाफ बोल रहा है, अतः यह इल्जाम लगाकर कि 'मेरा पन्ना' द्वारा देश के विभिन्न समुदायों में वैमनस्य फैलाया जा रहा है और इससे सामुदायिक शांति भंग हो सकती है, 'मेरा पन्ना' के लेखक को गिरफ्तार कर लिया जाए" – 22

लेखक ने राजनेताओं द्वारा आम जनता का किस तरह शोषण किया जाता है– इसका भी बहुत सुन्दर वर्णन किया है, जिससे कि एक साहित्यकार भी अछूता नहीं रह सकता क्योंकि वह भी इसी धरती पर सांस लेता है इसलिये उसे यह सब सहन करना पड़ेगा।

"आपातकाल के बाद जब जनता सरकार सत्ता में आई तो उससे कहा गया – 'मेरा पन्ना' लिखना शुरू करो!

तब वह लिखना नहीं चाहता था।

जब वह बोलना चाहता था, तब सत्ता द्वारा कहा गया कि खामोश रहो ! जब वह खामोश रहना चाहता था तो सत्ता द्वारा कहा गया – बोलो ! सत्ताओं की क्रूरता की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है।" – 23

"जनता सरकार द्वारा बोलने का हुक्म इसलियें नहीं दिया गया था कि वे बोलने देना चाहते थे, या कि उन्होंने अभिव्यक्ति की आजादी सत्ता निरपेक्ष कर दी थी, बल्कि यह आदेश निवेदन इसलिये था कि 'मेरा पन्ना' का लेखक आपातकाल का 'सताया' हुआ व्यक्ति है, इसलिये वो आपातकाल के सरंक्षकों की खाल उधेड़ेगा। उनकी नीयत एक

लेखक को बोलने की आजादी देने की नहीं थी, बल्कि एक लेखक की आजादी को अपने लिये इस्तेमाल करने की थी।" – 24

एक लेखक की संवेदना, विचार, दृष्टिबोध को राजनीति इस हद तक भी प्रभावित कर सकती हैं कि उससे उसकी विचार प्रकट करने की क्षमता भी छीनी जा सकती है कि वह दूसरें की मर्जी से सोचे विचारे और फिर लिखे। राजनीतिक उठापठाक की इससे भीषणतम त्रासदी और क्या हो सकती है ?

## आर्थिक

अर्थ मानव जीवन का निर्धारक तत्त्व है। आर्थिक पक्ष के अन्तर्गत ही मानव के भविष्य की नींव निर्धारित है। भारतीय समाज में अनेक आर्थिक समस्याएँ खड़ी है, जिनमें बेरोजगारी, शोषित बौर शोषक का संघर्ष, दहेज की समस्या, परिवार का टूटना आदि प्रमुख है। इन संघर्षों का प्रमुख कारण अर्थ ही है। आत्मकथाकार अपनी जिंदगी में कहीं न कहीं, किसी न किसी मोड़ पर आर्थिक समस्या का सामना अवश्य करता है और फिर उसका वर्णन आत्मकथा में नहीं आये। ऐसा तो सम्भव नही है। आर्थिक धरातल पर प्रकट समस्याओं को व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र सभी स्तरों पर व्यक्त किया जा सकता है।

प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार लेखक 'कमलेश्वर' की आत्मकथा 'जो मैनें जिया' में लेखक की अपनी मौलिक सूझ–बूझ और नजरिये को लेकर लगातार चर्चित तथा विवादास्पद रहने वाले कमलेश्वर की यादें रोचक भी है और पाठकों को अपने साथ अतीत व भविष्य में बहा ले जाने का माद्दा भी रखती है। उम्र की एक खास दहलीज पर पैर रखते ही आदमी को अचानक बीते दिन घेरने लगते हैं, यादों के धुंधले अक्स साफ दिखने लगते हैं और बेहताशा याद आने लगते हैं। वक्त की पिछली गलियों, मोड़ों–चौराहों पर पीछे छूट गये लोग।

साहित्यकार कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा 'जो मैंने जिया' में अपने साहित्यिक स्वरूप को गढ़नें में जिम्मेदार घटनाओं का वर्णन किया है लेकिन उसी में उन्होंने अपनें जीवन की प्रारम्भिक घटनाओं का वर्णन किया हैं। जो पूर्णतः लेखक ही नहीं बल्कि उसके साथी साहित्यकारों की आर्थिक मूल संवेदना को भी प्रकट करता है। लेखक किन

आर्थिक विपत्तियों को सहते हुए सफलता के सोपान चढता है जिसमें उसकी पत्नी, बच्ची, दोस्तों का सहयोग किस तरह उसे सफलता प्रदान करते हैं तथा आर्थिक विपत्ति का दंश अकेले लेखक ही नहीं झेलता बल्कि उसका पूरा परिवार भी उसमें शामिल होता है। यही इसकी मूल संवदेना हैं जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"दुष्यंत भी उन दिनों नौकरी की तलाश में था। मार्कण्डेय को नौकरी की कोई बहुत जल्दी नहीं थी, वह शायद इसलिये कि गांव की खेती बाड़ी थी और उसके पिताजी गांव से रसद और सामान इत्यादि भेजते रहते थे। लेखन ही हम तीनों का मुख्य कार्य था, जिससे जीने लायक आमदनी का सवाल ही नहीं उठता था पर आज तक मैं सोच नहीं पाता कि आखिर उन दिनों में हम कैसे जी लेते थे। – 25

लेखक ने आर्थिक विपन्नता का ऐसा सजीव चित्रण किया हैं कि किसी भी व्यक्ति को हार्दिक व मानसिक स्तर पर सोचने को मजबूर कर सकता है।

"घर से खबर आई थी कि मेरी पत्नी ने एक लड़की को जन्म दिया हैं। माँ ने घर भी बुलाया था। मैं अपनी पहली संतान को देखना भी चाहता था। छुट्टी मिलती नहीं थी। पैसे पास नहीं थे। जाना दोनों से मुश्किल था। तभी खबर मिली कि मेरी पहली बच्ची की मृत्यु हो गई। वह धरती में गाड़ दी गई – मैं उसका मुँह तक नहीं देख पाया।"– 26

"अपनी पहली बच्ची को न देख पाने की विवशता के कारण मन में संकोच भी था कि आखिर गायत्री को कैसे फेस कर पाऊंगा। आर्थिक विपन्नता क्या जो बाप को अपनी पहली संतान का मुँह देखने से रोक दे। यह मेरे लिये भयानक संकट और गरीबी के दिन थे।" – 27

"यह सचमुच गर्दिश के दिन थे। अकेला मे ही नहीं चारों दोस्त गर्दिश में थे।" – 28

"मोहन राकेश की आर्थिक सम्पन्नता की कहानियां बहु प्रचलित हैं, पर वे दोनों दस साल साथ–साथ रहे हैं, इसलिये उसे मालूम हैं कि अपनी बिटिया मानू और राकेश की बिटिया पुरवा और बेटे शैली के दूध की व्यवस्था अनीता और गायत्री कैसे किया करती थी। तब दूध से ज्यादा पानी काम आया करता था। हिन्दी दूध पर नहीं, पानी पर पली है।" – 29

इस तरह लेखक की आत्मकथा की मूल संवेदना आर्थिक है जिसमें स्वयं ही नहीं बल्कि अपने साथ रहने वालों की आंच को भी दर्शाया गया हैं।

प्रसिद्ध हिन्दी छायावादी कवि, साहित्यकार, डॉ0 हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा "बसेरे से दूर" में लेखक की मूल संवेदना में आर्थिक पक्ष भी प्रमुख रूप से उद्‌घटित हुआ है। जिसका लेखक ने बहुत ही सजीव तथा सुन्दर वर्णन किया हैं कि किस तरह उनके शोध प्रवास के दौरान उन्हें स्वयं तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिये उनकी पत्नी तेजी को किस तरह का आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने अपने संस्कारों का निर्वाह करते हुए अपने आत्मविश्वास तथा मेहनत के बल पर इस समय को पार किया जैसा कि लेखक ने लिखा है–

''इतना ही नहीं वे जानती थी कि इसके लिये अतिरिक्त खर्चे की आवश्यकता होगी, थिसिस टाईप कराने के लिये थिसिस परीक्षा के और डिग्री सर्टिफिकेट के लिये रहने सहने के खर्चे के अलावा न जाने किस बल पर उन्होंने मुझे लिख दिया था कि नए वर्ष के आरंभ में वे मुझे 5000/– और भेज सकेंगी। उनके पास जो था और जो उनका खर्च आ सकता था, उसके किसी अनुमान से मैं यह कल्पना नहीं कर सकता था कि उनके पास इतना बचा होगा कि वे मुझे 5000/– भेज सकेंगी, सिवा इसके कि अपने जेवरों को बेचकर अगर वे पहले ही नहीं बिक चुके होंगे।" – 30

"खर्चे का हिसाब लगाया तो मैंने पाया, कॉलेज की फीस और थिसिस प्रस्तुतीकरण से संबद्ध और खर्चे तो मैं उठा लूंगा पर छह महीने रहने खाने का खर्च मेरे पास न होगा और न वापस जाने का, क्या छह महीने चिड़िया की तरह पेड़ों पर रहना और पंखो पर उड़कर घर पहुंचना संभव होगा ? – 31

इस तरह साहित्यकार भी एक मनुष्य होता है, जिसे भगवान श्रीराम की तरह मानव रूप में कदम–कदम पर परीक्षा देनी होती है, जिससे उत्तीर्ण होकर ही वह जीवन की ऊंचाइयों पर पहुंचता हैं।

हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती मन्नू भंडारी की आत्मकथा में भी आर्थिक संवेदना प्रमुख रूप से प्रस्तुत हुई है–

"राजेन्द्र के लिये वे काफी संकट के दिन थे। आर्थिक संकट के बीच बिना रूचि और अनुभव के अक्षर को चलाना इनकी मजबूरी थी।" – 32

"अपनी–अपनी जिंदगी का जो बंटवारा हुआ उसमें घर की सारी जिम्मेदारियों और समस्याएं– आर्थिक से लेकर दूसरी तरह की मेरे जिम्मे थी, जिसमें मुझे राजेन्द्र की दिलचस्पी की ही नहीं सहयोग की भी जरूरत रहती थी लेकिन उसे तो राजेन्द्र ने मेरा अधिकार क्षेत्र घोषित कर रखा था।" – 33

भारतीय समाज में विवाह संस्था के अंतर्गत पुरूष का दायित्व है धन कमाना तथा स्त्री का दायित्व है घर की आवश्यकता के अनुरूप उस धन का उपभोग करे और अपनी गृहस्थी का निर्वाह करे लेकिन इन आत्कथाओं के अध्ययन में पाया कि साहित्यकार धन जुटाने के लिये केवल साहित्य पर ही निर्भर रहा लेकिन नौकरी को किसी की अधीनता मानते हुए पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया, जिसका प्रभाव उनकी पत्नी ही नहीं बल्कि बच्चों पर भी स्पष्ट रूप से पड़ा। इंसान की प्रथम आवश्यकता भोजन है, जिसकी पूर्ति होना अतिआवश्यक हैं अथवा जीवनी शक्ति ही खतरे में पड़ जायेगी। कमलेश्वर ने खुद लिखा है कि उनकी बच्ची तथा राकेश की बच्ची को दूध में पानी मिलाकर पिलाया जाता था और उनकी पत्नियां घर चलाने के लिये क्या करती होंगी, कैसे सब व्यवस्थित करती होगी। ऐसी स्थिति में तो आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु साहित्य पर पूर्ण निर्भर नहीं होकर धन जुटाने के लिये कोई और विकल्प भी तलाशना चाहिये था।

## साहित्यिक

साहित्य का शाब्दिक अर्थ है – लिपिबद्ध विचार, ज्ञान आदि ग्रन्थों का समूह, वाड्ःमय, काव्य शास्त्र, गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना।

साहित्यिक का शाब्दिक अर्थ है – साहित्य सम्बन्धी (जैसे – साहित्य रचना), साहित्य का पारखी। – 34

साहित्यिक होने का भाव। साहित्यकार, साहित्य के बिना तथा साहित्य, साहित्यकार के बिना अधूरा हैं। साहित्यकार का सम्पूर्ण जीवन साहित्य का सृजन करते हुए व्यतीत होता है इसलिये साहित्यकार जब भी आत्मकथा लिखेगा तो उसकी मूल संवेदना में साहित्य के स्वर उभरना स्वाभाविक है। उसके साहित्य की पृष्ठभूमि यही समाज, परिवेश, परिस्थितियां, संस्कृति, सभ्यता होती है, जिसमें वह विचरण करता है।

तभी तो साहित्यकार जो इस समाज से लेता है। उसे उसी रूप में समाज को समर्पित करता है।

प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर का लेखन उस समय आरम्भ हुआ जब हिन्दी साहित्य आरम्भिक तैयारियों के बाद विषय, भाषा, अभिव्यक्ति आदि सभी दृष्टियों से प्रौढ़ता प्राप्त करने लगा था। साहित्य में एक के बाद एक छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कहानी इत्यादि युग बन और मिट रहे थे परन्तु नई शताब्दी के इन आरम्भिक वर्षो में जो सब प्रायः समाप्त हो चुका है उन्होंने यह समस्त उत्थान पतन राजधानी दिल्ली में रहकर स्वयं अपनी आंखों से देखा और उसमें भाग लिया।

प्रभाकर की आत्मकथा के तीन खण्ड प्रकाश में आ चुके हैं। इनमें ''और पंछी उड़ गया'' की मूल संवेदना साहित्य सृजन है। जिसमें लेखक ने अपनें जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल किया।

बांगला के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की जीवनी लिखकर साहित्यकार ने हिन्दी साहित्य के पाठकों की जिज्ञासा का शमन ही नहीं किया वरन उस वक्त का **देश** काल का वातावारण, समाज से भी अवगत कराया जो वर्तमान मे युवाओं के लिये भी पथ प्रदर्शक का कार्य करेंगी। आत्मकथा के इस खण्ड में लेखक ने शरत जीवनी लिखने के दौरान आने वाली बाधाएं, **देश** देशाटन, शोध की कसौटी पर तर्क को कसना फिर निष्कर्ष पर पहुंचना इत्यादि का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया हैं।

विष्णु प्रभाकर ने शरत जीवनी लिखने को संयोग बताया है, जैसा कि उन्होंनें लिखा।

''अचानक जीवन में एक दिन ऐसा कुछ घट जाता हैं, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की होती और वह ऐसा कुछ हमारे जीवन की धारा को एकदम बदल डालता है।''

सन् 1959 के सितम्बर मास में मैंने अमरनाथ की यात्रा की। तब सोचा भी नहीं था कि यह वर्ष समाप्त होते होते मैं एक ऐसी यात्रा पर निकल पड़ूंगा जो लम्बे चौदह वर्ष के बाद ही समाप्त होंगी।''

"यह यात्रा मात्र यायावारी नहीं थी। इसके पीछे एक पूर्व नियोजित मिशन था जिसका अन्त हुआ 'आवारा मसीहा' के सृजन में। कभी सोचा भी न था कि एक दिन मुझे अपराजेय कथा शिल्पी शरत चन्द्र की जीवनी लिखनी पड़ेगी।" – 35

"और पंछी उड़ गया" में शरत जीवनी का सृजन ही नहीं है अपितु लेखक का सृजन संसार समाया हुआ है, जिनमें आकाशवाणी, दूरदर्शन के लिये लिखना तथा लेखक की रचनाओं की प्रतिवर्ष औसत संख्या 52 के लगभग रही कहानियों की संख्या कम से कम छः रही तथा रेखाचित्र यात्रा वृत्तांत भी लिखे गये। इस अवधि में लेखक की नौ पुस्तकें प्रकाशित हुई उनमें महत्त्वपूर्ण हैं दर्पण का व्यक्ति (उपन्यास) डॉक्टर (नाटक) युगे युगे क्रान्ति (नाटक) जमना गंगा के नेहर में (यात्रा वृतान्त) इसके अतिरिक्त कहानियां, एकांकी और बाल साहित्य के अनेक संग्रह भी प्रकाशित हुए। तीन रूपक भी आकाशवाणी के लिये लिखें जिनमें एक था 'वैष्णव जन' जिसमें गांधी जी के जीवन दर्शन को रूपायित किया था, दूसरा था 'बा और बापू' जो पति–पत्नी के सम्बन्धों के साथ–साथ उनके जीवन में गहरे पैठने की दृष्टि को रेखांकित करता था। तीसरा था 'गांधी जी का आत्ममंथन' जिसे एक तरह से उनके जीवन दर्शन का सार कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त लेखक ने गांधी स्मारक निधि के लिए गांधी जी के जीवन के 700 महत्त्वपूर्ण प्रसंगों का चयन करके उन्हें दस पुस्तकों में संकलित किया। इन सबका वर्णन लेखक ने अपनी आत्मकथा में किया है। इसके अलावा अछूतों के लिये भी लिखा जैसा कि उन्होंने लिखा–

"अछूतों को लेकर उन्हीं के लिए मैनें एक पुस्तक लिखी "मैं अछूत हूँ" जिसमें मैंने अपनी दृष्टि से उसके जन्म और विकास की प्रक्रिया पर ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डाला है– 36

लेखिका हैलेन केलर के लिए लिखे संस्मरण के कुछ अंश भी अपनी आत्मकथा में दिए हैं।

"मैंने इस सम्बन्ध में अपने संस्मरण सन् 1963 में लिखे थे (उसी के कुछ अंश यहां दे रहा हूँ। )" – 37

"हमें पूरा एक घण्टा उनके समीप रहने का अवसर मिला। उन अनुभूति को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। उस दिन यह स्पष्ट हो गया कि बड़ी से बड़ी शारीरिक अपंगता

मनुष्य के मार्ग की बाधा नहीं बन सकती वह दृष्टिहीन होकर भी दृष्टि वालों से अच्छी है। बहरी होकर भी अंतरवीणा की झंकार सुनती है। वह तैरना, घुड़सवारी करना, नाव खेना, जानती है। वह शतरंज और ताश भी खेल लेती है। उन्हीं के शब्दों में "अगर उल्लंघन के लिये रेखाएं न होती, जीतने के लिए बाधाएं न होती, पार करने के लिये सीमाएं न होती, तो मानव जीवन में पुरस्कार की तरह आने वाले आनन्द के अनुभव में कुछ न कुछ कमी आ जाती।" – 38

इस आत्मकथा का अध्ययन मनन विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि लेखक के द्वारा लिखित आत्मकथा के इस खण्ड की मूल संवेदना साहित्य को समर्पित है, जिसमें लेखक ने अपने सृजन संसार का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया हैं।

हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में लेखिका की जीवन स्थितियों के साथ–साथ उनके दौर की कई साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर भी प्रकाश डालती है और नई कहानी दौर की रचनात्मक बेकली और तत्कालीन लेखकों की ऊँचाइयों नीचाइयों से भी परिचित कराता है। साथ ही उन परिवेशगत स्थितियों को भी पाठक के सामने रखता है। जिन्होंने उनकी संवेदना को झकझोरा है। लेखिका ने अपनी आत्मकथा में उन पात्रों व घटनाओं का भी जिक्र किया है, जिन्होनें उनकी कहानी में अपना स्थान बनाया। जैसा कि उन्होंने लिखा –

"वैसे तो ब्रह्मपुरी मौहल्ले के कुछ पात्र और भी हैं जिन पर मैंने कहानियां लिखी पर सबका ब्यौरा प्रस्तुत करना न जरूरी नहीं सम्भव। इन कहानियों के माध्यम से मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि करीब करीब ये सारी कहानियां वास्तविक पात्रों और वास्तविक घटनाओं पर आधारित हैं। कहानियों के बाहरी ढांचे के बदलाव के बावजूद वे उनमें पूरी तरह उपस्थित हैं।" – 39

लेखिका वर्तमान युग की आधुनिक नारी है, जिन्होंने बदलते विचार, परिदृश्य, मान्यताएं, संस्कारों के साहित्य को नये आयाम दिए। लेखिका की कहानी उपन्यास पर सीरियल व फिल्म भी बनी है। जैसा कि लेखिका ने आत्मकथा में वर्णन किया है। उनकी कहानी 'यही सच हैं' पर 'रजनी गंधा' शीर्षक से फिल्म बनी।

लेखिका ने इसके अलावा भी अपनी आत्मकथा में दो कहानियों का जिक्र किया हैं। जिनमें एक कहानी की पात्र तो स्वयं उनकी बेटी ही है, जिसको समझने के दौरान ही त्रिशंकु कहानी का प्लेटफॉर्म मिला, जिसके बारे में लेखिका ने लिखा है–

''लड़की के ऐंगिल में लिखी गई यह कहानी बड़े सरल पर व्यंग्यात्मक तरीके से यह सिद्ध करती है कि हमारी पीढी की स्थिति त्रिशंकु जैसी ही हैं। विचारों से बेहद आधुनिक पर व्यवहार में वही परम्परावादी" – 40

इसके अलावा दूसरी कहानी 'स्त्री सुबोधन' के बारे में लिखते हुए लेखिका बताती हैं कि यह एक इन्कम टैक्स ऑफिस में नौकरी करने वाली लड़की की कहानी है, जिसने अपने बारे में बताया कि वह एक विवाहित पुरूष से प्रेम करती हैं लेकिन वह विवाहित होने का राज छिपा कर रखता है। जब लड़की उसके साथ सम्बन्धों में आगे निकल जाती है तब वह उससे कन्नी काटने लगता है और वह दुःखी हो जाती हैं। यही से स्त्री के सुबोधन के लिए विचार मिलता है।

''मैंने उसी के ऐंगिल से कुंवारी लड़कियों को बोध कराने के लिए, अच्छी तरह समझाने के लिए यह कहानी लिखी और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि छपते ही यह भी काफी चर्चित हुई।" – 41

किसी भी साहित्यकार की आत्मकथा साहित्य से पृथक करके लिखी भी नहीं जा सकती क्योंकि साहित्यकार, साहित्य का अभिन्न अंग होता है। दोनों एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। हिन्दी साहित्यकार श्री हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के चार खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं जिसमें से "क्या भूँलू क्या याद कँरूं" में उनकी सात पीढ़ी का वर्णन है तो "नीड़ का निर्माण फिर" और 'बसेरे से दूर' मे उनका सृजनात्मक, साहित्यिक, शैक्षिक, पारिवारिक, रागात्मक रूप उभरकर पाठकों के सामने प्रकट हुआ है, जिसमें साहित्य सृजन मूल संवेदना के रूप में मुखर हुआ है क्योंकि लेखक के कवि रूप ने इस काल में अविस्मरणीय कृतियां साहित्य को समर्पित की है, जिनमें प्रमुख मधुबाला, मधुशाला, मधुकलश, एकांत संगीत, निशा निमन्त्रण इत्यादि जैसा कि लेखक ने लिखा–

"ये तीन वर्ष जो मैंने अग्रवाल विद्यालय की सेवा में बिताए, मेरे लिए कितने मानसिक तनाव, शारीरिक श्रम संघर्ष, आर्थिक संकटों और अप्रत्याशित, अवांछित और

अप्रिय घटनाओं के वर्ष रहे हैं, पर इन्हीं वर्षों में मैंने 'मधुबाला' और 'मधुकलश' के गीत लिखे। – 42

"तुमनें समझा मधुपान किया ?

मैंने निज रक्त प्रदान किया!

उर क्रन्दन करता था मेरा,

पर मुख से मैंने गान किया

मैंने पीड़ा को रूप दिया

जग समझा मैंने कविता की

मैं एक सुराही मदिरा की" – 43

"मेरी अनुपस्थिति में 'मधुशाला' के तीसरे और 'मधुबाला' के दूसरे संस्करण छपे थे। 'मधुकलश' का प्रथम संस्करण समाप्त प्राय था निशा निमंत्रण जोरों से बिक रहा था" – 44

लेखक ने अपनी आत्मकथा में साहित्य सृजन के पीछे प्रेरित परिस्थितियों मनः स्थितियों का भी वर्णन किया है जैसे कि 'एकान्त संगीत' की रचना के पीछे कवि के अकेलेपन की स्थिति प्रेरित करती रही है।

"मुझे लगता था कि मेरा कोई मित्र, साथी, संगी हो ही नहीं सकता। मैं तो सर्वथैव निःसंग, असंग, एकाकी अकेला हूँ। मुझे जो करना हैं वह केवल इतना अपने एकाकीपन की स्थिति से समझौता और यह मुझे असाध्य लगता था और इसी तनाव में मैं 'एकान्त संगीत' के गीत पर गीत लिखे जा रहा था, मेरे मनन चिंतन की प्रक्रिया दिशा क्या थी, इसका क्रमानुसार लेखा जोखा 'एकान्त संगीत' में है।" – 45

कवि ने अपने सृजनात्मक और साहित्यिक रूप को पाठकों के सम्मुख लाने के लिए अपनी कविताओं के पद भी आत्मकथा में दिए हैं। इसके साथ ही अपनी रचनात्मक कृतियों के सृजन काल का वर्ष सहित वर्णन किया है।

'मिलन यामिनी' के गीत 1945 और 1949 के बीच लिखे गये थे– सौ गीत जुलाई 1950 में वह प्रकाशित हुई थी। शायद मेरी और किसी रचना के समय इतना सृजनात्मक व्याघात नहीं उपस्थित हुआ जितना 'मिलन यामिनी' लिखते समय 'धार के इधर उधर' की कुछ कविताएं 'हलाहल' के अधिकांश पद पूरा 'खादी' के फूल और 'सूत की माला' इसी काल के अंतर्गत रची गई थी। उसके बाद मेरे मन में 'प्रणय पत्रिका' की योजना उठी। – 46

साहित्यकार के जीवन की परिस्थितियां, आसपास का परिवेश, साहित्य को भी प्रभावित करता है। कवि बच्चन के काव्य में रागात्मकता, अवसाद, अतीत की याद, विवशता का अहसास, असामर्थ्यबोध का दंश, अपनी भूलों पर पश्चात्ताप, तथा निराशा के दर्शन होते हैं।

साहित्यकार, लेखक, कमलेश्वर की आत्मकथा 'जो मैंने जिया' में भी लेखक की सम्पूर्ण आत्मकथा की मूल संवेदना साहित्यिक है जिसमें लेखक के अनुभवों के यथार्थ से गुजरते हुए एक लम्बे साहित्यिक दौर के महत्वपूर्ण पड़ावों का सुन्दर वर्णन किया गया है, जिन्होंनें लेखक के सत्य को निर्मित और उद्‌घाटित किया एवं जिससे लेखक की वैचारिक एवं रचनात्मक भूमिका तय होती है।

"मैं मार्क्सवादी था और आज भी हूँ और यह सैद्धांतिक आसक्ति मेरी अपनी थी..... मेरे परिवेश के यथार्थ ने मुझे मार्क्सवाद से जोड़ा था– भैरव प्रसाद गुप्त या नामवर सिंह ने नहीं, शिवदान सिंह चौहान या प्रकाश चन्द गुप्त ने नहीं।" – 47

लेखक ने आधुनिक काल के साहित्यिक दौर के घटनाक्रम, लेखकों, साहित्य की उपलब्धियों का साहित्य सम्मेलनों, नई कहानी के बनने बिगड़ने, वादों का विवाद, लेखकों का विवाद, पत्रिकाओं का प्रकाशन इत्यादि का हूबहू वर्णन किया हैं। अपने समय के साहित्यिक वातावरण का वर्णन करते हुए लिखा है।

"हाय! वे कैसे अच्छे दिन थे। अब साहित्य में वह आनन्द कहाँ ! लोग सिर झुकाए दर्जियों की तरह शांतिपूर्वक साहित्य के पायजामे सिलते रहते हैं। पहले का वक्त होता तो वे सिलने से ज्यादा दूसरों की सूई तोड़ने या सिला हुआ उधेड़ देने में रूचि लेते।" – 48

"नई कहांनियाँ' का दूसरा दौर शुरू हुआ। ज्ञानरंजन, रविन्द्र कालिया, महेन्द्र भल्ला, दूधनाथ सिंह, डॉ0 गंगा प्रसाद विमल, परेश और देवेन्द्र गुप्त जैसे लेखको की कहानियाँ और ज्यादा नई प्रतीति दे रही थीं। भाषा और कथ्य के स्तर पर भी यह कहानियाँ अलग और विशिष्ट थी।" – 49

इस तरह लेखक की जीवन यात्रा के दौरान जो स्थान, घटना, पात्र या प्रसंग उसकी दृष्टि में आते है उन्हें वह अपनी संवेदनात्मक अनुभूति में ढालकर साहित्य का विषय बनाता जाता है लेखक केवल तथ्यों को संकलन नहीं करता बल्कि सभी को अपनी दृष्टि से देखने का प्रयास भी करता है। लेखक की आत्मकथा का अध्ययन करने पर प्रतीत होता हैं कि आत्मकथा के माध्यम से साहित्यकार ने साहित्यिक जीवन यात्रा ही लिख दी हो क्योंकि आस–पास का परिवेश, सामाजिकता, सांस्कृतिक इत्यादि का वर्णन गौण रूप में मिलता है।

## वैचारिक

वैचारिक का शाब्दिक अर्थ होता हैं विचार सम्बन्धी। और वैचारिकी का  अर्थ होता हैं विचारधारा। – 50

कला के प्रति अपने आप को समर्पित साहित्यकार एक महत्वपूर्ण आत्मकथा का सृजन करता है। एक सामान्य व्यक्ति या साहित्यकार द्वारा लिखित आत्मकथा में भिन्नता है। सामान्य व्यक्ति अपने जीवन का मात्र विवरण लिख सकता है लेकिन साहित्यकार अपनी विचारधारा से आत्मकथा को एक दिशा सूचक यंत्र की भांति निर्मित करता है जो पाठक के लिये भी एक दिशासूचक यंत्र का कार्य करती है।

साहित्यकार विष्णु प्रभाकर अपनें सुदीर्घ जीवन में साहित्य के अतिरिक्त सामाजिक नवोदय तथा स्वतंत्रता संग्राम से भी पूरी तरह जुड़े रहे। रंगमंच रेडियो तथा दूरदर्शन सभी में वे आरंभ से सक्रिय रहे। शरतचन्द्र चटर्जी के जीवन पर लिखी उनकी बहुप्रंशसित कृति 'आवारा मसीहा' अपने ढंग की विशिष्ट रचना है। साहित्यकार की आत्मकथा के तीन खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। जिनका अध्ययन करने पर मूल भाव में लेखक की जो विचारधारा उभर कर सामने आई वह राष्ट्रप्रेम है, अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम, साहित्य को समर्पण की भावना प्रमुखतः आलोकित हुई है। लेखक ने मुक्त गगन में आत्मकथा के

प्रारम्भ में ही अपनी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए पंजाब के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करते हुए लिखा है।

''मुझे सृजन करते 57 वर्ष बीत रहे हैं। वह किस स्तर का हैं –यह निर्णय करने का अधिकारी मैं नही हूँ लेकिन यह निखूट सत्य है कि मेरे सृजन की प्रेरणा भूमि यही प्रदेश है। उसमें जितना कुछ 'साहित्य' की संज्ञा पाने का अधिकारी है। उस पर इसी प्रदेश की जलवायु का प्रभाव है।" – 51

''मेरी अनेक सुपरिचित कहानियाँ इसी भूमि की देन हैं। उनमें कुछ हैं, रहमान का बेटा, अभाव, चैना की पत्नी, आश्रिता, ठेका, चाची, रायबहादुर की मौत, डायन, दूसरा वर, बच्चा किसका, छाती के भीतर, छोटे बाबू, अरूणोदय, और मैं उन्हें क्या कहूँ, इसके अतिरिक्त निशिकांत को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानियाँ तथा साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में लिखी गई 'मेरा वतन'। संग्रह की लगभग सभी कहानियँ इसी प्रदेश की पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं। ''– 52

लेखक ने अपने सृजन के लिये अपने परिवेश, जमीन, संस्कारों के ऋण को सहर्ष स्वीकार किया हैं। लेखक ने अपनी विचार धारा को अपने–अपने सृजन में ढालकर इस तरह प्रस्तुत किया।

"उस ऋण को चुकाने की बात करना दाता का अपमान करना है। वह मेरी माँ है, माँ का ऋण चुकाने का अर्थ बस माँ बनना है। वैसे ही जैसे बीज की परिणति फल नहीं बीज है।"

"मेरे रास्ते में उजाले, रहे

दीये उनकी आँखो में जलते रहे" – 53

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'मुक्त गगन में' लेखक की राष्ट्रवादी विचारधारा ने सम्पूर्ण आत्मकथा में देश की जलती हुई स्थिति, साम्प्रदायिकता का भीषण ज्वार, जातीयता, विधानसभा का गठन, देश का बंटवारा इत्यादि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। लेखक ने अपने सम्पूर्ण जीवन में एक सदी को देखा था । जिसमें परतंत्र भारत स्वतंत्र भारत और इक्कीसवीं सदी शामिल है। लेखक की राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही लेखक ने स्वयं को भाग्यशाली बताया।

"मैं अपने को भाग्यशाली समझता हूँ कि मैं दृष्टा और भोक्ता दोनों था, भारत के स्वतंत्र होनें की प्रक्रिया का, उसके बंटवारे का, असंख्य निर्दोष व्यक्तियों की हत्याओं का, उन पर होने वाले अमानुशिक अत्याचारों का। मनुष्य पशुत्व की सीमा भी लांघ गया था उन दिनों।" – 54

इस तरह विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में लेखक की राष्ट्रवादी विचारधारा मुखरित हुई हैं। जिसका लेखक दृष्टा और भोक्ता दोनों रहा हैं।

हिन्दी साहित्यकार "मोहन राकेश की डायरी" का प्रकाशित अंश ही उनकी आत्मकथा है, जिसे उनकी पत्नी ने उनके मरणोपरांत प्रकाशित करवाया था। जिसमें लेखक ने अपनें जीवन की सच्चाई को अक्षरशः उतारने की कोशिश की है। चूंकि डायरी लेखक का अपना निजी दस्तावेज था जिसमें उन्होंने ने अपने मन पर लगे उन घावों को डायरी के माध्यम से धोने का कार्य किया था जिन्हें वे सारे जमाने से छुपा कर रख। इसलिये लेखक की किसी निर्धारित विचारधारा को निश्चित कर पाना कठिन है क्योंकि कोई भी व्यक्ति जब आत्मकथा लिखता हैं तो उसमें से अपने जीवन के उस पक्ष को अधिक उभारता हैं। जिसके माध्यम से वह पाठक को एक दृष्टि, दिशा, जीवन बोध देना चाहता है लेकिन डायरी में यह सब संभव नहीं है क्योंकि डायरी तो उसने स्वयं के कलुष को धोने के लिये लिखी है। किसी अन्य के उपकार या आलोचना के लिये नहीं लिखी हैं फिर भी मोहन राकेश की डायरी के अध्ययन उपरांत जो विचारधारा उभर कर सामने आती है तो वो है निराशावादी, अकेलापन, मनोविश्लेषणवादी, स्वयं को खोजने की चाह, समय, सम्बन्धों और व्यक्तिगत प्रश्नों और उन प्रश्नों के मन माफिक उत्तर पाने की आकांक्षाएं ही शब्दबद्ध की गई।

"मैं कभी कहीं इतना अकेला नहीं रहता हूँ जितना पिछले डेढ़ साल से जालन्धर में। रमेश के जाने के बाद से कोई ऐसी मानसिक एडजेस्टमेन्ट नहीं हो पाई जो अभाव के अनुभव को दूर कर दे। अब भी नहीं सोच पाता कि इस रिक्तता को भरने का उपाय क्या है ?" – 55

"मैनें पिछले छह साल की घुटन को समाप्त करना चाहा है। जिस औरत से मैं प्यार नहीं कर सकता, उसके साथ मैं जिंदगी किस तरह काट सकता हूँ ? आज वह मुझ पर 'वासना से चालित' और इन्सानियत से गिरा हुआ, होनें का आरोप लगाती हैं –

क्योंकि मैने उससे तलाक चाहा है क्योंकि मैं अपने अभाव की पूर्ति के लिए एक ऐसे व्यक्ति का आश्रय चाहता हूँ जो मुझे खींच सकता हैं, बांध कर रख सकता है।" – 56

लेखक का जीवन खुली किताब रहा है। इसी का दूसरे लोग फायदा उठाते रहे और लेखक हमेशा धोखे का शिकार होता रहा और हमेशा ही मन की उलझनों को सुलझाता रहा।

"इसका तो अर्थ यह है कि व्यक्ति किसी पर भी विश्वास न करे, किसी से निश्छल चित्त होकर बात न करे, किसी के सामने अन्तर के सम्पूर्ण को व्यक्त करने का प्रयत्न न करे। अपने लिए एक चेहरा और दुनिया के लिये दूसरा चेहरा रखे। मेरी सबसे बड़ी कमज़ोरी यही है कि मैं जिस किसी व्यक्ति पर विश्वास करता हूँ, पूरा विश्वास कर लेता हूँ बल्कि कोई भी जब तक विश्वासघात नहीं करता तब तक इस पर पूरा विश्वास करता हूँ–बार बार चाहता हूँ कि हर एक से अपना सब कुछ कह दूँ।

हर व्यक्ति के सामने अपना Confession कर लूँ– परन्तु परिणाम सामने है। – 57

राकेश जी का जीवन मुख्यतः जालंधर दिल्ली और बम्बई में बीता। जालंधर उनके निर्माण और विकास का काल हैं। दिल्ली और बम्बई स्वीकृत होने के बाद उपलब्धियों का। पूरी ईमानदारी और बेबाकी इन डायरियों की सबसे बड़ी विशेषता हैं। उन्होंनें न अपने को बख्शा हैं, न अपनें मित्रों को, अपनी महिला मित्रों को तथा प्रेम प्रसंगों और विवाहों की चर्चा उन्होंने बहुत खुलेपन से की हैं। इनसे उनके साहित्यिक विकास की अन्तः प्रक्रियाएं, जो अक्सर काफी कष्टप्रद हैं व्यक्त होती हैं लेखन और साहित्य के विविध पक्षों पर उनके विचार तो स्पष्ट होते ही हैं।

राकेश की डायरी में उनकी व्यक्तिगत विकास यात्रा तो विस्तार से चित्रित हुईं। उनके परिवेश, मित्रगण, प्रेम प्रसंग, साहित्यिक, गतिविधि तथा नई कहानी आंदोलनों का अन्तरंग विवरण भी प्रस्तुत होता रहा।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा 'जो मैनें जिया' के मूल भाव में लेखक की रचनात्मक एवं वैचारिकता का दर्शन होता हैं क्योंकि स्मृति अतीतजीवी हो सकती है, पर अतीतमुखी नही होती। वह आंतरिक अनुभव की प्रगाढ आधार भूमि तैयार करती रहती है और अतीत से वर्तमान की और, वर्तमान से

भविष्य को जोड़ती जाती हैं, यानि भविष्य की रचनात्मक और वैचारिक अस्मिता को स्वरूप देती हैं। लेखक ने आत्मकथा में अपनी विचारधारा को स्पष्ट करते हुए लिखा हैं–

"मैं अपनी बात जानता हूँ–मैं मार्क्सवादी था और आज भी हूँ और यह सैद्धांतिक आसक्ति मेरी अपनी थी– मेरे परिवेश के यथार्थ ने मुझे मार्क्सवाद से जोड़ा था– भैरव प्रसाद गुप्त या नामवार सिंह से नहीं।" – 58

लेखक इसी समाज का अभिन्न अंग होता हैं। जिसे समाज की स्थिति परिस्थिति, परिवेश, मनुष्य प्रभावित करते हैं लेकिन फिर भी इन सबके बीच रहते हुए भी वैचारिकता इंसान की स्वयं की निजी होती हैं। जिसे वह अपने मस्तिष्क का विश्लेषण करने के उपरांत चुनता हैं। जिसके लिए वह स्वतंत्र होता हैं।

"यही दौर था जब जैनेन्द्र का संशयवाद और वात्स्यायन का क्षणवाद इतिहास की निरंतरता और यथार्थ के मूर्त/अमूर्त घावों पर नमक की तरह छिड़का गया। यह एक वैचारिक महासमर बन गया जिसकी परिसमाप्ति कलकत्ता के ऐतिहासिक कथा समारोह में हुई। पर यह तो बाद की बात हैं और बाद मे विस्तार से याद करूंगा। मेरा वैचारिक झगड़ा इस 'क्षणवाद' और संशयवाद से शुरू हो चुका था।" – 59

लेखक के लेखन की वैचारिकी तत्कालीन साहित्य संसार से भिन्न थी। लेखक अपनी एक स्वतंत्र विचारधारा लेकर चल रहे थे जिसमें न क्षणवाद था न यथार्थवाद बल्कि लेखक ने अनुभव की कसौटी पर कसी गई प्रामाणिकता को वरीयता दी।

"मैंने लेखक के रूप में अपनी रचनात्मक आजादी को चुना था......और तब पार्टीबद्ध 'यथार्थ' को स्वीकार करने की बजाय मैंने अनुभव की प्रामाणिकता को वरीयता दी– निजी अनुभव को कवच बना कर पार्टी के नाम पर आलोचना के हंटर से बचने और यथार्थ से जुड़े रहनें का एक रास्ता अपनाया–तब मैंने 'मांस का दरिया', नीली झील, खोई हुई दिशाएं, दिल्ली में एक मौत, दूसरे आदि कहानियाँ लिखी।" – 60

लेखक ने सम्पूर्ण आत्मकथा में साहित्य के बनते–बिगड़ते सरोकारों का लेखकों की जुगलबदियों का, वैचारिक मतभेदो, सम्मेलन का, गोष्ठियों का आयोजन, इत्यादि का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया हैं लेकिन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक वर्णन गौण रूप में मिलता हैं।

# <u>स्थानीय</u>

स्थानीय का शाब्दिक अर्थ हैं

1. स्थान विशेष से सम्बन्धित
2. स्थान विशेष के लिये उपयुक्त – 61

आत्मकथा किसी भी मनुष्य के जीवन का जीवंत दस्तावेज होता हैं। जिसमें लेखक के जीवन से प्रारम्भ होकर जीवन का अद्यतन वर्णन होता है। किसी भी मनुष्य के जन्म या बचपन से लेकर जिन पड़ावों से वह गुजरता हैं, उसका वर्णन करता है। जब व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन का वर्णन करेगा तो उसमे स्थान विशेष से सम्बन्धित भावना उत्पन्न होना स्वभाविक है। जिसमे स्थान विशेष के तीज, त्यौहार, मेले, स्थानीय विशेषता, लोक देवता, लोक गीतों का वर्णन भी हो सकता है।

विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा, 'पंखहीन' का आरम्भ ही स्थान विशेष का वर्णन करते हुए किया है क्योंकि किसी भी इंसान को अपनी जन्म भूमि से लगाव होना नैसर्गिक खूबी है। जिस जमीन पर उसने अपने जीवन का आरम्भ किया एवं कदम रखा वह उसके लिये पूज्यनीय ही नहीं बल्कि प्यारी भी होती हैं। तभी तो लेखक ने वर्णन करते हुए लिखा हैं–

"पहले मैं अपनी जन्मभूमि की चर्चा करू। मेरा जन्म पश्चिमी उत्तर प्र**देश** के एक छोटे से कस्बे मीरापुर में हुआ था। वास्तव में यह कभी आस–पास के गांवो के 'बाजार' के रूप मे विकसित हुआ होगा। कभी इसका नाम मेरा–पुर था बाद में न जाने कैसे मीरा नाम की देवी से इसका सम्बंध हो गया। बचपन में हमारे घर मे 'मीरा की कढाई' जैसा एक त्यौहार भी मनाया जाता था।"

"यह पश्चिमी उत्तर प्र**देश** का प्रमुख नगर माना जाता हैं। गंगा और यमुना ये दो पवित्र नदियां इसकी पूर्वी और पश्चिमी सीमाएं हैं मीरापुर गंगा नदी से केवल पांच छः मील दूर हैं।" – 62

लेखक ने मीरापुर का वर्णन करने मे उसका चारों दिशाओं से सम्बन्ध, सम्पर्क, आबादी, जाति, स्कूल, कॉलेज, तीज, त्यौहार, आस्था, धर्म, विश्वास इत्यादि का वर्णन करने में एक अध्याय पुरा किया हैं। लेखक ने विभिन्न स्थानों की यात्रा की लेकिन उसका आनन्द स्वयं ही नहीं उठाया बल्कि उसमे पाठको को भी शामिल किया हैं तभी तो लेखक जहाँ भी गये हैं उस स्थान विशेष का वर्णन उनकी आत्मकथा मे मिलता है। इसके पीछे लेखक की भावना स्थान विशेष को रूपायित करना रहा हैं जिससे पाठक भी उस प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिभूत हो सके। इसी क्रम मे 'और पंछी उड़ गया' मे लेखक ने आत्मकथा का आरम्भ असम यात्रा से किया है–

"इस प्र**देश** की संस्कृति के निर्माण मे नारी का प्रमुख स्थानहैं। कोई भी ऐसा काम नहीं हैं जो वह नहीं कर सकती। उड़ते हुए बादलों के नीचे, सुनहरे खेतो के बीच फसल काटती असमिया बाला जब गीत गाती है तो वह सारी घाटी मंत्रमुग्ध हो उठती हैं। उसका पहनावा भी सुन्दर हैं–मेखला, छाती ढकने वाली चादर और शाल, इसका लाल बूटेदार किनारा और मूंगा। रेशम और कपास के सभी घरेलू वस्त्र वे स्वयं ही करघो पर बुनती हैं।" – 63

इन सबके अतिरिक्त भी लेखक ने जो स्थानीय वर्णन किया है, उनमे कामाख्या देवी का मन्दिर, शिलांग, गोहाटी, गंगोत्री, यमुनोत्री, अमरनाथ भी शामिल हैं।

'अन्या से अनन्या' की लेखिका प्रभा खेतान ने भी अपनी आत्मकथा में अपने जन्म स्थान से प्रेम की भावना को उजागर करते हुए लिखा हैं–

"आज से पचास वर्ष पहले लोगो का बसना शुरू हुआ था। मौहल्ले मे चार पांच मकान थे। बाबू जी ने बड़े शौक से यह मकान बनवाया था और मैं उनकी आखिरी संतान इसी मकान नम्बर 71 मे पैदा हुई थी। मौहल्ले का सबसे धनाढय परिवार हमारा ही माना जाता। आस पड़ोस में सुख–दुख मे काम आना हम सब अपना फर्ज समझते। – 64

"फुटफाथ हमारे खेल का मैदान था। जब हरिया नौकर का मन करता तो हमे कभी–कभी लेक के किनारे घुमा लाता, नहीं तो वही खेलो, मकान के सामने दौड़ लगाओ सड़क पर, आस पड़ौस के और दस पांच बच्चे, खाली सड़क, उन दिनों कौन वहां इतनी गाड़ियां आती थीं। कुल मिलाकर मौहल्ले भर मे पांच गाड़ियां थीं। – 65

किसी भी इंसान का जन्म जहाँ होता हैं तथा बचपन जहाँ बीतता है उस स्थान का मोह और स्मृति कभी भी वक्त से साथ धुंधली नहीं होती है। इंसान के अंतिम पड़ाव पर भी यदि उसके बचपन के बारे मे पूछा जाये तो चलचित्र की भांति स्मृति चलने लग जायेगी। इस अनमोल अनुभूति से दुनिया का कोई भी इंसान वंचित नहीं रहता है क्योंकि बचपन समस्त जीवन का स्वर्णिम काल होता हैं। जहाँ दुनियादारी से दूर निश्छल, स्वच्छंद, जाति पांति से दूर अपनी एक खूबसूरत दुनिया होती है। डॉ0 हरिवंशराय बच्चन भी अपनी जन्म भूमि के प्रेम को नहीं छिपा पाये और उन्होंने भी अपनी आत्मकथा "नीड़ का निर्माण फिर" में अपनी जन्मभूमि के लगाव को दर्शाया हैं–

"चक के घर मौहल्ले से, जहाँ मैनें पहली बार आंख खोली थी जहाँ मेरा बचपन घुटने रेंगा था, लड़कपन उछला–कूदा था, जवानी उभरी थी, मुझे जितनी ममता हो सकती थी उतनी कटघर के घर मौहल्ले से नहीं फिर भी वहां रहते बारह बरस बीत गये थे और क्या–क्या नहीं बीता था वहां के पेड़ पालो, माटी मानुस, सबसे उसका कोई सूक्ष्म सम्बंध बन जाता हैं। जैसे वहां से विदा होने का दिन पास आने लगा मैं अधिकाधिक उस घर गली से लगाव अनुभव करने लगा।" – 66

लेखक ने अपने जन्म स्थान ही नही बल्कि अपनी कर्म भूमि का भी सुन्दर वर्णन किया है जिसने लेखक के व्यक्तित्व निर्माण मे परिवार निर्माण मे सृजन संसार मे, सामाजिकता मे उसका सहयोग किया है–

"मेरा तीस बरस का जीवन मौहल्ले, गली, कूंचों के इलाहाबाद में बीता था। कतिपय व्यक्तिगत, मानसिक, कारणों से मैं उससे दूर जाना चाहता था और क्रमशः उससे दूर होते होते मै सिविल लाइन मे आ पड़ा था, जहाँ के लिये मैं एक नव आरोपित पौधे की तरह था। सिविल लाइन और मौहल्लो के रहन सहन मे कुछ मुल भूत अंतर हैं। सिविल लाइन मे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निजीपन, हस्तक्षेपहीनता, का उपयोग करने का अवसर अधिक हैं। इसकी कुछ कीमत अदा करनी पड़ती हैं, बिल्कुल आत्मनिर्भर आत्म पर्याप्त और निःसंग होने की स्थिति को स्वीकार करके रूढी मुक्त हो स्वाध्याय सृजन का जो जीवन मैंने अपनाया था उसके लिए सिविल लाइन्स एक प्रकार से मेरे अनुकूल थी। – 67

भारत वर्ष मे इलाहाबाद शहर का अपना आध्यात्मिक महत्व तो है ही इसके साथ ही इलाहाबाद की एक खूबी और है जो यहाँ आता है वह यहीं का होकर रह जाता है

क्योंकि इस शहर मे देने का अर्थात त्याग का भाव अधिक हैं जो भी यहाँ आता है यहाँ से कुछ न कुछ पाता ही हैं। यहाँ इंसान का महत्त्व हैं महत्वाकांक्षा का नहीं, हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर ने भी अपनी आत्मकथा "जो मैंने जिया" मे अपनी कर्म भूमि इलाहाबाद का वर्णन करते हुए लिखा हैं–

"इलाहाबाद तो बस इलाहाबाद थाश।

एक सोचता हुआ शहर। जीवन की तमाम भौतिकता और नश्वरता को चुनौती देता हुआ नगर। प्रतियोगिता से अलग पूरकता का शहर, जो महत्वाकांक्षाएं नहीं–आकांक्षाएं देता था– तुम क्या बनते हो को सराहने वाला शहर नहीं तुम क्या बनाते हैं को स्वीकार करने वाला शहर और ऐसे शहर मे दीक्षा मिली थी। एक पूरी पीढ़ी को एक नहीं कई कई पीढीयों को।

"कोई क्या खाता हैं, क्या पहनता हैं, कैसे रहता हैं इस सबसे ऊपर इलाहाबाद के आदमी की पहचान ही वही थी कि वह क्या सोचता हैं– इसीलिए उस जमाने मे इलाहाबाद के आदमी को अलग पहचाना जाता था कि क्या तुम इलाहाबाद के हो!" – 68

आत्मकथा लेखन मे स्थानीय संवदेना की अनुभूति अत्यधिक तीव्र होती है और फिर साहित्यकार के संदर्भ में और अधिक तीव्र होती है क्योंकि साहित्यकार अपनी आंतरिक अनुभूति से तो प्रभावित होता है क्योंकि उसे अपने सृजन के लिए विचार, पात्र, अभिव्यक्ति इन्ही बाहरी अनुभूतियों से मिलती है, जिसमे स्थानीय मित्र, पड़ौसी, अध्यापक, स्कूल, तालाब, पीपल का पेड़, पनघट, तीज, त्यौहार, मेले, शादी समारोह इत्यादि प्रमुख होते हैं। यदि लेखक शहरी हैं तो स्थानीय सवेंदना भी भिन्न होगी, जिसमे अकेलापन, संत्रास, तवान, घुटन, एकाकीपन, बेरोजगारी, महत्वाकांक्षाएं, ऊपरी दिखावा, प्रमुख रूप में होंगे।

## राष्ट्रीय

राष्ट्रीय का शाब्दिक अर्थ होता हैं "राष्ट्र का" (जैसे राष्ट्रीय झंडा) राष्ट्रीयता का अर्थ होता हैं राष्ट्रीय होने का भाव। अर्थात किसी भी **देश** की गरिमा से सम्बन्धित भावना राष्ट्रीय हैं। किसी भी व्यक्ति मे अपने **देश** के प्रति प्रेम, सम्मान, समर्पण, आत्मोत्सर्ग की भावना, एकता की भावना राष्ट्रीयता है।

आत्मकथा लेखन के दौरान किसी भी साहित्यकार के जीवन में किसी भी पड़ाव पर अपने राष्ट्र के प्रति अनुभूत की गई भावना राष्ट्रीय है और आत्मकथा में राष्ट्रीयता का भाव प्रकट होना निश्चित है क्योंकि कोई भी व्यक्ति जिस **देश** मे रहता है जिससे उसे जीवन संचालन का आधार मिलता हैं मान, सम्मान, गर्व, प्रसिद्धि मिलती हैं उससे उसे प्यार होना स्वाभाविक हैं भारत जैसे **देश** मे तो जन्म लेना भी गौरव की बात हैं फिर साहित्यकार इससे अछूता कैसे रह सकता है ?

मूर्धन्य साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा "मुक्त गगन में" मे राष्ट्रीयता का भाव प्रमुख रूप मे मुखरित हुआ है, जिसमे लेखक ने **देश** की आजादी के लिए क्रांति, युद्ध, संधि, क्रांतिकारियों का शहीद होना, हिन्दू मुस्लिम झगड़े, कश्मीर की समस्या पर प्रकाश डाला है–

"इस प्रकार मैं सौभाग्यशाली था कि मेरा सारा परिवार मेरे पीछे खड़ा है लेकिन राजनीतिक क्षितिज पर बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे थे। ऐसा लग रहा था के मुक्ति यज्ञ मे पुर्णाहुति पड़ने वाली है। अभी भी सारे राष्ट्र नेता जेल की सलाखों के पीछे बन्द थे पर पूर्व की ओर से उमड़ती प्रकाश की किरणें जन मानस को उल्लास और उमंग से भर रही थी। श्री सुभाष चन्द बोस की आजाद हिन्द फौज ने आगे बढते हुए 21 मई 1944 को मणिपुर कर राजधानी इम्फाल को घेर लिया था। उनका जयघोष था–'दिल्ली चलो' उनका झण्डा था–तिरंगाा उनका अभिवादन था–'जय हिन्द'। उनका राष्ट्रगान था–'सब सुख चैन की बरखा बरसे, भारत भाग्य हैं जागा' – 69

लेखक ने इस आत्मकथा मे **देश** की आजादी के धधकते अंगारो के साथ ही स्वतंत्रता की स्वच्छ सांस का भी वर्णन किया है, जिसमे कश्मीर समस्या के दौरान स्वयं लेखक को कश्मीर जाने का मौका मिला, कांग्रेस अधिवेशन, महात्मा गांधी की हत्या का वर्णन प्रमुख राष्ट्रीय घटनाओं का सुन्दर अंकन किया है। लेखक ने राष्ट्र के प्रति अपनी भावनाओं का ही वर्णन नहीं किया अपितु अन्य **देश**वासियों की **देश** के प्रति भावना को भी दर्शाया–

"खूब याद है स्वराज आने की खुशी मे राजभक्त लोगो ने खिताब लौटाने शुरू कर दिये थे। एक खान साहब ने कहा, हम तो राजभक्त लोग हैं। अंग्रेजो के राज में उनको आदाब बजा लाते रहे। अब गांधी जी का राज आ रहा हैं तो उनकी खिदमत करेंगे।" – 70

लेखक की शब्द के प्रति भावना को प्रकट करने वाली सबसे बड़ी घटना भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव की फांसी का वर्णन है, जो वर्णन पाठको के लिए नवीन दृष्टि एवं बोध उत्पन्न करने मे सक्षम होगी। गांधी जी ने स्वयं अंग्रेज सरकार को पत्र लिख कर उनकी सजा पर पुर्नविचार करने का आग्रह किया था लेकिन निष्फल रहे–

"अन्त मे लिखा, 'अगर आप सोचते हैं कि फैसले मे थोड़ी गुंजाइश है तो मैं आपसे यह प्रार्थना करूंगा कि इस सजा को, जिसे फिर वापस नहीं लिया जा सकता, आगे और विचार करने के लिए स्थगित कर दें.......दया कभी निष्फल नहीं जाती।"

"लेकिन गांधी जी के सभी प्रयत्न निष्फल हो गये। 23 मार्च को गुप्त रूप से **देश** के तीनो दीवानो को फांसी पर लटका दिया गया।" – 71

हिन्दी साहित्य की आधुनिक लेखिका मन्नू भंडारी ने भी अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' मे राष्ट्र के प्रति अपनी भावना को मूल संवेदना के रूप मे उभारा हैं जिसमे उस समय के दकियानूसी समाज मे भी पुरूष के बराबर भी स्वाधीनता संग्राम मे भाग लेकर रैलियाँ निकालीं भाषण दिए और स्वतंत्र भारत के जश्न का वर्णन किया है–

"एक घटना और। आजाद हिन्द फौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलेजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। जो–जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह जिसमें हम लोग भी थे, वहां जा–जाकर करवा रहे थे। शाम को अजमेर का पुरा विद्यार्थी वर्ग चौपड़ (मुख्य बाजार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाषण बाजी। इस बीच पिताजी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर जाकर अच्छी तरह पिताजी की लू उतारी "अरे उस मन्नू की तो मत मारी गई हैं भंडारी जी पर आपको क्या हुआ? ठीक हैं, आपने लड़कियों को आजादी दी, पर देखते आप, जाने कैसे–कैसे उल्टे सीधे लड़को के साथ हड़ताले करवाती, हुड़दंग मचाती फिर रही है वह, हमारे आपके घरों की लड़कियो को शोभा देता है यह सब ? कोई मान मर्यादा, इज्जत आबरू का ख्याल भी रह गया हैं आपको या नहीं। – 72

लेखिका प्रारम्भ से ही आधुनिक परिवेश पली बढ़ी जिसका प्रभाव विचारो तथा गतिविधियों पर पड़ना निश्चित था लेखिका साधारण जीवन नहीं जीना चाहती थी बल्कि एक विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ जीवन जीना चाहती थी तभी तो लेखिका हाथ उठाकर नारे लगाती, हड़ताले करवाती, लड़को के साथ शहर की सड़के नापती लड़की के रूप मे

स्वयं को प्रस्तुत किया हैं। इसी क्रम मे **देश** की आजादी के जश्न का भी बहुत सुन्दर वर्णन किया है–

"शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि 15 अगस्त 1947।

"कितना मन था कि दिल्ली जाकर किसी तरह सत्ता का हस्तांतरण देखने को मिले क्योंकि लगता था कि जैसे इस उपलिब्ध में हमारा भी योगदान है। पर यह सम्भव नहीं था सो अजमेर की सड़को पर ही जश्न देखा। अजमेर शहर मे वैसी दीवाली न पहले कभी मनी होगी न बाद में। आजादी के साथ जुड़ा विभाजन और उसकी भयंकर त्रासदी सूचना के स्तर पर तो हमें यह सब मालूम हुआ पर संवदेना के स्तर पर उस समय हमनें उसकी आंच महसूस ही नहीं की थी।" – 73

साहित्यकार के जीवन मे जब कभी जो भी घटनाएं घटित होती है। उससे साहित्य का प्रभावित होना प्राकृतिक गुण हैं। यदि साहित्यकार ने परतंत्र भारत मे अपनी जवानी देखी है तो परतंत्र भारत की गतिविधियो का वर्णन होगा और यदि परतंत्र भारत के साथ–साथ स्वतंत्र भारत मे भी सक्रिय रहा तो उसकी आत्मकथा के मूल भाव मे उस समय के अनुरूप ही राष्ट्रीयता का भाव प्रदर्शित होगा। उस समय की गतिशील गतिविधियों का वर्णन उसी रूप मे रूपान्तरित होगा। साहित्यकार लेखक, कमलेश्वर की आत्मकथा "जो मैने जिया" में स्वतंत्र भारत की गतिविधियों का वर्णन मिलता हैं। जिसमे लेखक की राष्ट्र के प्रति भावना दर्शाई गई है।

"मुझे सन् 1962 के दिन अच्छी तरह याद हैं। हिन्दुवादियों–सचेतनियों के भाग्य से छीका टूटा। चीन ने भारत पर आक्रमण किया। कम्युनिस्ट पार्टी और पंचशील की हालत पतली हो गई। परन्तु किसी कम्युनिस्ट लेखक को गिरफ्तार नहीं किया गया। नजर हम पर भी रखी गई। खुफिया विभाग के लोग मेरा, नरेश बेदी और जयन्त गडकरी का पीछा करने लगे, जिससे हमे बलराज साहनी ने बचाया था। – 74

इस तरह कोई भी साहित्यकार या लेखक राष्ट्र की भावना से शून्य नहीं होता हैं। उसके जीवन में कोई न कोई घटना, दुर्घटना ऐसी घटित होती हैं जिसमे कहीं न कहीं उसका राष्ट्र प्रेम झलक ही जाता हैं क्योंकि कोई भी बुद्धिजीवी मनुष्य इतना तो समझता ही हैं कि इस राष्ट्र के प्रति मेरा कोई दायित्व हैं जिसकी वजह से मेरा अपना अस्तित्व

है, परिवार है, समाज है, संस्कृति है। मेरा आत्मसम्मान है। स्वाभिमान है। गर्व है। इसके अभाव मे इंसान कुछ भी नहीं है।

## अन्तर्राष्ट्रीय

अन्तर्राष्ट्रीय शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। जिसमे प्रथम शब्द अंतर है जिसका अर्थ होता हैं–1. अतः 2. भीतर 3. बीच में

राष्ट्रीय का शाब्दिक अर्थ होता हैं– राष्ट्र का अर्थात् अंतर एवं राष्ट्रीय का मिलकर जो अर्थ निकलता हैं। वह– राष्ट्रों के बीच में, राष्ट्रों का पारस्परिक, सम्पूर्ण विश्व का। – 75

वर्तमान मे विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली हैं कि विदेश ही क्या चांद पर जा पहुँचा हैं ऐसे मे हिन्दी साहित्यकार भी इससे विलग कैसे रह सकता हैं। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल में तो शायद यह असंभव होता लेकिन आधुनिक काल में इक्कीसवीं सदी में यह सपना सच हो चुका हैं। वर्तमान में नागरिक एक देश से दूसरे देश पढने, घूमने, व्यापार, नौकरी इत्यादि के लिए आसानी से आते जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति विदेश गमन करता है तो वह अपने और दूसरे राष्ट्रों के बीच तुलना अवश्य करता है तथा राजनीतिक, सामाजिक सभ्यता संस्कृति की भिन्नता को देखकर अपने भाव अवश्य प्रकट करता है। यदि वह विदेश भी नहीं जाये तो प्रेस की स्वतंत्रता एवं अत्याधुनिक संचार माध्यमो ने उसे विदेश दर्शन अवश्य करा दिया होता है जिससे देश विदेश की जानकारी घर बैठे ही मिल जाती हैं। जिससे साहित्यकार का प्रभावित होना लाजिमी हैं। साहित्यकार कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा मे अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति के फलक पर घटित होने वाले घटनाक्रम के प्रति जो महसूस किया उसी अनुभूति को आत्मकथा में प्रकट किया है–

"फोर्ड फाउण्डेशन और कांग्रेस फॉर कल्चरल फ्रीडम भारत की सांस्कृतिक एकता को अस्त व्यस्त करने मे लगे हुए थे। यह एक बड़ी महीन साजिश थी। यह शीत युद्ध का जमाना था–अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर। उदित और नवेदित राष्ट्र अपनी–अपनी अस्मिता खोज भी रहे थे और स्थापित भी कर रहे थे। तीसरी दुनिया यानी अविकसित दुनिया के

पास आ रहे थे और वे गुट निरपेक्ष होते हुए भी अमरीकी, फ्रांसीसी क्रांति से उतने प्रभावित और चालित नहीं थे, जितने कि रूस की मार्क्सवादी क्रांति से। इन विचारधाराओं के टकराने से रोज चिंगारिया छिटकती थीं। तेज और तल्ख बहसें होती थी। मनमुटाव होते थे।" – 76

"इस गहमा गहमी का केन्द्र था– क्नॉट प्लेस का टी हाउस। इन दक्षिण पंथी विचारधाराओं से जो मुद्दे उभरते थे– वे साहित्य मे व्यक्तिवाद की स्थापना करते थे, संस्कृति के क्षेत्र मे विशिष्ट पहचान के नाम पर अलगाववाद को समर्थन देते थे और राजनीति मे मार्क्सवादी विरोध को।" – 77

छायावादी कवि, लेखक, साहित्यकार डॉ0 हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का एक खण्ड उनके विदेश प्रवास पर ही आधारित हैं जिससे लेखक अपने शोध कार्य के लिए कैम्ब्रिज युनिवर्सटी मे पढने जाते हैं जहाँ वह लगभग दो ढाई साल का समय व्यतीत करते हैं। ऐसे मे वहां की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, विश्वास, आस्था, नैतिकता, इत्यादि को करीब से जानने का अवसर मिलता हैं। लेखक को आयरलैंड की अश्व प्रर्दशनी ने सर्वाधिक प्रभावित किया और लेखक ने संस्कृतियों की तुलना करते हुए अपने जो भाव प्रकट किए वो इस तरह है–

"सुन्दर स्वस्थ घोड़ो को देखकर चमकती आयरी आंखो से मुझे ये समझने में देर नहीं लगी कि हिन्दुओं ने जो भक्ति गाय को दी हैं, अंग्रेजो ने जो प्रेम कुत्तो को, वह आयरवासियों ने घोड़ो को दिया हैं। पशु प्रेम प्रकृति से जोड़ने वाली ऐसी कड़ी है जिसकी मशीनी युग मे उपेक्षा कर मनुष्य अपनी बहुत बड़ी हानि करेगा। खैर, हम तो पशुपति नाथ के उपासक ही हैं।" – 78

आधुनिक लेखिका प्रभा खेतान सन् 1966 मे एम0 ए0 करने के बाद ब्यूटी थैरेपी का कोर्स करने के लिए अमेरिका जाती हैं। भारतीय संस्कृति मे पली बढ़ी लेखिका जब विदेश जाती हैं तो नवीन अनुभव प्राप्त करती हैं। लेखिका महसूस करती हैं कि दुनिया की हर स्त्री की नियति एक ही हैं। वह विश्व के किसी भी कोने मे स्वतंत्र हैं, आत्मनिर्भर हैं, आत्मविश्वासी, बेबाक हैं लेकिन पुरूष के सामने आज भी कमजोर हैं। आज भी स्त्री अपना अधिकांश जीवन आंसुओं को पीते हुए ही व्यतीत करती हैं। प्रकृति ने ऐसा अन्याय स्त्री के साथ क्यों किया है कि भावना में पुरूष के साथ बह जाती है और पुरूष उसकी परवाह करना बंद कर देता हैं जैसे लेखिका ने अपने भाव प्रकट किए है–

"मरील तो अच्छी लगी आइलीन।

देखो तुम उसकी फांकियों मे आ मत जाना । वह तुम्हे बरबाद करके रख देगी और हां, एक बात समझ लेना। खबर दार ! कभी उसके साथ क्लाश ब्राउन के घर या उसकी पार्टी मे गई। मिसेज डी की जानी दुश्मन हैं क्लारा ब्राउन।"

"दुश्मन? मरील तो कह रही थी क्लारा को जब दौरे पड़ते हैं, तब केवल डॉक्टर डी ही उसे ठीक कर पाते हैं।"

"बेवकूफ लड़की ! दो और दो जोड़ना नही जानती ? क्लारा और डॉक्टर जी का. ..........." कहते हैं उसने दाहिनी आंख मारी। अब उसने पानी का बड़ा सा घूंट भरा और बोली "समझ गई ना, मैं क्यों कहना चाह रही हूँ?"

"लेकिन मिसेज ही इतनी खूबसुरत हैं ! वह क्यों बर्दाश्त करती हैं?"

"पैसा मेरी बच्ची पैसा। डॉक्टर डी के पास सारा हॉलीवुड क्लारा ब्राउन के कारण आता है।"

तब क्या तुम्हारे देश में भी औरतें त्रिशंकु होकर जी लेती हैं ?"

कहाँ नहीं जीतीं वे ? दुनिया मे ऐसा कोई कोना बताओं जहाँ औरत के आंसू नहीं गिरे?" – 79

एक स्त्री ही दूसरी स्त्री की व्यथा को अच्छी तरह समझ सकती हैं इसीलिए प्रभा जी अपने देश से दूर जाकर भी अपनी स्त्री वादी भावनाओं, संस्कारो को नहीं छिपा पाई।

## <u>मानवीय</u>

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार मानवीय का अर्थ मानुषिक है।

मानुषिक का अर्थ मनुष्य होने से है। – 80

इस समाज का एक साधारण मनुष्य क्या सोचता है, कैसा व्यवहार करता है, कैसी आशाएं, आकांक्षाएं पालता है, उन्हें किस प्रकार पूरा करने के प्रयत्न करता है, समाज में

कैसे संगठित रहता हैं ? उनके आस्था, विश्वास अवसरवादिता, करूणाशीलता, यांत्रिकता, अकेलापन, मशीनीकरण, बौद्धिकता इत्यादि से मानवीय संवेदना प्रकट होती है।

मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी' में लेखिका ने अपने बचपन का चित्रण किया है। वहां की मानवीय संवेदना और शादी के पश्चात बड़े शहरों की मानवीय संवदेना मे अंतर को लेखिका ने यथार्थ शैली मे अभिव्यक्त किया हैं। लेखिका ने बताया कि समाज का एक ऐसा वर्ग हैं जहाँ पूरा मौहल्ला ही परिवार हैं। सबका सुख दुख साझा हैं। खेल, त्यौहार, मेले, शादी, परम्परा, स्थानीय पूजा पाठ इत्यादि सभी एक दूसरे के बिना अधूरे थे।

"उस समाज मे घर की दीवारे घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं, बल्कि पूरे मौहल्ले तक फैली रहती थीं। इस साल मौहल्ले के किसी भी घर मे जाने पर कोई पाबन्दी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिन्दगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालो को हमारे इस परम्परा 'पड़ौस कल्चर' से विछिन्न करे हमे कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।" – 81

लेखिका ने बालिगंज शिक्षा सदन की प्रिंसीपल पुष्पमयी बोस का जो चित्रण किया हैं वो एक ऐसे व्यक्ति का जीवन है जो पीड़ा तो सहता हैं संघर्ष तो झेलता हैं किन्तु हर स्थिति मे अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहता है। प्रिन्सीपल की यह पीड़ा केवल जीवन की पीड़ा ही नही है, वह आज की सामान्य जिंदगी के समाजीकरण की पीड़ा हैं। वह मानवीय अस्तित्व और व्यक्ति सत्ता के समाजीकरण की पीड़ा हैं। सीधे–सीधे अर्थ मे विषम परिस्थितियों मे अपने अस्तित्व को बनाये रखने की लालसा को व्यक्त करती है, जो अपनी व्यवसायिक जिंदगी से जोंक की तरह चिपकी हुई हैं। तभी तो इसकी नई प्रिंसीपल के आ जाने के बाद भी पुष्पमयी बोस उसी चैम्बर में अपनी अलग कुर्सी लगाकर बैठी रहती है। जब लेखिका मिलने जाती हैं, उस क्षण का जो चित्रण किया हैं। उससे कारूणिक मानवीय संवेदना उभर कर पाठको को भी लेखिका के भावों के साथ बहा ले जाती है।

"मुझे देखते ही वह पुलक उठी, उसी सहज भाव सेहाल चाल पूछा और मुझे लेकर बाहर निकल आई "देखो कितना एक्सटेंशन करवा लिया मैने स्कूल का" और वे मुझे स्कूल के उस हिस्से मे पहुंच कर सब कुछ दिखाने लगी......."ये देखो.....ये देखो....

इधर देखो, पर मैं उनका चेहरा देख रही थी.....क्या ये सचमुच मुझे दिखा रही हैं या कि खुद ही मुग्ध भाव से अपने बनाए को देख रही हैं। जरा सा आगे जाकर एक बरामदा सा था बिना किसी हिचक संकोच के उसके बीचों बीच जमीन पर बैठकर काले पत्थर के बने एक फूल पर हाथ फेर फेर कर वे बताने लगी "देखो कैसा बना है ये मैने खुद ड्रा करके दिया था। यह डिजायन अपने हाथ से। अच्छा बना है न ?" ये वही मिस बोस हैं? देखते ही देखते मेरे मन का सारा सम्मान पिघल कर एक ऐसी करूणा में बदलने लगा, जिसे संभाल पाना मेरे अपने लिए मुश्किल हो गया।'' – 82

इस तरह लेखिका ने छोटे शहरों, बड़े शहरों तथा बदलते परिवेश के साथ बदलती मानवीय संवदेनाओं का बहुत ही खूबसूरत चित्रण किया हैं। इन्हीं मानवीय संवेदनाओं ने लेखिका के रचना संसार मे भी योगदान दिया था तभी तो अधिकांश कहानियों के पात्र उनके आस पास के व्यक्ति ही हैं।

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा "मुक्त गगन मे" की मूल संवदेना में देश बंटवारे की त्रासदी, साहित्यिक समारोह, शनिवार समाज का गठन, लेखक की उत्तर से दक्षिण की यात्रा का वर्णन, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या का वर्णन उभरकर प्रस्तुत हुए हैं। इसी क्रम मे लेखक ने देश के बंटवारे की त्रासदी का जो चित्रण किया हैं उसमे मानवीय संवदेना के विभिन्न रूप अवतरित हुए हैं, जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"मैं इस त्रासद संघर्ष और शोषण का दृष्टा ही नहीं, भोक्ता भी रहा हूँ। घृणा, विद्वेष, बलात्कार, हत्या, स्वाधीनता के लहुलुहान प्रभात में कुछ भी तो असम्भव नहीं रह गया था। धर्म की आड़ को लेकर जब मनुष्य सत्ता से खेल खेलने लगता है तो निरा पशु बन जाता हैं। विभाजन इसी दूषित मनोवृत्ति का परिणाम था।" – 83

लेखक ने अपनी आत्मकथा में उस क्षण का भी मार्मिक एवं करूण वर्णन किया है जब स्वयं लेखक की मानवीय संवेदना भावना शून्य हो गई हैं तथा रक्त सूख गया था। जब हिन्दू मुस्लिम दंगो के दौरान महानाश के स्वामी रूद्र ने अपना तांडव नृत्य कर दिव्य और निरन्तर एक ताल बजते घुंघरूओं की कर्कश ध्वनि और अट्ठहास के गर्जन ने प्राणीमात्र की चेतना को लील दिया था–

"उस समय सुरजीत और मैं, भय और घृणा के सैलाब में बहते हुए वहां जा पहुँचे जहाँ तक खण्डहर होते मकान के एक सत्रह अठारह वर्ष की सद्यः यौवना को छोड़कर

कोई नहीं बचा था। उसके अपने, को अपने ही माँ, बाप और भाई, बहिनों की लाशों के नीचे छिपा कर बचा लिया था। कितनी अदम्या है जीने की लालसा। लाशो के ढेर से अपने को अलग करने की प्रक्रिया में उसकी दृष्टि हम पर पड़ी। एक चीख निकल गई उसके कंठ से, "न....न...नईं नहीं!" – 84

सच कहता हूँ तब भी क्षण के सहस्त्र वें भाग में मुझे ऐसा लगा कि चीख कर सुरजीत से कहूँ 'हरामजादे उस लड़की को छुआ तो खून पी जाऊंगा पर कुछ कह नहीं सका क्योंकि मेरे अन्तर में सोता हुआ चीता अंगड़ाई ले चुका था। मैं कूद कर उस बदहवास लड़की के कपड़े उतारने लगा। एक बार, बस एक बार, ये करूण स्वर मेरे कानो से टकराएं थे। इसके बाद तुम मुझे जान से तो नहीं मार डालोगे।" – 85

"उस नीम बेहोशी मे बड़बड़ाती वह जूही की कली कैसे मासूम दिखाई दे रही थी। मासूमियत खूबसूरती को और भी मादक बना देती है। उसी मादक खूबसूरती को हम दरिंदे देर तक झिंझोड़ते रहे तब तक उसका शरीर क्षत विक्षत नहीं हो गया।"– 86

धर्म के नाम पर जब बुद्धिजीवी की मानवीय संवेदना मृत हो जाये तो अज्ञानी, अनपढ़ो को क्या कहेंगे क्योंकि बुद्धिजीवी इंसान तो अपनी बुद्धि के बल पर तर्क वितर्क, विश्लेषण करने की क्षमता रखता है। वह जानता हैं कि क्या गलत हैं क्या सही यदि कोई जानते समझते हुए भी अपने आपको नहीं रोक पाता है तो इन्सानियत और इन्सान होने की सारी हदें पार कर जाना ही है शायद।

ऐसी क्रूर घटनाएं शोधार्थी के मानस पटल पर आघात करती हैं और याद दिलाती रहती हैं कि पशु से मनुष्य बने तक की विकास यात्रा मे भले ही हमने आश्चर्यजनक प्रगति कर ली हो पर हमारे भीतर का पषु नहीं मर सका क्योंकि हम भूल गये हैं मनुष्य जीवन का आधार, मात्र वैज्ञानिक प्रगति ही नहीं हैं बल्कि कुछ मानव मूल्य हैं और वह मानवीय संवदेना है जो मनुष्य की पहचान हैं।

# मूल्य बोध

हिन्दी शब्द कोश अनुसार मूल्य का अर्थ गुण, तत्त्व (जैसे चरित्र का मूल्य, मानवता का मूल्य) – 87 , हिन्दी शब्दकोश अनुसार 'बोध' का अर्थ ज्ञान, जानकारी तसल्ली, धीरज – 88

अर्थात मूल्य बोध का शाब्दिक अर्थ हुआ किसी भी गुण, तत्त्व का ज्ञान होना जानकारी होना जैसे समाज के परिपेक्ष्य में नैतिक मूल्यबोध, सामाजिक मूल्यबोध, चरित्र का मूल्य बोध, मानवता का मूल्य बोध, इंसाफ का मूल्यबोध, किसी व्यक्ति का मूल्यबोध इत्यादि।

साहित्य क्षेत्र में सामूहिक जीवन अपनी समस्त भावनाओ और चिन्तनाओं के साथ आत्मकथा में ही व्यक्त हो सकता है। आधुनिक काल में संकटाकुल आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में जीवन संघर्षपूर्ण और उलझनमय हो गया हैं। आधुनिक काल मे आज का युग राष्ट्रीय सीमाएं पार कर अंर्तराष्ट्रीय क्षेत्र में पदार्पण कर रहा हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति का बोल बाला हैं। मानव सभ्यता समाज में परिवर्तित विचारधाराओ से प्रभावित हो रही हैं। मानव धर्म के ऊपर जाति–धर्म छाता जा रहा हैं, प्रतिभा एवं व्यक्तित्व के स्थान पर धन एवं पद का सम्मान हो रहा हैं आत्मकथा ही वह माध्यम है, जो समाज की कथा और व्यथा को निर्मम सच्चाई के साथ पूर्णता से अभिव्यक्ति कर सकता हैं।

जीवन के प्रत्येक पहलुओं में मात्रात्मक ही नहीं अपितु गुणात्मक परिवर्तन भी आया है जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में बदलाव आ रहा है। भौतिक और सांस्कृतिक जगत में तनाव आया हैं परम्परागत मूल्य बिखराव की स्थिति में हैं, मान्यताएं बदल रही है, धारणायें टूट रही हैं और मानदण्डो मे टकराव है। यह वह संस्कृति काल हैं जहाँ पुराने मूल्यो का स्थान युगानुकूल नवीन मूल्य ग्रहण कर रहे है। समाज में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त हैं। जिसका परिणाम हैं– नवीन स्थापनाएं, नये आदर्श, नये मूल्य, अर्थात् नया समाज।

विष्णु प्रभाकर ने "और पंछी उड़ गया" में पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण वैज्ञानिकता एवं औद्योगिक सभ्यता के जरिये भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यो मे जो तीव्रता से परिवर्तन हो रहे हैं उनके बारे मे लिखा है–

"विज्ञान कहां से कहां पहुंच गया लेकिन क्या हमारी विचार पद्धति भी इतनी ही तीव्र गति से परिवर्तित हो रही है? शायद नही, हम अभी अपने घरोंदो मे बन्द हैं और यह देखना नही चाहते कि इन कारखानो के भीतर और इनके पास बसी हुई सुन्दर और सुविधा जनक बस्तियो में एक नई औद्योगिकी सभ्यता जन्म लेती रही है बड़ी तीव्रता से जीवन के मूल्य बदल रहे हैं, परिवार की तरह उनका भी विघटन हो रहा हैं बहुत शीघ्र ये कारखाने हमारे लिए समृद्धि का मार्ग खोल देंगे। यदि हमने अपने मस्तिष्क के प्रकोष्ठो को इसी तरह बन्द रखा तो यह समृद्धि और शक्ति बोतल के जिन्न की तरह हमारे लिए चिन्तन का कारण हो जाएगी उसी तरह जैसे– पश्चिमी संसार आज परेशान है"– 89

लेखक ने वर्तमान युग में बदलते जीवन मूल्यो के प्रति चिंता ही प्रकट नही की है बल्कि उसका हल भी पाठको को सुझाया है एवं समझाया है।

"यंत्र जगत के कील कोट हमें समृद्धि दे सकते हैं समृद्धि का सदुपयोग करने की सदबुद्धि नही दे सकते। यह तभी हो सकता हैं जब हम यंत्र को सर्वसमर्थ और साध्य न मानकर स्वयं पर अधिकार करना सीखे। मनुष्य को विवेक की सम्पदा मिली है क्या वह उसका प्रयोग नही करेगा ? – 90

'मोहन राकेश की डायरी' मे संक्रमण कालीन संस्कृति की वजह से उदित आधुनिक नवीन मूल्यो ने लेखक को आश्चर्य मे डाल दिया कि कोई भी स्त्री इस तरह एकदम बदल सकती है जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"मन मे हल्का सा खेद भर गया। वह लड़की जो कुछही दिन पहले तक इतने मुखर संकेत किया करती थी, जिसने सर्दी की रात मे एक बजे तक मुझे अपने घर मे राक रखा था, और जिसने इतनी चाह के साथ मुझसे शरीर का प्यार लिया था, मुझे अपना, फर्स्ट एक्सीपीरियंस कहा था, वह इस तरह अपरिचित सी, जैसे बिना देखे, पाए से चली गई–

यह है हमारी संक्रमण कालीन संस्कृति–पुरातन मूल्यों और नवागत मूल्यो का सह–अस्तित्व।" – 91

कमलेश्वर ने "जलती हुई नदी" मे एक आहत संसार और प्रसंग मे संस्कृति काल मे विसर्जित होते मान मूल्यो के प्रति अपने भावो को व्यक्त करते हुए लिखा हैं–

''संस्कृति काल में विसर्जित होते मान मूल्यों का यह दौर था.......और ऐसे बुद्धि जीवी ........अधिकांश कवि और लेखक इस संक्रांति का लाभ तो उठा रहे थे, पर टूटते मूल्यों के सहभागी और गवाह नहीं बनना चाहते थे, क्योंकि वे **देश** के महानगरों मे रहते हुए भी घर गांव के समाज के प्रति जवाबदेह थे। उनका सालभर का घी, गेहूँ और मौसम का सत्तू अभी गांव से ही आता था, हालांकि इनका सम्बन्ध धरती हल और धरती की उपज के उपादानों से टूट चुका था हरेक की एक बाल्य बहू गांव मे बैठी थी और वे टूटते मध्य और निम्न मध्य वर्ग के सारे दैहिक सुखों को शहरो मे भोग रहे थे....... लोकगीतों की रोमानी आंचलिकता से अधकचरी अर्धशिक्षित लड़कियों को आकर्षित कर रहे थे''– 92

कमलेश्वर एक कस्बाई मध्यवर्गीय परिवार से थे इसीलिए शहर मे आकर फिल्मी दुनिया की चकाचौंध, आधुनिक जीवन शैली ग्लैमर मे भी उन्हे अपनें संस्कारों के कारण अपने सामाजिक, माननीय, नैतिक मूल्यो का हमेशा बोध रहता हैं वह स्वयं अपनें लिए एक लक्ष्मण रेखा हमेशा खींच कर रखते हैं जो उन्हे बांधे रहती है जैसा कि लेखक ने लिखा हैं–

वह शर्त उसकी एक अनकही, अनजानी कस्बाई शर्त थी, जो एक नैतिक मूल्य के रूप मे उसके अन्दर पैबस्त थी। उस संस्कार में सम्बन्ध विहीन औरत के लिए कोई जगह नही थी.......सम्बन्ध कुछ भी हो सकते थे पर उनका पारदर्शी होना जरूरी था इसीलिए उसने शबनम की उपस्थिति को लेकर कठोर अंकुश खुद पर लगा दिया था........ .।'' – 93

आधुनिक काल तो संस्कृति संक्रमण का काल है जिसने मनुष्य पुरातन मूल्यों को छोड़कर नवीन मूल्यों की स्थापना कर रहा है लेकिन जो हमारे पूर्वजो थे उनमें हमारी संस्कृति के मूल्य प्ररी तरह समाहित थे और उनका पालन करना धर्म था वह कितनी भी परेषानी देखते लेकिन अपने मूल्यों को नहीं छोड़ना चाहते थे बल्कि परिस्थितियों से अवहेलना की स्थिति तक तटस्थ हो जाते थे जैसा कि विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा 'पंखहीन' मे अपने पिता के जीवन मूल्यों का वर्णन करते हुए लिखा है–

''और सचमुच उन्होने हिन्दी पढ़ी वहीं नहीं रूके, निरन्तर अध्ययन करते रहे पुराने ग्रन्थो का, लेकिन यह बात मैं बहुत बाद मे अनुभव पाया कि इय अध्ययन और पूजा–पाठ

ने उन्हे जहाँ कुछ मूल्य दिये, वहां उनके अंतर के सहज स्नेह स्त्रोत को सोख लिया। वे अवहेलना की सीमा तक तटस्थ हो गये।" – 94

"वास्तव मे पूजा–पाठ करते–करते और पढ़ते–पढ़ते कुछ पुराने मूल्य उनके भीतर सांप की तरह कुण्डली मारकर बैठ गये थे। इसीलिए जहाँ तक ओर वे उनकी शक्ति बने, दूसरी और उन्होने उन्हे संवेदनहीन बना दिया। माँ बताया करती थी कि एक बार मेरा छोटा भाई मरणासन्न हो गया उन्होंने उसको जमीन पर लिखने के लिए आस–पास पड़ी चीजों को हटाया और दुकान पर चले उन्होंने जैसे मान लिया था कि मरना जीना तो प्रभु के हाथ में हैं । फिर हम क्यों चिंता करे।" – 95

भारतीय संस्कृति में जितना मूल्य पैसे का है उससे कई गुना मूल्य रिष्ते और रीति–रिवाज का रहा है। भारतीय संस्कारों मे पले व्यक्ति को अपनी मजबूरी मे भी अपनें रिश्तों की गरिमा एवं सम्मान का मूल्य बोध रहता हैं और हर परिस्थिति मे भी वह उन्हे निभाना अपना धर्म समझता है। कमलेश्वर की आत्मकथा "जो मैने जिया" मे लेखक ने अपनें मित्र परदुमन की नाजुक आर्थिक स्थितिहोतेहुए भी रिष्तो के मूल्य बोध को इस तरह प्रस्तुत किया है–

"उसकी एक बहन दिल्ली में ब्याही थी। उसे वह बहुत प्यार करता था– लेकिन राखी वाले दिन वह घर से नदारद हो जाता था, क्योंकि बहन को देने के लिए उसके पास दस रूपये भी नहीं होते थे, उसकी बहन "राखी और मिठाई का डिब्बा छोड़ चली जाती थी। दूसरे दिन परदुमन राखी बांध लेता था और मिठाई बांटते–बांटते उदास हो आता था। – 96

इंसान कुछ भी होने से पहले एक मानव है और मानव होनें के नाते उसको अपने मानवीय मूल्यो का भी बोधहोना आवष्यकहैं लेकिन बोध होने के साथ ही जाग्रत होना भी आवश्यक हैं। कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा जलती हुई नदी जिन्दगियों के सन्नाटे और एक प्रसंग रेणु का पाठ में जब खतवाली ने लेखक से पनाह मांगी कि मुझे इस दोजख की आग से बचालो मैं इस नरक मे नहीं जाना चाहती हूँ तो लेखक का उस स्त्री से कोई सम्बन्ध नहीं होने बावजूद मानवीय मूल्यों के बोध होने के फलस्वरूप ही वह उस की मदद करने को तत्पर हो जाता है, जैसा कि लेखक ने लिखा है–

''बहुत दिनों तक वह इस दारून कथा से द्रवित रहा। उसके मानवीय मूल्य उसे सारी वर्जनाओं से ऊपर उठाते रहे......... वे बार–बार उसे यही तर्क देते रहे कि खतवाली को इस भयानक संत्रास से निकाल कर शायद वह किसी सरहद तक पहुंचाकर मानवीय पवित्रता का एक रास्ता खोल सकता हैं..... और दैहिक और लौकिक पाप के कुण्ड की चकराती भंवर में डूबती और टूटती इस कश्ती को शायद बाहर निकाल सकता हैं। – 97

**निष्कर्ष–** समस्त आत्मकथाओं में मूल्य बोध को लेकर जो भी भाव प्रकट हुए है, उनकी समीक्षा करने पर यह निष्कर्ष निकलता हैं कि अतिसर्वत्र वर्जित है अर्थात् मनुष्य न तो पुरातन मूल्यो के प्रति इतना चिपका रहना चाहिये कि रूढ हो जाये और व्यक्ति को संवेदन हीन ही बना दे और ना ही नवीन मूल्यों के प्रति इतने आधुनिक हो जाये कि अपने मानव होने की मर्यादा ही खो दे बल्कि मनुष्य को समत्व भावी होना चाहिये तथा वक्त परिस्थिति के अनुसार बुद्धि और तर्क की कसौटी पर कसकर निर्णय करना चाहियें कि इस वक्त क्या सहीहैं और क्या गलत है– यही मूल्य बोध है।

## सांस्कृतिक

भारतीय संस्कृति विश्व पटल पर एक प्रमुख अस्तित्व रखती है। भारतीय संस्कृति समस्त विश्व के अस्तित्व का केन्द्र भी है। यह समाज में एक अनुपम स्थान रखती है। आचार, विचार, लोक व्यवहार, जीवन–मूल्य, रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा, उत्सव, विवाह विषय का रीतिया आदि बातें भारतीय संस्कृति की पहचान हैं।

नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार संस्कृति "किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रूचि, आचार विचार, कला कौशल और सभ्यता के क्षेत्र मे बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं।" – 98

अर्थात हमारे यहाँ उन सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित किया जो मानव विकास और हित मे सहायक हों। कालान्तर में ये सांस्कृतिक मूल्य दृढ़ हो गये और इनका रूपान्तर रूढ़ियों एवं परम्पराओं की दीवारों मे हो गया। अतः वही सांस्कृतिक मूल्य मानव विकास मे सहायक होने की अपेक्षा बाधक प्रतीत हो गये।

आधुनिक काल मे सांस्कृतिक दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन परिलक्षित होता हैं। इस काल में आधुनिक शिक्षा और विज्ञान के प्रसार से जनजागृतिवाद का चरमोत्कर्ष हुआ। पाश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क तथा अग्रेंजों के भारत आगमन से भारतीय समाज में पाश्चात्य संस्कृति का खूब प्रभाव पड़ा। आजादी के पश्चात सांस्कृतिक पक्ष ने बड़ी तेजी से करवटें बदली। परम्परा तथा आधुनिकता का द्वन्द्व इसी काल की देन है।

भारतीय समाज मे विवाह की अनेक रीतियां प्रचलित हैं लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण में विवाह संस्कार का रूप ही बदल दिया है। प्रभा खेतान की आत्मकथा में मूल संवेदना के रूप में यही बात उभर कर सामने आई है कि लेखिका ने भारतीय समाज में प्रचलित रीति अनुसार विवाह नहीं करके जो कुछ किया, उसे गंधर्व विवाह ही कह सकते है, जिसका खामियाजा उन्होंने जीवन भर निजी सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक प्रत्येक स्तर पर उठाया क्योंकि तत्कालीन समाज में वह मान्यता प्राप्त नहीं था। फलतः उस का परिणाम घुटन और त्रासदायक जिन्दगी। जिसका फल पुरूष और नारी दोनों को भुगतना पड़ा हैं जैसा कि प्रभा और डॉ0 साहब की बातों से जाहिर होता हैं।

"छिछली भावुकता मे कुछ नहीं रखा। पांच सात बार का मिलना कुछ चुम्बन और आलिंगन इसे प्यार तो नहीं कहा जाएंगा। इसके लिए ताउम्र तुम कुंवारी तो नहीं बैठी रहोगी।" – 99

"ठीक हैं तुम सुनना चाहती हो ना तो सुन लो–मेरे लिए इस सम्बन्ध का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि मेरे लिए औरत बस एक देह हैं मन लगाने की चीज हैं और कुछ सुनना चाहती हो ?" – 100

"मेरा हाथ उठ चुका था उनके गालो पर मेरा तमाचा था" आप....आप इतने नीच नहीं हो सकते" – 101

"हाँ मैं नीच हूँ, दोगला हूँ, लंगोटी का कच्चा हूँ जिन्दगी में मेरे जैसे बहुत सफेद पोश तुम्हे मिलेंगे जरा उनसे संभल कर रहना।" – 102

अनमेल विवाह में कहीं अवस्था का अंतर होता हैं कहीं विचारो का अवस्था का अंतर अधिक होने पर भी जहाँ जीवन सुखी हो सकता हैं वहीं विचारों में पार्थक्य होने की परिणति सदा ही दुखद होती हैं लेखिका मन्नू भंडारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी'

में भी संवेदना के स्वर के रूप में जो स्पष्ट सुनाई दे रहा हैं वह यही है कि लेखिका ने पिता की मर्जी के खिलाफ और अपनी मर्जी से प्रेम विवाह किया लेकिन सुखी नहीं रह पाईं। पति पत्नी में विचारों का पार्थक्य हमेशा दुखदायी रहा जब कि दोनों हम पेशा थे बुद्धिजीवी थे, लेखक थे, लेकिन फिर भी विचारों का पार्थक्य जीवन में भी पार्थक्य ले आया और अधिकांश समय अकेले संघर्ष करते हुए ही बिता था जैसा कि लेखिका ने लिखा है–

"अप्रैल में हमने साथ–साथ अपनी गृहस्थी में कदम रखा। बहुत सपने देखे थे इस जिन्दगी को लेकर बहुत उमंग भी थी लेकिन जल्द ही राजेन्द्र की 'लेखकीय अनिवार्यताओं' और इस जीवन से मेरी अपेक्षाओं का टकराव शुरू हो गया जो फिर कभी समय पर आया ही नहीं। सब लोग सोचते थे और मुझे भी लगता था कि एक ही रूचि.... .एक ही पेशा कितना सुगम रहेगा जीवन। मुझे अपने लिखने के लिए तो जैसे राजमार्ग मिल जाएगा लेकिन एक ही पेशे के दो लोगो का साथ जहाँ कई सुविधाएं जुटाता है वही दिक्कतों का अम्बार भी लगा देता है......कम से कम मेरा यही अनुभव रहा। – 103

लेखिका आधुनिक विचारों की स्त्री होने के बावजूद भारतीय संस्कारों में पले होने के कारण एक भारतीय स्त्री की तरह अपनी ग्रहस्थी चलाना तथा देखना चाहती थी लेकिन लेखिका के पति ने समानान्तर जिन्दगी का आधुनिकतम पैटर्न थमाते हुए कहा कि 'देखो छत जरूर हमारी होगी लेकिन जिंदगियां अपनी अपनी होगी बिना एक दूसरे की जिंदगी में हस्तक्षेप किए बिल्कुल स्वतंत्र मुक्त और अलग तो मैं तो बिल्कुल अवाक! आधुनिकतम जीवन के इस पैटर्न से मेरा कोई परिचय नहीं था" – 104

आज दाम्पत्य जीवन मे आ रही दरार संस्कृति की रक्षा पर कीचड़ उछाल रही हैं। अब पति यदि पत्नि की अपेक्षा करेगा तो आधुनिक, पढी लिखी, नारी भी अपने सम्मान, स्वाभिमान की रक्षा के लिए घर से बाहर निकल कर अपने अस्तित्व के लिए प्रयास करेंगी।

भारतीय समाज में प्रचलित तीज, त्यौहार मेले, लोक गीत, आस्था, विश्वास, लोक देवता, लोक धर्म, खान पान, सामाजिक संस्थाएं भारतीय संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान है। हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' में आत्मकथा के प्रारम्भ में ही लेखक द्वारा अपने जन्म स्थान मीरापुर के वर्णन में वहां की सांस्कृतिक विरासत का बहुत ही सुन्दर अंकन किया है, जिसमे वहां की बसावट, साधन, जातियां,

कला, शिक्षा, नाटक, खान–पान, शाकुम्भरी माता का मेला, बाबरे वाली माता का मेला, गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, रामनवमी, ईद, मुहर्रम, त्यौहार, मन्दिर का इतिहास इत्यादि को जीवंत रूप मे उभारा है–

"शीतला माता वैष्णव देवी का ही एक रूप हैं। इसकी पूजा के अवसर पर यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है जो पांच दिन तक चलता है। बचपन में माँ के साथ कई बार वहां गया हूँ। वे दृश्य अभी भी मेरी आँखों मे सजीव हो उठते हैं। किमती वस्त्रों और नाना रूप गहनों से सजी धजी नारियां, हाथों में पूजा के थाल लिए गाते गाते आगे बढ़ती हुई माताओं की प्रतिमाओं के आगे गीत गाती और दीप जलाती थीं। हम बच्चे लोग बाजार में जाकर उस समय के कागज के बने खिलौने खरीदते, मिठाई खाते हुए घूमते रहते थे। प्रसाद तो मिलता ही था कभी काठ के घोड़े पर चढकर चारों और घूमते कभी उपर नीचे होते वृत्ताकर गोल चक्र मे या हिंडोलो मे बैठकर चक्कर काटते।" – 105

उपयुर्क्त अध्ययन, अनुशीलन करने पर प्रतीत होता है कि आधुनिक काल मे सांस्कृतिक दृष्टिकोण में आचार विचार होता है। पूर्व में व्यक्तियों को अपनी संस्कृति से लगाव था लेकिन शिक्षा, विज्ञान, पाश्चात्यकरण ने भारतीय संस्कृति मूल्यों के प्रति समाज की आस्था विश्वास को डगमगाया है। आज संस्कृति अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है उसके स्थान पर संकुचित संस्कृति का उदय हो रहा है। जो संस्कृति परम्परा, रीतियों पर निर्भर थी आज उसका स्थान बौद्धिकता ने ले लिया है।

## नैतिक

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार नैतिक का शाब्दिक अर्थ–

1. नीति सम्बंधी (जैसे नैतिक विचार)
2. नीति के अनुरूप होने वाला (जैसे नैतिक उत्तर दायित्व)
3. नीति युक्त आचरण (जैसे नैतिक आचरण)
4. नैतिकता– नीतिशास्त्र का ज्ञान एवं उसके अनुरूप किया जाने वाला आचरण – 106

नव जागरण के साथ ही देश में नैतिकता व मूल्यों पर संकट उपस्थित हुआ। पुराने मूल्य तेजी से टूटने लगे और नैतिक आदर्श अब व्यक्ति में नियम नहीं रह पाये। प्राचीन काल की नारी से आधुनिक नारी भिन्न है जहाँ पहले नारी अपने सतीत्व की रक्षा के लिए मृत्यु तक का वरण कर लेती थी वहीं आज की नारी की नवीन विचार धारा उसे समाज से संघर्ष करते हुए जीवित रहने को प्रेरित करती है।

आधुनिकता के अभ्युदय से पूर्व भारतीय समाज में मनुष्य का व्यक्ति रूप में कोई अस्तित्व नहीं था लेकिन वर्तमान में मानव में यह चेतना परिलक्षित होती है कि समाज यदि व्यक्ति के उद्देश्य की पूर्ति में अक्षम रहता हैं तो अब व्यक्ति में समाज व्यवस्था का उलंघन करने का साहस हैं व्यक्तिवाद की भावना के मूल में अहंभाव प्रमुख है यह अहंभाव पाश्चात्य चिंतन के प्रभाव से नवीन संदर्भो मे प्रयुक्त हुआ है। भारतीय समाज में व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना, धार्मिक रूढियों के विश्रृंखलित होने, सजातीय विवाहो की उपेक्षा, इत्यादि विचारो ने सामाजिक धरातल पर नैतिक मूल्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। प्रेम, स्नेह, वरूणा–वात्सल्य सेवा इत्यादि भावनात्मक मूल्यों में कोरी कृत्रिमता रह गई हैं। श्लील–अश्लील, पाप–पुण्य की भावनाएं धर्म से निर्धारित न होकर तार्किक आधार पाने को आतुर हैं। काम भावना को शरीर की सहज स्वाभाविक भूख मानते हुए इसे नीति–अनीति, धर्म–अधर्म से जोड़ा जाना व्यर्थ माना जाने लगा है। वैवाहिक जीवन में सेक्स और संतति में पूर्णतया पार्थक्य, पातिव्रत, प्रेम, मे एक निष्ठता के स्थान पर स्वेच्छाचार ने प्रेम और यौन सम्बंधों पर बड़े–बड़े प्रश्न चिन्ह लगा दिये हैं।

आधुनिक विचारधारा की प्रणेता प्रभा खेतान की आत्मकथा की मूल संवेदना में यही स्वर उभर कर आया हैं कि उन्होंने पुरातन, मूल्यों, नैतिकता को तोड़कर अपनें अनुसार अपने जीवन को नवीन दिशा दी जो समाज की बंधी परिपाटियों में सम्भव नहीं था उनकी आत्मकथा में जो दर्शाया है वह हैं नैतिक वर्जनाओं को तोड़ने का अपना सुख है।

40 साल के विवाहित पांच बच्चो के पिता से सेक्स सम्बंध को श्लील–अश्लील, धर्म–अधर्म के चौखते मे बांधने के बजाय तार्किक आधार पर उचित ठहराने की कोशिश की है। यह काम भावना शरीर की सहज स्वाभाविक भूख ही तो थी जिसे शांत करने में वह उसी धारा के साथ ही इस समाज का नैतिक मूल्य, मान्यताओं वर्जनाओं को भी बहा

कर ले गई थी और नवीन विचारधारा की स्थापना करते हुए अपने इस व्यवहार को सही साबित करने की कोशिश की।

"अब और किससे कहूँ ? शुभा, नीना, शर्वरी और शांता मगर मेरी सभी सहेलियों की एक ही प्रतिक्रिया थी।"

तुझे कोई और जुटा नही, 22 वर्ष की हैं और चालीस वर्ष के पुरूष, वह भी पांच बच्चो के पिता के पीछे पागल हुई जा रही है ?

"प्यार मे कोई शर्त नही हुआ करती। "

बड़े शहीदना लहजे मे मेरा प्रत्युत्तर था।

" मूर्ख हो ऐसे कोई अपने को आग मे झोंकता है ?"

"पागल हुई है, तेरे भाई लोग सुनेंगे तो मार दी जाएगी।"

"मगर क्यों ? मैने क्या अपराध किया है ?"

" विवाहेतर सम्बन्ध को पाप कहा जाता है और तू अपना अपराध पूछती है।"

"कैसी सोच हैं इन लोगो की जो मेरे मासूम पवित्र प्यार को पाप कह रही थी और डाक्टर साहब को अपराधी। माना कि हम लोगो में उम्र का फासला है कि वे विवाहित हैं पर इसमे उनकी क्या गलती ? यह शादी तो उनकी मर्जी से हुई नही।" –107

इस तरह नैतिक वर्जनाओं को तोड़कर भी सम्पूर्ण जीवन अंगारों पर चलकर समाज से संघर्ष करते हुए अपने अस्तित्व की पहचान बनाई।

कमलेश्वर की आत्मकथा 'जलती हुई नदी में' विभिन्न स्थलों पर नैतिकता के दर्शन होते हैं। वर्तमान विचारधारा के बदलते परिप्रेक्ष्य में नैतिकता के बदलते परिदृश्य के माध्यम से समाज की तस्वीर प्रस्तुत की है। क्योंकि लेखक ग्लैमर की दुनिया से सम्बंध रखते थे जहाँ के नैतिक मूल्य, मान्यताएं, धारणाएं, विश्वास सभी विचित्र होते हैं। जो भारतीय संस्कृति मे पले व्यक्ति के लिए निश्चित रूप से नवीन दुनिया होती हैं जहाँ नैतिकता का कोई महत्त्व नहीं हैं सिर्फ पैसा ही पैसा होता हैं और जब पैसा आता हैं तो समृद्धि के साथ–साथ अनेक बुराइयाँ भी लेकर आता है। जैसा कि लेखक ने लिखा है–

"पैसा पानी की तरह आता था–मना करने के बावजूद आता था.........एक बेहूदी अहमन्यता देता था एक गरीब मूल्य मे मनुष्य के स्पर्धात्मक आभिजात्य को बढ़ा देता था... ........ कुलीन वंशों की अकुलीन राहों पर पहुंचा देता था, जिसमें रास्ते नही थे सिर्फ रास्तें–राहत थे– औरत के।

अजीब थी यह दुनिया .......... रंगीन, संगीन और पाप की भावना से विलीन। यहां आकर पाप की परिभाषा बदल जाती है औसत नैतिक वर्जनाओं की धज्जियां उड़ जाती हैं और बहते पानी में जैसे हर व्यक्ति नंगा हो जाता है....... कुछ वैसे ही वह ऊपर से नहाता धोता रहता हैं पर नीचे से नंगा ही रहता हैं" – 108

निरन्तर पतनोन्मुख मानवीय नैतिकता। नारी देह का सौदा आज इतना सस्ता हो गया हैं जिसे देखकर आश्चर्य और घृणा होती है।  इस पतन पर कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा 'जलती हुई नदी' में एक पाठ "औरतो का माफिया" के नाम से लिखा हैं जिससे फिल्मी दुनिया का कड़वा सच लिखा हैं नैतिक वर्जनाओं का मजाक बनाती औरतो की कहानी थी जैसा कि लेखक ने लिखा–

"कमलेश्वर साहब.......... अब क्या बताऊं....... इसने मुझे और मेर घर को बरबाद कर दिया ...... मेरी छोटी बेटी मनसा एक रेग्युलर कॉल गर्ल है ओर दूसरी बेटी वही आपकी खतवाली–वह एक दलाल के साथ बीवी बनकर रहती है.......... वह दलाल फिल्मी दुनिया में हाथ पैर मार रहा हैं और साथ ही वह लड़कियाँ सप्लाई करने का धंधा करता है। – 109

वस्तुतः आधुनिक जीवन की जटिलता ने पति–पत्नी संबंधो पर तीव्र प्रहार किया है। संस्कृति कालीन सामाजिक स्थितियाँ, असमान जीवन मूल्यों तथा अर्थाभावों ने वैवाहिक जीवन की एकतानता को खडिण्त किया हैं। "मोहन राकेश की डायरी मे" मोहन के मित्र प्रेमी जी और उनकी पत्नी का वार्तालाप यही स्पष्ट कर रहा है–

" भाभी फिर बोली कि उनके सामने उनके घर मे सहेलियाँ आए, यह वह क्यों कर सकती हैं । प्रेम जी ने यहाँ भी शास्त्रीय निर्णय दिया की हर पुरूष को सहेली की आवश्यकता होती है पत्नी पास न हो तो आदमी बगैर सहेली के नहीं रह सकता। भाभी गरज पड़ी और पुरूष न हो तो ? हम भी सहेला रखा करें ?  हम तो नही रखती हमारे लिए तो तुम्ही एक पुरूष हो बाकी सब नारी हैं पुरूष भी नारी हैं हम पतिव्रता हैं।"– 110

छोटे शहरो और कस्बाई संस्कारों वाली स्त्रियां अपनी मर्यादा नैतिकता को एका एक नहीं छोड़ सकती हैं उनके रक्त में बचपन से पड़े संस्कारों की छाप उन्हें ये सब करने से रोकती हैं।

**निष्कर्ष** – अंततः उपर्युक्त अध्ययन मनन विश्लेषण का यही निष्कर्ष निकलता है कि अस्तित्व में प्रति जागरूकता, सामातिक अराजकता, नैतिक उच्छृंखलता खोखलापन, अनास्था, निराशा एवं कुण्ठाजनित नवीन विचारधारा का चित्रण है। समस्त प्राचीन सामाजिक संस्थाओं की सडी–गली रूढ़ियों से टक्कर लेने से उद्यत लेखकों ने स्वच्छंदता का उपभोग केवल पुरूष तक सीमित न रखकर नारी को भी परम्परागत श्रृंखलाओं की संकीर्णता से मुक्ति दिलाने का प्रचार किया।

प्रत्येक समाज मे नैतिक मूल्यो की विशिष्ट परंपरा रहती है। उच्चता, श्लील, अश्लील के अपने मानदण्ड होते हैं। समाज की उच्छृंखलता पर नैतिक मूल्यों का नियंत्रण रहता हैं वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज ने परंपरागत नैतिक मान्यताओं को अस्वीकार करने की प्रक्रिया अपनाई है। आज का युवा वर्ग जैसे प्राचीन नैतिकता के जुए से मुक्त होने की शपथ ही ले चुका है। परंपरागत नैतिक मूल्यों के भंजन में परिस्थितियों ने गंभीर भूमिका प्रस्तुत की है।

## आध्यात्मिक

डॉ. हरदेव बाहरी द्वारा सम्पादित हिन्दी कोश के अनुसार आध्यात्मिक का शाब्दिक अर्थ परमात्मा और आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला, आध्यात्मिक का अर्थ अध्यात्म की भावना – 111

भारतीय समाज प्रारम्भ से ही आध्यात्मिकता से प्रेरित रहा है, भारतीय संस्कृति के मूल में वेद, पुराण उननिषद् इत्यादि का ताना बाना हैं। जिससे अतीत ही नहीं वर्तमान की अछूता नहीं हैं। वर्तमान में युवा पीढ़ी आधुनिकता का ढोल पीट रही है। लेकिन मन के किसी कोने में भारतीय संस्कृति, धर्म, आध्यात्मिकता का दीपक अपनी चिरंजीवी ज्योत जलाकर बैठा है।

भारतीय समाज धर्म प्रेरित रहा है। क्योंकि धर्म व्यक्ति को मर्यादित करता है। आहार निद्रा, भय और मैथुन मनुष्य और पशु में समान है। किन्तु धर्म के पालन से मनुष्य पशु से उच्चतर प्राणी होता है। धार्मिकता उत्कृष्ट मूल्यों का संचय है। व्यावहारिक हिन्दी कोश में लिखा हैं।

''धर्म नैतिक कर्तव्यों की और नियमों की वह पद्धति है जिसके पालन से व्यक्ति लोक–परलोक दोनों में यश और पुण्य का लाभ करता है। – 112

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा ''पंखहीन'' में लेखक एक आध्यात्मिक परिवार से सम्बन्ध रखने वाले एवं आध्यात्मिक हैं। अपने भावों का प्रकट करने के लिए लेखक ने अपने पिता का जो व्यक्तित्व उभारा है वह आध्यात्मिकता से ओत प्रोत है जिसके परिणाम स्वरूप उन्हे 'भगत जी' के नाम से पुकारा जाता था–

''मेरे पिता मेरी याद में 'भगत जी' के नाम से जाने जाते थे। पिछला जन्म यदि होता हो तो वे निश्चय बैरागी रहे होंगे। उनकी पूजा पाठ का कोई अन्त नहीं था सवेरे तीन बजे से दस बजे तक पूजा करते उसके बाद दुकान खोलते चार बजे बंद कर देते और रात के दस बजे तक मन्दिर में पूजा–पाठ करते। दुकान पर काम न रहता तो भागवत या सुखसागर पढ़ते आदि पढ़ते रहते। ज्योतिष का भी अच्छा अध्ययन किया था। जन्म पत्री बनाने वाले पण्डितों से भी बहस करते देखा हैं मैने उनको।'' – 113

लेखक के पिता को पूजा का इतना व्यसन था कि वे अपने व्यापार से भी ज्यादा महत्त्व अपने पूजा पाठ को देते थे जैसा कि लेखक के दादा कहते थे।

''तेरे बाप को भगताई से फुरसत मिले तब तो कमाई की और ध्यान दे।''–114

इस तरह ''पंखहीन'' में लेखक के पिता के माध्यम से आत्मकथा में आध्यात्मिकता के स्वर मुखरित हुए हैं।

मोहन राकेश की डायरी में आध्यात्मिकता का पक्ष ज्ञानानन्द बंगाली महात्मा के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है जिसमें बंगाली महात्मा उन्हे पढ़ाने आया करते थे और लेखक तथा उनके साथ पढ़ने वालो से आध्यात्मिक संवाद, अनुवाद लिखवाया करते थे जैसा कि लिखा हैं।

'' इस बार वे पहले से अधिक आध्यात्मिक होकर लौटे थे या हमें वे पहले से अधिक अधिकारी समझने लगे थे। वे अनुवाद में हमें रोज 'बाबाजी और फकीर साहब' के उच्चकोटि के आध्यात्मिक संवाद लिखाया करते थे जिनमे बाबाजी जिज्ञासा करते थे और फकीर साहब उत्तर देते थे। अधिकांश प्रश्न हमारी समझ में आते थे न उत्तर।'' – 115

आध्यात्मिकता का स्वर जिस किसी भी इंसान को उच्च कोटि का चढ़ जाता है तो फिर उत्तर नही पाता है। तथा उसके विशेष परिणाम अवतरित होते हैं, जैसा कि बंगाली महात्मा के साथ हुआ था लेखक के अनुसार–

''ज्ञानानन्द उनका केवल अपने का दिया हुआ नाम था। उनका असली नाम क्या था ? वे बी. ए. बी. एल. करने के बाद घर से साधु का बाना पहनकर क्यों निकल पड़े थे ? फिर कौनसी हताशा उन्हे अनशन करने प्राण देने के लिए गरूण चोटी की तरफ ले गई ? समय के पन्नों पर वह व्यक्ति कहीं भी तो नहीं है।'' – 116

लेखक और वीणा के सम्बन्धों ताने–बाने में भी आध्यात्मिक तत्त्व प्रकट हुए हैं। लेखक तथा वीणा में शारीरिक सम्बन्धों के क्रम में वीणा कहती हैं तुम्हें जो चाहिये था संभवता तुम्हें मिल गया, पर मैं जो चाहती थी वह अभी मुझे नही मिला वीणा का कहना हैं कि क्या विश्व में कहीं भी शारीरिकता विरहित कुछ नही है ?

वीणा प्रेम को आध्यात्मिकता के स्तर पर पहुँचाना चाहती हैं जहाँ शारीरिक मिलन नहीं होकर आत्मा परमात्मा के स्तर पर आध्यात्मिक मिलन हैं और अपनी इसी अद्‌भुत, आध्यात्मिक आकांक्षा को प्रकट करते हुए राकेश को पत्र लिखती है।

तुम्हें जो चाहियें था संभवतः तुम्हे मिल गया पर मैं जो चाहती थी वह अभी मुझे नहीं मिला। मैं उजली धूप में भीगी घाटियों में घूमना चाहती थी मैं आसमान के स्वरों से पुलकायमान होना चाहती थी, मैं हिमालय के उच्च शिखर के गुहा स्थित मंदिर की गहन घंटा ध्वनि को अंतर में भर लेना चाहती थी। वह नहीं हो सका उसका सुयोग नहीं मिला।

कुछ हल्की सी निराशा, कुछ उन्मुखता है क्या विश्व में कहीं भी शारीरिकता विरहित कुछ नहीं ? फिर मेरे अन्तर में क्यों ऐसी अनुभूति होती है ? क्या अपनी कल्पना के दिव्य भाव की पूर्ति के लिए पत्थर के देवता के आगे ही सिर रगड़ना होगा ? पर उस पत्थर के देवता में पुलक कंहा होगा ? वह पुलक क्या भक्त के अंतर का ही होता हैं।

इन दिनों गीता पढ़ रही हूँ। कभी शांति, कभी उद्वेग, कभी करूणा उमड़ती हैं। पर ये जल कण बड़े शीतल हैं। इनमें कोई क्षोभ, कोई उपालम्भ, कोई पश्चात्ताप नही।" – 117

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'और पंछी उड़ गया' लेखक द्वारा शरत जीवनी सृजन पर आधारित है। जिसके अंतर्गत शरत के जीवन सम्बंधी तथ्य एकत्रित एवं विश्लेषित करते हुए लेखक ने शरत के धर्म के प्रति प्रेम के भावों को इन शब्दों में लिखा है–

"उनके अन्तर में धर्म के प्रति प्रेम जाग रहा था। उनकी बहन के परिवार के लोगों ने मुझे बताया कि श्री देशबंधु दास ने उन्हें राधा कृष्ण की एक मूर्ति दी थी। वह उसकी पूजा किया करते थे। अंतिम बार जब वह अपना इलाज कराने के लिए गांव से कोलकाता रवाना हुए थे तब भी उन्होंने उस मूर्ति के सामने पूजा अर्चना की थी और जैसा कि श्री उमा प्रसाद मुखर्जी ने मुझसे कहा" वह गले में माला पहनते थे और पूजा भी करते थे, जनेऊ पहने हुए उनका एक चित्र भी मिलता है। वस्तुतः धर्म के सम्बंध में उनकी कोई निश्चित धारणा नहीं थी । – 118

आधुनिक लेखिका प्रभा खेतान ने 'अन्या से अनन्या' में धर्म के प्रति रूढ़िवादी विचारों को नकारते हुए अपनें कर्म और आचरण आधारित धर्म की स्थापना पर बल देते हुए धर्म को आधुनिक विचारधारा दी है एवं धर्म के प्रति अपनें भावों को इन शब्दों में प्रकट किया है–

"अरे मैं धर्म के खिलाफ नहीं। अपना–अपना धर्म तो निभाना चाहिए और मेरा मैनेजर निखिल, वह तो हर शनिवार को काली मंदिर जाता है। कैशियर जितेन्द्र अपनी बड़ी–बड़ी आंखे नचाकर गहरी सांस छोड़ते हुए कहता–"निखिल दा ! हम जब तक अपना आचरण नहीं बदलेंगे, चरित्र नहीं सुधारेंगे हमें नरक में जाने से न अल्लाह बचा सकता है और नही माँ काली तुम्हारी बात सुनेगी। लोग कम्पनी का पैसा चुरायेंगे और माँ काली के दरबार में जाकर बकरा काटेंगे ,भला यह कोई धर्म निभाना हुआ ? यह चल नहीं सकता।" – 119

**निष्कर्ष –** उपर्युक्त अध्ययन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में परवरिश पाने वाला व्यक्ति अध्यात्मिक भावना से आप्लावित होता है। धर्म अध्यात्म

उसके रक्त में जन्म से ही विद्यमान रहते हैं फिर चाहे बड़े होकर धर्म के प्रति उसका अपना दृष्टिकोण विकसित हो जायें लेकिन अध्यात्म से इतर नहीं हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति के अध्यात्म के प्रति अपनें–अपनें दृष्टिकोण विचारधारा होती हैं। जो विभिन्न रूपों में प्रकट हुई हैं, मन की भावनाएं, पूजा, पाठ, आचरण, मूर्तिपूजा, कर्म, वैराग्य, धार्मिक पुस्तकें पढ़ना, धार्मिक संस्कारों का निर्वाह करते हुए गृहस्थ जीवन निभाना धर्म ही वैराग्य अध्यात्म हैं।

## जीवन दर्शन

डॉ हरदेव बाहरी द्वारा संपादित हिन्दी शब्द कोश के अनुसार 'जीवन दर्शन' का शाब्दिक अर्थ जीवन सम्बन्धी विचार होता है। – 120

मनुष्य एक बुद्धि सम्पन्न प्राणी है। पढ़ लिख कर उसकी बुद्धि तीव्र होती है इसके अतिरिक्त वह जैसे वातावरण में रहता है उसका भी उस पर प्रभाव पड़ता है उसकी सोचने की दिशा भी प्रभावित होती है समझ आने पर व्यक्ति स्वयं जीवन के बारे में सोचने लगता है। जीवन वैसा होना चाहिए, उसका यह सोच ही उसका जीवन दर्शन कहा जा सकता हैं। जिनके भीतर जीवन सम्बन्धी अपनी मान्यताएं स्पष्ट होती हैं वे उन मान्यताओं को प्रति अधिक दृढ़ होते हैं जीवन के विविध सत्यों, जीवन दशाओं के प्रति लेखक की दृष्टि ही उसके विशिष्ट व्यक्तित्व को आकार प्रदान करती है।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन का जीवन के सम्बन्ध में जो विचार दृष्टिगत होता है। उसके अनुसार बच्चन जी अपनी कर्मठता के बल पर महान् बने। उनका जीवन संघर्षो और गरीबी में बीता। इस विवशता में उन्हें कर्मठ रहना पड़ा। वैसे कोई दूसरा व्यक्ति निराश हो जाता तो आत्महत्या भी कर लेता किन्तु बच्चन जी हर चुनौती का सामना करने मे विश्वास करते थे उन्हे अकर्मण्य लोग पसन्द नहीं थे।

बच्चन जी का दृष्टिकोण व्यावहारिक एवं मौलिक होने के साथ ही उदारवादी भी था। उनमें मानवता की भावना थी। आधुनिकीकरण, रूढ़ियों के विरोधी थे। बच्चन जी जीवन में विश्वास को मानते हैं वे आत्मनिर्भर होने की विशेषता को महत्व देते हैं वे यह नहीं मानते कि जीवन सिद्धांतो की जड़ता में चलता हैं, सिद्धांत जीवन की अनुभूतियों पर चलाये जाते हैं जो प्रकृति अपनें साथी को धोखा नही देती जीवन के प्रति उनका

दृष्टिकोण व्यावहारिक है सकारात्मक है उदार है उसमे मौलिकता है बच्चन जी के जीवन दर्शन सम्बन्धी दृष्टिकोण को उन्होंने 'नीड़ का निर्माण फिर' में इन शब्दों में स्पष्ट किया हैं।–

"एक बात मैं बड़ी दृढ़ता से कह देना चाहता हूँ कि दर्शन के रूप में मैंने कुछ भी स्वीकार नहीं किया है– न पश्चिमी , न पूर्वी, गो मैं थोड़ा बहुत दोनों से परिचित हूँ– दर्शन के नाम से जो मैंने स्वीकार किया है जीवन दर्शन–दर्शन का अर्थ शब्दशः दर्शन– मैं जीवन का दर्शन करना चाहता हूँ निरन्तर– पूर्णतया। और यह भी मैं जानता हूँ कि जीवन का ठीक दर्शन उसे जीने, भोगने से होता हैं" – 121

डॉ. प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में लेखिका की जीवन के प्रति जो विचार धारा रही उसके नारी के प्रति सर्वमान्य निरंकुशी दृष्टि के प्रति प्रबल विरोध का भाव उपस्थित हैं जाति, धर्म, आदि में ही विवाह की अनिवार्यताएं, दहेज कन्या का अक्षत यौनित्व आदि के रूढिग्रस्त विचारधाराओं को नारी की स्वतंत्रता का हरण करने उस पर पारिवारिक बंधनों को थोपनें का पर्याप्त कारण मानती हैं। ऐसे सामाजिक आचारों का खुलकर विरोध करना जरूरी समझती है। बंधनों के प्रति विद्रोह और इन्हीं कारणों से पुरूषों के प्रति प्रतिद्वंद्विता का भाव आत्मकथा मे परिलक्षित होता हैं इसके अतिरिक्त, अस्तित्ववादी, नवीन आधुनिक विचारों की पक्षधर, प्राचीनता के प्रति विद्रोह, महत्वाकांक्षा की पक्षधर, दृढ़ संकल्प जीवन का आधार, साहस के साथ जीवन संघर्ष को झेलना, कर्मठता, अपनें बल पर दुनिया बदलने की नाकाम कोशिश को अंजाम देना जैसा कि उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है–

"हर रोज, हर पल अपने अस्तित्व की अग्नि परीक्षा दी हैं मैंने, पाथेय के रूप में सिर्फ मेरे गुण, अवगुण उपलब्ध रहे हैं मुझे! गुरूमंत्र था, अहो रात्रि का जप था– किसी की परवाह मत करो बस काम करना है और करती रहो।"

"जिंदगी फिसलती रही थी और मैं इस फिसलती हुई जिंदगी के पीछे दौड़ रही थी। दौड़ते रहना ही मानो मेरी नियति थी क्योंकि मैं समझ रही थी कि इसी दौड़ भाग में एक दिन मैं अपनी मुक्ति का रास्ता खोज निकालूंगी।

"मैं जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं से अपना पाठ सीख रही थी। यह भी समझ रही थी कि केवल पढने से अध्ययन, चिन्तन और लेखन से स्त्री स्वतंत्र नहीं हो जाती,

सामाजिक पंगुता के विरूद्ध क्रोध और विद्रोह की भवना व्यक्त करने से ही मैं व्यक्ति नही हो जाऊंगी। संस्कारों से, परम्परा से मुक्ति की यात्रा बहुत लम्बी हैं और बड़ी कठिन'' – 122

'मोहन राकेश की डायरी' में लेखक की जीवन के प्रति जो दृष्टि स्पष्ट होती है उसके अनुसार लेखक व्यक्तिवादी है। समाज का भी महत्त्व है लेकिन फिर भी व्यक्ति का अपना भी महत्त्व है। लेखक ने जीवन भर आत्म संघर्ष किया एवं एकांतिक जीवन व्यतीत किया लेखक दूसरे के सवालों का जवाब तो अपनी रचना से दे सकता था लेकिन अपनें मन के सवालों का जवाब ढूंढने में ही जिंदगी की सार्थकता समझी। लेखक के जीवन में हमेशा अकेलापन छाया रहा। उन्हें अपने वैवाहिक जीवन का सुख नहीं मिला बल्कि उनके मन का कोना हमेशा ही खाली रहा। घर तो कोई भी बसा सकता हैं लेकिन मन को बसाना अत्यंत कठिन हैं लेखक के मन पर इतने घाव और टीस लगी थी जिसने लेखक को निराशावादी, एकाकी, शून्य में ताकने वाला जीवन के प्रति आशंकित एवं एक अनवरत खोजी शोधार्थी बना दिया था। लेखक ने जीवन से जो कुछ ग्रहण किया उसे अपनें में समाकर देखने के लिए मनन और चिन्तन करना चाहता था। लेखक की विचारधारा के अनुसार जिस समाज में मनुष्य अपने व्यक्तित्व का पूरा विकास नहीं कर सकता, वह समाज भी अवश्य दूषित समाज है। लेखक की जीवन के प्रति विचारधारा इन पंक्तियों से और अधिक स्पष्ट हो जाएंगी जहाँ वे वीणा को समझाते हुए कहते हैं–

''तुम यह सोचकर भूल करती हो कि तुम्हारी समस्या का हल बाहर कहीं से प्राप्त होगा। तुम्हें उसे अपनें अन्दर से ही हल करना होगा। जीवन के सब सम्बन्ध सापेक्ष हैं, अनिवार्य नहीं पहली चेतना हमें यह उपलब्ध करनी होगी कि समुदाय के अंतर्गत व्यक्ति नगण्य हैं, फिर भी व्यक्ति एक सम्पूर्ण ईकाइ हैं– एक पूरा मानसिक यंत्र हैं। उपयुक्त चालक न हो तो वह यंत्र व्यर्थ पड़ा रह सकता हैं परन्तु उसमें यह अर्थ कदापि नहीं निकलता कि वह यंत्र व्यर्थ हैं उसकी शक्तिमत्ता ही उसकी उपयोगिता का प्रमाण है'' – 123

जब वीणा अपने ब्रदर–इन लॉ की वैवाहिक समस्या के बारे में बात करती हैं तो लेखक उसे समझाते हुए जो कहते हैं वो जीवन सम्बन्धी विचारधारा को और अधिक स्पष्ट कर सकता हैं।

''क्योंकि हम जीवन को सृष्टि के विराट के अंतर्गत नही देखते, बाहर से अपना जायजा नही लेते अपने अंतर से सधे हुए बाहर की परीक्षा दिया करते हैं इसलिए हम सम्बन्धों को सापेक्ष्य न मानकर अनिवार्य समझ लेते हैं यह स्मरण रहें कि सब सम्बन्ध सापेक्ष्य है– पति पत्नी का भी– तो शायद इतनी बाधा न हो, इतनी घुटन न हो।'' – 124

मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' का अध्ययन करने पर लेखिका की जीवन के प्रति जो विचारधारा स्पष्ट हुई आज के वैज्ञानिक युग में प्राचीन नैतिक मूल्यों की रूढ़ि को कठिनाइयों को प्रत्यक्ष अनुभव किया। नारी पर होने वाले अत्याचारों, स्वावलम्बिता के लिए संघर्षरत नारी के प्रति इनकी विशेष धारणाएं हैं। इसके मूल में पुरूष के आचरण को ही इन्होंने मुख्यतः अनुभव किया। भारत आज भी नारी को चाहे वह शिक्षित हो या अनपढ़ पुरूष की भांति उसे न तो विचाराभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हैं न राय देने व आत्मनिर्णय का अधिकार ही प्राप्त है गृहस्थी के झंझट नारी लेखन की सबसे बड़ी बाधा है। इनसे छुटकारा पाना पुरूष के लिए भले ही सम्भव हो स्त्री के लिए सम्भव नही हैं। सारी प्रगतियों के बावजूद आज भी घर परिवार की सारी जिम्मेदारियां नारी के ही कंधो पर है प्रेम नारी की सबसे बड़ी दुर्बलता है उसी के कोमल भाव लोक से नारी का मन सहज ही पुरूष की ओर आकर्षित होता हैं नारी की यह प्रेम भावना जीवन के कठोर, कटु यथार्थ से टकरा कर शीघ्र ही बिखर जाती है। प्रेम के बनाये फ्रेम को तोड़ने की कोशिश के बावजूद नारी प्रेम जनित परवशता से पूरी तरह मुक्त नही हो पाई है। समस्त आधुनिक बोध और जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव के बावजूद असफल प्रेम कहानी को ढोती ही नही बल्कि सहती है, शायद इसका कारण संस्कार है, जिनके रहते नारी चाहकर भी उन बंदिशों को तोड़ नहीं पाती। उसके पीछे धड़कता दिल वही भारतीय कुंठाएं, और अभिज्ञाताएं हैं क्योंकि आप अपने सम्पूर्ण अस्तित्व की ईकाई को कैसे नकार सकत`हैं उनके समस्त सामायिक संदर्भ से कैसे कट सकते हैं ? और क्या कभी कट सकते हैं? जाने कहां कब और कैसे आपके संस्कार आपका पीछा करे। जीवन के बारे में लेखिका की विचारधारा इन पंक्तियों से और अधिक स्पष्ट जाएगी।

''कोई ओर तो नही सोच सकता था पर मैं............. नही जानता इसे अपनें जीवन की विडम्बना कहूँ या त्रासदी.........दुर्बलता कहूँ या मूर्खता। कोई चौंतीस सालों के अपनें अनुभव ........एक स्वच्छन्द और मनमानें ढंग से जीवन जीने की इनकी जिद जिसमें सारे प्रयत्नों के बावजूद मैं जरा सा भी परिवर्तन नही ला सकी थी..........अपने हर दुराग्रह को

सही सिद्ध करने और हमेशा मुझे ही कठघरे में खड़ा करने के लिए गढ़े इनके तर्क, इनका फलसफा........ इन सबको अच्छी तरह जानने, भोगने के बाद ही तो मैंने अलग होने का निर्णय लिया था दृढ़ संकल्प के साथ उसे कार्यान्वित भी किया पर अन्ततः उस पर टिक क्यों नही सकी? अपनत्व और आत्मीयता में लिपटे इनके हाथ बढ़े नही कि फिर लौट पड़ी। पर क्यो? क्यों नही अपनें पुराने अनुभवों ने मुझे वहां रोक दिया।" – 125

**निष्कर्ष –** अनेकानेक आत्मकथाओं का अध्ययन मनन करने के उपरांत शोधार्थी ने अनुभव किया कि मानव जीवन में संघर्षशील होना हर इंसान की किस्मत में लिखा हैं शायद कुछ बिरले ही होते होंगे जिन्हें सब कुछ मनचाहा मिल जाता होगा साहित्यकारों की आत्मकथा से तो यही जीवन की विचारधारा मिलती हैं कि जीवन में सतत संघर्ष करते रहो, अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ते रहो और इस दुनिया में अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व निखारते रहो और अंततः दुनिया के सम्मुख एक मिसाल कायम करके समाज को एक नवीन दिशा प्रदान करो।

जीवन संघर्षो से जो हार जाता हैं वह एकाकी हो जाता हैं नैराश्य में डूब जाता हैं लेकिन जो जीवन संघर्ष की आग में तपता हैं वह कुंदन बन जाता हैं समाज के लिए प्रेरणदायक, बन जाता हैं एवं वर्तमान ही नही अपितु भविष्य को भी प्रभावित करता हैं।

# सन्दर्भ


1. शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी पृष्ठ सं.–762, संस्करण–2009
2. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–213, संस्करण पहली आवृति–2008
3. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–141, संस्करण पहली आवृति–2008
4. हिन्दी शब्द कोश–सपा.–डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–499, संस्करण–2009
5. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–56, संस्करण दूसरी आवृति–2009
6. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–57, संस्करण दूसरी आवृति–2009
7. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–67, संस्करण दूसरी आवृति–2009
8. हिन्दी शब्द कोश–सपा. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–822, संस्करण–2009
9. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन पृष्ठ सं.–232, संस्करण–2008
10. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन पृष्ठ सं.–233, संस्करण–2008
11. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–65, संस्करण–2010
12. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी पृष्ठ सं.–19, संस्करण–2009
13. और पंछी उड़ गया–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–59, संस्करण–2009
14. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास राजनैतिक चेतना–डॉ. कृष्ण कुमार बिस्सा– पृष्ठ सं.–4
15. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–698, संस्करण–2009
16. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–52, संस्करण–2011
17. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–53, संस्करण–2011
18. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–53, संस्करण–2011
19. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–53, संस्करण–2011
20. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–135, संस्करण–2011
21. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–181, संस्करण–2008
22. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–181, संस्करण–2008
23. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–188, संस्करण–2008
24. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–188, संस्करण–2008
25. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–10, संस्करण–2008
26. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–21, संस्करण–2008
27. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–24, संस्करण–2008
28. जो मैने जिया–कमलेश्वर–पृष्ठ सं.–24, संस्करण–2008

29. जो मैने जिया–कमलेश्वर–पृष्ठ सं.–22, संस्करण–2008

30. बसेरे से दूर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृष्ठ सं.–114, संस्करण–2004

31. बसेरे से दूर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृष्ठ सं.–115, संस्करण–2004

32. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–95, संस्करण–2009

33. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–57, संस्करण–2009

34. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी–825, संस्करण–2009

35. और पंछी उड़ गया–डॉ विष्णु प्रभाककर – 25, संस्करण–2009

36. और पंछी उड़ गया–डॉ विष्णु प्रभाककर – पृष्ठ सं.–102, संस्करण–2009

37. और पंछी उड़ गया–डॉ विष्णु प्रभाककर – पृष्ठ सं.–103, संस्करण–2009

38. और पंछी उड़ गया–डॉ विष्णु प्रभाककर – पृष्ठ सं.–106, संस्करण–2009

39. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–46, संस्करण–2009

40. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–48, संस्करण–2009

41. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–49, संस्करण–2009

42. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठ सं.–44, संस्करण–2008

43. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठ सं.–45, संस्करण–2008

44. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठ सं.–99, संस्करण–2008

45. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठ सं.–101, संस्करण–2008

46. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृष्ठ सं.–256–57, संस्करण–2008

47. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–79, संस्करण–2008

48. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–186, संस्करण–2008

49. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–194, संस्करण–2008

50. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी बाहरी पृष्ठ सं.–761, संस्करण–2009

51. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–9, संस्करण–2011

52. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–9, संस्करण–2011

53. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–13, संस्करण–2011

54. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–52, संस्करण–2011

55. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–176, संस्करण–2008

56. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–35, संस्करण–2008

57. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–204, संस्करण–2008

58. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–79, संस्करण–2008

59. जो मैने जिया–कमलेश्वर–पृष्ठ सं.–111, संस्करण–2008

60. जो मैने जिया–कमलेश्वर–पृष्ठ सं.–79, संस्करण–2008

61. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–855, संस्करण–2009

62. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–21, संस्करण–2010

63. और पंछी उड़ गया–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–10, संस्करण–2009

64. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–16, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

65. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–16, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

66. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–125, संस्करण–2008

67. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृष्ठ सं.–232, संस्करण–2008

68. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–9, संस्करण–2008

69. मुक्त गगन में डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–19, संस्करण–2011

70. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–127, संस्करण–2010

71. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–128, संस्करण–2010

72. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–24, संस्करण दूसरी आवृत्ति–2009

73. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–26, संस्करण दूसरी आवृत्ति–2009

74. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–152, संस्करण–2008

75. हिन्दी शब्द कोश डा. हरदेव बाहरी – पृष्ठ सं.–4–5, संस्करण–2009

76. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–159, संस्करण–2008

77. जो मैने जिया–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–159, संस्करण–2008

78. बसेरे से दूर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृष्ठ सं.–90, संस्करण–2004

79. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–130, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

80. हिन्दी शब्द कोष–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी – पृष्ठ सं.–650, संस्करण–2009

81. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–19, संस्करण दूसरी आवृत्ति–2009

82. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–31, संस्करण दूसरी आवृत्ति–2009

83. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–69, संस्करण–2011

84. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–74, संस्करण–2011

85. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–74, संस्करण–2011

86. मुक्त गगन में–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–74, संस्करण–2011

87. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–669, संस्करण–2009

88. हिन्दी शब्द कोश – डा. हरदेव बाहरी – पृष्ठ सं. 606, संस्करण–2009

89. और पंछी उड़ गया–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–82, संस्करण–2009

90. और पंछी उड़ गया–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–82, संस्करण–2009

91. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–192, संस्करण–2008

92. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–58, संस्करण–2008

93. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–43, संस्करण–2008

94. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–35, संस्करण–2010

95. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–37, संस्करण–2010

96. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–32, संस्करण–2010

97. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर – पृष्ठ सं.–169, संस्करण–2010

98. नालन्दा विशाल शब्द सागर– पृष्ठ सं.–1388

99. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–76, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

100. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–76, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

101. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–76, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

102. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–76, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

103. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–56, संस्करण दूसरी आवृत्ति–2009

104. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी– पृष्ठ सं.–56, संस्करण दूसरी आवृत्ति–2009

105. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–25, संस्करण–2010

106. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–458, संस्करण–2009

107. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–84, संस्करण पहली आवृत्ति–2008

108. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–54, संस्करण–2008

109. जलती हुई नदी–कमलेश्वर– पृष्ठ सं.–140, संस्करण–2008

110. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–73, संस्करण–2008

111. हिन्दी शब्द कोश–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–84, संस्करण–2009

112. व्यावहारिक हिन्दी शब्द कोश–स. भोलानाथ तिवारी पृष्ठ सं.–165,166

113. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–35, संस्करण–2010

114. पंखहीन–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–35, संस्करण–2010

115. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश–पेज न.–115, संस्करण–2008

116. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–117, संस्करण–2008

117. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–150,151, संस्करण–2008

118. और पंछी उड़ गया–डॉ. विष्णु प्रभाकर– पृष्ठ सं.–55, संस्करण–2009

119. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–08, संस्करण पहली आवृति–2008

120. हिन्दी शब्द कोष–सपा. डॉ. हरदेव बाहरी– पृष्ठ सं.–305, संस्करण–2009

121. नीड़ का निर्माण फिर–डॉ. हरिवंश राय बच्चन–82, संस्करण–2009

122. अन्या से अनन्या–डॉ. प्रभा खेतान– पृष्ठ सं.–256, संस्करण पहली आवृति–2008

123. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–143, संस्करण–2008

124. मोहन राकेश की डायरी–मोहन राकेश– पृष्ठ सं.–145, संस्करण–2008

125. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी–पेज न.–194, संस्करण दूसरी आवृति–2009

# षष्ठ पर्व – कलात्मक आकलन

किसी भी साहित्यिक रचना के दो पक्ष है– अनुभूति और अभिव्यक्ति। अनुभूति रचना की आत्मा है और अभिव्यक्ति उसका शरीर। अभिव्यक्ति के लिये आवश्यक तत्त्व है भाषा। भाषा अपनें जिस व्याकरण व विज्ञान से अनुभूति को स्वरूप प्रदान करती है वह है उसका शिल्प। जब तक भाषा अपनी सम्पूर्ण कलात्मकता से सम्पन्न नहीं होती तब तक वह लेखक के अंतर्बोध को अपेक्षित अभिव्यक्ति प्रदान नही कर सकती।

वस्तुतः भाव या विचार को भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जाता है और शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं। इस प्रकार भाषा और शैली के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की जाती है। एक अच्छी रचना में कृतिकार के भाव, भाषा एवं शैली तीनों का समुचित समन्वय होना आवश्यक हैं। इन तीनों का पारस्परिक सम्बन्ध होते हुए भी ये तीनों प्रायः एक दूसरे से भिन्न हैं। भाव की अनुभूति व्यक्ति के संवेदक हृदय से होती है। जिस व्यक्ति का हृदय जितना अधिक संवेदक होगा, हृदय के भावों का उद्वेग उतना ही तीव्र होगा। एक ही घटना व्यक्तियों के स्वभाव व्यापार की दृष्टि से भिन्न–भिन्न लोगों को भिन्न–भिन्न ढंग से प्रभावित करती है। भाषा व्यक्ति को उसके चारों ओर के परिवेश से प्राप्त होती है। अतः भाव और भाषा का इतना निकटता का सम्बन्ध होता है कि किसी भी रचना में जितने सुन्दर भाव होंगे उतने ही सुन्दर वाक्यों का समावेश होगा।

## (अ) भाषा वैभव

**भाषा –** भाषा साहित्यिक रचना के शिल्प का मूल उपकरण है। यह जितनी सहज एवं सरल होगीं उसमें उतनी ही प्रवाहशीलता होगीं। दुरूह भाषा पाठक को नीरसता प्रदान करती है। भाषा साध्य न होकर साधन है। भाषा के सम्बन्ध मे मुंशी प्रेमचन्द लिखते हैं कि "भाषा साधन है, साध्य नहीं। अब हमारी भाषा ने वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषा से आगे बढकर भाव की ओर ध्यान दें और इस पर विचार करें कि जिस उद्देश्य से यह निर्माण कार्य आरम्भ किया गया था वह क्यों कर पूरा हो। वहीं भाषा जिसमें आरम्भ मे 'बागों बहार और बैताल पच्चीसी' की रचना ही सबसे बड़ी साहित्य सेवा

थी, अब इस योग्य हो गयी हैं कि उसमें शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की भी विवेचना की जा सके।.............भाषा बोलचाल की भी होती है और लिखने की भी........बोलचाल से हम अपनें करीब के लोगों पर अपने विचार प्रकट करते हैं– अपने हर्ष शोक के भावों का चित्र खींचते हैं साहित्यकार वही काम लेखनी के द्वारा करता है। हां उसके श्रोताओं की परिधि बहुत विस्तृत होती हैं और अगर उसके बयान में सच्चाई हैं तो शताब्दियों और युगों तक उसकी रचनाएं ह्रदयों को प्रभावित करती रहती हैं।" – 1

भाषा मनुष्य के भीतर की चेतना को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। भाषा की कलात्मक अभिव्यक्ति से शिल्प का निर्माण होता है। इसके लिए भाषा में शब्दों (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी) का चयन शब्द शक्तियों (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) का समुचित प्रयोग तो आवश्यक एवं अपेक्षित है ही साथ ही सरल, मिश्रित और सयुंक्त वाक्य विन्यास का होना भी आवश्यक है। भाषा को समृद्ध बनाने में मुहावरे, कहावतें, लोकोक्तियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है अतः ये सभी घटक मिलकर भाषा को प्रांजल कर उसका उजास बढाते है।

हिन्दी साहित्य के आत्मकथाकारों की आत्मकथाएँ भाषा की दृष्टि से परिपक्व हैं। उन्होनें शब्दों के चयन में सायास कोई काम नहीं किया वरन सहज रूप से शब्द उतरे हुए लगते हैं। जहां आवश्यक लगा अथवा पात्र एवं परिवेश की आवश्यकतानुसार शब्दों का प्रयोग कर भाषा को सौन्दर्य प्रदान किया है, जिसमें उन्होनें मुहावरों, कहावतों का प्रयोग भी किया है, वही सहज रूप से उपजे सन्दर्भो में वाक्यों का विषय वस्तु अनुरूप प्रयोग किया हैं।

## व्याकरण

भाषा का प्रारम्भिक रूप बोली है। बोली से ही कालान्तर में किसी भाषा का विकास होता है, जिसमें हजारों वर्षो का समय लगता हैं। विकास के इसी काल में उसका व्याकरण बनता है किंतु भाषा की चाल को व्याकरण बदल नहीं सकता। यह उसकी सामर्थ्य से बाहर है। व्याकरण तो केवल उसके अंग प्रत्यंग का विश्लेषण, विवेचन करता है। उसे अपने ढंग से अपने नियम कायदों से चला नहीं सकता। हां वह भाषा के बोलने और लिखने के नियम अवश्य निर्धारित करता है और उसकी कुछ सीमाएं भी बनाता है। व्याकरण की इन्हीं सीमाओं से हम भाषा का शुद्ध लिखना पढना और बोलना सीखते हैं।

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम किसी भाषा के नियमों और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

## संज्ञा

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ हैं– सम + ज्ञा अर्थात् सम्यक ज्ञान कराने वाला। अतः किसी भी वस्तु व्यक्ति, गुण, भाव स्थिति का उचित परिचय कराने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का दूसरा पर्याय है नाम। अतः किसी भी व्यक्ति वस्तु, स्थिति या गुण के नाम को संज्ञा कहा जाता है। संज्ञा–शब्दों के बिना भाषा बन ही नहीं सकती जब हम कोई भी बात कहते, करते, पूछते हैं तो अनजाने मे संज्ञा शब्दों का ही प्रयोग करते हैं।

हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में यथायोग्य संज्ञा के तीनों भेदों का उपयोग हुआ है।

**व्यक्तिवाचक संज्ञा–** श्रीनगर–(66) राजस्थान–(77) कालिन्दी, गंगोत्री, यमुनोत्री, (14) नगेन्द्र नाथ दास (46) शरतचन्द्र (47) (और पंछी उड़ गया)

**भाववाचक संज्ञा–** उल्लास, (पेज नं.–15) बदहवास–(36) निरूत्साह (46) प्रसन्नता (67) कष्ट, पीड़ा–(66) निर्भयता (67)(और पंछी उड़ गया)

**जातिवाचक संज्ञा–** यात्रियों, (15) पुस्तकें–(37) सभा–(46) बंगालियों–(47) कारखाने–(82) मन्दिरों (83) (और पंछी उड़ गया)

## सर्वनाम

सर्वनाम का अर्थ है– सबका नाम अर्थात् जो शब्द सबके नामों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं या हो सकते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं दूसरे शब्दो में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त **होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।**

**पुरूषवाचक सर्वनाम** – मेरे, मैंने, मेरा, मेरी, हम, वे, (52–53– नीड़ का निर्माण)

**निश्चयवाचक सर्वनाम–** यह (88) वे (74) उनके (107) उन्हें (107)

**निजवाचक सर्वनाम** –"स्वयं जीवन का काव्य (153)

पर हम स्वयं अपनी असमर्थता से ऊपर उठ सकते थे" – 2

**अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – ''न मैं, न और कोई उसे बुझाने का प्रयत्न करता हैं न कोई घबराता है।'' – 3

**सम्बंधवाचक सर्वनाम–** ''पर हम एक दूसरे से उतनी ही दूर थे, जितना पहले थे'' – 4

**प्रश्नवाचक सर्वनाम** – किस ? किस बात के लिए ? कौन बताएं ? – 5

## विशेषण

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। हिन्दी साहित्यकारों की समस्त आत्मकथाओं में विभिन्न स्थलों पर यथा योग्य सभी प्रकार के विशेषणों का प्रयोग हुआ हैं।

''गोरा रंग, मांसल देह, शब्द शब्द में प्यार झरता था उनके (पंखहीन) – 6

''मेरे लड़कपन में मेरे घर मे प्रायः मेहमान आकर टिका करते थे (नीड़ का निर्माण फिर) – 7

''शायद यह संस्कारशील गायत्री का बड़प्पन या धीरज ही था कि वह कभी लवीन से कुछ नही पूछंती थी'' (जलती हुई नदी) – 8

''वह बूढ़ा देखो, घड़ा किस तरह मस्त होकर बजा रहा है'' (मोहन राकेश की डायरी) – 9

''ऊँची–ऊँची बल्लियां गाडकर मार्ग अवरूद्व कर दिया गया था'' (दशद्वार से सोपान तक) – 10

''हमें तब रोज एक गिलास भरकर, मौसम्बी या संतरे का रस पिलाया जाता''(अन्या से अनन्या) – 11

## वाक्य–विन्यास

रचना विधान में वाक्य संरचना का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। लिखित रूप में वाक्य के बिना भावों को प्रदर्शित करना कठिन होता है। वाक्य सार्थक ध्वनियों के मिलने से बने शब्दों का वह समुच्चय होता हैं जिनसे निर्धारित अर्थ सामने आता है। वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–सरल वाक्य, मिश्रित वाक्य, और संयुक्त वाक्य।

**सरल वाक्य –** ''पहले अपने स्त्री होने की गुलामी को समझो'' (अन्या से अनन्या) – 12

''एक वस्तु का अपना प्राकृतिक गुण होता है'' (मोहन राकेश की डायरी ) – 13

''नियति ने अपना चक्र चला दिया था'' (दशद्वार से सोपान तक ) – 14

''पंडित जी से मेरे मिलने के अवसर इने गिने थे'' (बसेरे से दूर ) – 15

''वह नसीम बानो को देखता रह गया था'' (जलती हुई नदी) – 16

''आखिर मकान मिल गया'' (एक कहानी यह भी) – 17

**मिश्रित वाक्य** – '' आधी रात को, नहीं आधी रात की स्थिति में प्रतीकात्मक स्थिति में बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है'' (नीड़ निर्माण फिर)–18

''घर से भाग जाना जितना आकस्मिक था उतना ही आकस्मिक हुआ लौट आना। कोई सुनियोजित योजना मेरे पास नही थीं'' (पंखहीन) – 19

''बच्ची के जन्म से बढ़ी जिम्मेदारियों ने जिसका सारा बोझ भी मुझ पर आ पड़ा था, पहले बच्चे के जन्म की सारी खुशियों को ही सोंख लिया'' (एक कहानी यह भी ) –20

''परकीया प्रेम और टूटते नैतिक मूल्यों की संक्रांति में उन्हें भी योद्धा माना जा रहा है जिनकी पत्नियां उन्हें छोड़कर चली गई थी और वे बड़े गौरव और शालीनता से अपने पुंसत्व की पताकाएं फहराते हुए नारी की सहज मुक्ति के मुखौटाधारी सिद्धान्तकार और नायक बन गये थे'' (जलती हुई नदी) – 21

**संयुक्त वाक्य** – ''सुबह उठकर मैं तो ऊपर टेक पर घूमने चला जाता और बाबा किसी खुले टेक पर ज्यादा मशक्कत तलब कसरत करता'' (बसेरे से दूर) – 22

''इस वर्ष एक भारतीय बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट पर पहुंचा और पहली बार एक भारतीय नारी भी वहां पहुंची'' (दशद्वार से सोपान) – 23

''डॉ. साहब हमेशा यही कहते कि तुम फूहड़ और गंवार हो और वे मानो डॉ. साहब के इसी तथ्य को प्रमाणित करने में जुट गई थी'' (अन्या से अनन्या) – 24

''बाबू रामकिशोर अधिक न बैठ सके और अंतिम परिणति स्वीकार कर अपने भाई को साथ लेकर चले गये'' (नीड़ का निर्माण फिर) – 25

## मुहावरे एवं कहावतें

**मुहावरे** – जो पंदबंध या वाक्यांश सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता हैं उसे मुहावरा कहते है।

**लोकोक्ति या कहावतें** – लोकोक्ति शब्द लोक + उक्ति इन दो शब्दो के मेल से बना है जिसका अर्थ हैं लोक में प्रचलित या प्रसिद्ध बात इसे कहावत भी कहते हैं। यह एक ऐसा कथन होता हैं जिसे किसी बात को प्रमाणित करने के लिए प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

हिन्दी आत्मकथा साहित्य में साहित्यकारों ने अपनी बात को संक्षेप में समझाने के लिए मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग किया है जिसमें अग्रगण्य बच्चन जी कहे जा सकते हैं जिन्होंने हिन्दी, अंग्रेजीं, अवधी, आयरी, देशी भाषा की कहावतों का भी प्रयोग किया है इसके अतिरिक्त साहित्यकारों ने आत्मकथा में यथायोग्य मुहावरों एवं कहावतों को प्रयोग किया हैं जैसे–

''महीने भर में तुम अपना बोरियां बिस्तर बांध लो'' (अन्या से अनन्या) – 26

''ऊँची दुकान फीके पकवान'' (नीड़ का निर्माण फिर) – 27

भूखे बेर अघाने गांडा'' (दशद्वार से सोपान) – 28

"Old age is second childhood" (दशद्वार से सोपान) – 29

"First things first" (बसेरे से दूर) – 30

''जैसे ही कुसुम जी आई उल्टे पैरों मैने उन्हें दौड़ा दिया'' (एक कहानी यह भी) – 31

''कहां राजा भोज, कहां भोजवा तेली'' (बसेरे से दूर) – 32

''सचमुच मेरे पेट मे दाढ़ी थी'' (पंखहीन) – 33

अंततः यही कहा जा सकता हैं कि व्याकरणिक कसौटी पर भी सभी आत्मकथाएँ उत्तम हैं। मन्नू भण्डारी के लेखन में वाक्य लम्बे हैं लेकिन भाषा सरल, सहज है। प्रभा खेतान की आत्मकथा भाषा की दृष्टि से उत्तम रचना है, जिसमें पात्रानुकूल भाषा उनकी विशेषता है। बच्चन जी एवं प्रभाकर जी की आत्मकथा तो साहित्य की अक्षय निधि है ही जिसमें सभी कलेवर समाहित है एवं अतिसाहित्यिक रचना है। कमलेश्वर जी ने अपनी भाषा के वाग्जाल से दर्शकों को फिल्मी दुनिया की चकाचौंध के भीतर का सच दिखाने की कोशिश की हैं। मोहन राकेश की डायरी भाषा की कसौटी पर हिन्दी साहित्य की अनुपम कृति है जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी, अवधी, ब्रज, फ्रेंच आदि सभी भाषाओं के शब्दों की छटा देखते ही बनती है।

## **शब्द प्रयोग**

हमारे भारत देश पर विभिन्न भाषा बोलने वाली जातियों का शासन रहा हैं, यही कारण है कि हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी मिश्रित भाषा बन गई हैं। इसके स्वरूप पर विचार प्रकट करते हुए मुंशी प्रेमचन्द 'कुछ विचार' शीर्षक पुस्तक में लिखते हैं कि 'इसे हिन्दी कहिये, हिन्दुस्तानी कहिये या उर्दू कहिये, चीज एक है।

''नाम से हमारी कोई बहस नहीं!.........जीवित भाषा जो जीवित देह की तरह बराबर बनती रहती है। कुछ हिन्दी तो निरर्थक शब्द है। जब भारत शुद्ध हिन्दू होता तो उसकी भाषा शुद्ध हिन्दी होती। जब तक यहां मुसलमान, ईसाई, फारसी, अफगानी सभी जातियाँ हैं, हमारी हैं, हमारी भाषा भी व्यापक रहेगी।..........हमारा आदर्श तो यह होना चाहिए कि हमारी भाषा को अधिक से अधिक आदमी समझ सके। अगर इस आदर्श को हम अपने सामने रखें तो लिखते समय भी हम शब्द चातुरी के मोह में न पड़ेंगे। यह गलत है कि फारसी शब्दों से भाषा कठिन हो जाती है। हमें राष्ट्रभाषा के कोश को बढाते रहना चाहिये। वहीं संस्कृत और अरबी फारसी के शब्द जिन्हें देखकर आज हम भयभीत

हो जाते हैं, जब अभ्यास में आ जाएंगे तो उनका हो आप समाप्त हो जाएगा। इस भाषा विस्तार की क्रिया धीरे–धीरे होगी। – 34

प्रेमचन्द जी के उक्त विचार उत्कृष्ट कोटि के कहे जा सकते हैं तथा हिन्दी साहित्यकारों ने भी शायद इसी विचार का आदर करते हुए आत्मकथाओं में यथासंभव, उर्दू, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, अरबी, देशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया हैं।

## तत्सम शब्द

हिन्दी भाषा में जो शब्द संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते है, उन्हें तत्सम शब्द कहा जाता हैं। सभी आत्मकथाओं में कहीं न कहीं तत्सम शब्दों का प्रयोग अवश्य हुआ है।

**नीड़ का निर्माण फिर–** मैत्री, उद्यान, तृषार्त, मृगतृष्णा, अंतर्दहन, खग, अस्फुट, ज्योति, ज्योत्स्ना, ज्यामिति। – 35

**और पंछी उड गया–** तरंग–लवंगा–कुरंगा–निनाद, अन्तर, स्तम्भ, तपस्विनी, कालिन्दी, श्यामवर्ण, पाषाण। – 36

**पंखहीन–** कलुष, द्वेष, अद्वितीय, मालिन्य, सर्वोत्तम। – 37

**जलती हुई नदी–** दैहिक, दर्शन, वर्जनाबद्ध, आप्लावित, सात्विक। – 38

**अन्या से अनन्या–** अद्वैत, सत्यम, अमूर्त, अभीप्सा, संस्कृत। – 39

**मुक्त गगन में–** उच्चतम, रूपक, रामेश्वरम, प्रक्षालन, वक्ष, कृशकाय, कृष्णवर्ण, अर्द्धनग्न। – 40

**बसेरे से दूर–** उद्यान, मधुर, प्रत्याशित, संसृति, नौका, प्रसन्नचित्त, उज्ज्वल, निर्मल, उल्लास, प्रतिक्षण। – 41

**मोहन राकेश की डायरी–** सन्धियां, पुनरावृति, अतिरिक्त, विशुद्ध, अवलम्बन, देह, अभिनन्दनीय, प्रवाह, पुलक, क्षण, युग। – 42

## तद्भव शब्द

मूल भाषा के तत्सम शब्दों में बदलाव आने के बाद का वह रूप जो दूसरी भाषा में प्रयुक्त होता हैं। तद्भव कहलाता हैं। हिन्दी में तद्भव शब्द संस्कृत के तत्सम शब्दों से बिगड़ कर बने हैं। लगभग सभी आत्मकथाओं में इन शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

**मोहन राकेश की डायरी–** आँखे, आरम्भ, अनावश्यक, कुनकुना, उन्मादी, साहित्यिक मण्डल, वीभत्स चारपाइयाँ। – 43

**बसेरे से दूर–** आँखों–आँखों, हाथों, भाव भीनी, स्वागतघर। – 44

**अन्या से अनन्या –** ठण्डी सांसो, होंठ, घर, उपहार, अतीत। – 45

**नीड़ का निर्माण फिर–** भवन, मुखड़ा, आंखें, वृद्धावस्था जीभ, ह्रास, सपने, सपत्नीक – 46

**जो मैंने जिया–** रचना, पैरों, पेड़, सूरज, आंचल – 47

**जलती हुई नदी–** दहकती आग, क्षणों एकाध, करधनी, नाभि, ओंठो। – 48

**पंखहीन–** घी, दूध, अन्न, ऊँटो, कन्धे, खाद्य पदार्थ, सपने। – 49

**और पंछी उड़ गया–** पशु, चेष्टा सुन्दर। – 50

## देशज

देशज का अर्थ है–देश में उत्पन्न। जो शब्द किसी क्षेत्र विशेष से हिन्दी में आ गये हैं देशज कहलाते हैं। इन शब्दों का जन्म और विकास लोक सामान्य और जनसभा के बीच होता हैं तथा इन की उत्पत्ति अथवा मूल भाषा के संबंध में कुछ भी नहीं कहा जा सकता हैं।

**पंखहीन–** ढाऊ–ढाऊ, कूकड़ा बजाऊ, कूकड़े की मारी बूंदी के लड्डू, कमचिया – 51

**जलती हुई नदी–** लबिया, जिज्जी, कथरी, ढिबरी, जुषांदे। – 52

**नीड़ का निर्माण फिर–** "बस तोरे कमर में इतनिन ताकत है।" – 53

**अन्या से अनन्या–** "हमोर बचवा, गईल, जाईल, गटगट। – 54

**बसेरे से दूर–** "बेटवा, तुम तो कुल में होत आई सगरी रीत रसम, रवाज परहर चलाय दिहैं हैं, अब का समुन्दरों के जात्रा करबोर – 55

## –बंगाली भाषा के शब्दो का प्रयोग–

**अन्या से अनन्या–** "इहां का नरोम हवा आंतो को सड़ा देता हैं? पोश्चिम का हवा जोरूरी हैं।" – 56

**और पंछी उड़ गया–**"छोकड़ा तोमार काछे कि प्रमाण कि ईश्वर आधे"

"अपनाकर का छे कि प्रमाण कि अपनी आपने नागर बेटा" – 57

## –अंग्रेजी भाषा एवं रोमन लिपि का प्रयोग–

**और पंछी उड़ गया–** Meeting, remark you are heading the most corrupt govt. in the world. - 58

**बसेरे से दूर –**The occasion should be celebrated. - 59

**नीड़ का निर्माण फिर–**"when the hearts have once mengled, lovefirst leaves the well built next" - 60

**मोहन राकेश की डायरी–**"Must be work, work and work, must not west myself" - 61

## –अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग–

**अन्या से अनन्या–**नर्वस, ड्राईवर, मैडम, बस, टैक्सी, हॉर्न, ब्रेक, ओवरटेक, एक्सीडेन्ट, मिनी बस । – 62

**मुक्त गगन में–** स्टेशन, डायरेक्टर, रेडियो, प्रोग्राम, असिस्टेन्ट, टाकर, स्टूडियो, स्क्रिप्ट, पार्टी – 63

**मोहन राकेश की डायरी–**टर्म, थीसिस, अरेजमेन्ट। – 64

**नीड का निर्माण फिर–** युनिवर्सिटी, आल इण्डिया क्रान्फ्रेन्स, फूड कौंसिल, कैफेटेरिया, सिविल लाइंस, रायल्टी, कल्चर सेन्टर, ड्रामा क्लब, ड्राईंग रूम। – 65

**जो मैंने जिया–** जूनियर, युनिवर्सिटी फोर्थ सोशलिस्ट इंटरनेशनल, डिप्टी। –66

**जलती हुई नदी–** एनीथिंग एल्स सर ? होटल मैनेजर ओल्सो एट योर सर्विस सर, आई हैव टोल्ड हिम सर, टुमारो लंच 20 किलोमीटर अवे सर, एयर कंडिशनर, फाइव स्टार स्कॉच कैश, पैमेंट, फ्री शॉपिंग – 67

**पंखहीन –** स्कूल, डिप्टी इंस्पेक्टर, हैडमास्टर,

"थिंग्स पर टॉक्ड एट, बट नाट टाक्ड टू" पैक्ट – 68

**और पंछी उड़ गया–** थैंक्यू, वर्कर, पम्प, हैंण्डिल, चार्टर, डायनिंग रूम, यस यस, डियर, ओ माई डियर, ग्राउण्ड, – 69

**एक कहानी यह भी–** युनिर्वसिटी, हार्ट अटैक, गैस्ट हाउस, मिरांडा हाउस, रिसर्च स्कॉलर, फैलोशिप, ड्राफ्ट, – 70

**–प्रचलित उर्दू, अरबी, फारसी, के शब्दो का प्रयोग–**

**एक कहानी यह भी–**निहायत, मुलाकात, मकसद, फुटपाथ, जिन्दगी, झिझकते, अजीब, सिलसिला, तारीख, परेशान, चिटठी। – 71

**बसेरे से दूर–** सनक, बहक, बकवास, फिकरे, दर्जे, फिकरेबाजी, फब्ती, बखूबी, टकसाली। – 72

**और पंछी उड गया–**दर्जा, गुजर, अवारा मसीहा, दावा, बुलबुले। – 73

**पंखहीन–** रोज, कमाने, अबूझ, आमदनी, मचल, बिफर, बर्ताव। – 74

**जलती हुई नदी–** साइकिल, बिछाया, इंतजाम, जरिए, माँ, निबाह, पताकाऐं, फहराते, दरी, शाम, रसद, देगची। – 75

**नीड़ का निर्माण फिर–** पतोहू, मजाक, शर्त, तै, ताश, खोना, जल्दबाजी, मेहमान। – 76

**मोहन राकेश की डायरी–** इन्तजार, मरियल, जाहिर, बदपरहैंजी, तकिये, वाहियात, चारपांईया, कनस्तर, गुदडिया, फुटपाथ। – 77

**मुक्त गगन में–** जनाब, काफिरों, खौफ, मुरदों, जिन्दा, दिल, वतन, जेबों, कराह, लज्जा, मुफ्त। – 78

**अन्या से अनन्या–** आखिर, माहिर, फायदा, हुनर, औरत, कन्धों, वफादारी, मजबूरी, चाकू, फिरंगी, कैफियत, बेबसी, जबान, कीमत। – 79

## शब्द शक्ति

शब्द ,शक्ति है। इससे किसी अर्थ का, उसकी अभिव्यक्ति का बोध होता हैं। किसी भी वाक्य को समझने एवं परखने के लिए शब्द महत्त्वपूर्ण होता है। शाब्दिक सरंचना के माध्यम से ही किसी भी रचना का रूप सामने आता है। अतः रचना के बगैर उसकी शब्द शक्ति को जाना नहीं जा सकता। शब्द शक्ति तीन प्रकार की होती है– अभिधा, लक्षणा तथा व्यजंना।

**अभिधा –** यह मुख्य अर्थ प्रकट करने की वह शक्ति हैं। जिसमें भावों को सहज अनुकूल और सम्प्रेषणीय बनाया जाता हैं और रचना का मर्म उभार कर सामने लाया जाता हैं। इससे वाचिक अर्थ का बोध होता हैं।

1. "प्रभा तुम्हारा दिमाग तो नही खराब हो गया। खाकी कैनवास के इस थैले का ढ़ाई सौ डॉलर, दे आई........... पागल हुई हो ? चलो वापस करो।" (अन्या से अनन्या तक) – 80
2. " शरत को जानवरों से बड़ा प्रेम था। सांप और बिच्छुओं को शीशियों में रखते थे। एक नेवला भी पाला था। उसे हमने स्वयं देखा है। मछली खरीद कर लाते और उसे खिलाते थे।" ( और पंछी उड़ गया) – 81
3. अचानक बाबा फफक कर रो पड़ा और बार बार जमीन से मिट्टी उठाकर माथे से लगाने लगा। अनवरत आंसुओ और हिचकियों के बीच बस एक ही वाक्य उसके मुंह से निकलता जा रहा था– "अपनी मिट्टी को छोड़कर कोई रह सकता है क्या ? अपनी माँ को छोड़कर कोई रह सकता है क्या ?" (एक कहानी यह भी) – 82

**लक्षणा –** यह मुख्यार्थ अर्थात् मुख्य अर्थ से सम्बन्धित अन्य अर्थ को प्रकट करती हैं। जब विशेष सन्दर्भो को प्रकट करना आवश्यक होता है। तब लक्षणा को प्रयोग किया जाता हैं। जैसे संवेदनशील परिस्थितियों को लिए ल़क्ष्यार्थ को बोध कराने वाली शक्ति लक्षणा प्रयुक्त होती हैं।

1 '' अम्मा नहीं रहेगी तो उनकी साडियाँ किसे मिलेंगी ?'' मैंने पूछा।

'' यह हमेशा की बोकी है, भाटा–पत्थर है, उटपटाँग बातें पूछने में माहिर।'' बडे भैया की झिड़की थी।''–83

2 ''उन दिनों समझ नहीं पा रही थी कि मैंने ऐसा निर्णय क्यों किया, किसलिए बबूल के काँटे चबा रही थी और खून थूक रही थी ? किसलिए................?–84

3''कल तक डॉक्टर साहब की हर बात में आस्था थी, अब उनके प्रति मेरे मन में सवालों का बवंडर था। मुझे समझ मे आने लगा था कि सागर की तलहटी मे चट्टाने हैं, जो लावा उगल रही हैं और मुझे जल–जलकर राख होना है।–85

**व्यंजना –** इससे काल्पनिक सन्दर्भो के साथ किसी भाव विशेष के समन्वयन से उत्पन्न स्थिति प्रतीत होती हैं। यह शब्द शक्ति व्यंग्यार्थ को प्रकट करती हैं। इसमें व्यंजक शब्दों के माध्यम से व्यंग्य को ध्वनित किया जाता हैं।

1. तो मेरे साथ की क्या जरूरत हैं ? तू राकेश को उखाड़ना चाहता हैं न ? तो मैं आसान सा नुस्खा बताता हूँ।"
" बोला

"तू अगले आठ दस महीनों में जो भी लिखे, वह सब राकेश के नाम से छपवा दे वह अपने आप मर जाएगा।"

"रसाला। " राजेन्द्र किलकारी मारकर बोला था।"

( जो मैंने जिया) – 86

2. " एक दिन बस में जा रही थी। आगे वाली सीट पर दो लड़कियां बैठी थी। बोली आप कहां रहती हैं ? "

"818, कुण्डेवालान में, मैंने कहा।

लड़की बोली "वहां तो प्रभाकर जी रहते हैं। आप उन्हें जानती हैं।"

मैंने कहा– जी हां, जानने की कोशिश तो करती हूँ। 26 वर्ष से कर रही हूँ। लेकिन अभी तक जान नहीं पाई।"

लड़किया समझ गई। बोली , "अच्छा तो आप मिसेज प्रभाकर हैं। देखिए अब तो आप पकड़ी गई। हमारे घर आइये, उनको भी लेकर आइये।" ( पंखहीन) – 87

## भाषा सौष्ठव

किसी भी कलात्मक सृजन की भाषा शैली का सम्बंध उसके अभिव्यक्त शिल्प से होता हैं। रचना के भाव और विचार चाहे कितने ही उपयोगी और सुन्दर क्यों न हो, यदि वे उचित प्रकार से अभिव्यक्त नहीं हो पाते तो उनकी सुन्दरता, उपयोगिता आदि सब कुछ महत्वहीन है। साहित्यिक सृजन का रूप एवं आकार उसकी भाषा शैली से ही बनता हैं। उसी कारण कथात्मक साहित्य के जो उनमे विधायक तत्व होते हैं, उनमें भाषा शैली को भी प्रमुख स्थान दिया गया हैं। भाव अपने वास्तविक स्वरूप में अमूर्त रहते हैं। उनको मूर्त रूप में रूपायित करने का नाम भाषा शैली हैं। भाषा जहां विचारों की वाहक हैं वहीं शैली उसके सजीव प्राकट्य का प्रकट हैं। यह वादकत्व एवं प्रकाट्य जितना सहज, अकृत्रिम, एवं स्वाभाविक होगा उतना ही सर्जना को कलात्मक, प्रभावी एवं सार्थक स्वरूप प्रदायक होगा।

### सामान्य

हिन्दी साहित्यकार मन्नू भंडारी की आत्मकथा की भाषा 'बुद्धिजीवी वर्ग' के साथ ही जन सामान्य के स्तर की भाषा भी है। आत्मकथा में लेखिका ने दुरूह एवं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर किया हैं बल्कि जन सामान्य में प्रचलित शब्दों का ही यथासंभव प्रयोग किया हैं। लेखिका स्वयं एक प्रसिद्ध साहित्यकार हैं, चाहती तो आत्मकथा में भाषा, व्याकरण, प्रतीक का आलंकारिकता का सहारा लेकर और भी

साहित्यिक भाषा में लिख सकती थी लेकिन भाषा के सौन्दर्य पर ध्यान देने में शायद, लेखिका अपने लक्ष्य से भटक जातीं क्योंकि आत्मकथा का आवश्यक तत्व ही तटस्थता हैं फिर यथार्थ का चित्रण करने में भी असुविधा होती है। लेखिका ने भाषा के फेर में नहीं पड़कर अपने मन पर लगे घावों को पाठकों के सामने यथातथ्य प्रस्तुत करने का साहस किया है। उसमे लेखिका ने उसके मन में जो भी शब्द किसी व्यक्ति विशेष के लिए आये हैं। उनका यथातथ्य प्रयोग आत्म कथा में किया है।

"एक अजीब सा सम्मोहन जरूर था उनके व्यक्तित्व में कि लोग उनके सामने अपने को निःसंकोच भाव से उडेलने में झिझकते नहीं। लेकिन अपनी व्यक्तिगत बात किसी के साथ शेयर करना तो दूर वे होंठो पर भी नहीं लाते–अपने अंतरंग से अंतरंग मित्र के सामने भी मेरी शब्दावली में एक ही शब्द हैं इसके लिए "घुन्ना घट्ट" जो राजेन्द्र पर भी पूरी तरह लागू होता है।" – 88

लेखिका एक साहित्यकार होने के नाते अपनी आत्मकथा में चटकीली भाषा एवं यथार्थता के नाम पर आपत्तिजनक चित्रों को भी खींच सकती थी लेखिका का उद्देश्य व्यावसायिक नहीं होकर सामाजिक सरोकारों पर आधारित था जैसा कि लेखिका ने लिखा है–

"मेरी समझ में एक लेखक की और उसके लेखन की असली कसौटी हैं– उसकी संवेदना, उसके सामाजिक संस्कार और उसका अभिव्यक्ति कौशल। अगर इस पर कोई रचना खरी उतरती है तो मेरे लिए इस बात का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है कि वह पुस्तक में छपती है, मंच पर प्रदर्शित होती है या दूरदर्शन पर प्रसारित होती है। इसके बावजूद अगर कोई मेरे इस सारे लेखन को व्यवसायिक कहकर खारिज करना चाहता है तो पूरी तरह स्वतंत्र है वह।" – 89

लेखिका ने साहित्यिक रचना की सफलता के लिए भोंड़े और बचकाने शिल्पगत प्रयोगों के बजाय सिर्फ जीवन दृष्टि और मूल संवेदना की अभिव्यक्ति की है। नयापन तो होता है नजरियें में आपके मूल्यबोध में आपकी संवेदना में जैसा कि लेखिका ने अपने विचार आत्मकथा में प्रकट किए है–

“उन्होंने कभी भी राजेन्द्र की आरम्भिक कहानियों जैसे भोंड़े और बचकाने शिल्पगत प्रयोग नहीं किए। न तो इस तरह के प्रयोग 'नए का' निकष बन सकते हैं और न ही परिमाण ना संख्या श्रेष्ठता की कसौटी।

नयापन तो होता हैं आपके नजरिए में–आपके मूल्यबोध में–आपकी संवेदना में।”
– 90

लेखिका ने एक विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ अपना जीवन साझा किया था लेकिन अपनी आत्मकथा में सिर्फ उसी को केन्द्र बनाकर अपने उद्‌गार प्रकट नहीं किए वरन अपने आसपास के परिवेश, सामाजिकता, लेखकीय समाज, आधुनिक समाज का तनाव, सत्रांस, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, आत्मविश्लेषण सभी को एक सामान्य भूमि से परे ले जाकर पाठकों को एक लेखक के जीवन के सच तक पहुंचाने का कार्य किया है। लेखिका ने जीवन में इतना कुछ सहा हैं कि एक विशिष्ट व्यक्तित्व होते हुए भी स्वयं को हमेशा एक सामान्य भारतीय नारी के दृष्टिकोण से ही देखा तथा अपने जीवन में उतारा जैसा कि उन्होंने लिखा है।

”अजीब विडम्बना ही है यह मेरे जीवन की घर के रोजमर्रा के कामों में न मेरी कभी कोई दिलचस्पी रही न नियमित रूप से मैंने उन्हें कभी किया (गनीमत इतनी हैं कि जानती सब हैं) पर मानसिकता शायद मेरी बिल्कुल घरेलू औरत की ही है और मेरी यह असलियत मेरी शक्ल पर खुद ही पड़ी है तभी तो साक्षात्कार के लिए आई एक छात्रा ने कह ही दिया था, 'हाय, हम तो इतना डर रहे थे आपके पास आने में, पर आपको देखकर–आपसे बात करे तो लगता ही नही कि हम किसी बड़ी लेखिका से मिल रहे है।”
– 91

ऐसे विशाल व्यक्तित्व की स्वामिनी लेखिका जिसका दिल ही नहीं आत्मा भी उतनी ही कोमल है उनसे किसी क्लिष्ट रचना की आशा कैसे की जा सकती है? वह जिस जमीन से साहित्य संसार में आई थी वहां से धार्मिक संस्कार, आस्था, विश्वास, रीति रिवाज को साथ लेकर आई थीं उन्हीं संस्कारों की बदौलत कभी अपने पर गुमान नहीं किया एवं स्वयं को सामान्य जन मानते हुए अपनी रचना को भी भाषा के माध्यम से सामान्य जन के पढ़ने समझने और एक भारतीय स्त्री को स्वयं को ढूंढ़ने को विवश कर दिया है।

# <u>असाधारण</u>

मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल की वह प्रतिभा है जिसने अपने रचना संसार से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। मोहन राकेश का जीवन असाधारण रहा ऐसी ही असाधारण उनकी आत्मकथा है, जो अपने आप में असाधारण है क्योंकि उसे लेखक ने अपने आत्मतोष के लिये लिखा था, यह सोचकर नहीं लिखा था कि इससे पाठकों को क्या संदेश जायेगा या पाठकों के सम्मुख मेरा चरित्र किस तरह का अवतरित होगा या मेरे आस पास के लोगों के बारे में जो लिख रहा हूँ उसे कभी ये पढ़ लेंगे तो क्या सोचेंगे बल्कि उस व्यक्ति ने निश्छल भावना एवं तटस्थता के साथ अपनी डायरी लिखी जिसे उनके मरणोपरांत उनकी पत्नी ने छपवाया था।

मोहन राकेश की डायरी सर्वप्रथम असाधारण इसलिए है कि उसमे अक्रमबद्धता है, बीच–बीच में कई दिनों तक नहीं लिखी गई उसके बाद करीब दो साल तक का अंतराल आ गया हैं अक्रमबद्धता के परिणाम स्वरूप भी जो निखार आया है एक प्रवाह आत्मकथा में बना रहा है। आत्मकथा में शुद्ध हिन्दी ही नहीं बल्कि शुद्ध अंग्रेजीं में भी कई जगह लिखा गया है जो कि सामान्य परिक्वता है। जन मानस के समझने में बाधक है क्योंकि हिन्दी तो हमारी मातृभाषा हैं लेकिन अंग्रेजी को पूरे भाव सहित समझना मुश्किल हो सकता है।

I was gay and quit at else with myself. I am convinced that he one person on whom one can and should depend is ones ouem self. People may be uliser then you, put they certaintly cannot know you better then you do - 92

लेखक स्वयं साहित्यकार थे इसलिए उनकी भाषा साहित्यिकता का पुट लिए होना स्वाभाविक हैं लेकिन कई जगह प्रसंग को समझने में बाधा उत्पन्न हुई हैं क्योंकि लेखक ने अपने मन के भावों को संकेतात्मक भाषा में लिखा हैं जिसे वही जान सकते थे। जो सामान्य बात थी उसे तो उन्होनें फिर भी साधारण भाषा में लिखा हैं लेकिन जो बातें उनके मन मे गहरे तक पैठ बना गई थी उसे उन्होंने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए लिखा है।

"किसी भी मार्ग के अवलम्बन में अवलम्बन ही आश्वासन हैं। निरन्तर अनुसरण ही तृप्ति है। जहां 'क्या होना था' 'क्या होना चाहिए' का कोई महत्व नहीं रह जाता– क्यों कि कोई कार्य नही है क्योंकि करने का परिणाम ढोना आवश्यक है।" – 93

"प्रवाह स्नेह का धर्म हैं जैसे जो प्रवाहमान है। वह सुन्दर झील में बंधकर नहीं रह सकता। बांध दो तो वह बदबू देने लगता है यदि वह प्रवाह पैर के तलवे भिगोकर भी निकल जाता हैं तो पुलक का वह क्षण अभिनन्दनीय है।'' – 94

लेखक की आत्मकथा असाधारण इसलिए भी हैं क्योंकि आत्मकथा में हिन्दी ही नहीं बल्कि अंग्रेजीं, अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत, स्थानीय एवं पंजाबी भाषा के शब्दों का प्रयोग मिलता है जो कि अपने आप में नवीन प्रयोग है।

"इस लड़के को तायाजी की शह ने खासा बददिमाक बना दिया हैं। यह न जाने अपने को क्या समझने लगा हैं? परिवार का जीनियस हीरो। यही इस लड़के के जीवन की ट्रेजेडी है। छोटे मोटे काम की और इसकी अभिरूचि ही नहीं होती– ये लोग न जाने इतने secretive क्यों हैं? – 95

लेखक ने जब भी डायरी लिखी होगी तो किसी सृजनात्मक विचारधारा से नहीं लिखी होगी लेकिन फिर भी लेखक की डायरी में प्रकृति वर्णन , व्यक्ति वर्णन, सौन्दर्य बोध, दर्शन, आध्यात्म, धर्म, परिवेश, सन् 63 से लेकर 64 तक की गई यात्राओं के दिन एवं स्थान के साथ वर्णन , इसके साथ ही सन् 1925–27 से लेकर 1956 तक लेखक के पहले घर से लेकर अंतिम घर का पता एवं आस पास के लोगों के नामों का वर्णन अपने आप में असाधारण है शायद ही किसी आत्मकथा में ऐसा वर्णन देखने को मिले। यह सारा विवरण लेखक की आत्मकथा को विश्वसनीय बनाता है।

"1949 दसवा घर माहिम मिस्टर एण्ड मिसेज वढोरा–सोनी, तनेजा–

1949 ग्यारहवा घर–लारेंस होटल मिसेज लारेंस, मैथिलोन, लीला, सावित्री, भाभी, इन्द्रमिथ चमन राजबेदी।

1949 बारहवा घर–उठ, प्रेम लेन नई दिल्ली अविनाश, भय्याजी, भाभी, सन्तोष, शीला, सतिन्दर कुमार आनन्द,मदन, मुटयानी, रमा, स्वदेश, बुरी चौधरी – 96

मार्च–1963 बम्बई से दिल्ली वाया लश्कर

मार्च–1963 दिल्ली से शिमला कुफ्री

अप्रैल 1963 कुफ्री से दिल्ली

दिल्ली से लश्कर – 97

आत्मकथा अधिकांशत जीवन के उत्तरार्ध में लिखी जाती है जिसमें लेखक फ्लैश बैक पद्धति के द्वारा वर्तमान से भूतकाल में जाकर स्मृतियों के सहारे अपने जीवन को लिखना आरम्भ करता हैं लेकिन मोहन राकेश की डायरी अपने आप में असाधारण है क्यों कि इसमें लेखक को स्मृतियों पर निर्भर नहीं होना पड़ा तथा जीवन में अच्छा बुरा जो भी घटित होता रहा उसे यथार्थ रूप में तटस्थ भाव से पन्नों पर उतारते गये जिसकी मौलिकता पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लग सकता। 'मोहन राकेश की डायरी' एक असाधारण आत्मकथा है, जो भाषा, शैली, रोचकता, प्रवाहात्मकता, विधा के रूप में भी एक नवीन प्रयोग है।

डॉ0 हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा 'बसेरे से दूर' हिन्दी साहित्य की असाधारण आत्मकथा है भाषा की दृष्टि से आत्मकथा का प्रारम्भ ही ईट्स द्वारा लिखित पंक्तियों से हुआ हैं।

"The work is done grown old he thought, according to my boyish plan, let the fools rage, I sureved in nougat, something to perfection brought, but louder song that ghost "what then" - 98

लेखक ने आत्मकथा में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजीं, उर्दू, फ्रेंच, पंजाबी, स्थानीय भाषा के शब्दों का यथा योग्य प्रयोग किया हैं। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजीं के उच्च कोटि के एवं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

"द्वारिका जाहू जू, द्वारिका जाहू जू, आठहू जाम यहैं जक तेरे" – 99

"तहजीब व तमद्दुन व तालीम के गढे छीले मतकल्लिम पुतले"

वहां शीनफाक से दुरूस्त आदाब अलकाबर तो बक सकत था पर बवक्ते रूखसत" –100

"बहुरानी के सोहाग और बचवन के भाग से कुशल छेम से लौटो" – 101

"मुझे 'क्वारटीन' में डाल दिया जाएगा–'क्वारटीन' शायद फ्रेंच शब्द हैं। जिसके अर्थ है चालीस" – 102

"कामा–तुरणान भयं लज्जा कामात जायते क्रोध" – 103

आत्मकथा की असाधारणता की एक बात और हैं कि लेखक शोधार्थी और आत्मकथा लेखक होंने से पूर्व एक कवि है। उसके सृजन से उसका कवि क्रियाशील न हो ऐसा तो असंभव हैं इसलिए आत्मकथा में गद्य के साथ पद्य का भी भरपूर प्रयोग मिलता है। यदा कदा कविता की पंक्तियों के साथ ही गीत भी मिल जाते हैं जो कि चंद पंक्तियों में नहीं बल्कि पूरे पूरे आत्मकथा में समाहित हैं।

"तुम्हारे नील झील से नैन,

नीर निर्झर से लहरे केश"

"तुम्हारे तन का रेखाकार

वही कमनीय कलामय हाय

कि जिसने रूचिर तुम्हारा देश

रचा गिरि ताल माल के साथ" – 104

'बसेरे से दूर' आत्मकथा में अंग्रेजीं, संस्कृत, हिन्दी, स्थानीय भाषा की कहावतों का भी प्रयोग किया गया हैं। इसके अतिरिक्त विदेश की सामाजिक संस्कृति के दर्शन भी होते है डबलिन की अंतर्राष्ट्रीय अश्व प्रर्दशनी का वर्णन एवं यूनानी दंतकथा का उल्लेख भी अद्भुत है।

"यूनानी दंत कथा के अनुसार पंजेरा एक बाला थी, जिसे देवताओं ने प्रोमीथियस के भाई एपीमिथियस की पत्नी के रूप में भेजा था और दहेज में उसे एक संदूक दिया था पर उसे खोलेने की मनाही कर दी।" – 105

लेखक की आत्मकथा असाधारण इसलिए भी है कि वो पूर्णतः भाषा, ज्ञान का भण्डार है क्योंकि आत्मकथा के इस खण्ड में लेखक ने अपने शोध प्रवास के समय एवं घटनाओं का वर्णन किया हैं तथा पग पग पर जो भी कठिनाई आई या अच्छे विद्वानों के

बारे में जानने या पढ़ने को मिला इसे लेखक ने आत्मकथा में भी उभारा है जो कि शोधार्थियों के लिए दुर्लभ है।

लेखक की आत्मकथा में धर्म, दर्शन, इतिहास, सौन्दर्य शास्त्र, स्थापत्य, मूर्ति चित्रकला, संगीत, नृशास्त्र, पुरातत्त्व, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, कानून, मनोविज्ञान, तकनीकी, साहित्य, कवि, कलाकार, प्रकृति सभी के दर्शन यथायोग्य होते हैं तथा सभी के बारे में कुछ न कुछ भाषिक ज्ञान अवश्य प्राप्त होता है जो कि अपने आप में असाधारण है।

**निष्कर्ष –** उपर्युक्त आत्मकथाओं का अध्ययन विश्लेषण करने पर निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि 'बसेरे से दूर' एवं 'मोहन राकेश की डायरी' हिन्दी साहित्य की असाधारण आत्मकथाएँ है। जो कि अनुभूति ही नही बल्कि अभिव्यक्ति के स्तर पर भी अनुपम हैं। हिन्दी साहित्य के लिए डायरी एक नवीन सफल प्रयोग कह सकते हैं। अगर यह उनकी मृत्यु के पूर्व प्रकाश में आती तो कितने लोगों को उनका दुश्मन बना सकता थी क्योंकि वे लोगों के बारे में क्या सोचते हैं यह उन लोगों तक पहुंच जाता जो कि कागजों में दबा हुआ था। लेखक ने किसी दुर्भावनावश नहीं लिखा बल्कि उनके मन पर जो भी प्रभाव पड़ा उसी को कलमबद्ध करने का प्रयास किया है। 'बसेरे से दूर' आत्मकथा किसी भी शोधार्थी के लिए दिशा सूचक यंत्र का कार्य कर सकती है कि एक शोधार्थी को कितना संघर्ष करना पड़ता है लेकिन उसे अपने लक्ष्य पर लगन व एकाग्रता के साथ आगे बढते चले जाना चाहिए एक दिन मंजिल पर अवश्य पहुंचेगा। इस तरह दोनों आत्मकथाएँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य कृतियाँ हैं।

## साहित्यिक

साहित्य उसी रचना को कहा जा सकता है जिसमे कोई सच्चाई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़ एवं परिमार्जित हो, जिसमे दिल और दिमाग पर असर न डालने की क्षमता हो।

रचना प्रक्रिया की विशिष्टता भी लेखक के सम्बन्धित व्यक्तित्व का चित्रण करती है। बाहर की विस्तृत दुनिया के साथ ही साथ लेखक के भीतर अपना आकाश होता है, एक अलग संसार होता है। कई बार बाहर जो कुछ घटित हो रहा हैं वह इतना पीड़ाकर होता है कि वह भीतर बैठकर लेखन के माध्यम से फूट पड़ता है। यह दर्दीली स्थिति

कई माध्यम से फूट पड़ती है। यह स्थिति कोई प्रसंग हो सकता है, कोई क्षण हो सकता है या कोई समूची घटना ही। किन्तु इतना निश्चित है कि एक सच्चा लेखक भीतर और बाहर की इन दो सर्वथा भिन्न दुनियाओं में जीता मरता है दोनों में जो भी हलचल होती है वही उसका भोगा हुआ यथार्थ बन कर प्रकट होती है।

सृजनात्मक परिवेश को आत्मसात करते हुए व्यक्ति जब सृजन कर्म करता है तो अनुभूतियों के आयाम शब्दाकार हो कृति के रूप में सामने आते है, फिर यह कृति साहित्य की किसी भी विधा में हो, उसमें समाहित संवेदना, समाजिक सरोकारों के विविध सन्दर्भों को उजागर करती है।

किसी भी साहित्यिक विधा में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण को लेखक अपने पात्रों के सहारे अभिव्यक्त करता है, उसे परिवेश के माध्यम से आगे बढाता है और संवाद के जरिये गतिमान रखता है। इस प्रक्रिया में वह रचना निर्माण के विविध तत्वों का संयोजन तो करता ही हैं, उनका समन्वय कर विषम वस्तु को उजागर करता है। इसके साथ ही उनका विश्लेषण एवं विवेचन भी प्रस्तुत करता है जिससे कथ्य में छिपा उद्देश्य और संदेश परिलक्षित होता है।

किसी वस्तु के निर्माण का ढंग या क्रिया अथवा इन तत्त्वों का समुचित समायोजन जिनके उपयोग सें किसी नवीन रचना को जन्म मिलता है जब रचनाकार के भाव अथवा विचार प्रविधि के सहारे भाषा का परिधान धारण कर अथवा लिपिबद्ध स्वरूप में हमारे समीप उपस्थित होते हैं तब वे अमूर्त अथवा अलक्ष्य न रहकर मूर्तवान और साकार हो जाते हैं। वह ढंग, विधान या तरीका होता है, जिसके माध्यम से किसी लक्ष्य की पूर्ति की गई हो। यह लक्ष्य भौतिक जीवन में किसी वस्तु अथवा मनोवांछित तत्त्व प्राप्ति से सम्बन्ध रखता हैं और कला के क्षेत्र में इस लक्ष्य से अभिप्राय हैं। सम्पूर्ण भावाभिव्यक्ति का प्रकार कला के विभिन्न तत्वों अथवा उपकरणों की योजना का यह विधान यह ढंग जिसमें कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो जाये और साधारणीकरण की प्रक्रिया द्वारा पाठक को उसी भाव भूमि पर ले जाने का सामर्थ्य रखती हैं वही साहित्यिक कृति है।

हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा हिन्दी साहित्य संसार में एकदम नया कलेवर लेकर अवतरित हुई है। साहित्यकार का रचना संसार आधुनिक काल के रचना संसार से भिन्न वर्तमान परिवेश, सोच, सजृनात्मकता, प्रतीक, बिम्ब, नवीन अर्थ बोध से

परिपूर्ण हैं। साहित्यकार की आत्मकथा तो साहित्य का अभिन्न अंग हैं ही लेकिन उसमें समाहित साहित्य संसार का वर्णन भी साहित्य एवं पाठक के लिए अभिन्न हैं।

कमलेश्वर की आत्मकथा में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी, तत्सम, तद्भव, फ्रेंच, शब्दों का प्रयोग हुआ हैं जैसे–

"मलाड पहुंचने में देरी भी हो रही थी, अव्यक्त तकलीफ से मुक्त होने के लिए आखिर उसने गाड़ी स्टार्ट की, उसने टिशू पेपर से अपनी आँखें पोंछी– बिना चश्मा हटाये हुए वह खामोश बैठी रही । कुछ दूर जाकर उसने मलाड का रास्ता बताते हुए गाड़ी मोड़ने को इशारा किया और धीरे से बोली" – 106

लेखक की आत्मकथा में लेखक अपने पूर्ववर्ती परम्परागत मान्यताओं, मूल्यों तथा जीवन्त समस्याओं के साथ वहीं नहीं रुका प्रत्युत उससे बहुत आगे बढ़ गया है। आंतरिक उत्पीड़न, तनाव, आक्रोश आदि का प्रस्फुटन तथा अनुभूति और मानव मन की अनेक भंगिमाएं लिए भाषा के माध्यम से विविध दिशाओं में फूट पड़ी हैं। लेखक की आत्मकथा में नयी भाषा का निर्माण नवीन बिम्बों का प्रयोग, अनछुए प्रतीकों की खोज और युगानुरूप अभिव्यक्ति का प्रांजल निर्वाह किया है। लेखक की शैली में नवीनता और विविधता के साथ बिम्ब, प्रतीक, जटिल भावबोध आदि के प्रचुर से आत्मकथा की कलात्मकता में श्री वृद्धि हुई हैं। लेखक ने 'जलती हुई नदी' से रहस्यमयी औरतों की दुनिया के दर्शन करवाये। बिल्कुल यथार्थ रूप में वर्णन किया है सुन्दर तरीके से लिखा है।

"किसी भी औरत में शायद यही खासियत होती है कि कुछ और लगते लगते कुछ और लगने लगती है। उसके भीतर शायद मोम का कोई हिमालय होता है जिसमें से कोई गंगा फूटने लगती हैं......या कभी कभी कोई गटर गंगा।" – 107

शबनम की माँ जब लेखक को यह बताती हैं कि वह आपको चाहती है लेकिन आपसे शादी करके आपका घर नहीं बिगाड़ना चाहती आप उसे समझाइये वो आपकी बात मानेगी मैंने उसके लिए एक लड़का देखा हैं आप कहेंगे तो शायद मान जाएंगी। इन शब्दों को सुनकर लेखक की जो स्थिति हुई उस मानसिक स्थिति का भाषा के माध्यम से बहुत ही सुन्दर वर्णन किया हैं।

"उसके मन पर हिमालय की सारी चट्टानों का बोझ था और ऐसे लगा था कि हिमालय की हर चट्टान से गंगा नहीं निकलती है, जिस चट्टान से गंगा निकलती है उसका नाम गोमुख नहीं–शबनम हैं।" – 108

लेखक की आत्मकथा में अलंकार एवं रस का भी भाषा के माध्यम से यथायोग्य एवं उपयुक्त वर्णन मिलता हैं। लेखक ने फिल्मी दुनिया के सच को प्रस्तुत करने के लिए आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया हैं।

"अजीब थी यह दुनिया.....रंगीन, संगीन और पाप की भावना से विहीन। यहां आकर पाप की परिभाषा बदल जाती है। औसत नैतिक वर्जनाओं की धज्जियां उड़ जाती हैं और बहते पानी में जैसे हर व्यक्ति नंगा हो जाता हैं...कुछ वैसे ही वह ऊपर से नहाता धोता रहता हैं पर नीचे से नंगा ही रहता है।" – 109

लेखक ने फिल्मी दुनिया में रहते हुए प्रसिद्धि प्राप्त की थी लेकिन यह दुनिया उसके संस्कारों की दुनिया से बिल्कुल विपरीत थी। इस फिल्मी दुनिया के लिए लेखक ने स्वयं एक दार्शनिक सूक्ति इजाद की थी जैसा की लेखक ने लिखा हैं।

"कोई भी नशा, किसे अच्छा नहीं लगता?
"सेक्स भी तो एक नशा हैं।"

उसने यह दार्शनिक सूक्ति उस दिन ईजाद की थी, जिस दिन उसी निर्माता–निर्देशक, अभिनेता के पास से मेहनताने के पैसों का एक मोटा पैकिट आया था सैकिण्ड इन्स्टालमेन्ट। पैकिट देते हुए उसके प्रोडक्शन मैंनेजर ने कहा था–सर। मेरी एक दोस्त हैं....बहुत टेलेन्टेड एन.एस.डी. में रही हैं।" – 110

मन्नू भंडारी की आत्मकथा "एक कहानी यह भी" सीधी, सरल, सपाट शब्दों में लिखी गई आत्मकथा हैं। जिसके माध्यम से लेखिका ने सिर्फ अपने साहित्य संसार एवं अपनी जिंदगी के अनछुए पहलुओं से पाठकों को रूबरू कराना चाहा हैं। इसके लिए लेखिका ने आत्मकथा में रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाले शब्दों का ही प्रयोग किया हैं। लेखिका की आत्मकथा में क्लिष्ट एवं दुरूह शब्दों का प्रयोग अल्प रूप में ही हुआ हैं। शब्दों के माध्यम से लेखिका ने कहीं भी पाठकों पर यह छाप नहीं छोड़नी चाही कि वह प्रसिद्ध साहित्यकार की आत्मकथा पढ रहे हैं बल्कि एक आम हिन्दुस्तानी स्त्री की आत्मकथा पढ रहे हैं, जिसे वे हर दिन अपने आसपास देखते है, लेखिका ने अपनी

आत्मकथा में स्वयं का व्यक्तित्व वर्णन एवं हीन भावना में ग्रसित होने का एकदम सजीव वर्णन किया है।

"मैं काली हूँ बचपन में दुबली और मरियल भी थी गोरा रंग पिताजी की कमजोरी थी सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी खूब गौरी, स्वस्थ और हंसमुख बहिन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उसकी प्रशंसा ने ही क्या मेरे भीतर ऐसी गहरी हीन भाव की ग्रन्थि पैदा नहीं कर दी कि नाम सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक कि मैं उससे उबर नहीं पाई? – 111

लेखिका की आत्मकथा में कई जगह पर ऐसे प्रसंग भी आये हैं जहां लेखिका ने शब्दों के माध्यम से व्यंग्य उकेरा हैं। नेहरू जी की मृत्यु के दिन राजेन्द्र जब शराब पीकर घर आये तो लेखिका ने व्यंग्य करते हुए कहा'

"पीकर आये हैं ? बहुत खुशी का मौका है न जो जश्न मनाकर आ रहे हैं" – 112

लेखिका के मुंह में ऊपर के तालू पर छाला हो गया तथा लेखिका को बेहद तकलीफ में छोड़कर राजेन्द्र जब बाहर चले जाते हैं तब लेखिका का ईलाज प्रतिभा बहन एवं नारायण साहब करवाते हैं और जब राजेन्द्र लौटकर आते हैं तो नारायण साहब व्यंग्य में कहते हैं।

"करीब साढ़े दस बजे राजेन्द्र आये तो उन्होंने बड़े व्यंग्य से कहा, 'कहिए, कहां से तफरीह कर के लौट रहे हैं" ? – 113

लेखिका ने विभिन्न स्थलों पर विशेषण का भी प्रयोग किया है, जिसने आत्मकथा की सुन्दरता को ओर अधिक बढ़ा दिया है। जब राजेन्द्र से मीता की शादी नहीं करने के बारे में पूछा जाता हैं तो कहते हैं।

"फिर आपने मन्नू से शादी क्यों की ?"

फिर वही ईमानदार स्वीकारोक्ति कि "यह सही हैं कि प्रेम मेरा उसी से रहा पर घर बनाने के लिए वह ठीक नही थी क्योंकि वह बहुत ही दबंग, अक्खड़ और डामिनेटिंग है।" – 114

लेखक जब भी किसी वातावरण, परिवेश या किसी अनुभूत्यात्मक प्रसंग का चित्रण करता है तब उसकी भाषा प्रायः चित्रमय हो जाती है लेखिका ने आत्मकथा का प्रारम्भ ही अपने बचपन के मौहल्ले के घर से किया है।

"अजमेर बृह्मपुरी मौहल्ले के उस दो मंजिला मकान से जिसकी ऊपरी मंजिल में पिता का साम्राज्य था, वहां निहायत अव्यवस्थित ढंग से फैली बिखरी पुस्तकों पत्रिकाओं और अखबारों के बीच वे या तो कुछ पढ़ते रहते थे या फिर डिक्टेशन देते रहते थे। नीचे हम सब भाई बहिनों के साथ रहती थी हमारी बे पढी लिखी व्यक्तित्वहीन माँ।" – 115

लेखिका ने आत्मकथा में मुहावरे कहावतों, सूक्तियों का भी प्रयोग किया हैं। "प्रतिभा और उस पर मुलम्मा चढा देशी विदेशी रचनाओं के विस्तृत अध्ययन का" – 116

"जैसे ही कुसुम जी आई उलटे पैरों मैंने उन्हें दौड़ा दिया" – 117

"इसमें कोई सन्देह नही हैं कि हमारी मुलाकातों पर राजेन्द्र के मन में कभी कोई सलवट नंही पड़ी पर उन दोनों ने अपने अपने लिए जो लक्ष्मण रेखा खींच ली थी" – 118

लेखिका की आत्मकथा में लगभग सभी रसों का परिपाक हुआ है लेकिन करूण रस का बहुत ही सुन्दर चित्र उपस्थित किया है।

"एक आघात की तरह राकेश जी की आकस्मिक मृत्यु का समाचार पढकर पलंग पर औंधे लेटकर राजेन्द्र इस तरह फूट फूट कर रोये थे मानो मन का कोई बहुत ही नाजुक सा तार टूट गया है। इस तरह तो इन्हें मैंने अपनी माँ और बहिन की मृत्यु पर भी रोते नहीं देखा था।" – 119

प्रभा खेतान की आत्मकथा "अन्या से अनन्या" अत्यंत आकर्षक, सुललित, मनोरम, रोचक, रमणीय होने का कारण ही सुगठित भाषा, घटनाओं में क्रमबद्धता रहस्य स्मृति प्रवाह का अनवरत चित्रण करना है और वहां आत्मविश्लेषण करते हुए मनोविश्लेषण द्वारा मन की गुत्थियां सुलझानी है। इन सबकी ठीक ठीक पहचान और यथावसर विनियोग ही लेखक को उत्तम कथाशिल्पी बनाने में समर्थ होता हैं। आत्मकथा के प्रारम्भ में ही लेखिका ने भारतीय परम्परा का वर्णन करते हुए स्वयं के भीतर बची हुई स्त्री को प्रणाम किया है।

"सती को प्रणाम। सती माँ। तेरा आदर्श मेरे सामने हमेशा रहा, मैंने खुद को उसी परम्परा में ढालने की कोशिश की। मेरे लिए सती का अर्थ था पति की एक निष्ठ भक्ति सूचना, समर्पण, किसी पराए मर्द की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखना लेकिन आज मेरे भीतर की बची हुई स्त्री को प्रणाम। – 120

लेखिका ने भाषा का सहारा लेकर परम्परा को उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करते हुए कथा का आरम्भ किया। इस अन्तः केन्द्रित वाक्य संरचना में लेखक ने अत्यंत सुन्दर रीति से आत्मकथा कहने के विभिन्न प्रकारों और प्रयोजनों को स्पष्ट कर दिया है। शब्दों के प्रयोग की सार्थकता व औचित्य अत्यंत रमणीयता प्रदान करता है।

शब्द बिम्ब प्रस्तुत करते हुए वे एक साक्षात दृश्य उपस्थित करने की सामर्थ्य रखती है। जैसे

"लंच के बाद मुझे हिल हैल्थ क्लब ले गई। वहां एक अलग ही नजारा था। एक लम्बा सा हॉल था जिसमें करीब बीस पच्चीस कसरत करने की अलग–अलग मशीनें थी। इन मशीनों में से कुछ पर स्त्रियां या स्थिर साईकिल पर अपने पैर चलाए जा रही थी। कुछ "वाईब्रेशन बेल्ट" पर थी तो कुछ नाव वाली मशीन पर यंत्र चालित नाव चलाए जा रही थी। कुछ 'रोलर मशीन पर झुकी हुई पेट की चर्बी को मसल रही थी। पूरे हॉल में गुलाबी आभा फैली थी। दीवार पर रंग भी गुलाबी था" – 121

आत्मकथा में लेखिका ने विभिन्न स्थलों पर प्रतीकात्मकता का प्रयोग किया हैं उससे रचना अत्यधिक आकर्षक बन गई है।

"मैं स्मृतियों की पहाड़ी पर संभाल संभाल कर कदम रख रही हूँ। कभी आँचल झाड़ियों में उलझता हैं, कभी पैरों में नुकीलें पत्थर चुभतें हैं....कभी सामने कोहरे के बादल. ...सामने कुछ भी दिखाई नंही पड़ता....और कभी पैरों के नीचे ठंडी ओस की बूंदें, मुझे मेरे आँसुओं की याद दिलाती हुई।" – 122

लेखिका की भाषा की एक बड़ी विशेषता हैं पात्रानुकूल भाषा। यदि पात्र निम्न वर्गीय हैं तो उसकी भाषा भी अपनी ही है। लेखिका ने पात्रों के आपस व्यवहार में परिष्कृत हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हुए भी दाई माँ से उन्हीं की भाषा में बात करवायी है।

"दाई मां कहती "हमारी चार बिटियां हैं, चम्पा, चमेली, बिन्दा, और परभा।"

"दाई मां मेरा नाम प्रभा है, प्रभा बोल....परभा नहीं"

"अरे बिटियां हम का जानी गँवई मनुस" – 123

"मिसेज डयूपॉट ने मुझसे पूछा–"ब्रेकफास्ट करोगी?

"दूध और सीरियल ले चुकी हूँ।"

"अच्छा चलो काफी पीते हैं, "बड़ा खूबसूरत छोटा सा रेस्त्रा था" कैसी कॉफी लोगी ब्लेक या व्हाईट" – 124

प्रभाजी सूक्ष्मदर्शी और संवदेनशील हैं, वह बिना किसी लागलपेट के तटस्थता एवं सच्चाई के साथ यथार्थ वास्तविकता को अपनी आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त करती है। इसी यथार्थता को प्रस्तुत करने में वे सम्पूर्ण आत्मकथा में विभिन्न स्थलों पर आत्म विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा चरित्रांकन करने की कोशिश करती है जिनमें बार बार वैचारिक द्वन्द्व से गुजरती हैं लेकिन फिर भी अपना रास्ता नहीं खोज पाती।

"मैं डॉ0 साहब के परिवार में एक घुसपैठियां थी। अतः परिवार को प्रसन्न रखना मेरी पहली जिम्मेदारी थी।"

"लकीर के इस ओर मैं थी, एक दूसरी औरत के रूप में। जिसके पास अपना काम था, बैंक में कुछ पैसे थे लेकिन इन सबके बावजूद समाज की नजर में जो पथ भ्रष्ट और अपवित्र थी।" – 125

"मैं क्या लगती थी डा0 साहब की? मैं क्यों ऐसे उनके साथ चली आई? प्रियतमा, मिस्ट्रेस, शायद आधी पत्नी, पूरी तो मैं कभी नहीं बन सकती क्योंकि एक पत्नी पहले से मौजूद थी।" – 126

आत्मविश्लेषणात्मक टिप्पणियों के अवसर पर उनकी भाषा साहित्यिकता, परिष्कृतता एवं परिनिष्ठता के तेवर अपना लेती थी।"

डा0 साहब और लेखिका के सम्बन्धों के प्रसंग में भाषा शैली अतिरिक्त रूप से स्वच्छंद और असहजता के निकट होती है एकाध स्थल पर तो उसे अवांछनीय भी कहा जा सकता हैं जैसे

"मेरी देह से एक एक कर उतरते कपड़ों के साथ और भी अडचने उतरती जा रही थी। क्षण भर को, बस क्षणांश को वे रूके, मेरी नंगी, चिकनी, देह,पर हाथ फिराते हुए उन्होनें कहा "तुम कितनी कमसिन हो प्रभा" – 127

आत्मकथा में भाषा, शैली, बिम्ब एवं प्रतीकों का यथासंभव प्रयोग हैं। भाषा एवं भाव वर्ण्य विषय के अनुकूल हैं। भाषा में सरलता एवं ताजगी है। अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी, आदि शब्दों के प्रयोग से आत्मकथा की भाषा में प्रौढ़ता एवं व्यापकता आयी हैं। शैली की दृष्टि से भी वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, मनोवैज्ञानिक शैलियों का प्रयोग किया गया है।

## अतिसाहित्यिक

साहित्य दो शब्दों के मेल से बना हैं। स+हित अर्थात् जिसमें समाज हित हो जिस रचना से समाज को नई दिशा, नये विचार, नये सिद्धान्त, मिले वही साहित्य है। जो कुछ भी लिख दिया जाये वह सब साहित्य के अन्तर्गत नहीं आता। साहित्य उसी रचना को कहा जा सकता है जिसमें कोई सच्चाई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़ और परिमार्जित हो, जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने की क्षमता हो पाठकों पर अपने उद्‌देश्यपूर्ण कथानक के माध्यम से अमिट छाप छोड़ने की क्षमता रखती हो तथा जो रचना इन सभी कोणों से साहित्य की कसौटी पर खरी उतरती है वही अति साहित्यिक कृति की श्रेणी में आती है।

वस्तुतः भाव या विचार को भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जाता है और शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते है। इस प्रकार भाषा और शैली के माध्यम से भावाभिव्यक्त किये जाते हैं। एक अच्छी रचना में कृतिकार के भाव, भाषा एवं शैली तीनों का समुचित समन्वय होना आवश्यक हैं। इन तीनों का पारस्परिक समबन्ध होते होते हुए भी ये तीनों प्रायः एक दूसरे से भिन्न हैं। भाव की अनुभूति व्यक्ति के संवदेना हृदय से होती है।

जिस व्यक्ति का हृदय जितना अधिक संवेदक होगा, हृदय भावों का उद्वेग उतना ही तीव्र होगा। एक ही घटना व्यक्तियों के स्वभाव, व्यापार की दृष्टि से भिन्न–भिन्न लोगों को भिन्न ढंग से प्रभावित करती है। भाषा व्यक्ति को उसके चारों ओर के परिवेश

से प्राप्त होती है। अतः भाव और भाषा का इतना निकटता का संबंध होता है कि जितने सुन्दर भाव होंगे उतने सुन्दर वाक्यों का समावेश होगा।

डॉ0 हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा ने साहित्य के सभी सोपानों पर अपनी परीक्षा देकर अति साहित्यिक रचना का ताज अपने सिर पर पहना है। बच्चन जी स्वयं साहित्यकार, विद्वान, विभिन्न विषयों के ज्ञाता, जीवन संघर्ष से तपे हुए कुन्दन थे। अतः बच्चन जी को भाषा पर जबरदस्त अधिकार प्राप्त था। वे भाषा को साधन मानते हैं साध्य नहीं उनकी भाषा में संस्कृत की तत्सम शब्दावली का प्रचुरता से प्रयोग मिलता हैं। यही नहीं उसमें सामासिक पदावली की प्रधानता हैं। वाक्य गठन प्रायः मिश्रित एवं संयुक्त है। लम्बी–लम्बी वाक्यावली के कारण बच्चन जी की आत्मकथा की भाषा निश्चित रूप से सामान्य वर्ग के पाठक के लिये दुरूह एवं कहीं–कहीं दुर्बोध भी हो गई है।

"मधुवन पथ ने मेरे आगे रूप, रस, गंध, लय, गति सौन्दर्य, श्रृंगार, आकर्षण, प्रकाश, हास, उल्लास, जीवन, जागृति, प्राणवत्ता, प्रफुल्लता, मधुरता, मादकता, तन्मयता, आशा, आकांक्षा, विश्वास, आनन्द का एक रहस्यपूर्ण संसार ही बिछा दिया। मेरी नादानी की हद ही होती जो मैं यह न समझ लेता कि ये सबके सब अपने से विरोधी प्रच्छन्न आधार पर स्थिर होते हैं। फिर इनके प्रत्यक्ष रूप को भी मुझे स्वीकार करना, भोगना और समझना था" – 128

बच्चन जी ने जहां जहां दार्शनिक विवेचन किया है। वहा भाषा विषय के अनुरूप परिमार्जित, संस्कृतनिष्ठ एवं परिभाषिक शब्दावली से युक्त है। सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवेश तथा उस काल की काव्य भाषा के रंगो कों उभारने के लिए युग सम्बधी शब्दावली का नियोजन किया गया है। काल या कथा के संदर्भ के अनुसार शब्दावली भी संस्कृतनिष्ठ या संस्कृत युक्त होती चली गयी हैं।

"दस द्वारे का पिंजरा, तामे पंछी पौन

रहबे को आचरण हैं, जाय तो अचरज कौन।"

"मौत हमें प्राय अचरज में डाल देती है कबीर कहते हैं अचरज करने की चीज जिन्दगी है। शरीर पिंजर दस दरवाजों का हैं– गीता और श्वेताश्वर उपनिषद के 'नवद्वारपुरे' को उन्होनें 'दस द्वारे' का बना दिया हैं, सम्भवतः अनुप्रास मोह से अथवा नाभिकुण्ड या ब्रह्मरन्ध्र को दसवां खुला स्थान मानकर वैसे दोनों को खुला स्थान मानकर

कठोपनिषद की कल्पना 'पुरमेका दशद्वारम' की भी हैं। उसमें प्राण रूप पवन पंछी रहता हैं। रहता हैं, यह आश्चर्य हैं, निकल जाना स्वाभाविक हैं। – 129

बच्चन जी आत्मकथा में विशेषणों की भरमार हैं, लम्बे–लम्बे पदबंधों के बावजूद भी आत्मकथा में प्रवाह हैं।

"जब तेजी मेरे जीवन में आई तब वह पहली नारी थी, जिनमें देवी की दिव्यता, मां की ममता, सहचरी की सद्भावना और प्राणाधार की प्राणदायिनी धार का मैंने एक साथ अनुभव किया और वे मुझे प्राप्त हुई थी न मेरी खोज से, न मेरी साधना से ,न मेरे अधिकारी होने से बल्कि दैवी रहस्यपूर्ण विधान से," – 130

बच्चन जी ने अपनी पुत्रवधू में गृह प्रवेश के अवसर पर होने वाली रीति का वर्णन करते हुए नव वधू को निम्न विशेषणों से सजाया हैं।

"गृह लक्ष्मी, कुल लक्ष्मी, भाग्य लक्ष्मी

बनकर इस घर में पांव रखती हूँ"

डोली चढ़कर इस घर में आई हूँ।

टिकठी चढकर इस घर से जाऊंगी।'' – 131

कंही कंही बच्चन जी ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो सामान्य पाठक के ही नही अपितु जानकार पाठक के लिए भी शायद पहली बार ही सुनने में आये हो।

यथा रिनिहो 129 मिडिओकर–244, लबेडू–240,लिवास, खब्तुलहवास–217 फंदवाया 203, अयाचित 156, अनाहूत 198, इजलास 186,फ्रिजीडीयर 156, सिधाई 155 गो 82

(नीड का निर्माण फिर)

ओष्ठ भंग 96 वार्धक्य 146 व्यक्तित्व की शिरा 459 व तुर्बत 510 कामदानी 510

(दशद्वार से सोपान तक)

लेखक ने प्रकृति वर्णन जहां कही भीं किया है। वहाँ विशेषणों की झड़ी सी लग गई हैं किन्तु किंचित धैर्य से सामासिक भाषा को पढने पर जब अर्थ खुलता हैं तो पाठक को अभूतपूर्व आनन्द प्राप्त होता हैं।

"बाहर एक प्रचंड उद्धण्ड, प्रभंजन अपनी विध्वंसक लीलाएं करता गरज लरज रहा था। शमशेर ने धीरे से अपना हाथ बढा, मेरे कन्धों पर रख कर मुझे अपने पास खींच लिया था और हम दोनों सटकर बैठ गये थे। सच तो यह हैं कि हम दोनों ने ही इससे भीषण तूफान अपने जीवन में जाने थे जिनके साथ हमारे सलोने नीड़ के तृण पात उड़ गए थे पर उस झंझावात को रूप दे दिया था जैसे वे एक बार फिर हमारे अन्दर प्रतिध्वनित प्रस्फुटित हो गये थे। – 132

प्रकृति ही प्रकृति थी वहां एकान्त, शान्त, सुन्दर नग्न, स्वच्छ – 133

लेखक ने इस तूफान को अपने जीवन में प्रतीक के रूप में रूपायित किया है, जैसे कि लिखा है–

"मेरे लिए तो वह तूफान एक प्रतीक बन गया। आगे आगे जब जब मैंने तूफान के प्रतीक से कुछ बात कहनी चाही, वही देहरादूनी आंधी उठकर मेरी स्मृति को झकझोर गई।" – 134

बच्चन जी की आत्मकथा की भाषा में अलंकारों की प्रचुरता है। शब्दालंकार एवं अर्थालंकारों का अनुपम प्रयोग किया गया है कहीं कहीं भाषा का स्वरूप पूरी तरह काव्यात्मक हो गया है। भाषा का स्वरूप पात्र, परिस्थिति समय काल के अनुरूप बदलता रहा है–

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून

पानी गये न ऊबरे मोती, मानुष चून"

"घर में भी पानी रखना चाहिए और घर का भी पानी। पानी यानी पट, इज्जत, आबरू विचित्र है 'आबरू' भी आब से बना हैं, जिसके अर्थ हैं पानी, प्रवेश द्वार पर पिताजी ने गणपति की मूर्ति लगवाई थी। पहले माँ ने थोड़ा जल गणपति मूर्ति पर छिड़का, फिर अन्दर जाकर वही जल घर भर में।" – 135

"कुछ दिनों से उन्होंने फूलों को तोड़ना बन्द कर दिया था। फूलों को जैसे पता लग गया था कि उनका शैदा अब यहां से बिदा होने वाला है और उन्होंने दिल खोलकर अपना सारा आंतरिक सौन्दर्य बाहर उड़ेल दिया था। उस संध्या को गुलाब की क्यारियां

अपने पूरे यौवन पर थीं । जाड़े के अस्तवामित सूर्य की सुनहरी सिन्दूरी किरणों से झीनी झीनी आलोकित।" – 136

यहां लेखक ने भाषा के माध्यम से इलाहाबाद छोड़ने का रंज, दिल्ली जाने की खुशी को फूल के माध्यम से प्रतीक बनाकर अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

बच्चन जी की आत्मकथा में वाक्य लम्बे लम्बे हैं। संस्कृत के उद्धरण, सूक्तियां, अलंकार एवं मुहावरों, कहावतों का प्रयोग भी उनकी भाषा में है।

पंजाबी कहावत– साली आधी घरवाली

उत्तर प्रदेश की कहावत– आधी भाभी आधी जोय – 137 (नीड़ का निर्माण)

"ऊँची दुकान और फीके पकवान" – 138

"मट्ठा तो दूर उन्होंने दूध को भी फूंककर पीना नंही सीखा था" – 139

"जाट मरा तब जानिये जब तेरही हो जाये" – 140

"स्वारथ लाई करही सब प्रीति" – 141

एक वक्त पर एक ही काम – 142

भगवान चाहे तो भी बचा ले (सूक्ति) – 143

अंग्रेजी कहावत– "Well begun is half done" - 144

old age is seen childhood" - 145

अवधी कहावत – जिउ जाये जी कि का न जाये– – 146

अवधी कहावत– भूखे बेर – अधाने गांडा – 147

आयरी कहावत– ईट इज डेथ टू लव ए पोएट, इट इज डेथ टू बी द वाइफ आफ ए पोएट – 148

आत्मकथा में अतीत की स्मृतियां होती हैं। इसमें भी लेखक अपने अतीत जीवन को स्मृत करता है अतः पूर्वदीप्ती पद्धति का उपयोग इनकी आत्मकथा में किया गया हैं

''क्या भूँलू क्या याद करूं'' में लेखक ने अपने पुरखों को याद करते हुए उनकी कद, काठी, स्वभाव, व्यवसाय, इत्यादि के तर्क देकर आत्मकथा का यथार्थ एवं तटस्थता की कसौटी पर कसने की कोशिश भाषा के माध्यम से की है।

लेखक की आत्मकथा में अनेक स्थलों पर विवरणात्मक, वर्णनात्मक एवं नाटकीय शैली का भी प्रयोग किया गया हैं आत्मकथा में ऐसी घटनाओं का समावेश किया गया है जो पाठकों की जिज्ञासा को बढ़ाने वाली हैं तथा आत्मकथा की रोचकता में वृद्धि करती है।

''खैर छोड़िए प्रतिभावानों को साधारण मनुष्यों पर आइये, जिनमें आप हैं, मैं हूँ। आत्मा की अमरता संदिग्ध हो, पर आत्म चेतना तो असंदिग्ध है उसकी प्रासांगिकता भी मान्य हैं – जीवन के लिए, समाज के लिए, साहित्य के लिए, लेखन के लिए, विचारों अनुभूतियों के आदान–प्रदान के लिए, ऐसी स्मृति यात्रा के लिए जिस पर हम और आप निकले हैं तो आइये उसके दूसरे पड़ाव पर याद होगा आपको, मैं एक लम्बी कूद लगाकर बहुत आगे चला गया था फलांगकर उतना ही पीछे आना होगा'' – 149

लेखक की आत्मकथा में नवरसों का परिपाक हैं जिसमें विभिन्न स्थलों पर विभिन्न परिस्थितियों में रस निर्झर होकर आप्लावित हो रहा हैं। जैसे लेखक की पहली पत्नी श्यामा की मृत्यु का वर्णन करते हुए लेखक ने करूण रस का की धारा बहा दी हैं

''श्यामा का दम टूटते ही मेरी मां, मेरी छोटी बहिन जो अपनी भाभी की गम्भीर बीमारी का समाचार पाकर अपनी ससुराल से आ गई थी। शालिग्राम और उनकी पत्नी सब साथ रो पड़े। केवल मैं पथराई–पथराई आंखो से श्यामा के शव को देखता रहा न मेरे मुहं से आह निकली न मेरी आंखो से आंसू गिरे मुझे अक्षर–अक्षर में रोना जो था''–150

बच्चन जी ने ''दशद्वार से सोपान'' तक में विभिन्न साहित्यकारों की रचनाओं की पंक्तियां देकर आत्मकथा को और सुन्दर रूप प्रदान करने की कोशिश की है। इससे प्रतीत होता हैं कि लेखक का भाषा पर पूरा अधिकार था भाषा उनके इशारों पर नाचती है, जैसा कि लेखक ने विभिन्न उदाहरण देकर प्रस्तुत किया हैं

1. संस्कृत श्लोक– मनस्येकं, वचस्येकं, कर्मस्येकं, महात्मनाम –151

2. रामचरितमानस की अवधी भाषा की पंक्तियां–

''संतन के लक्षण सुनु भ्राता, अगतिन श्रुति पुरान विख्याता''–152

3. कविवर सुमन की पंक्ति

''तुम बूढ़े हो चले ? जवानी जिस पर होती रही निछावर''–153

4. कबीर की पंक्तियां– जो ते तुरक तुरकनी जाया, पेट ही काहें न सुनत कराया''–154

5. नवीन की पंक्तियां–

''पीने वालों की भाषा में अमिय गरल का भेद नही''

6. भगवती बाबू की–

''लगातार मैं पीता जाता मैं क्या जानू क्या है अमृत'' – 155

7. अकबर का एक व्यंग्यात्मक शेर–

' 'गम हैं लीडर को पर आराम के साथ'' – 156

लम्बी वाक्य रचना, लम्बे पद बंध, अलंकृत भाषा, संस्कृतनिष्ठ क्लिष्ट शब्दावली बच्चन जी की शैलीगत विशेषता है। दार्शनिक विवेचनों में भी भाषा को कुछ क्लिष्ट बना दिया हैं। बच्चन जी की आत्मकथा अति साहित्यक हिन्दी में लिखी गई हैं। प्रसंगवश लेखक ने ग्रामीण भाषा बोली और कहावतों का प्रयोग कर इसे अधिक विश्वसनीय तथा सुन्दर बना दिया हैं। कहावतों का बच्चन जी बड़ा महत्व मानते हैं क्योंकि ये लम्बे सामाजिक अनुभव पर प्रचलित होती हैं। बच्चन जी की भाषा में अनेक देशज और तदभव शब्दों का प्रयोग भी वर्णन को यथार्थ और विश्वसनीय बनाने के उद्देश्य से किया गया है बच्चन जी का भाषा पर पूरा अधिकार हैं। वे सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों विचारों को अपनी भाषा द्वारा व्यक्त करने में समर्थ हैं। अनुच्छेद योजना, वाक्य योजना, शब्द विन्यास सुन्दर हैं। उन्होंने उर्दू, फारसी, शब्दों का शुद्ध रूप में प्रयोग किया हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि आत्मकथा तथ्यों की दृष्टि से तो सफल है ही अपने प्रभाव तथा प्रेरणा दायक गुण के कारण भी आत्मकथाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा तीन खण्डों में लिखी हैं। जिनके शीर्षक निम्न प्रकार हैं, पंखहीन, और पंछी उड़ गया तथा मुक्त गगन में। साहित्यकार एक सदी के दृष्टा एवं भोक्ता दोनों थे जिन्होंने स्वतंत्रता पूर्व,

स्वतंत्रता मध्य एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अर्थात् स्वतंत्रता के भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों के यथार्थ से गुजरे हुए थे। इसलिए लेखक की आत्मकथा में स्वयं लेखक ही नहीं वरन एक सदी का इतिहास समाहित है।

लेखक ने आत्मकथा का आरम्भ अपनी जन्मभूमि के वर्णन से किया है। जिसमें लेखक ने शब्दों का चमत्कार प्रदर्शन करते हुए जन्मभूमि को जड़ एवं माँ से जोड़कर पाठक में आत्मकथा के प्रति जिज्ञासा जागृत की है–

'' हर व्यक्ति को अपनी जन्मभूमि से एक विचित्र प्रकार का मोह होता हैं क्योंकि वही तो होती हैं उसकी 'जड़े'। कितना प्यारा शब्द हैं यह 'जड़े'। कितनी ममता, कितना आकर्षण हैं इस शब्द मे। यह शब्द अपनी जन्मभूमि से तो हमे जोड़ता ही है साथ ही जोड़ता हैं, अपनी जन्म देने वाली जननी से भी। और व्यापक अर्थ में 'माँ' से भी। जननी अपनी जनों को प्यार करती हैं और माँ सबके जनों को प्यार करती हैं।'' – 157

लेखक की आत्मकथा की भाषा विशुद्ध साहित्यिक, परिलक्षित, हिन्दी है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रमुखता है। हिन्दी, अंग्रेजी, तत्सम, तद्भव, उर्दू, देशज, अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग किया है जैसे–

तत्सम शब्द– तन्द्रा–(70 पंखहीन), हृदय (पंखहीन–71)

स्थानीय भाषा– बहिया पसार मिले चारों भईया, नैनों से नीर ढलत आए'' (70 पंखहीन)

उर्दू– कहती हैं अम्मा यह शौकत अली की, कि जान बेटा खिलाफत पे दे दो'' (51)

अंग्रेजी शब्द – डिप्टी इंस्पेक्टर, इंफ्लूएंजा, रोलेट बिल, एक्ट, आर्डिनेंस, रेग्युलेशन, स्कूल मास्टर (पेज नं.50)

लेखक की आत्मकथा का वाक्य विन्यास पूर्णतः व्याकरणिक हैं और सुगठित है। इसमें हिन्दी की मूल प्रवृत्ति का ध्यान रखा गया है। आत्मकथा की भाषा में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग है किन्तु ये अलंकार चमत्कार प्रदर्शन के लिए न होकर विषय को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयुक्त किए गये है ''विवाह के बाद जब हमारी दूर की रिश्तेदार, एक सम्पन्न परिवार की वृद्धा, मुहं दिखाई के अवसर पर घर आई थी तो उन्होंने मेरे बाबा से कहा था 'मुरब्बी। तेरे घर में तो उड़दों में चावल आ गया।

''कैसी अछूती और अर्थगर्भित उपमा हैं यह उड़द पौष्टिक और काले होते हैं। माथे पर टीका होता है। चावल सुपाच्य, श्वेत वर्ण, और पवित्र माने जाते है। उनके बिना देव पूजन नही होता। मस्तक के टीके पर उनका विशेष ध्यान रहता हैं।'' – 158

लेखक की भाषा परिष्कृत, प्रौढ़, एवं साहित्यिक है जिसमें भाव प्रकाशन की अदभुत क्षमता है। लेखक की भाषा उनके भावों पर निर्भर थी। लेखक तथा उनकी पत्नी की बातचीत का एक अंश उदाहरणार्थ प्रस्तुत है।

''उसने एक दिन मुझसे कहा था, 'जानते हो, मैंने आपसे शादी क्यों की ?''

'सुना होगा कि मैं सुन्दर हूँ.........

'जी नही' वह तुरन्त बोल उठी।

'तो ?'

'इसलिए कि आप लेखक है।

कहकर वह सहज भाव से मुस्कराई'' – 159

आत्मकथा में कही भी बोझिलपन, उलझन, और अस्पष्टता नही है, व्याकरण सम्मत है, सामासिक पदों का सहज विधान किया गया हैं। जैसे–

युग पुरूष (116) 'सुचि–स्मिता' (88) **और पंछी उड़ गया**

'अथाह चंचल जल राशि (63) अत्यंत रूपवती, विषाल हदया (174) 'प्रेम के वट वृक्ष' (174) शतदल कमल की पंखुड़ियों–(174) **मुक्त गगन में**

लेखक की भाषा परिष्कृत हिन्दी है। जिसमें अन्य भाषाओं के शब्द भी समाहित है लेकिन बीच–बीच में तदभव या देशज शब्द नगीनों की भांति जड़ दिए गये हैं जैसे–

''तब तक माँ भी वहां आ चुकी थी। बड़े प्यार से उन्होंने मेरे दोस्त को समझाया– 'दिक्के बेट्टे, हम थारे घर की सवैया नही खा सके। अपनी माँ से कह दी जो वह अपने आप समझ जाएगी'' – 160

लेखक की आत्मकथा में जिन भी घटनाओं व्यक्ति, वस्तु का वर्णन किया गया है। उनको लेखक ने भाषा के माध्यम से तर्क की कसौटी पर कस कर उनकी सत्यता को

सिद्ध करने का प्रयास किया है जैसे अपनी जन्मभूमि का वर्णन करते हुए वहां की संस्कृति, रीतिरिवाज, मेले, आस–पास का परिवेश, व्यक्तियों का पहनावा, आदते, इत्यादि का वर्णन भाषा के माध्यम से सजीव बनाने की कोशिश की है। लेखक ने अपने पुरखों की जानकारी को भी पुख्ता तरीके से प्रस्तुत की है इसी के अंतर्गत अपनी जन्म तारीख में विरोधाभास को भी प्रमाण देकर स्पष्ट किया हैं जैसे–

मैंने ऊपर बताया हैं कि मेरा जन्म 20 जुलाई 1912 को हुआ। लेकिन मेरे सभी प्रमाणों में 21 जून 1912 लिखा हुआ हैं। यह गलती यूं हुई कि जब मैं आगे पढ़ने के लिए अपने मामा जी के पास पंजाब पहुंचा तो विक्रम तिथि को इस्वी तिथि में बदलते समय एक चूक हो गई। मेरे जन्म वर्ष में दो आषाढ थे। जिस स्कूल में मैं भर्ती हुआ, उसके क्लर्क महोदय इस बात को भूल गये और उन्होंने प्रथम आषाढ के अनुसार गणना की और इस प्रकार मेरा जन्म दिन 21 जून 1912 निश्चित हो गया'' – 161

लेखक की आत्मकथा में बीच–बीच में हास्य व्यंग्य का पुट भी दिखाई पड़ता है सामाजिक विसंगतियों को व्यक्त करने के लिए वे इस शैली का प्रयोग करते हैं किन्तु उनका हास्य मर्यादित है और व्यंग्य अमोघ है। जैसे–

''यह तेरा छोटा भाई है।''

मैं पूछता, यह कहां से आ गया ?

माँ उत्तर देती 'दाई माँ आती हैं न वही ले आई थी इसे।'

मैं कहता 'मुझे थी वही लाई थी ?'

माँ उत्तर देती 'नही, नहीं तुझे तो मैंने एक सैर अनाज के बदले तेरी भंगिन चाची खरीदा था। 'और माँ हंस पड़ती।'' – 162

लेखक की आत्मकथा में हृदय और बुद्धि का संतुलित समन्वय हुआ है। चिन्तन की गम्भीरता के साथ–साथ उसमें भावात्मकता का समावेश भी हुआ है। जहां उनका हृदय प्रधान हो गया है वहां भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं इनके वाक्य आलंकारिक और प्रश्न सूचक है, हृदय पक्ष प्रबल है और लेखक का कवि व्यक्तित्व उभरा हुआ है जैसे–

मैंने लिखा है 'बार–बार गिरते हैं। चोट खाते हैं। एक साथी तो कई फीट गहरे रपट जाते है कैसे उन्हें खींचा, कैसे बिना एक शब्द बोले एक दूसरे को सहारा दिया। उस विराट मौन को जो श्वेत अंधकार से आप्लावित था कैसे झेला हमने, उसे शब्द दिए जा सकें वैसी भाषा का अविष्कार अभी नहीं हुआ।

मृत्यु सदृश्य शीतल, निराश हो, आलिंगन पाती थी दृष्टि, पर व्योम में भौतिक कण सी घने कुहासों की थी वृष्टि'' – 163

लेखक ने आत्मकथा में पत्र शैली का प्रयोग करते हुए अपने निजी पत्रों का भी यथायोग्य प्रयोग किया है जो उनकी पत्नी तथा उनके बीच मे तुक का कार्य कर रहे थे तथा जिनसे वो अपनी हृदय की भावनाओं को एक दूसरे तक पहुचा रहे थे जैसे–

''मेरे पत्रों को फाड़ना मत। अच्छा सबको नमस्ते कहना और सरला जी से कहना कि जीजी की याद में इतना रोना ठीक नहीं। लो होल्डर की स्याही खत्म हुई। विदा रानी अनेक प्रेम चुम्बनो के साथ विदा।

तुम अगर बना सको तो तुम्हारा ही

विष्णु – 164

लेखक की पत्नी ने लेखक को लिखा–

''गन्दे लेख और त्रुटियों के लिए क्षमा चाहता हूँ। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा। अच्छा बैचेनी पढ़ रही हैं और प्यास भी बहुत लगी है इसलिए अनेकों बार प्रेमालिंगन के बाद विदा।

सबको यथायोग्य आपकी

सुशीला – 165

लेखक ने भाषा के माध्यम से प्रकृति के कोमल एवं कठोर दोनों रूपों का वर्णन किया है लेखक ने हिमालय यात्रा का जो वर्णन किया है उसमे भय के रस का वर्णन है वह रस के साथ ही प्रकृति वर्णन के भी दर्शन करा देता है।

''बजरी पानी हिमपात शुरू हो गया। अंधकार भी गहरा उठा। अब तो हम कुहरे के समन्दर में बहुत गहरे डूब गये। प्राण जैसे कांप उठे। दृष्टि अपनी रेखा से आगे जाती ही नहीं थी। पण्डा जी जो हमारे पथ प्रदर्शन थे बोले, अब लौटने की कोई उम्मीद नहीं
— 166

''अन्तर में कम्पन था पर फिर भी साहस बटोर कर मैंने पूछा—मृत्यु निश्चित है।
— 167

बच्चन जी एवं विष्णु प्रभाकर की भाषा में कलात्मकता, सहज स्वाभाविकता, चित्रोपमता, प्रौढ़ता, गम्भीरता, विषयानुकूलता जैसे गुण विद्यमान हैं। अंग्रेजीं भाषा एवं स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग इस तथ्य को पुष्ट करता है कि लेखक ने भाषा में पात्रानुकूलता का ध्यान रखा है।

दोनों लेखक की भाषा में काव्यात्मकता, आलंकारिता, प्रवाहात्मकता, का समावेश भी हुआ है। प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग भी उपलब्ध होते हैं। गम्भीर पाठकों को इन आत्मकथाओं से अवश्य आनन्द मिलेगा शायद अल्प बाधा भी उत्पन्न हो सकती है।

## लेखन भंगिमाएँ

किसी बात के कहने के विशेष ढंग को लेखन भंगिमा कह सकते हैं। यह लेखक की स्वनिर्मित होती है कि वह अपनी बात कहने के लिए कल्पना का सहारा लेता हैं या यथार्थ रूप में यथातथ्य प्रस्तुत कर देता है। किसी भी रचनाकार की रचना को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने में उसकी लेखन भंगिमा महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। जिससे रचना अपनी—अपनी पूर्ण आभा के साथ मूल उद्देश्यों और संकेत ही नहीं उन्हें प्रतिलम्बित कर सके। लिखने का तरीका भाषा के संरचनात्मक सौन्दर्य को उभारता है कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की प्रधानता लेखन भंगिमा को प्रकट करती है।

आत्मकथा में लेखक प्रथम पुरूष की कथा का वर्णन करता है। इसमें केवल एक ही पात्र विशेष का चित्रण रहता है। पात्र की स्वयं अनुभव की हुई घटना का चित्रण हैं।

## यथार्थ

यथार्थ का शाब्दिक अर्थ है जो वस्तु जैसी है, उसे उसी रूप में प्रस्तुत करना, किन्तु कला और साहित्य के क्षेत्र में लोग यथार्थवाद के स्थान पर आदर्शवाद अथवा

आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के पक्षधर रहे हैं। कोई भी साहित्यकार चाहे वह कितना ही यथार्थवादी क्यों न हो बिना कल्पना के पंखो पर सवार हुए भावजगत में परिभ्रमण नही कर सकता अतः किसी न किसी स्तर पर यथार्थवादी साहित्यकार को भी कल्पना का सहारा लेते हुए आदर्शवादिता की ओर उन्मुख होना पड़ता है यथार्थवादी कलाकार– 'जीवन क्या है' का उत्तर देता है जबकि आदर्शवादी कलाकार इस प्रश्न का उत्तर देता है कि 'जीवन क्या होना चाहिए'। यथार्थवादी साहित्यकार केवल समस्या प्रस्तुत करता है जबकि आदर्शवादी समस्या का समाधान भी देता है। यथार्थ में जीवन की विद्रूपताओं, विषमताओं, कटुताओं, एवं विसंगतियों का चित्रण होता है जबकि आदर्शवादी रचनाओं में जीवन के अच्छे पक्ष का निरूपण किया जाता है। आत्मकथा लेखन में भी यथार्थवादी एवं आदर्शवादी दोनों रूप विद्यमान है अभी हम यथार्थवादी रूप का अध्ययन करेंगे।

डॉ. प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' यथार्थवाद का जीता जागता दस्तावेज है जहां लेखिका ने स्वयं के बारे में जैसा था वैसा ही वर्णन कर दिया। जीवन की विषमता, कटुता एवं विसंगति को यथातथ्य पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर दिया । डॉ. साहब के समर्पण पर सन्देह होने पर प्रभा जी कहती हैं–

" औरत भी तो कह सकती है। तू नहीं तो कोई और सही। कम से कम एक बार किसी अन्य पुरूष की बांहो में होना महसूस कर पाऊंगी"

"और जिधर कदम नही उठाने चाहिए थे

उस और कदम उठे" – 168

"उसने मुझे छुआ........मेरा हृदय जोरों से धड़क रहा था उसने धीरे से मुझे छुआ, पहले मेरी उंगलियां फिर गालों, फिर होंठों को, धीरे से उसने मेरा आंचल हटाया।"– 169

इस तरह लेखिका ने यथार्थ बिना किसी लाग लपेट के यथातथ्य पाठकों के सम्मुख नग्न रूप में प्रस्तुत कर दिया लेखिका चाहती तो इसे भाषा के माध्यम से प्रतीकों द्वारा अपनी बात कह सकती थी लेकिन बिल्कुल खुले रूप में प्रस्तुत कर दिया ।

मोहन राकेश की डायरी पूर्णतः यथार्थवादी रचना है जिसमें लेखक के जीवन में जो भी कुछ प्रतिदिन घटित होता रहा उसका अक्षरशः वर्णन लेखनी के माध्यम से होता

रहा इसमें लेखक ने जीवन क्या हैं का वर्णन किया है वह भी यथातथ्य क्योंकि उन्होंने जो कुछ लिखा वह पाठकों पर छाप छोड़ने हेतु नहीं बल्कि स्वयं की आत्म तुष्टि के लिए लिखा इसलिए जो भोगा उसी को उतारते चले गये। लेखक की आत्मकथा में उनके जीवन में आने वाली प्रेयसियों का भी वर्णन यथातथ्य है जिसे शायद भारतीय समाज पहचान सके।

लेखक की आत्मकथा इतनी यथार्थ पर आधारित हैं कि दिनांक और समय दोनों अंकित है। जिस दिन लिखा गया था। लेखक को पता नही था कि एक दिन यह डायरी भी प्रसारित हो सकती हैं। इसलिए राजेन्द्र यादव का जो खाका उन्होंने खींचा था उसे पढ़कर खुद राजेन्द्र यादव को महसूस हुआ होगा कि यथार्थ में मेरा व्यक्तित्व यह है क्या? जैसा कि लेखक ने व्यक्ति वर्णन किया हैं।

"दिल्ली में रहकर जिस व्यक्ति को सबसे ज्यादा पहचाना वह है राजेन्द्र यादव। यह तो कहना शायद ठीक न हो कि वह मूलतः ही घटिया आदमी है– उसमें अच्छाइयां भी हैं निसंदेह– मगर वह इन्फीरियरिटी काम्पलेक्स से ग्रस्त है। उसी वजह से शायद उसमें इतनी ईर्ष्या की भावना है। वह हमेशा ही ऐसी बात करेगा जिससे तुम्हें चोट लगे, दुख पहुंचे He can not make you feel happy ! उसके लिए कुछ भी करो– वह अपनी आदत से लाचार वैसे ही हरकते करता जायेगा। – 170

आत्मकथा के भाव से यदि रचना की जाती है तो उसमें इस तरह किसी दूसरे के बारे में लिखने को नकार सकते है लेकिन यही यथार्थवादी लेखन है जिसमें किसी को भी नही बख्शा गया। जो जैसा भी है उसे उसी रूप में दर्शाया गया है। स्वयं अनिता जिसने लेखक की डायरी को मरणोपरांत प्रकाशित करवाया को भी नही बख्शा गया है।

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा यथार्थ के धरातल पर इस तरह आसीन है कि लेखक ने निजी पत्र, दिनांक, पता तक यथावत प्रस्तुत किया है।

"मामा जी भी 28 तारीख को जावेंगे और 2 तारीख को आवेंगे। हम यहां अकेले रहेंगे। आप मेरठ कब आओगी।

इसके बाद अंग्रेजीं में लिखा है–

यु आर मोस्ट ओविडियेन्ट प्यूपल, विष्णु 27–11–25

पता– सी.ए.वी. हाईस्कूल, 7 क्लास हिसार। – 171

प्रभाकर जी की आत्कथा में लेखक ने अपने पुरखों का वर्णन भी यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। जिसमें उनके खानदान को हकलों का खानदान कहा जाता था, का भी वर्णन उसी रूप में कर दिया राजवंश नाम कैसे पड़ा, बहिष्कार का दंश कैसे झेला इत्यादि घटनाएं ऐसी है जिसे लेखक ने उसी रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास  किया है।

"सुना था कि मुझसे सात पीढ़ी पहले वे मेरे एक पुरखा लाला मंगूशाह से लेकर मेरी पीढ़ी तक कोई न कोई व्यक्ति हकला होता रहा है। यह रोग संक्रामक नहीं है और न ही पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है फिर भी हीन भाव का द्योतक यह रूप न जाने कैसे मेरी अगली पीढ़ी तक अपने अस्तित्व का बोध कराता रहा।" – 172

हिन्दी साहित्य की अनमोल रचना बच्चन जी की आत्मकथा यथार्थवादी लेखन में मील का पत्थर बन पड़ी है। लेखक ने अपनी सात पीढ़ी का वर्णन उसमें गरीबी का दंश, दंतकथाएँ, लोककथाएँ, साहित्यिक रचनाओं के अंशो का वर्णन, को भाषा के माध्यम से पाठकों, को (साधारणीकरण की प्रक्रिया द्वारा) उस धरातल पर पहुँचाने का कार्य किया है।

लेखक ने अपनी स्वयं की चारित्रिक विशेषताओं दुर्बलताओं को भी भाषा का आवरण पहनाकर यथार्थवादी रूप में लिखा है, जिसमें लेखक के किशोरावस्था से ही नारी उसकी अनिवार्य आवश्यकता रही हैं जैसा कि लेखक ने लिखा है।

"नारी किशोरावस्था से ही मेरे जीवन की अंग आवश्यकता, अनिवार्यता बन चुकी थी– चाहे मुझे दुख दे, चाहे सुख, चाहे मुझे विचलित करे, चाहे शांति दे, चाहे मेरे लिए समस्या बने, चाहे समाधान। अभी तक मैं उसे खोजने नहीं गया था। वह किसी संयोग, किसी घटना, किसी विधान से मेरे समीप आ गई थी। जब वह मेरे समीप रहती थी, मुझे तन–मन से 'आकूपाइड' संलग्न रखती थी" – 173

हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर ने फिल्मी दुनिया का यथार्थ जो जिस रूप मे था उसे उसी रूप में पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयत्न किया है। फिल्मी दुनिया का ऐसा कड़वा सच जिसे सामान्य जन मानस नही जान सकता है। उसे लेखक ने अपनी लेखनी कलमबद्ध किया है।

''इस फिल्मी दुनिया में सम्बन्धों का एक अलग ही दस्तूर है। यहां हर चीज ''सक्सेस'' के पैमाने से नापी जाती है। यहां कोई किसी को भूलता नहीं, सिर्फ छोड़ देता है। यहां तक कि पति पत्नी के रिश्तों की प्रगाढ़ता भी यहां 'कामयाबी' पर टिकी होती है। यह महत्वाकांक्षी लोगों की दुनिया हैं–यहां घर बसाकर महत्वाकांक्षाएं जन्म नहीं लेती, यहां महत्वाकांक्षाओं की प्राप्ति के लिए रिश्ते बनाए और घर बसाये जाते है।'' – 174

हिन्दी साहित्य में साहित्यकारों ने आत्मकथा के माध्यम से अपने समय के उन सत्यों को उद्घाटित किया है, जिसे सामान्य पाठक शायद कभी नही जान पाता उन्होने यथार्थ को जैसा हैं उसी रूप मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, वह चाहे फिर व्यक्ति वर्णन हो, वस्तु वर्णन हो, परिवेश, वातावरण से सम्बन्धी, समाज से, स्वयं की मनोदशा, कमजोरी, विसंगति, विद्रूपता, कटुता इत्यादि को भाषा एवं भावों का संतुलन बनाकर प्रस्तुत किया है।

## कल्पना

साहित्य निर्माण में कल्पना तत्त्व के योगदान से सभी परिचित हैं। बिना कल्पना के योगदान के कवि की रचना एक तथ्य मात्र रह जाती हैं। कल्पना एक मानसिक तत्त्व है। अप्रत्यक्ष वस्तुओं से सम्बन्धित चिन्तन मनन ही कल्पना है। वस्तु कल्पना एक ऐसी शक्ति है जो पूर्व अनुभवों की प्रतिलिपि पुनरूत्पादित करती है। कल्पना ही नूतन वस्तुओं, विचारों का अविष्कार करती है जिनकी कल्पना शिथिल होती है वे सजीव एवं स्पष्ट मूर्ति विधान मे विष्णु नहीं होते।

कल्पना के दो रूप हो सकते हैं– विधायनी कल्पना और ग्राहक कल्पना। कवि या कलाकार में विधायक कल्पना होती है, जिसके बल पर वह नये रूपों का विधान करता है जबकि पाठक या सहृदय में ग्राहक कल्पना होती है जिसके बल पर वह उन रूपों को अपने हृदय पटल पर अंकित करता है कल्पना अवचेतन मे स्थित अनुभूतियों, संस्कारों, बिम्बों एवं धारणाओं को कल्पना के माध्यम से चेतन स्तर पर कल्पना ही व्यक्त करती है। रचना को अनुभूतिगम्य बनाती है कल्पना घटनाओं पात्रों आदि की सृष्टि कर, बिखरे सूत्रों को जोड़कर कथावस्तु का निर्माण करती है। कल्पना ही व्यक्ति को साधारणीकरण की स्थिति में पहुँचाती है।

कोई भी साहित्यकार चाहे वह कितना ही यथार्थवादी क्यों न हो बिना कल्पना के पंखो पर सवार हुए भावजगत में परिभ्रमण नही कर सकता अतः किसी न किसी स्तर पर यथार्थवादी साहित्यकार को भी कल्पना का सहारा लेते हुए आदर्शवादिता की ओर उन्मुख होना ही पड़ता है। कोई आदर्शवादी पात्र एवं मूल्य आज के पाठकों को अवास्तविक प्रतीत होते हैं जिन्हें शायद वे स्वीकार नहीं कर पायें।

हिन्दी साहित्यकार ने अपने यथार्थ को कल्पना से संवार कर इस रूप में प्रस्तुत किया जिससे वह रोचक, मनोरंजन एवं शिक्षाप्रद बन सके। आत्मकथा लेखक न तो कोई आदर्शवादी है और न पूरी तरह यथार्थवादी। उसमें अनेक गुण–दोष हैं।

कमलेश्वर ने अपनी आत्मकथा 'जलती हुई नदी' में खतावली को उसकी पापमय दुनिया से निकालने के लिए कल्पना का सहारा लेकर विचार किया तो स्वयं को उस आदर्शवादी स्थिति में पाया कि जीवन ऐसा होना चाहिए जैसा कि लेखक ने लिखा–

''बहुत दिनों तक वह इस दारूण कथा से द्रवित रहा उसके मानवीय मूल्य उसे सारी वर्जनाओं से ऊपर उठाते रहे........ वे बार–बार उसे यही तर्क देते रहे कि खत वाली को इस भयानक संत्रास से निकालकर शायद वह किसी सरहद तक पहुंचा कर मानवीय पवित्रता का एक रास्ता खोल सकता हैं...... और दैहिक और लौकिक पाप के मुण्ड की चकराती भंवर में डूबती और टूटी इस कश्ती को शायद बाहर निकाल सकता है............

एक ऐसे मोड़ पर जहां खत वाली से नितान्त मुक्त होने की बात वह तय कर चुका था........यह पल आया था जहां से खुद को मुक्त करने की जगह खत वाली की मुक्ति का सवाल अहम हो गया था और वह फिर लगभग उसी आदर्शवादी स्थिति में फंस गया था।'' – 175

प्रसिद्ध साहित्यकार बच्चन जी ने तो अपनी आत्मकथा 'बसेरे से दूर में' स्वयं स्वीकार किया है कि व्यक्ति जो जीवन जीता हैं उसे शब्दों में यथावत ढाल पाना असंभव है क्योंकि मनुष्य जो महसूस करता है उसे शब्द महसूस नहीं कर सकते। जैसा कि लेखक ने लिखा है–

''आत्मसंस्मरण लिखते समय मैं ऐसा समझता था कि मैं अपने जीवन की सच्ची तस्वीर आपके रख सकने में समर्थ हो सकूंगा, पर अब मुझे यह कटु अनुभूति हो गई हैं कि जीवन और शब्द एक दूसरे से बहुत अलग स्तर की चीजें हैं, और एक सतह की

चीजें दूसरी सतह पर नहीं चढ़ाई या उतारी जा सकतीं, नहीं पहुंचाईं जा सकती और बहुत ईमानदारी और अध्यवसाय से ऐसा उपक्रम करने पर भी वे ऐसी प्रतिच्छायाएं ओर प्रतिध्वनिया बनकर रह जाती हैं जो जीवन और यथार्थ से बहुत दूर की होती हैं।'' – 176

बच्चन जी ने 'नीड़ का निर्माण फिर' में कलाकार के लिए सृजन से मुक्ति की कल्पना की लेकिन स्वयं बच्चन जी ने पाया कि लेखक का सबसे उबाने वाला, उद्विग्न करने वाला समय यही होता है जब उसके पास कोई सृजन योजना नही रहती ऐसे में कलाकार की सांस–सांस सृजन हो जाती है, जैसा कि लेखक ने लिखा है–

''मैं कलाकार के लिए सृजन से मुक्ति की कल्पना भी करता हूँ पर उस अवस्था में उसकी सांस–सांस सृजन हो जाती हैं तब वह अपने में कहीं खालीपन का अनुभव नहीं करता हर समय अपने को भरा, परिपूर्ण, परितुष्ट पाता है यह मेरी उस अवस्था की कल्पना भर है। पूरी अनुभूति निश्चय ही उस तक पहुंचने पर संभव है।'' – 177

इंसान के समक्ष यथार्थ तो नग्न रूप  में होता है जिसे वह जैसा है वैसा ही स्वीकार करता है लेकिन कल्पना ऐसा होता तो, ऐसा होना चाहिए, ऐसा हो सकता है, पर आधारित होती है। विष्णु प्रभाकर ने पंखहीन में अपनी बचपन की स्कूल जाने से पूर्व की कल्पना का भाषा के माध्यम से जो वर्णन किया है। वह वाकई एक अबोध, अज्ञानी बच्चे के मानसिक स्तर पर पाठक को ले जाने में सक्षम है कि एक बच्चे का संसार बड़े के संसार से कितना सुखद और मनोरम होता है जैसा कि लेखक ने लिखा हैं–

''मैंने कल्पना की थी, जब मैं पढ़ने जाऊंगा तो दादी की कहानी के राजकुमार की तरह मेरे पास भी सोने की तखती, चाँदी की कलम, ओर हीरे की दवात होगी। लेकिन मिली काठ की तखती, सरकंडे की कलम और मिटटी की दवात। बड़ी निराशा हुई। तब यह तर्क मेरे बालमन को प्रभावित नही कर सकता था कि दीया सोने का हो या मिटटी का महत्त्व उसकी लौ का ही होता हैं।'' – 178

प्रभाकर जी ने 'और पंछी उड़ गया' में शरत जीवनी लिखने के लिए विभिन्न स्थानों की यात्रा की एवं तथ्यों का संकलन किया तो इस तथ्य संकलन के दौरान लेखक स्वयं कल्पना के माध्यम से उस भाव भूमि पर पहुंच गये जहां शरत जी ने जीवन जिया था, जैसा कि लेखक ने लिखा–

''मै विशेष रूप से उन स्थानों की खोज करता जिनका सम्बन्ध शरत से गहरा रहा और कल्पना करता उस युग की जब शरत जीवित थे और उन स्थानों में रहते थे। उन के हावड़ा स्थित मकान में जाने पर वे चित्र मेरी आंखो के सामने घूम गये जब इलाचन्द जोशी उनसे बहस करते–करते आयु की सीमा लांघ जाते थे। मैंने वह पेड़ भी देखा जिसके नीचे श्री कान्त चौथे पर्व का 'गौहर' समायन लिखा और पढ़ा करता था।...– 179

अंततः यही कह सकते हैं कि कल्पना यथार्थ को संवारती है उसमें नये रंग भरकर उसे आदर्शोन्मुखी बनाती है अतः सत्साहित्य के निर्माण में उसकी भूमिका से इन्कार नही किया जा सकता क्योंकि कवि, कलाकार, साहित्य, सृजन को उसकी कल्पना से दूर नहीं किया जा सकता उसकी कल्पना ही तो है। जिसमे उसका सृजन संसार समाया रहता है उसके बिना रचनाकार अधूरा है।

## (ब) शैली

साहित्य में शैली शब्द का प्रयोग अपेक्षाकृत आधुनिक है। संस्कृत साहित्य में रीति शब्द का प्रयोग होता था जिसे आचार्य वामन ने काव्यात्मक कहा है। उनके अनुसार "रीतिरात्मा काव्यस्य" (वामन–काव्यालंकार सूत्र, 1/3/6) रीति काव्य रचना की विशेष पद्धति है। रीति शब्द जिस रचना कौशल की ओर संकेत करता है, उसका भाव "शैली" शब्द में आ गया है। शैली और लेखक के व्यक्तित्व को इतना अभिन्न माना गया है कि शैली विश्लेषण द्वारा लेखक के व्यक्तित्व की जानकारी प्राप्त करने का दावा प्रस्तुत करते हुए राबर्ट पैन वारेन ने लिखा हैं कि "शैली में बनावटीपन को स्थान नहीं, यह तो लेखक के चिन्तन की स्वाभाविक एवं सही अभिव्यक्ति है।" (राबर्ट पेन वारेन–फण्डा मेण्डल ऑफ गुड राईटिंग) – 180

शैली का सम्बन्ध रचनाकृति के बाह्य परिधान से नहीं अपितु उसकी आत्मा से होता है, जिसका निर्धारण भाषा एवं शब्दों के विशिष्ट प्रयोग द्वारा होता है। इस आधार पर हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथा की पर विचार किया जाये तो, आत्मकथात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, डायरी, पूर्वदीप्ती, विचारात्मक, भावात्मक

विशिष्ट आत्मपरक, पद्यात्मक, गद्यात्मक, गद्य–पद्यात्मक, काव्यात्मक एवं नवीन रूप दृष्टिगत होते है।

## विशिष्ट आत्मपरक (उत्तम पुरूष)

आत्मकथा में आत्मकथाकार प्रथम पुरूष में कथा का वर्णन करता हैं इस शैली मे केवल एक ही पात्र विशेष का चित्रण रहता है पात्र स्वयं अनुभव की हुई घटना का चित्रण करता है लेखक ''मैं'' शैली में आत्मकथा लिखता है ऐसा महसूस होता है जैसे लेखक स्वयं कथा सुना रहा है और पाठक मंत्रमुग्ध श्रोता की तरह कथा सुन रहा हो।

लेकिन ऐसा नही हैं प्रायः आत्मकथा विशिष्ट आत्मपरक (उत्तम पुरूष) शैली में लिखी जाती है क्योंकि प्रथम पुरूष तो लेखक स्वयं होता हैं लेकिन जब वह आत्मकथा लिखता हैं तो आत्मकथा के नायक को स्वयं से अलग करके सामने बिठा लेता है और उसे उत्तम पुरूष मानते हुए आत्मकथा लिखना आरम्भ करता हैं तभी तो वह तटस्थ, यथातथ्य वर्णन, स्वलेखन, कलात्मकता तत्त्वों का पालन करते हुए आत्मकथा का सृजन करता है तभी तो वह उत्कृष्ट रचना बन सकती हैं क्योंकि यदि लेखक स्वयं को आत्मकथा के नायक से विलग नही करेगा तो आत्मश्लाघा एवं आत्मप्रशंसा का शिकार हो जाएगा तथा आत्मकथा की प्रामाणिकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा इसीलिए हिन्दी के समस्त आत्मकथाकारों ने विशिष्ट आत्मपरक (उत्तम पुरूष) शैली का प्रयोग किया हैं इसी शैली का प्रयोग करते हुए डॉ. हरिवंश राय बच्चन ने कर्कल, चम्पा, प्रकाशो, रानी आयलिन, इत्यादि का वर्णन किया है क्योंकि यदि लेखक स्वयं को चरित्र नायक से अलग करके नहीं देखता तो शायद अपनी इस कमजोरी को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने में संकोच कर सकता था।

विशिष्ट आत्मपरक शैली का प्रयोग करने के कारण ही लेखक आत्मप्रशंसा के दोष से बच सकते हैं इसी शैली का प्रयोग करते हुए विष्णु प्रभाकर की ''और पंछी उड़ गया'' में लेखक ने जहां कहीं भी आत्मप्रशंसा की और खुद को बढ़ते देखा वही उत्तम पुरूष के रूप में स्वयं को संयमित किया है।

''आश्चर्य की बात तो यह हैं कि 'आवारा मसीहा' का एक भाग कोच्चीन से प्रकाशित होने वाली हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका 'युग प्रभात' में प्रकाशित हुआ और उस

हिन्दी प्रदेश के मेरे मित्रों ने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया कभी–कभी तो मुझे ऐसा लगता था जैसे देवता मेरे ऊपर आकाश से पुष्प वर्षा कर रहे हों।''

''मैं फिर आत्मश्लाघा के चक्रव्यूह में फंस गया लेकिन क्या यह अनोखी बात नही है कि जीवन चरित्र का लेखन समाप्त हो जाने पर भी मैंने तब तक उसका कोई नाम नहीं रखा था।''– 181

विष्णु प्रभाकर ने इस विशिष्ट आत्मपरक शैली को निर्वेयक्तिकता कहा है जहां व्यक्ति स्वयं व्यक्ति नहीं रहता बल्कि विशिष्ट व्यक्ति हो जाता है जो कि निश्चय ही कठिन है जैसा कि लेखक ने लिखा है–

''डॉ. रामरूवरूप चर्तुवदी ने अपनी कृति'' हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास'' में इस विषय की चर्चा करते हुए लिखा है '' आत्मकथा लेखन में विनम्रता का गुण इतना अपेक्षित नही जैसा सम्भवतः समझा जाता है, जितना निर्वैयक्तिकता का। इस निर्वैयक्तिकता वृत्ति के कारण आत्मकथा निश्चय ही एक आधुनिक और अपेक्षतया कठिन कला है।''

सचमुच निर्वैयक्तिकता होना तलवार की धार पर धावना है।'' – 182

इसी विशिष्ट आत्मपरक (उत्तम पुरूष शैली) को डा0 प्रभा खेतान ने ''अन्या से अनन्या'' में पाठकों को समझाने की कोशिश की है। यह ''मैं'' शैली में होंने के कारण एक मैं हमेशा इसके साथ चलता रहता है जैसा कि लेखिका ने स्पष्ट किया है– ''किसी भी आत्मकथा में एक ''मैं'' है जो प्रामाणिक रूप से अपनी यात्रा कर रहा है जिसे खारिज करना किसी के लिए सम्भव नहीं.........पाठक भी इस विशिष्टता की, विशेष व्यक्तित्व को पहचानता है। पाठक और लेखक दोनों के बीच एक साझेदारी है। दशकों बाद भी यह कहानी जिन्दा रहती है और रहेगी–हां इसको पढने का तरीका जरूर बदलता जाएगा'' – 183

हिन्दी के समस्त आत्मकथाकारों ने विशिष्ट आत्मपरक (उत्तम पुरूष) शैली का प्रयोग करते हुए आत्मकथा का सृजन किया है इस शैली को अपनाने के कारण आत्मकथा प्रामाणिक, रोचक, आकर्षक, जिज्ञासा को शान्त करने वाली, गुण दोषों का प्रदर्शन करने वाली, व्यक्ति विश्लेषण करते हुए उत्तम बन पडी है।

## पद्यात्मक

साहित्य मानव समाज के विविध भावों एवं नित नवीन रहने वाली चेतना की अभिव्यक्ति है। किसी काल विशेष के साहित्य की जानकारी से तद्युगीन मानव समाज को समग्रतः जाना जा सकता है। दूसरे किसी काल विशेष के साहित्य में पायी जाने वाली प्रवृतियां तत्कालीन परिस्थितियों के सापेक्ष होती हैं। आदि काल का साहित्य–सृजन पद्यात्मक एवं काव्यात्मक रूप में प्राप्त होता है। वह अपनी मौलिकता एवं साहित्यिकता के कारण उच्चकोटि का है।

आदिकाल के कवियों ने आश्रयदाता के शौर्य, यश, वैभव का, काल्पनिक एवं अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। ऐसे समय में कविवर बनारसी दास जैन की आत्मकथा "अर्द्धकथानक" अपने समय एंव समाज के साहित्य की प्रवृत्ति के विपरीत होते हुए भी लेखक के व्यक्तित्व के पूर्ण उद्घाटन में सम्पूर्ण कलात्मकता के साथ सफल हुई है। कोई भी व्यक्ति उन दिनों में अपने अनुभव एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत नहीं करता था । अपने विषय में कुछ कहना कवि अनुचित समझते थे ऐसी स्थितियों में बनारसीदास जी का आत्मचरित अत्यंत निराले ढ़गं से सामने आया। वे एक अध्यात्मवादी मानव थे एवं मध्यम वर्ग के व्यापारी भी थे। इसमें उनके, वंश, परिचय एवं गुण दोष, अपनी कमजोरियों, सत्यप्रियता, स्पष्टवादिता, निराभिमानिता, और उन्मुक्तता की अभिव्यक्ति अत्यंत प्रबल रूप से हुई है । इस आत्मकथा में लेखक ने चारित्रिक स्खलनों का एकदम खुला चित्रण किया है।

कृति की भाषा का पारदर्शक तत्त्व और सारल्य आत्मकथ्य को समझाने में महत्व का कार्य करते है। इन सबसे भी ऊपर है पुस्तक का संक्षिप्त रूप। लेखक ने दोहा चौपाइयों में अपने जीवन की विशालता को प्रस्तुत कर दिया है। कृति पद्य में हैं, अतः कोई भी बात वाक्यों के उलझाव में न फसंकर स्पष्ट रूप से संक्षिप्त में अभिव्यक्ति पा गई हैं ।

'अर्द्धकथानक' की भाषा से उस समय की बोल चाल की भाषा और आज की खड़ी बोली के प्रारम्भिक रूप का आभास मिलता हैं। उस समय आगरा की यही भाषा रही होगी ।

निष्कर्ष रूप  से कहा जा सकता हैं कि यह हिन्दी साहित्य का स्पृहणीय सौभाग्य हैं कि इतनी प्राचीनतम और इतने अधिक तात्त्विक गुणों से भरपूर आत्मकथा हिन्दी साहित्य के एक उत्कृष्ट कवि ने उस समय लिखी, जबकि उसके सम्मुख ना तो किसी अन्य लेखक का कोई उदाहरण था, न किसी समीक्षा शास्त्र द्वारा प्रदर्शित राजपथ फिर भी हिन्दी साहित्य के लिए नवीन विधा की सौगात प्रदान करते हुए एक सफल आत्मकथा लिखी जिसने परवर्ती आत्मकथाकारों के लिए एक दिकसूचक की भांति कार्य किया।

## गद्यात्मक

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल गद्य का जनक है इस समय में पद्य उपेक्षित सा हो गया था एवं गद्य प्रचुर परिमाण में लिखा गया । इस काल की प्रवृतियां नवीन एवं आधुनिक हो गई निश्चय ही आधुनिक युग बोध ने साहित्य को दरबारी परिवेश से निकाल कर जन जीवन के निकट ला दिया था । गद्य की अनेक विद्याओं का विकास आधुनिक काल में ही हुआ हैं आत्मकथा विधा का परिष्कृत एवं विकसित रूप आधुनिक काल में ही मिलता हैं ।

डा0 प्रभा खेतान की आत्मकथा पूर्णतः गद्यात्मक है एवं आत्मकथा शैली में लिखी गई है। लेखिका स्वयं अपनी कथा कह रही है तथा कर्ता भी स्वयं ही हैं । 'अन्या से अनन्या' की नायिका स्वयं पूरी कथा कहती है। शिल्प की दृष्टि से पूर्णरूपेण नवीनता लिए हुए है। जिसमें एक ही समय में एक ही स्थान पर वह अतीत वर्तमान, और भविष्य की कल्पना करती है, जिससे आत्मकथा में भी फिल्मों की तरह आनन्द आता है। यह पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गई हैं। लेखिका, आत्मकथा का आरम्भ तो पूर्वदीप्ति से करती जहाँ डा0 साहब उसे छोड़कर चले जाते हैं वही से वह  अतीत में चली जाती हैं। लेकिन अंत डा0 साहब की मृत्यु से होता हैं समस्त आत्मकथा में आत्मकथात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, भावात्मक शैली रूप दृष्टिगत होते है। लेखिका को जहाँ जहाँ मौका

मिलता है अपने आप को भाषा के माध्यम से चीर फाड़ करके समाज की नजरों में सही साबित करती प्रतीत होती हैं।

जैसे ''मुझे नहीं मालूम यह क्यों घटा था, लकिन आज इसे लिखते हुए अपने को हल्का महसूस कर रही हूँ। लिखने से पहले मैं द्वन्द्व में थी, सोच रही थी, क्या मुझे लिखना चाहिए, क्या सोचेंगे लोग मेरे बारे में ? यह मेरी गलती थी, क्षणों का आवेग था मगर अपराध नहीं था " – 184

भाषा और शैली की दृष्टि से आत्मकथा सरल, सुबोध है उन्होंने संवादो थोपे नहीं वरन पात्रों की आवश्यकता अनुरूप पात्रों से कहलवाये है, जिससे आत्मकथा अपनी स्वाभाविकता को बनाये रखकर बनावटीपन से परे रहती है ।

हिन्दी लेखिका श्रीमती मन्नू भण्डारी की आत्मकथा भी पूर्णतः गद्यात्मक आत्मकथा है। लेखिका ने आत्मकथा का प्रारम्भ पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग करते हुए अतीत में अपने बचपन के मोहल्ले से वहां के वातावरण ,परिवेश, संस्कृति, प्रेम, आस्था, विश्वास अपनेपन से किया है तथा अंत अपने पति से 12 साल तक अलग रहने पर भी अलग नहीं हो पाई तथा आज में उनके साथ ही हूँ प्रसंग के साथ किया है। लेखिका की आत्मकथा में वाक्यांश काफी लम्बे हैं तथा एक दूसरे पर निर्भर वाक्य का ज्यादा प्रयोग किया गया है।

पात्रों के भावों और विचारों का मनोविश्लेषण करने की सामर्थ्य मन्नू भंडारी में जबरदस्त हैं । उन्होंने मनोविश्लेषण शैली में टिंकू के हृदय को गहराई तक विश्लेषित करके रख दिया है, टिंकू को बचपन में सुशीला के सानिध्य में ही लालन पोषण मिला था। जिससे वो सुशीला को ही अपनी माँ समझती थी जब लेखिका ने उससे यह पूछा तो उसने यही जवाब दिया कि सुशीला हमारी मम्मा है तब लेखिका उसे बताती हैं कि तेरी असली माँ मैं ही हूँ उसके बाद का जो सुन्दर चित्र लेखिका ने खींचा हैं वह किसी को भी भावनाओं में बहा ले जा सकता हैं।

"एकाएक ही मेरा ध्यान उसकी परेशानी पर पड़ा तो उसे सहज बनाने के लिए मैंने हसंकर कह दिया "अरे समझ ले कि दोनों तेरी मम्मियाँ हैं कितनी लक्की हैं कि तेरे दो दो मम्मियाँ हैं– दो दो मम्मियों का प्यार तुझे मिलता हैं "बस इतना सुनते ही वो तो जैसे फट पडी। मेरे कंधे झकझोरते हुए रूआंसी आवाज बस एक ही बात बार बार दोहराती रही" हम को सच सच बताओ हम किसके के बच्चे हैं कौन हैं हमारी असली

मम्मी प्लीज हम को बताओ, हम को सच सच बताओ की हम किसके बच्चे हैं ? कुल मात्र ग्यारह साल की टिंकू, पर उसकी भाव विह्वलता उसका यह आवेश" – 185

मन्नू भडांरी की आत्मकथा की शैली में भावुकता एकदम लुप्त प्रायः हो गयी है। हर जगह तर्क, एक विचार, एक बुद्धि, सूक्ष्म अन्वेषण, विश्लेषण और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण है। जो शैली के क्षेत्र में निश्चय ही क्रांतिकारी कदम है।

हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा पूर्णतः गद्यात्मक है । जिसके तीन खण्ड हैं "जो मैंने जिया, यादों के चिराग, जलती हुई नदी। ये संस्मरणात्मक रूप में लिखी गई आत्मकथाएँ है। आत्मकथा की भाषा आलंकारिक आंडबरों से रहित, भावाभिव्यक्ति में चुस्त और विचाराभिव्यक्ति में पूर्ण समर्थ है। इसमें शैली शिल्प पर जो नवीन प्रभाव दृष्टिगत होता है वह है फिल्म शैली का प्रयोग। आत्मकथा पढने पर केवल विचारों की गंम्भीरता ही प्रकट नहीं होती वरन पात्रों के मन में उमड़ते विचार सचित्र एलबम प्रस्तुत करते चले जाते हैं जैसे–

"आखिर वो दोनों गाड़ी में थे। शोभना के शरीर से कुछ अलग ही महक आ रही थी उडे हुए परफ्यूम मसले हुए बासी फूलों और तम्बाकू की मिली जुली महक, शोभना ने सिगरेट सुलगाई,,,

–एक कश

–नो थैंक्यू वह गाडी चलाता रहा।

–कही बियर पियेंगे ?

–तो मुझे घर छोड़ दीजीए –वही उसने राहत की सांस ली। सिगरेट की महक भी कुछ अलग थी ।

– आप कौनसी सिगरेट पीते हैं ......... बड़ी अच्छी महक है ।

यह उसने सिर्फ शालीनता वश कहा था। तब तक शोभना की आँखों का रंग बदल चुका था । – 186

आधुनिक काल में गद्य के विकास के साथ ही आत्मकथा का भी विकास होता रहा और जिन आत्मकथाओं का उल्लेख किया गया है ये तीनों ही 21 सदी की

आत्मकथाएँ हैं, जिनमें समय के साथ नवीन प्रयोग किये गये है। लेखकों ने आत्मविश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, संस्मरणात्मक, पूर्वदीप्ति शैली, वर्णनात्मक, सवांदात्मक, स्मृतिपरकता का प्रयोग कर आत्मकथा को एक नवीन सिहांसन पर विराजित करने का कार्य किया है। जो हिन्दी साहित्य के लिए अनुपम ही नहीं अनमोल है ।

## गद्य–पद्यात्मक

आत्मकथा का प्रारम्भ 400 वर्षो पूर्व पद्यात्मक रूप में हुआ था लेकिन शनैः शनैः विकास करते हुए आत्मकथा गद्य के रूप में लिखी जाने लगी, लेकिन जो साहित्यकार कवि हृदय थे, उनकी आत्मकथा केवल गद्य पर निर्भर नहीं रह सकती थी क्योंकि साहित्य सृजन भी उनके जीवन का अभिन्न अंग होता है। जिसको परे हटाकर उन्हें देखना असंभव है। आत्मकथा में उनके सृजन का उल्लेख करते हुए पद्य का आना स्वाभाविक था लेकिन जब कभी कवि हृदय साहित्य सृजन करता है तथा गद्य लिखते हुए भी पद्य लिखने लग जाना उसका प्राकृतिक स्वभाव है शायद इसी वजह से साहित्य में गद्य–पद्यात्मक आत्मकथा का उदय हुआ । हिन्दी में गद्य–पद्यात्मक आत्मकथा उत्कृष्ट रूप में हालावादी कवि, साहित्यकार, डा0 हरिवंशराय बच्चन की है। जिसमें लेखक का कवि, गीतकार, साहित्यकार शोधक, अध्यापक, अलोचक, प्रेमी, पिता, पति, पुत्र, दादा, दार्शनिक, विद्वान विरही, प्रेमी का रूप निखर कर आया है। लेखक की आत्मकथा "नीड़ का निमार्ण फिर" के बारे में पाठकों की राय थी कि लेखक अपने कवि व्यक्तित्व के प्रति अधिक सचेत हो गया है।  इसका उत्तर कवि ने 'बसेरे से दूर' की भूमिका में इस तरह दिया है–

"इस सबंध में मुझे इतना ही कहना हैं कि जिसे मेरा व्यक्तित्व कहा जा सकता है, उसमें कवि, अकवि का कोई विभाजन नहीं है। मेरा कवि यदि उसे कभी सही रूप में देखा जाये ,तो वह मेरे जीवन से जुड़ा हुआ, प्ररोहित प्रादुर्भूत और उसका ही प्रक्षिप्त अंग प्रतीत होगा । अपने जीवन की चर्चा में, मैं उसकी उपेक्षा नही कर सकता। " – 187

इस तरह जो कवि हृदय है उनके अन्तर से कविता का जन्म होना प्राकृतिक किया हैं। इसलिए इनकी आत्मकथाएँ गद्य–पद्यात्मक का नया कलेवर लेकर साहित्य मे आविर्भूत हुई है ।

बच्चन जी संगीत प्रेमी एवं कवि थे । उनकी आत्मकथा में गीतात्मक एंव काव्यात्मक का अधिकांशतः प्रयोग हुआ है। जहाँ कही भी लेखक ने भावना प्रधान घटना का वर्णन किया है, वहीं लेखक ने गीतात्मक एवं काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। "बसेरे से दूर "आत्मकथा में तो लेखक ने एक गीत पूरा का पूरा आत्मकथा में समाहित किया है –

"तुम्हारे नील झील से नैन

नीर निर्झर से लहरे केश

तुम्हारे तन का रेखा कार

वही कमनीय कलामय हाथ

कि जिसने रूचिर तुम्हारा देश

रचा गिरि ताल माल के साथ" – 188

लेखक में अतुल ज्ञान का भंडार भरा है, तभी तो अपनी रचनाओं के अतिरिक्त भी लेखक ने "दशद्वार से सोपान" में उदाहरण स्वरूप कबीर, सूर, तुलसी, गालिब, दिनकर, पंत, ईट्स ,गीता के श्लोक, सुमन, निराला, नीत्शे, की पंक्तियों तक का प्रयोग किया है, जिससे आत्मकथा की सुन्दरता, रोचकता, में चार गुना अधिक विस्तार किया है–

मन न रंगाए रंगाए जोगी कपड़ा

धौवे,,,,,,,,,,,,,,,मटि आवे लोटा

मूत के तुम भी मूत के हम भी

कबीर – 189

लेखक की पत्नी श्यामा की मृत्यु के पश्चात् लेखक का जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण उभरता है। उसे लेखक ने दार्शनिक शैली में कविता लिखकर अपनी भावनाओं को निसृत करना चाहा है–

" जिसकी कंचन की काया थी

जिसमें सब सुख की छाया थी

उसे मिला देना पड़ता है

पलभर में मिट्टी के कण में !

निर्ममता भी हैं जीवन में ! – 190

लेखक की आत्मकथा शैली में आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक नाटकीय, स्मृतिपरक, मनोविश्लेषणात्मक, मिश्रित शैली, सूक्ति शैली का प्रयोग किया गया है । लेखक की भाषा शैली में प्रतीकात्मकता, आलंकारिकता, चित्रात्मकता, नाटकीयता, भावात्मकता, प्रवाहात्मकता, विषयानुकूल, काव्यात्मक भाषा की प्रेषणीयता है ।

लेखक की आत्मकथा में केवल पद्य में ही रोचकता पैदा नही हो रही है बल्कि गद्य भी पूरी तरह उत्कृष्ट कोटि का हैं । लेखक ने व्यक्तित्ववर्णन, प्रकृतिवर्णन, मनोविज्ञान इत्यादि का वर्णन उच्च कोटि के शब्दों के प्रयोग से किया है। लेखक की गद्य भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"मधुवन पक्ष में रूप, रस, गंध रंग, लय, गति, सौन्दर्य, श्रृंगार, आकर्षण, अनुराग, प्रकाश, हास, उल्लास, जीवन, जागृति, प्राणवत्ता, प्रफुल्लता, मधुरता, मादकता, तन्मयता, आशा ,आकांक्षा, विश्वास ,आनन्द, का एक रहस्य पूर्ण संसार ही बिछा दिया। " – 191

हिन्दी साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा तीन खण्डों में लिखी गयी आत्मकथा है । पंखहीन, और पन्छी उड़ गया तथा मुक्त गगन में। लेखक की आत्मकथा पर बच्चन जी की आत्मकथा का प्रभाव छाया रहा। उन्हीं की तरह इन्होंने भी अपनी जाति, वंश, कुल, गौत्र, जन्मभूमि, इत्यादि के इतिहास की जानकारी से कथा का आरम्भ किया तथा आत्मकथा गद्य–पद्यात्मक शैली में लिखी गयी है जिसमें बच्चन जी की तरह ही अन्य कवि एवं लेखकों की रचनाओं के पद्य भी उद्धृत है बीच–बीच में कविता की पक्तियाँ , कंही पाठ का प्रारम्भ ही कविता की पक्तियों से किया गया हैं ।

लेखक जब स्वंय आत्मकथा लिखने लगे उस घटना का वर्णन करते हुए भी लेखक को जय शंकर प्रसाद की पक्तियाँ याद आ गयी जिनका उल्लेख लेखक ने आत्मकथा में किया है–

" छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ " – 192

इसके अतिरिक्त लेखक ने सूर, मैथिलीशरण गुप्त, फिराक गोरखपुरी, पंत, उमाशंकर कवि ठाकुर, शरतचन्द एवं निराला इत्यादि कवियों की पक्तियाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की है–

"विजन वनवल्लरी पर, सोती थी सोहाग भरी
स्नेह स्वप्न मग्न अमल कोमल तनु तरूणी
जूही की कली दृग बन्द किये शिथिल पत्रांक में "
बासन्ती निशा थी
( मुक्त गगन में ) – 193

"ऊधो मन नाही दस बीस
एक हुतो सो गयो श्याम संग
को आराधे ईस"
( पखंहीन ) – 194

"जीवन मंथन से निकला विष, वह जो तुमने पान किया
और अमृत जो बाहर आया, उसे जगत् को दान दिया "
( और पंछी उड़ गया ) – 195

लेखक की ने वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, नाटकीय, पत्रात्मक, स्मृतिपरक, मिश्रित शैली, मनोविलेषणत्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, विचारात्मक शैली का प्रयोग किया है । प्रकृति के कोमल एवं कठोर दोनों रूपों का वर्णन किया गया है। लेखक की आत्मकथा में निम्न विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं । भावात्मकता, रोचकता, आलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहात्मकता एवं आंचलिकता इत्यादि प्रमुख हैं। लेखक

की भाषा में वह शक्ति है जो पाठक के अंतर्मन को कचोटती हुई गंतव्य स्थान तक पहुंचाती है। इनकी भाषा सरल एंव क्लिष्ट दोनों प्रकार की है।

लेखक ने गद्य में वर्णन करते हुए स्वयं की लिखित एकांकी के उद्धरण भी प्रस्तुत किए हैं–

उदाहरण–

सान्त्वना–आप कितने दिन से घूम रही हैं ?

जूड़िथ– कई वर्ष हो गये।

सान्त्वना– आपके बहुत मित्र हैं।

जूडिथ– स्वाभाविक है। अनेक देशों के अनेक युवकों के सम्पर्क में आई हूँ। प्यार किया है, पाया है। – 196

प्राकृतिक वर्णन–

"मार्ग सुगम नहीं थे। कहीं बार–बार जानलेवा चढाई से लोहा लेना पड़ता। एक चढाई पूरी करते, दूसरी सामने उभर आती। फरलांग मील बन जाते, लेकिन जैसे ही चढाई का अंत होता हम एक दिव्य प्रदेश में पहुँच जाते। मीलों तक देवदार के मनोरम वृक्ष स्वागत में ग्रीवा उठाये मिलते। नीचे हरीतिमा, आकाश, में सुरमयी घटायें, वनवासी श्वेत गुलाब की सुगंध, नाना औषधियों का द्रुमदल, पक्षी चहक रहे थे तो नीचे से जमुना का संगीत मुखर हो रहा था तपोवन ऐसे ही तो होते होंगे।'' – 197

अंततः दोनों लेखकों की आकर्षक एवं कलात्मकता ने आत्मकथा को नवीन एवं रोचक रूप प्रदान किया है। दोनों लेखकों को भाषा पर ऐसा अधिकार प्राप्त था कि भाषा उनके इशारों पर नाचती प्रतीत होती हैं। लेखक की जैसी भी अनुभूति थी उसको यथातथ्य अभिव्यक्ति में भी उतारने में सफल हुए है। लेखकों की भाषा में जो विविधता है वह उन्हें आत्मकथाकार के रूप में श्रेष्ठता ही प्रदान करती है।

## काव्यात्मक

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार काव्य का शाब्दिक अर्थ हैं कविता, कवि की रसात्मक रचना (जैसे सरस एवं ओजस्वी काव्य) (डा0 हरदेव बाहरी सपा0 हिन्दी शब्द कोश 164) एवं काव्यात्मक का शाब्दिक अर्थ हैं काव्यगत, काव्य से परिपूर्ण – 198

अर्थात् जो भी साहित्यकार कवि, गीतकार हैं उनकी आत्मकथा में लयात्मकता है, सरसता है, सौन्दर्य बोध है, मार्मिकता है, भावप्रवणता है, संगीतात्मकता है और जो लेखक कवि हृदय हैं उनकी कृतियां काव्यात्मक हैं।

साहित्यकार आत्मकथा लेखक होंने से पूर्व एक मनुष्य है, जिसमें एक दिल धड़कता है, जो हंसता है, रोता है, दुखी होता है, आनन्द महसूस करता है, गाता है, सुनता है, जिसमें विरह है, वेदना है। जिससे एक गीत का जन्म होता है, जिसे कोई नही सुने, जिसे वह अपनी अंतर में महसूस करता है। यही सब, जब कागज पर उकेरे जाते हैं, जो शब्द के रूप में काव्य, गीत, संगीत, गद्य, पद्य, साहित्यिक विधा बन जाते हैं। ये सब रूप उस लेखक के दिल के ही तो होते हैं, जो काव्यात्मक बन जाते हैं।

डा0 हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा हिन्दी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट आत्मकथा है, जिसमें सब कुछ समाया हुआ है। लेखक कवि हृदय है, इसलिये काव्य रचना करना नैसर्गिक गुण है। लेखक की आत्मकथा में यत्र तत्र प्रत्येक विषय पर कविता एवं गीत मिल ही जाते हैं। लेखक ने थीसिस सबमिट करने के बाद रिजल्ट की प्रतीक्षा में गीत लिखा है–

"अब मैं केवल जो तुम्हारे
दरपन हंसकर बोला, बाहर जो तुझ पर तन वारे।
अन्दर पैठ बैठ गया मन लाज हया के मारे।"

**रिजल्ट आने के बाद का गीत–**

"तुमने मेरी लाज बचाली
जड़ हठ में मैं मांग पड़ा था तुमसे भेट निराली।
गड पथ में ही जाता आता हाथ लिए जो खाली।"
(दशद्वार से सोपान) – 199

**कहारो का गीत–**

"छउबे डिहवा पर मडैयां गोरियां तोहके लैके ना"
(दशद्वार से सोपान) – 200

**सूफी गीत–**

ला इलाह इल्लिलाह
'भगवान' रसूल्लाह।" – 201

लेखक की आत्मकथा में जीवन के हर पल हर क्षण के लिए काव्य पंक्तियां हैं। चाहे बेटे का जन्मदिन हो, शादी हो, चाहे बेटों से दूर जाना हो, चाहे पत्नी का मकान बनाने की इच्छा हो, लेखक का कवि हृदय जीवन के हर क्षण को काव्य में पिरोना चाहता है जिससे जीवन संगीतात्मक बना रहे, लयात्मक बना रहे, काव्य के माध्यम से जीवन की जटिलता भी सरल प्रतीत होती है क्योंकि जटिलता तो शब्दों से निस्तृत हो जाती है और जीवन में सरलता ही सरलता रह जाती है तभी लेखक ने गहन संघर्ष करने के बावजूद भी कभी हार नही मानी एवं अपने आपको दुःखी नहीं किया तथा काव्य के सहारे हर मुश्किल को आसान बनाते हुए जीवन में एक मुकाम, एक शख्सियत हासिल की।

लेखक की आत्मकथा पढ़ते हुए पाठक साधारणीकरण की प्रक्रिया द्वारा एक ऐसी दुनिया में पहुंच जाता है। जहां एक संगीत, एक धुन, एक लय, एक मर्म, भावना, निरन्तर बहती रहती है तथा पाठक स्वयं भी वही धुन अपने भीतर महसूस करने लगता है। लेखक ने जीवन की निस्सारता को भी काव्य के माध्यम से प्रकट किया है।

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में भी लेखक का कविरूप यत्र तत्र प्रकट हुआ है, जिससे आत्मकथा काव्यात्मक हो गई है। लेखक की आत्मकथा में गीत एवं कविता तो इतनी अधिक नहीं हैं लेकिन फिर भी गद्य के माध्यम से भी लेखक ने संगीत प्रवाहित किया है जो उनके शब्दों से निरन्तर बहता रहता है–

"आह! यही है वह काली कालिन्दी जो सूर्य सुता और यम की भगिनी कहलाती है। जिसके तट पर मोहन ने रास रचाए थे, जिसके तट पर विश्व का अद्भुत सौन्दर्य का प्रतीक ताज खड़ा है। उस नीलवर्णी, क्षीणकाय, स्वच्छ शान्त, जमुना को मैं बहुत देर तक देखता रहा। मानो सुदृढ शरीर वाली पर्वतीय बाला प्रीतम की छवि नैनों में समाये, आतुर, व्याकुल ऊँचे नीचे मार्गो पर चली जा रही हो।"– 202

उक्त उद्धरण को पढकर प्रतीत होता है, जैसे प्राकृतिक संगीत कानों में कल निनाद 'झरझर करके मन को ठण्डक प्रदान कर रहा हो। प्रत्येक शब्द से एक लय, ध्वनि, आकुल अंतर सुनाई दे रहा हैं। प्रकृति का सौन्दर्य बिखरा हुआ है। ऐसा ही एक उदाहरण द्रष्टव्य है।

"ऊषा ने मुक्त किए है अन्धकार के द्वार
किरण बिखेरता आलोक उसका,
प्रगट हो गया है सामने हमारे,
वह फैलता है और दूर भगा देता है।
तम साकार दैत्य को"
(और पंछी उड़ गया ) – 203

"राह रघुबर अंगन लिपाया
मोतियन चौक पुरत आए
बहिया पसार चारों भईयां मिले
नैनों से नीर ढलत आए"
(पंखहीन) – 204

अंततः डा0 हरिवंश राय बच्चन एवं विष्णु प्रभाकर प्रकृति, कलात्मकता एवं सौन्दर्य के उपासक थे। उन की लेखन कला अपने ढंग की थी। भाषा को सौन्दर्य एवं रूप प्रदान करने के लिए उन्होंने बिम्ब एवं प्रतीकों का सहारा लिया। बिम्ब एवं प्रतीक रचना को सरल ही नही बनाते, बल्कि भाषा को रोचक एवं अलंकृत भी करते हैं। ये भाषा को सुन्दर एवं मौलिक बनाते हैं।

## नवीनतम शैली

आत्मकथा साहित्य कृमिक विकास करते हुए सफलता के पायदान पर चल कर आज अपनी मंजिल पर सफलता की पताका फहरा रहा है। आत्मकथा कृमिक विकास के दौरान साहित्य के विभिन्न सोपानों पर चल कर पहुंची है जिसने विभिन्न रूपों में अवतार लिया है–जैसे निबंध, संस्मरण, यात्रा वृतांत, रेखाचित्र, गीत, कविता इत्यादि।

वर्तमान में आत्मकथा एक नवीन रूप धारण कर पाठकों के सम्मुख उपस्थित हुई है, जिसका उद्‌देश्य आत्मकथा लिखना नहीं था लेकिन किसी व्यक्ति का हर दिन की जिंदगी का लेखा जोखा होंने की वजह से तटस्थ भाव से लिखे गये जीवन वर्णन ने आत्मकथा का रूप धारण कर लिया और आत्मकथा साहित्य को एक नवीनतम शैली प्राप्त हुई जिसका नाम है ''डायरी एवं पत्र'' ।

हिन्दी साहित्य में इस नवीनतम शैली का आरम्भ उत्कृष्ट रूप में "मोहन राकेश की डायरी" के प्रकाशन से माना जाता है। जिसे मरणोपरांत उनकी पत्नी अनीता ने प्रकाशित करवाया था। लेखक की आत्मकथा में प्रथम पुरूष में लिखी गई है। डायरी की भाषा में स्वाभाविकता एवं रोचकता होंने से आत्मकथा उत्कृष्ट बन पड़ी है। किसी भी विधा का उद्देश्य उसकी भाषा पर निर्भर करता है। भाषा सरल, सहज, रोचक, परिमार्जित, परिनिष्ठत होंने पर ही कोई भी विधा सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकती है।

शैलीगत अभिनवता आत्मकथा को अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाती है। कथावस्तु की अच्छाई या बुराई एवं दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति इसी पर निर्भर करती है। इसका सम्बंध शब्दों, भावों विचारों सभी से होता हैं। जहां उत्कृष्ट शैली का अभाव रहता है, वहां आत्मकथा चेतनाहीन एवं मूक बन जाती है।

"मोहन राकेश की डायरी" में आत्मकथात्मक , संवादात्मक या संलाप, पत्रात्मक शैली, स्मृति परक, विचारात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, भावात्मकता को प्रयोग किया गया है। लेखक ने अपने मन में उमड़ते घुमड़ते विचारों को कहीं अंग्रेजी भाषा के शब्दों से तो कहीं संस्कृत, तद्‌भव, देशज, पंजाबी, अरबी, फारसी के शब्दों का प्रयोग करके पाठक

तक पहुंचाने का प्रयास किया हैं। लेखक ने आत्मकथा मे उस दिन का वर्णन किया हैं जिस दिन शीला से सम्बन्ध विच्छेद के लिए हस्ताक्षर होने थे उस क्षण का लेखक ने संवादात्मक, प्रतीकात्मक शैली मे अद्‌भुत वर्णन किया है। ऐसा लगता है डायरी नहीं पढ कर उपन्यास या कथा ही पढ रहे हों–

"कागज पर शीला हस्ताक्षर करने लगी तो नीत उसका हाथ पकड़ कर रोता रहा। सौमेश ने उसे ले लिया तो रोने लगा। उसी समय एक चिड़िया बिजली के पंखे की चोट खाकर चारपाई पर आ गिरी। मैं कुछ देख नहीं रहा था, केवल दिमाग में कुछ शब्द गूंज रहे थे।
"हाय–हाय, चिडियां मर गई''
''चिडियां नहीं चिड़िया का बच्चा है"
"नंही चिड़िया है।"
"मरी नहीं केवल चोट लगी है।"
"इसे उठाकर एक तरफ रख दो"
"इधर मत करो, बच्चा उसे मसल देगा"
"नहीं कभी नही मसलेगा, वह उससे दूर रहेगा" – 205

लेखक एक साहित्यकार था इसीलिये उसने डायरी भी ऐसे लिखी जैसे साहित्य की किसी रचना का सृजन कर रहा हो तभी तो डायरी जो कि अविछिन्न एवं साधारण भाषा में लिखी जाती है। उस पर भी लेखक की प्रतिभा का प्रभाव हैं कि प्रकृति वर्णन भी बहुत सुन्दर शब्दों में किया गया है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति वर्णन, वस्तु वर्णन, परिवेश, मनस्थिति, वातावरण विधान सभा का वर्णन शब्दों के माध्यम से मनोहर बन पड़ा है।

लेखक ने आत्मकथा की नवीनतम में डायरी को ही प्रस्तुत नहीं किया है अपितु एक और नवीन प्रयोग करते हुए डायरी में ही पत्रात्मक शैली को भी प्रयोग किया है। जिसका उदाहरण द्रष्यटव्य है–
"वीणा,

"बाद दोपहर घर से निकलते हुए लेटर बॉक्स देखा! तुम्हारा पत्र निकला। सड़क पर चलते हुए पढा–"एक प्रातः यहां आ जाओ। सप्ताह भर रहना, घूमना, बात करना चित्त सुस्थिर हो जाएगा।"

"जल्दबाजी की आदत तो है ही। आज निश्चय कर लिया कि फरवरी के पहले या दूसरे सप्ताह चला जाऊंगा, कुछ काम साथ ले जाऊंगा। घूमूंगा, पढ़ूंगा लिखूंगा।"– 206

विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा पंखहीन में अपने निजी पत्रों को स्थान देकर नवीन शैली तथा सत्यता को तर्क की कसौटी पर कसने की कोशिश की है जैसा कि लेखक ने लिखा है।

श्रृद्धेय पुरूष,

सादर सेवा में निवेदन है कि पुरूष समझता है मैं शक्तिशाली हूँ नारी से। इसलिए वह स्त्री जाति को सदैव दबाने की कोशिश करता हैं नारी को वह अबला, अशक्त कायर और न जाने क्या–क्या समझता है ? वह किसी भी बात में नारी को शासन करते नहीं देख सकता। जहां उसने नारी में तनिक भी स्वतंत्रता देखी कि एकदम अहम् भाव जागृत हो उठता हैं।'' – 207

इसके अतिरिक्त लेखक ने अपनी आत्मकथा में मुक्त गगन खण्ड में परिशिष्ट के रूप में अपनी डायरी के अंशो को भी दिया है। जैसे

''21 जून शानिवार

''आज मेरा जन्म दिन था। एक मित्र ने बधाई दी पर आगे जो हुआ वह बहुत बुरा हुआ। इन दिनों घर में बच्चों को लेकर बड़ा कलह रहता है मैं उठा तो माँ और पत्नी में झगड़ा चल रहा था। अनिता रो रही थी। क्या बात थी ? मुझे नहीं पता, पर बातों ही बातों में मुझे तैश आ गया और मैंने घर से अलग होंने की बात कह दी, नहीं कहनी चाहिए थी– पर यह सब क्षणिक था।'' – 208

इसके अतिरिक्त लेखक ने ''और पंछी उड़ गया'' में अपनी डायरी के कुछ अंशों की झलक दी है ''15 फरवरी प्रातः 5 बजे उठा । 5:15 पर घूमने गया।'' 7:15 पर लौटा।

अखबार पढ़ा टाईप किया हुआ काम देखा। नाटक वाला लेख चल रहा हैं। " पर उठा 1 1/2 तक स्नान और पढ़ना चला।" – 209

विशिष्ट साहित्यकार डॉ. हरिवंश राय बच्चन ने भी अपनी आत्मकथा 'नीड़ का निर्माण फिर' में अंत में उनकी पत्नी के देहावसान के उपरान्त बेनीपुरी जी का जो पत्र मिला उसे प्रमाण स्वरूप परिशिष्ट में स्थान दिया है।

पटना

17–11–36

प्रिय भाई,

क्या लिखूं समझ में नहीं आता उस क्षण का पूरा दृश्य और उसके बीच की तुम्हारी वह मूर्ति– मानों पचांग्नि के बीच कोई तपस्वी निर्विकार बैठा हो– क्या जल्द भूल जाने की चीज है।

कर्तव्य से बंधा दौड़ा चला आया। एक बात और भी तो थी–

मुझसे तो न देखी जाएंगी

माली पामाली फूलों की।" – 210

अंततः यही कहा जा सकता है कि साहित्यकारों में नवीन शैली का प्रतिपादन करते हुए जब जैसी स्थिति मनःस्थिति और परिस्थिति हुई है, तब–तब वैसे ही शब्द साहित्यकारों की कलम उगलती गयी है। रोजमर्रा की शब्दावली, अति प्रचलित, अंग्रेजी उर्दू के शब्दों का सहारा पाकर तो इतनी सजीव हो उठी हैं कि वह अनुभूतियों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है। उसमें कथ्य के सम्प्रेषण की भरपूर क्षमता विद्यमान है भाषा की अन्य विशेषताओं में व्यंजकता, प्रवाहशीलता सम्प्रेषण क्षमता, लाक्षणिकता भी मिलती है। कहीं–कहीं भाषा भाव से एकमेक हो गयी है और कंही उसमें आई काव्यात्मकता ने वर्ण्य विषय को समग्रतः पाठकीय संवेदना में उतार दिया है ।

# सन्दर्भ


1. साहित्य का उद्देश्य – प्रेमचन्द– पृ.सं. 07
2. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–153–154, संस्करण–2008
3. नीड का निर्माण फिर – डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 14, संस्करण–2008
4. नीड का निर्माण फिर – डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 155, संस्करण–2008
5. नीड का निर्माण फिर – डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 16, संस्करण–2008
6. पंखहीन–विष्णु प्रभाकर– पृ.सं. – 26, संस्करण–2010
7. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं. –253, संस्करण–2008
8. जलती हुई नदी –कमलेश्वर– पृ.सं. – 91, संस्करण–2008
9. मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश– पृ.सं. –30, संस्करण–2008
10. दशद्वार से सोपान तक –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–220, संस्करण–2013
11. अन्या से अनन्या तक –डा0 प्रभा खेतान– पृ.सं –21, सं0 पहली आवृति–2008
12. अन्या से अनन्या तक–डा0 प्रभा खेतान– पृ.सं.–63, सं0 पहली आवृति–2008
13. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश– पृ.सं. – 22, संस्करण–2008
14. दशद्वार से सोपान तक –डा0 हरिवंशराय बच्चन –पृ.सं.–31, संस्करण–2013
15. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 37,संस्करण–2004
16. जलती हुई नदी –कमलेश्वर – पृ.सं. – 149,संस्करण–2008
17. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी –पृ.सं.–152, संस्करण दूसरी आवृति–2009
18. नीड का निर्माण फिर – डा0 हरिवंशराय बच्चन –पृ.सं.–18,संस्करण–2008
19. पंखहीन –विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 119,संस्करण–2010
20. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी– पृ.सं.–65, संस्करण दूसरी आवृति–2009
21. जलती हुई नदी –कमलेश्वर– पृ.सं. – 63, संस्करण–2008
22. बसेरे से दूर– डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 134, ,संस्करण–2004
23. दशद्वार से सोपान तक– डा0 हरिवंशराय बच्चन– पृ.सं.–450, संस्करण–2013
24. अन्या से अनन्या – डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 178, सं0 पहली आवृति–2008
25. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 16, संस्करण–2008
26. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 104, सं0 पहली आवृति–2008
27. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. –202, संस्करण–2008
28. दशद्वार से सोपान –डा0 हरिवंशराय बच्चन– पृ.सं. – 60, संस्करण–2013
29. दशद्वार से सोपान –डा0 हरिवंशराय बच्चन– पृ.सं. – 75, संस्करण–2013
30. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन –पृ.सं. – 33, ,संस्करण–2004

31. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी– पृ.सं.–98 संस्करण दूसरी आवृति–2009
32. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 96,संस्करण–2004
33. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर –पृ.सं. – 76, ,संस्करण–2010
34. कुछ विचार –प्रेमचन्द – पृ.सं. – 120,121,125
35. नीड का निर्माण फिर–डा0 हरिवंशराय बच्चन –पृ.सं.–134–137,संस्करण–2008
36. और पंछी उड़ गया–विष्णु प्रभाकर– पृ.सं.–14–15, संस्करण–2009
37. पंखहीन –विष्णु प्रभाकर– पृ.सं.–107, ,संस्करण–2010
38. जलती हुई नदी –कमलेश्वर– पृ.सं. – 59,संस्करण–2008
39. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान– पृ.सं.– 62–63, सं0 पहली आवृति–2008
40. मुक्त गगन में – विष्णु प्रभाकर –पृ.सं.– 62, संस्करण–2011
41. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–134–135,संस्करण–2004
42. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश – पृ.सं.–220–221, संस्करण–2008
43. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश – पृ.सं. – 188–189, संस्करण–2008
44. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 139,संस्करण–2004
45. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान–पृ.सं.–82–83, सं0 पहली आवृति–2008
46. नीड का निर्माण फिर–डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–202–203, ,संस्करण–2008
47. जो मैंने जिया – कमलेश्वर– पृ.सं. – 65–65,संस्करण–2008
48. जलती हुई नदी –कमलेश्वर – पृ.सं. – 82,संस्करण–2008
49. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर–पृ.सं.– 140, संस्करण–2010
50. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर– पृ.सं.– 46–47,संस्करण–2009
51. पंखहीन – विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 47, संस्करण–2010
52. जलती हुई नदी –कमलेश्वर– पृ.सं.–10–11,संस्करण–2008
53. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन– पृ.सं.– 129,संस्करण–2008
54. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान– पृ.सं. –29, सं0 पहली आवृति–2008
55. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन – पृ.सं. – 40,संस्करण–2004
56. अन्या से अनन्या – डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 21 , सं0 पहली आवृति–2008
57. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 37, संस्करण–2009
58. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 147, संस्करण–2009
59. बसेरे से दूर – डा0 हरिवंशराय बच्चन– पृ.सं. – 121,संस्करण–2004
60. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–207,संस्करण–2008
61. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश– पृ.सं. – 159,संस्करण–2008
62. अन्या से अनन्या तक –डा0 प्रभा खेतान–पृ.सं. – 197, सं0 पहली आवृति–2008

63. मुक्त गगन में– विष्णु प्रभाकर– पृ.सं.–122–123, संस्करण–2011
64. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश – पृ.सं. – 142–143 ,संस्करण–2008
65. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–254–255,संस्करण–2008
66. जो मैंने जिया – कमलेश्वर – पृ.सं. – 76–77,संस्करण–2008
67. जलती हुई नदी– कमलेश्वर – पृ.सं. – 33, संस्करण–2008
68. पंखहीन –डा0 विष्णु प्रभाकर– पृ.सं. – 127, संस्करण–2010
69. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर–पृ.सं.–104–105, संस्करण–2009
70. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी–पृ.सं.–142–143, सं0 दूसरी आवृति–2009
71. एक कहानी यह भी –मन्नू भंडारी– पृ.सं. – 208–209, सं0 दूसरी आवृति–2009
72. बसेरे से दूर –डा0 हरिवंशराय बच्चन– पृ.सं. – 60–61,संस्करण–2004
73. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर– पृ.सं. – 200–201, संस्करण–2009
74. पंखहीन –डा0 विष्णु प्रभाकर– पृ.सं. – 62–63, संस्करण–2010
75. जलती हुई नदी –कमलेश्वर – पृ.सं. – 62–63, संस्करण–2008
76. नीड का निर्माण फिर –डा0 हरिवंशराय बच्चन–पृ.सं.–188–189, संस्करण–2008
77. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश– पृ.सं. – 280–281, संस्करण–2008
78. मुक्त गगन में – विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 78–79, संस्करण–2011
79. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान –पृ.सं.–212–213, सं0 पहली आवृति–2008
80. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 06, सं0 पहली आवृति–2008
81. और पंछी उड़ गया– विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 29, संस्करण–2009
82. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी –पृ.सं.–27 , सं0 दूसरी आवृति–2009
83. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 22, सं0 पहली आवृति–2008
84. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 250, सं0 पहली आवृति–2008
85. अन्या से अनन्या –डा0 प्रभा खेतान – पृ.सं. – 251, सं0 पहली आवृति–2008
86. जो मैंने जिया – कमलेश्वर – पृ.सं. – 181,संस्करण–2008
87. पंखहीन –डा0 विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 188, संस्करण–2010
88. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 104, सं0 दूसरी आवृति–2009
89. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 129 , सं0 दूसरी आवृति–2009
90. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 92, सं0 दूसरी आवृति–2009
91. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 154 , सं0 दूसरी आवृति–2009
92. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश – पृ.सं. – 174 ,संस्करण–2008
93. मोहन राकेश की डायरी– मोहन राकेश – पृ.सं. – 221, संस्करण–2008
94. मोहन राकेश की डायरी –मोहन राकेश –पृ.सं. – 221, संस्करण–2008

95. मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश – पृ.सं.–79, संस्करण–2008

96 मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश – पृ.सं.–179, संस्करण–2008

97 मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश – पृ.सं.–255, संस्करण–2008

98 बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–11, संस्करण–2004

99. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–36, संस्करण–2004

100. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–36, संस्करण–2004

101. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–40, संस्करण–2004

102. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–42, संस्करण–2004

103. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–84, संस्करण–2004

104. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–107, संस्करण–2004

105. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.–75, संस्करण–2004

106. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 48, संस्करण–2008

107. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 39, संस्करण–2008

108. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 50, संस्करण–2008

109. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 54, संस्करण–2008

110. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 56, संस्करण–2008

111. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 18, सं0 दूसरी आवृति–2009

112. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 74, सं0 दूसरी आवृति–2009

113. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 58, सं0 दूसरी आवृति–2009

114. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 218, सं0 दूसरी आवृति–2009

115. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 15, सं0 दूसरी आवृति–2009

116. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 222, सं0 दूसरी आवृति–2009

117. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 98, सं0 दूसरी आवृति–2009

118. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 88, सं0 दूसरी आवृति–2009

119. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 88, सं0 दूसरी आवृति–2009

120. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 05, सं0 पहली आवृति–2008

121. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 125, सं0 पहली आवृति–2008

122. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 28, सं0 पहली आवृति–2008

123. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 22, सं0 पहली आवृति–2008

124. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 111,सं0 पहली आवृति–2008

125. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 173, सं0 पहली आवृति–2008

126. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 8–9, सं0 पहली आवृति–2008

127. अन्या से अनन्या – डा. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 79, सं0 पहली आवृति–2008
128. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृ.सं.–258, संस्करण–2008
129. दशद्वार से सोपान तक भूमिका –डॉ. हरिवंश राय बच्चन–पृ.सं.–07, सं0–2013
130. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृ.सं. – 185, संस्करण–2008
131. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 351, सं0–2013
132. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 54, संस्करण–2008
133. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 57, संस्करण–2008
134. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 54, संस्करण–2008
135. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 408, सं0–2013
136. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 52, सं0–2013
137. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृ.सं. – 207, संस्करण–2008
138. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 202, संस्करण–2008
139. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 63, संस्करण–2008
140. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 51, संस्करण–2008
141. दशद्वार से सोपान तक–डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 271, सं0–2013
142. दशद्वार से सोपान तक –डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 35, सं0–2013
143. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 16, संस्करण–2008
144. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 22, सं0–2013
145. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 78, सं0–2013
146. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 295, सं0–2013
147. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 60, सं0–2013
148. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 143, संस्करण–2008
149. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. –429, सं0–2013
150. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं.– 181, संस्करण–2008
151. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 158, सं0–2013
152. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 151, सं0–2013
153. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 75, सं0–2013
154. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 66, सं0–2013
155. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 64, सं0–2013
156. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 391, सं0–2013
157. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. –21, संस्करण–2010
158. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 30, संस्करण–2010

159. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 155, संस्करण–2010

160. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 58, संस्करण–2010

161. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 40, संस्करण–2010

162. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 40 , संस्करण–2010

163. मुक्त गगन में – डा. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 153, संस्करण–2011

164. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 159, संस्करण–2010

165. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 161, संस्करण–2010

166. मुक्त गगन में – डा. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 153, संस्करण–2011

167. मुक्त गगन में – डा. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 153, संस्करण–2011

168. अन्या से अनन्या – डॉ. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 251, सं0 पहली आवृति–2008

169. अन्या से अनन्या – डॉ. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 252, सं0 पहली आवृति–2008

170. मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश – पृ.सं. – 227, संस्करण–2008

171. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 92, संस्करण–2010

172. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 08, संस्करण–2010

173. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृ.सं. – 144, संस्करण–2008

174. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 32, संस्करण–2008

175. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 169, संस्करण–2008

176. बसेरे से दूर – डा. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 198, संस्करण–2004

177. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन– पृ.सं. – 260, संस्करण–2008

178. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 47, संस्करण–2010

179. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 41, संस्करण–2009

180. फण्डा मेण्टल ऑफ गुड राइटिंग – राबर्ट पेन वारेन

181. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 66, संस्करण–2009

182. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 194, संस्करण–2010

183. अन्या से अनन्या – डॉ. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 256, सं0 पहली आवृति–2008

184. अन्या से अनन्या – डॉ. प्रभा खेतान – पृ.सं. – 255, सं0 पहली आवृति–2008

185. एक कहानी यह भी – मन्नू भंडारी – पृ.सं. – 77, सं0 दूसरी आवृति–2009

186. जलती हुई नदी – कमलेश्वर – पृ.सं. – 57, संस्करण–2008

187. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 06, संस्करण–2004

188. बसेरे से दूर – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं.– 107, संस्करण–2004

189. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 66, स0–2013

190. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 22, संस्करण–2008

191. नीड़ का निर्माण फिर –डॉ. हरिवंश राय बच्चन –पृ.सं. – 258, संस्करण–2008

192. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 194, संस्करण–2010

193. मुक्त गगन में – डा. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 30, संस्करण–2011

194. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 199, संस्करण–2010

195. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 38, संस्करण–2009

196. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 99, संस्करण–2009

197. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 13, संस्करण–2009

198. हिन्दी शब्द कोश – डॉ. हरदेव बाहरी सपा.– पृ.सं. – 164, संस्करण–2009

199. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 477, स0–2013

200. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 476, स0–2013

201. दशद्वार से सोपान तक – डॉ. हरिवंश राय बच्चन – पृ.सं. – 438, स0–2013

202. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 12, संस्करण–2009

203. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. – 88, संस्करण–2009

204. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 70, संस्करण–2010

205. मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश – पृ.सं. – 105, संस्करण–2008

206. मोहन राकेश की डायरी – मोहन राकेश – पृ.सं. – 159, संस्करण–2008

207. पंखहीन – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 161, संस्करण–2010

208. मुक्त गगन में – डा. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं.– 218, संस्करण–2011

209. और पंछी उड़ गया – डॉ. विष्णु प्रभाकर – पृ.सं. –75, संस्करण–2009

210. नीड का निर्माण फिर –डा. हरिवंश राय बच्च्न – पृ.सं. – 265, संस्करण–2008

# सप्तम पर्व– निष्कर्ष एवं अर्थवत्ता

"हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन" पर विहंगम दृष्टिपात पर करने पर यह स्वतः सिद्ध हो जाता हैं कि साहित्यकारों ने जो भी अनुभव किया, जो भी अपनी खुली आँखो से देखा, परखा और चौकन्ने कानों से सुना तथा जो कुछ भी स्मृति की कोठरी से बाहर आ पाया उसे लिख डाला। लिखने की यही तीव्र प्रवृति और सहज अभिव्यक्ति लेखक की स्वतंत्र मौलिक लेखन शैली को दर्शाती है। लेखक ने आत्मकथा का सृजन सहज रूप से किया है और जीवन संघर्ष की गाथा को भी स्वाभाविकता प्रदान की है। हिन्दी साहित्यकारों ने सभी आत्मकथाओं में पात्रों एवं घटनाओं का संयोजन तो किया ही है, वही आवश्यकतानुरूप पात्रों के मनोभावों का खुलासा भी किया है। मनोभावों का सहज रूप से चित्रण कथाकार के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर करता है। जो उनके पात्रों के माध्यम से यत्र–तत्र अनुभूत किया जा सकता हैं। यही नही भारतीय सांस्कृतिक परिवेश को आत्मसात किया, जीवन मूल्यों की सार्थकता को भी उजागर किया है, जो कि लेखकों के आदर्शवादी दृष्टिकोण का द्योतक है। भाषा और शैली की दृष्टि से ये आत्मकथाएं सहज, सरल, सुबोध है। लेखकों ने जहां कहीं भी संवादात्मक शैली का प्रयोग किया हैं वहां उन्होंने संवादों को थोपा नहीं है वरन पात्रों की आवश्यकतानुरूप उन्हीं की भाषा में उन्हीं से कहलवाया है जिससे आत्मकथा कल्पना से परे स्वाभाविक प्रतीत होती है। यही कारण हैं कि पाठक इनसे रूबरू होकर स्वयं की उपस्थिति कहीं न कहीं महसूस करता है। यही साहित्य की सफलता भी है और सार्थकता भी।

वर्तमान लेखकों की आत्मकथा अपनी ताजगी, स्फूर्ति और शिल्प की नवीनता में अत्यधिक सम्पन्न है इन आत्मकथाओं में लेखकों ने जहां सामाजिक दायित्व का निर्वाह सफलता पूर्वक किया है और सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की है, वही रूढ़ियों का भी बहिष्कार किया है। व्यक्ति के आत्मसंकट, सामाजिक परिवर्तन की स्थितियों, सत्ता और श्रम के संघर्ष तथा आम आदमी की जिन्दगी की पहचान में आत्मकथाएं सर्वथा सफल हैं। आधुनिक युग में मूल्य सरिता की अभिव्यक्ति में जो विस्तृत फैलाव एवं गहराव आया है, उन सामाजिक मूल्यों के विविध स्वरूपों के अंकन में ये आत्मकथाएं अत्यंत ईमानदार हैं।

आधुनिक युग की आत्मकथाएं अतीत की अपेक्षा अधिक आक्रामक, सामाजिक जीवन की विसंगतियों के कारण आक्रोश से भरी हुई तथा युवा पीढ़ी की मानसिकता और

इस मानसिकता को तोड़ने वाली सत्ता के विभिन्न चेहरों की पहचान में सजग और सतर्क हैं। नारी जीवन के बहुआयामी रंगों को विविध दृष्टिकोणों से परख चिन्तन कर नारी अस्तित्व की मौलिक अवधारणा स्थापित की हैं।

इस युग की आत्मकथा अनुभव के यथार्थ से नियोजित है अतः वह सच्चाई और वास्तविकता को इन्कार कर जिन्दा नहीं रह सकता। साहित्यकारों की आत्मकथाएं किसी राम की पत्थर में स्पन्दन मारने की जगह भूख से तड़पते इन्सान, आदमखोर के हाथ से लुटती हुई नारी देह, व्यवस्था की मार से रौंदा हुआ युवा आक्रोश तथा अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ने वाले युवा मानस के विभिन्न स्वरूप और उनकी चेष्टाओं की परख में बेहद ईमानदार हैं। आत्मकथा साहित्य का अध्ययन मनन, अनुशीलन करने पर निष्कर्ष रूप में जो तथ्य प्राप्त हुए है उन्हें अध्यायों के अनुसार प्रस्तुत किया गया हैं।

शोध की समस्या का प्रमुख विषय है– **''हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा –साहित्यः समीक्षात्मक आकलन''** समस्या पर अनुसंधान तथा सत्यान्वेषण करना। शोधार्थी ने शोध विषय के रूप में हिन्दी साहित्य की अनुभूति विधा विशेष आत्मकथा को चुना तथा ''कोटा विश्वविधालय, कोटा'' में शोध विषय का पंजीयन करवाया। शोधार्थी के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मात्र हिन्दी साहित्यकारों द्वारा रचित आत्मकथा साहित्य रहा क्योंकि समग्र आत्मकथाओं को समेटना शोध के विषय के साथ न्याय नही कर पाता। शोधार्थी ने वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण करते हुए सर्वप्रथम आत्मकथा का सहज अन्वीक्षण किया तत्पश्चात् सोद्देश्य, क्रमबद्ध, अध्ययन, परिकल्पना का निर्माण, तथ्यों का एकत्रीकरण किया फिर तर्क की कसौटी पर कसकर निष्कर्ष तथा सत्यान्वेषण का प्रस्तुत किया। शोधार्थी ने आत्मकथा साहित्य से सम्बन्धित समस्त सामग्री का संकलन किया उसके पश्चात् आत्मकथाओं का वर्गीकरण विभिन्न सोपानों पर किया जैसे विश्वस्तर, अनुवादित, आधुनिक, उत्तरार्ध, दलित, वर्तमान आत्मकथा इत्यादि। आत्मकथा साहित्य का वर्गीकरण करने के पश्चात् सभी आत्मकथाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण कर भाव पक्ष एवं कला पक्ष का मूल्यांकन कर सत्य तक पहुंचकर उसकी व्याख्या प्रस्तुत की। समस्या के समाधान के विभिन्न चरणों को पार करते हुए उनसे प्राप्त तथ्यों द्वारा नवीनतम सत्यों का उद्घाटन किया। इसमें साहित्यकारों के वैयक्तिक, सामाजिक, राजैनितक, पारिवारिक पक्ष प्रमुख हैं।

शोधार्थी का उद्देश्य वैज्ञानिक पद्धति से अनुमानित परिकल्पना के आधार पर किसी तथ्य या सिद्धांत का शोध करना है। इसके लिए शोधार्थी ने **'हिन्दी के**

**साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन'** का चयन किया है। आत्मकथा का साहित्यिक एवं तात्त्विक विवेचन करते हुए परिचय, स्वरूप, लक्षण, तत्त्व, आत्मकथा के नवीन रूप, भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से दोनों रूपों में प्रस्तुत किया। शोधार्थी ने विभिन्न आत्मकथाओं में से हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथा के साहित्य संसार का उद्घाटन किया, जिसमें आत्मकथा के प्रारम्भ से लेकर अद्यतन आत्मकथा साहित्य का अध्ययन मनन व विश्लेषण किया। प्रत्येक साहित्यकार का कार्यक्षेत्र अलग रहा इसीलिए जीवनानुभव भी विभिन्न एवं विलग रहे। यथार्थपरक विधा के अनुशीलन द्वारा साहित्यकारों के अमूल्य अनुभवों का आस्वादन करते हुए उनसे जीवन सम्बन्धी दिशा–निर्देश प्राप्त किये। शोधार्थी ने शोध के द्वारा लेखक के उन अनछुए पहुलओं को प्रकाश में लाने की कोशिश की हैं जो अब तक लेखक तक ही सीमित थे। उन्हें शोध की दृष्टि से अन्वेषण करते हुए उनमें छिपी हुई भावना को भाव और कला की कसौटी पर प्रकाश में लाना शोधार्थी का लक्ष्य रहा है। विधा के श्रेष्ठतम परिरूप का परिदृश्य उपस्थित करते हुए सामान्य से असाधारण तक की आत्मकथा का उल्लेख करना और उसका कारण देना शोधार्थी का लक्ष्य रहा है। हिन्दी आत्मकथा साहित्य के सम्बन्ध में अब तक के अनुसंधानों से इतर नवीन निष्कर्ष प्रस्तुत करना शोधार्थी का लक्ष्य रहा है। हिन्दी आत्मकथा साहित्य का अध्ययन करते हुए शोधार्थी ने अध्ययन, अन्वेषण, विश्लेषण के द्वारा अपनी ही नही वरन जिज्ञासु वर्ग की जिज्ञासा का शमन करने का प्रयास किया है। विषय से सम्बन्धित समस्त प्रश्नों का हल ढूंढने का प्रयास किया गया एवं आत्मकथा विधा को समीक्षात्मक रूप में पाठकों के सामने लाना शोधार्थी का मूल उद्देश्य है।

विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकों की समीक्षा करने के पश्चात् समीक्षा को स्तरीय साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजा गया। पुस्तक समीक्षा (Review of Litrature) में स्तरीय, स्मरणीय, और उल्लेखनीय आत्मकथा का चयन कर उस पर स्तरीय समीक्षा कार्य किया। हिन्दी साहित्य की स्तरीय आत्मकथा की कथ्य एवं शिल्प के स्तर पर समीक्षा की तथा समीक्षात्मक अध्ययन करते हुए आत्मकथा का यथार्थ आकलन किया। विषय से सम्बन्धित कतिपय पुस्तकों की समीक्षा करने के पश्चात् इन्हे स्तरीय साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजा गया। शोध पत्र प्रकाशित हुए।

प्रविधि पद्धति का स्वरूप सपष्ट करते हुए शोधार्थी ने निष्कर्ष निकाला कि यह शोध समीक्षा स–हित है। शोधार्थी ने पद्धति की महत्ता बताते हुए वैज्ञानिक पद्धति द्वारा अध्ययन करते हुए समीक्षात्मक पद्धति अपनाते हुए विषय के गुण एवं विवेचन के आधार पर आकलन करके व्याख्यात्मक पद्धति के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया। शोधार्थी ने वैज्ञानिक पद्धति के निर्धारित सोपानों का पालन करते हुए शोध के निष्कर्ष तक पहुचने का प्रयास किया हैं। इसमें समस्या का चुनाव, उद्देश्य निर्धारण, प्राक्कल्पना निर्माण, इकाई का निर्धारण, तथ्य संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण, सामान्य नियम, नियमों की जांच, सत्यान्वेषण करते हुए भावी संभावना पर विचार किया।

हिन्दी आत्मकथा साहित्य का उदय आदिकाल में जैन कवि बनारसी दास की 'अर्द्ध कथानक' से माना जाता हैं जो कि पद्यात्मक रूप में प्राप्त होती है। इसमे लेखक ने अपने गुण दोषों के वर्णन के साथ ही आत्मकथा के तत्त्वों का भी निर्वाह करते हुए सृजन किया हैं। हिन्दी साहित्य में आत्मकथा विभिन्न स्वरूपों में प्राप्त होती हैं। जिनमें प्रमुख हैं– पद्यात्मक, निबंध, संस्मरण, डायरी, पत्र, पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, यात्रा वृत्तांत इत्यादि। आत्मकथा की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का निष्कर्ष यही है। आत्मकथा साहित्य का वह प्रकार है, जिसमें लेखक अपने जिये हुए जीवन का, मुख्य घटनाओं का विवरण, सत्य एवं यथार्थ की भूमिका पर आत्म निरीक्षण एवं परीक्षण करते हुए प्रस्तुत करता है। हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की भांति ही आत्मकथा के भी कुछ लक्षण निर्धारित होते हैं जो निम्न हैं– प्रमाणिकता, ऐतिहासिक तथ्य विवेचन, यथार्थ की अभिव्यंजना, प्रायश्चित आदि प्रमुख है। आत्मकथा को साहित्य की कसौटी पर कसने में जिन तत्त्वों का प्रमुख सहयोग है वह इस प्रकार हैं– यथातथ्य जीवन वर्णन, स्वलेखन, तटस्थता, ईमानदारी, कलात्मकता आदि। आत्मकथा लेखक, आत्मकथा क्यों लिखता है, इसका भी लक्ष्य निर्धारित होता है क्योंकि बिना किसी उद्देश्य के साहित्य सृजन सफल नहीं हो सकता है। आत्मकथा लेखक के निम्न लक्ष्य नवीनतम रूप में प्राप्त हुए है। पाठकों का हास्य व्यंग्य के माध्यम से मनोरंजन करना, साहित्यक एवं राजनैतिक संघर्ष को प्रकट करना, साहित्य जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करना, साहित्यकार के एकांतिक संताप और सच्चाई को प्रकट करना, महिला साहित्यकारों के अपने लक्ष्य हैं जिसमें स्त्री शोषण, मनोविज्ञान, मुक्ति के संघर्ष की गाथा को साझा करना, प्रत्येक साहित्यकार का अपना जीवन दर्शन, वैचारिकता, परिवेश, संस्कार होता है। अतः प्रत्येक के लक्ष्य में भी

विभिन्नता होती है। किसी भी साहित्यक विधा की भांति ही आत्मकथा का भी अपना महत्त्व होता है लेकिन इसमें भिन्नता यह होती हैं कि आत्मकथा का महत्त्व लेखक के लिए अलग तथा पाठक के लिए अलग होता है क्योंकि सम्पूर्ण जीवन वर्णन में से दोनों ही अपने अपने महत्त्व को चुनते हैं। लेखक ने आत्मकथा के माध्यम से अपने जीवन के किस पक्ष को उभारना चाहा है लेकिन पाठक को उसमें से अपने जीवन के लिए क्या महत्त्वपूर्ण लगा यह उसके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। अतः रचना का महत्व लेखक तथा पाठक दोनों के लिए भिन्न है।

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा के विभिन्न रूप प्राप्त होते हैं, जिसमें एक 'डायरी' भी है। हिन्दी साहित्य में डायरी रूप में ''मोहन राकेश की डायरी'' प्रकाशित रूप में प्राप्त होती है। आत्मकथा स्मृति पर आधारित होती हैं जबकि डायरी वर्तमान पर आधारित होकर इतिहास बनती जाती है, अतः डायरी के कुछ अंशों का आत्मकथा में उपयोग हो सकता है लेकिन सम्पूर्ण डायरी नीरसता और विश्रृंखलता की ही अभिवृद्धि करती है। हिन्दी साहित्य में आत्मकथा लिखने की प्रेरणा तथा उनका पथ प्रदर्शन करने का श्रेय मुंशी प्रेमचंद को ही जाता है जिन्होंने 1932 ई. में ''हंस'' पत्रिका में आत्मकथांक के नाम से एक सहायक अंक प्रकाशित करना आरम्भ किया, जिससे पत्र–पत्रिकाओं के इतिहास में एक नवीन परम्परा का आरम्भ हुआ था, जिसमें सर्वप्रथम जयशंकर प्रसाद की 'आत्मकथा' कविता थी। आत्मकथा के एक रूप में संस्मरण भी लघु आत्मकथा ही है क्योंकि संस्मरण भी स्मृति पर आधारित होते हैं और आत्मकथा भी स्मृति पर ही आधारित होती है। संस्मरण दो प्रकार के होते हैं– आत्मपरक और अन्यपरक। आत्मकथा के लिए दोनों ही संस्मरण उपयोगी हैं। पत्र सर्वथा वैयक्तिक सामग्री होती है क्योंकि उनके प्रयोजन भी सर्वथा वैयक्तिक ही होते हैं। आत्मपरक पत्रों को ही आत्मकथा का एक रूप मान सकते हैं। पत्र साहित्य में आत्मकथात्मक अंश आत्म संस्मरण की अपेक्षा भी अत्यंत संक्षिप्त एवं सीमित होते हैं इसीलिए इनके लिए विश्रृंखल आत्मकथा संकेत संज्ञा का व्यवहार किया गया इसलिए पत्र आत्मकथा का एक अंश तो हो सकते हैं लेकिन सम्पूर्ण आत्मकथा पत्र पर आधारित नहीं हो सकती है। आत्मकथा का लेखक स्वयं नायक, होता है जबकि जीवनी का नायक और लेखक दोनों ही अलग होते हैं। जीवन किसी भी व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन वृत्त हो सकती है लेकिन आत्मकथा अद्यतन वर्णन ही होता है। जिस काल में लेखक लिखता है वही तक का वर्णन होता है अंततः आत्मकथा और

जीवनी लक्ष्य भेद, यात्रा भेद, शैली भेद, और लेखक भेद आदि के अनेक रूपों में एक दूसरे से अलग विधाएँ हैं। आत्मकथा सम्पूर्ण जीवन पर आधारित होती हैं जबकि यात्रा वृत्तांत जीवन के निश्चित अंश पर आधारित होता है। यात्रा साहित्य वर्तमान पर भी आधारित हो सकता है जबकि आत्मकथा पूर्णतः स्मृति पर आधारित अतीत मुखी होती है। साहित्य में पृथ्वी के भूगोल की झांकी के दर्शन होते हैं। आत्मकथा चरित्र प्रधान होती है। यात्रा वृत्तांत वातावरण प्रधान होते है। शिकार साहित्य आत्मकथा नहीं हो सकता बल्कि आत्मकथा की व्यापकता में वृद्धि करने के रूप में उसका उपयोग किया जा सकता है। शिकार साहित्य एक स्वतंत्र विधा है, न वह निबंध हैं, न आत्मकथा, न कहानी, न संस्मरण, उसकी अपनी पृथक दृष्टि और पृथक अभिव्यक्ति है। रेखाचित्र तथा आत्मकथा दोनों में लेखक के सम्पर्क में आए किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्रण होता है जो लेखक की संवेदना को जगाता है। रेखाचित्र में आत्मेतर चित्रण प्रधान होता है। आत्मकथा में आत्मचित्रण प्रधान होता है। रेखाचित्र का नायक बहुधा आख्यातवृत्त होता है। आत्मकथा का प्रायः ख्यातवृत्त होता है। हिन्दी आत्मकथा के विकास के प्रारम्भिक चरण में अनेक बलिदानियों की जेल सम्बंधी आपबीतियों ने इस अनुभूतिजन्य माध्यम निरपेक्ष एवं यथा चरित्र आत्म प्रकाशन की विधा का पथ प्रशस्त किया था। आपबीती भी आत्मकथा का ही एक रूप है जो सम्पूर्ण तो नही लेकिन लघु आत्मकथा अवश्य हो सकता है।

विविध कार्य क्षेत्रों, सिद्धांतों, आदर्शो, विश्वासों, सम्पर्कों व क्रिया–कलापों आदि के परिणाम स्वरूप भी हमारे आत्म के अर्थ बदलते रहते हैं अतः यही निष्कर्ष निकलता हैं कि सर्वत्र विभिन्न संदर्भो और विभिन्न परिस्थितियों में विशिष्ट संस्कारों, आस्थाओं, रूढियों, तथा अपेक्षाओं आदि के साथ इस शब्द का व्यक्ति सापेक्ष सीमांकन किया जाये। अनेक आत्मकथा लेखकों ने अपनी कृतियों के लिए, आत्मकथा, आत्मचरित्र, आपबीती, आत्मचरित्र, आत्मवृत्त, निजवृत्तांत, मेरी कहानी, आत्मविश्लेषण, आत्मजीवनी और अपनी कहानी आदि शीर्षक भी प्रयुक्त किये है किन्तु हिन्दी के समीक्षकों और कोशकारों ने 'आत्मकथा' का ही व्यवहार अधिक किया है। अंग्रेजी में आत्मकथा के लिये 'ऑटो बायोग्राफी' शब्द प्रचलित है जिसका अर्थ होता है– आत्म जीवनी। आत्मकथा और जीवनी में प्रखर रूप से वैषम्य होता है। जीवनी कोई अन्य लिखता है, वह आद्योपान्त सम्पूर्ण जीवन कथा होती है जबकि आत्मकथा अर्धकथा होती है अतः आत्मकथा सीधे अर्थ में कभी भी आत्म जीवनी नहीं हो सकती क्योंकि वह निश्चित रूप से जीवन की अपूर्ण

कहानी ही कहती है। इसलिए उसे जीवनी के समान मानना असंगत है। केवल अंग्रेजी के प्रभाव स्वरूप ही लेखक या समीक्षक 'आत्म जीवनी और आत्मचरित्र' आदि शब्दों का व्यवहार करते हैं।

विश्व स्तर पर विभिन्न प्रसिद्ध लेखकों, विद्वानो, राजनेता, साहित्यकारों ने भी अपनी कथा लिखी, जिसमें से बीसवीं सदी के आरम्भ में ही विश्व की कुछ प्रसिद्ध आत्मकथाओं के अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित हो जाना यह सिद्ध करता हैं कि भारतीय चेतना का ध्यान उस प्रारम्भिक काल में ही आत्मकथा की उपयोगिता की ओर आकृष्ट होने लगा था, जिनमें प्रमुख हैं, बुकर डी वाशिंगटन, महात्मा टॉलस्टाय, मैक्सिम गोर्की, कैसर, वीरा, फिगनर इत्यादि। जिस प्रकार स्वतंत्रता से पूर्व प्रख्यात विदेशी आत्मकथाओं के अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित होने का क्रम जारी था स्वतंत्रता के पश्चात् भी वह क्रमशः गतिमान रहा जिनमें प्रमुख हैं, जूलियस क्यूचिंक, हर्बर्ट ए. फिल्ब्रिक, हैंमरी डेविड थोरो, हैंलेन केलर, बर्नार्ड बोटेन, मारिस फ्रेंक एवं ब्लेक क्लार्क, क्रोपाटकिन, अनतोली कुज्नेत्सोव, कार्ल सैण्डबर्ग, जैम्स ए. मिचनर, बेन्जामिन फ्रेंकलिन, जार्ज मारडियन, क्वामो एन्क्रूमा, वाल्टर **P.A.** क्रिडसलर, यू.टी.हैंसू , ग.अ., तीखोव, जैड स्नोवांग, एन्थमी सिल्वेस्टर, अब्दुल गफ्फार खां, आर्थर लंदन, मुहम्म्द शाह रेजा, एवजेनिया डी. जिन्स बर्ग एस्तर अहन किम, इत्यादि। वर्तमान काल में भी विभिन्न राजनेताओं, साहित्यकारों, लेखकों, विद्वानों, अर्थशास्त्रियों में आत्मकथा लिखने का क्रम जारी है। विश्व स्तर पर स्त्रियों की आत्मकथाएं भी चर्चा का केन्द्र रही हैं जिनमें प्रमुख रूप से पाकिस्तान की प्रथम प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो एवं स्त्रीवादी लेखन की हिमायती साहित्यकार तसलीमा नसरीन। भारत के पड़ौसी इस्लामिक राष्ट्रों की स्त्रियों की आत्मकथा पुरूष प्रधान समाज से जूझते हुए अपने अस्तित्व की पहचान बनाने का जीवंत दस्तावेज है, जिसमें एक स्त्री को स्त्री होने की कितनी बड़ी कीमत इस समाज में देनी होती है। स्त्री होने के नाते उसके हिस्से में आता है, त्याग, तपस्या, चारित्रिक परीक्षण, संघर्षमय जीवन, जीवन के हर मोर्चे पर लोहा लेना, स्त्री होने के नाते माँ, पत्नी, पुत्री, बहू सभी की भूमिका निभाते हुए हर पायदान पर स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की चुनौती को हर क्षण झेलते रहना विश्व की हर स्त्री की नियति है। आत्मकथा साहित्य में भारतीय स्तर पर प्रचलित विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में भी साहित्यकारों ने, अभिनेता, राजनेता, विद्वानों, लेखकों, ने आत्मकथा का सृजन किया है जिसे पाठकों को सुलभ कराने हेतु हिन्दी में अनुवाद किया

गया। भारतीय स्तर पर प्रमुख रूप से गुजराती, मराठी, बंगला, पंजाबी, अंग्रेजीं, उर्दू भाषाओं से आत्मकथा साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया गया। गुजराती भाषा में लिखित महात्मा गाँधी (मोहनदास करमचन्द गांधी) की आत्मकथा का हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी अनुवाद किया गया यह आत्मकथा एक व्यक्तिगत दस्तावेज होते हुए भी सामाजिक और राजनीतिक वातावरण को रोशन करती है। ऊँचे जीवन दर्शन को प्रस्तुत करती हुई गाँधी जी की आत्मकथा एक भव्य कृति है। पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। इनकी आत्मकथा मूलतः अंग्रेजी में लिखी गई हैं तथापि हिन्दी में अनूदित होने से यह हिन्दी साहित्य की संपदा बन गयी है। विधा की दृष्टि से भी लेखक ने पूरा ध्यान रखा है। उनकी यह आत्मकथा मात्र एक कहानी नहीं वरन समकालीन व्यक्तियों और राष्ट्रीय आंदोलन का सजीव और रोचक इतिहास भी है। उन्होंने यह आत्मकथा जेल में रहते हुए सतत आठ महीनों में पूरी की। श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल की आत्मकथा 'बंदी जीवन' मूलतः बंगला भाषा में है तथा हिन्दी में अनुवादित है। श्री बनारसी दास द्वारा सम्पादित आत्मकथा है। शचीन्द्र नाथ सान्याल ने बंगला भाषा की एक पत्रिका में एक लेखमाला आरंभ की। यही लेखमाला बाद में 'बंदी जीवन' के प्रथम तथा द्वितीय भाग के रूप में प्रकाश में आयी। इस कृति में लेखक ने जीवन को परखने की एक से एक नवीन दृष्टियों की रचना की हैं। उनकी दृष्टि का मुख्य केन्द्र कर्म तथा ज्ञान का संतुलन था। 'कम्यूनिज्म' के सिद्वांत की कुछ बातें अस्वीकार करते हुए भी उसके संस्पर्श से एक महान आदर्श की प्रेरणा का अनुभव इस कृति से प्राप्त होता है। हंसा वाडकर हिन्दी तथा मराठी की अत्यंत सफल तथा लोकप्रिय अभिनेत्री रही हैं। इन्होंने अपनी आत्मकथा मराठी भाषा में 'सांगत्ये एका' नाम से लिखी है। जिसका अनुवाद विजय बापट ने किया। अभिनेत्री का जीवन मुख्यतः एक व्यावसायिक स्त्री का जीवन था। परन्तु उनकी आत्मकथा से उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक, तथा सामाजिक अनेक पक्षों के सजीव चित्र उभरते हैं। आत्मकथा के माध्यम से एकदम निर्द्वन्द्व और निस्पृह होकर उन्होंने इस क्षेत्र के अंतर्गत भविष्य में आने वाले लोगों के लिए एक विकट समस्या हल करने का रास्ता खोल दिया। आत्मकथा साहित्य के क्षेत्र में इस कृति का विशेष योगदान हैं। अमृता प्रीतम मूलतः पंजाबी भाषा की साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी आत्मकथा 'रसीदी टिकट' पंजाबी भाषा में लिखी और इसका अनुवाद भी बटुक शंकर भटनागर ने किया। इस कृति में लेखिका अधिकतर प्रतीकात्मक भाषा में बात करती हैं। इसके अतिरिक्त उनका जीवन दर्शन भी गहन एवं प्रेरक हैं। वे यह मानती हैं कि

उठाया हुआ कदम यदि पूरा सच प्रतीत न हो तो उसे लौटा लेना चाहिए। उनकी दृष्टि में सत्य भी हमेशा बनी रहने वाली वस्तु नहीं है। उनका विश्वास है कि हर समय का सत्य भिन्न होता हैं। यह कृति मुख्यतः समसमायिक लेखकों से प्राप्त होने वाली पीड़ा का चित्रण प्रस्तुत करती हैं। उसी के साथ लेखिका के अपने व्यक्तिगत जीवन के सारे पहलू स्वतः खुलते चले गये हैं। एक लब्ध प्रतिष्ठ कवयित्री एवं लेखिका के द्वारा प्रस्तुत एक सुन्दर कृति तो है ही साथ ही एक सुन्दर साहित्यिक रचना हैं। जोश मलीहाबादी उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे। 'यादों की बारात' उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा का संक्षिप्त रूप हैं। लेखक ने इसमे पाकिस्तानी नेताओं की कड़ी आलोचना की है और भारत के नेताओ की प्रशंसा की हैं। यह पुस्तक लेखक ने पचहत्तर वर्ष की आयु में लिखी। लेखक को राष्ट्रीय आंदोलन से भी अत्यंत लगाव रहा। उन्होंने राजनीति के कई रंग बदलते देखे, परन्तु अपनी कलम के दम से उन्होंने बहुत शोहरत पायी। बाद में कुछ समय फिल्मी दुनिया में भी गुजारा। जिस मार्मिकता और फक्कड़पन से उन्होंने घटनाओं को प्रस्तुत किया है, वह प्रयत्न प्रशंसनीय है।

हिन्दी साहित्य की प्रथम मौलिक आत्मकथा बनारसीदास रचित 'अर्द्धकथानक' आत्मकथा साहित्य की प्रशंसनीय कृति है। आत्मकथा विधा की दृष्टि से भी उस समय से लेकर आज तक कोई आत्मकथा इसकी विशेषताओं तक नहीं पहुंच सकी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा पूना में 4 अगस्त 1875 ई. को हिन्दी में प्रस्तुत भाषण को तत्काल लेखनीबद्ध किया गया रूप स्वकथित आत्मचरित्र' प्राप्त होता है। भारतेन्दु यशस्वी कलाकार एवं साहित्यकार होकर व प्रायः प्रत्येक गद्य विधा के उन्नायक या प्रवर्तक होकर भी आत्मकथा क्षेत्र में अल्प ही योगदान दे सके। प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, बालमुकुन्द गुप्त, जगन्नाथ दास रत्नाकार, सत्यानन्द अग्नि होत्री, श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी की अति संक्षिप्त, लघु आत्मकथाएं मिलती हैं। महात्मा गाँधी, भवानी प्रसाद, सन्यासी, श्री उमादत्त शर्मा, झाबर मल्ल शर्मा, भाई परमानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल की जेल सम्बन्धी आपबीतियों ने इस अनुभूतिजन्य माध्यम निरपेक्ष एवं यथार्थाश्रित आत्मप्रकाशन विधा का पथ प्रशस्त किया। प्रेमचन्द ने सन् 1932 ई. के आत्मकथा अंक द्वारा भागीरथ प्रयत्न कर इस विधा को अत्यंत प्रतिरोधात्मक स्थिति में सम्बल प्रदान किया था। इस अंक में प्रकाशित आत्मकथाएं अत्यंत संक्षिप्त लघु और प्रायः निबंधात्मक थीं, प्रेमचन्द की आत्मकथा 'जीवन सार' के अतिरिक्त शेष रचनाओं का प्रचार भी कम ही

हुआ। श्री श्याम सुन्दर दास की आत्मकथा (मेरी आत्म कहानी ) का प्रथम प्रकाशन भी 'सरस्वती' में धारावाहिक हुआ इस प्रकार उस दौर में पत्रिकाओं के माध्यम से ही लघु आत्मकथा की प्रकृति क्रमशः पूर्ण आत्मकथाओं की ओर गतिमान हुई। स्वतंत्रता से पूर्व आत्मकथाएं अल्पसंख्यक थीं, स्वातन्त्र्योत्तर युग में संख्यातीत होंने लगीं। उनकी शैली में विविधता, गतिमयता, व्यापकता, तथा विश्लेषणात्मकता का प्राचुर्य विवृद्ध होने लगा। स्वातन्त्र्योत्तर युग में आत्मकथा लेखन में आई बाढ़ के परिणामरूवरूप 80 से ऊपर मौलिक आत्मकथाएं प्रकाशित हुईं। संग्रहो या पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित लघु आत्मकथाओं तथा अनुदित आत्मकथाओं की संख्या उनके अतिरिक्त हैं। स्वातन्त्र्योत्तर युग में साहित्यकारों, समाज सेवकों, देश भक्तों तथा नेताओं ने अपनी आत्मकथाएं पर्याप्त संख्या में लिखीं। इस काल में आकर आत्मकथा का स्वरूप स्पष्ट हुआ और भाषा तथा शैली की दृष्टि से भी उसमें नयापन आया। आज का व्यक्ति सीमाओं से बाहर निकल कर 'स्व' की बात अधिक सोचने लगा है। जिनमें बंधकर वह स्वयं के बारे में कुछ नहीं कहता था। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति कहना भी चाहते थे, वे विशिष्ट व्यक्ति ही हुआ करते थे परन्तु अब समाज का प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट होने की स्पर्धा में है। वर्तमान काल में आत्मकथा का विकास संख्या एवं गुणवत्ता की दृष्टि से काफी उत्साह वर्धक रहा है। हिन्दी का आत्मकथा साहित्य अब अत्यंत द्रुत गति से अपने विकास की चरम सीमा तक पहुंच रहा है।

कविवर बनारसी दास द्वारा लिखित 'अर्द्धकथानक' हिन्दी की सर्वप्रथम आत्मकथा हैं, जिसने हिन्दी साहित्य मे आत्मकथा के लिए द्वार खोले हैं। बनारसी दास ने मनुष्य की उत्कृष्ट आयु एक सौ दस वर्ष बतलाकर अपने आधे जीवन अर्थात् पचपन वर्षो तक के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया हैं इसलिए इस पुस्तक का नाम 'अर्द्धकथानक रखा है। काफी समय तक यह अप्राप्य रही और एक लम्बे समयोपारांत श्री नाथूराम प्रेमी ने इसका संपादन किया। पुस्तक की भूमिका में इस आत्मकथा में व्यक्त स्थितियों, परिस्थितियों का पूरा चित्र अपने शब्दो में संपादक के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इससे पुस्तक के मूल रूप को समझने में सहायता मिलती है। यह आत्मकथा अपने समय और समाज के साहित्य की प्रवृत्ति के विपरीत होते हुए भी लेखक व्यक्तित्व के पूर्ण उद्घाटन में संपूर्ण कलात्मकता के साथ सफल हुई है। इस कृति में लेखक की सत्यप्रियता, स्पष्टवादिता, निरभिमानता, और उन्मुक्ता, की अभिव्यक्ति हुई हैं। इस आत्मकथा में

लेखक ने चारित्रिक स्खलनों का एकदम खुला चित्र प्रस्तुत किया है। इसमें समाज, इतिहास, युग, स्वानुभूतियों का स्पष्ट और मार्मिक चित्रण हुआ है। सभी पक्ष जिस प्रकार प्रकाशित हुए है, उसकी प्रभावान्विति इस कृति को महत्त्वपूर्ण कृति बना देने में समर्थ हुई हैं। निष्कर्षतः 'अर्द्ध कथानक' आज भी आत्मकथा साहित्य की प्रशंसनीय कृति है। आत्मकथा विधा की दृष्टि से भी उस समय से लेकर आज तक कोई आत्मकथा इसकी विशेषताओं तक नही पहुँच सकी हैं। सारांशतः "अर्द्धकथानक" श्री बनारसी दास का सराहनीय रचना है।

आधुनिक काल में जिस प्रकार साहित्य के क्षेत्र में अन्य परिवर्तन हुए उसी प्रकार इस काल में ब्रजभाषा को अपदस्थ करके खड़ी बोली राष्ट्रीय साहित्यिक राजमार्ग पर अग्रसर होती दिखाई देने लगी। ब्रजभाषा की अपेक्षा अखिल भारत में सहज समझी जाने वाली खड़ी बोली गद्य में लिखा जाने लगा। विषय, भाषा और छंद आदि में परिवर्तन के साथ–साथ पूर्व भारतेन्दु एवं भारतेन्दु युग की साहित्य विधाओं में भी शनैः शनैः परिवर्तन होने लगा और नये साहित्य अस्तित्व में आने लगा। भारतीय पुनर्जागरण के फलस्वरूप तथा भारतीय चेतना के उन्मेष के साथ हमारी समष्टिमूलक दृष्टि व्यष्टि की सार्थकता से अनुप्राणित होने लगी। निजी जीवन की सार्थकता को भी एक उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। परिणामस्वरूप आत्मकथा के लिए आधुनिक साहित्य का मार्ग प्रशस्त हुआ। भारतीय हिन्दी साहित्य के जनक, गद्यविधा के सूत्रधार कवि शिरोमणि लेखक नाटककार, श्री भारतेन्दु हरिशचनद्र 35 वर्ष की अल्प आयु में ही साहित्य की ऐसी सेवा कर गये जो कि आज भी अविस्मरणीय है। इन्होंने मात्र दो पृष्ठों में अपनी 'आत्मकथा' लिखी है जो कि लघु आत्मकथा ही हो सकती है। लेखक ने कवि वचन सुधा में दो पृष्ठों का एक लेख, एक कहानी, कुछ आप बीती, कुछ जग बीती शीर्षक से लिखा। यह लेख आत्मकथा नहीं हो सकता उसकी झलक मात्र हो सकता है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना के बाद पूना नगर की भाषण माला के अंतिम दिन जनता के अनुरोध पर अपने जन्म से लेकर आत्मकथा वर्णन के दिन तक की घटनाओं का उल्लेख अपने श्री मुख से किया था। जिसे लिपिबद्ध किया गया था। इनका जीवन चरित्र मूलतः आत्मकथा न होकर जीवन चरित्र है। श्री अम्बिका दत्त व्यास संस्कृत गद्य काव्य की परम्परा को पुनर्जीवित करने वाले तथा हिन्दी व संस्कृत के साहित्य लेखन में समान गति रखने वाले लेखक थे।

इन्होंने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्षो का वर्णन 'निजवृत्तांत' नाम से लिखा। इनसे पूर्व में प्रकाशित आत्मकथाओं में लेखक ने अपने विषय में कुछ ज्यादा नहीं लिखा था। उसी की पूर्ति उन्होंने अपनी आत्मकथा 'निजवृत्तांत' में पूरी की थी। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने हिन्दी, साहित्य को इस आत्मकथा के रूप में एक बहुमूल्य कृति प्रदान की है। इसमें उनके व्यक्तिगत जीवन के साथ राष्ट्र की स्वतंत्रता का इतिहास भी स्वतः आ गया है। कृति को 'आत्मकथा' का नाम देकर समाज की खुशबू से उसे भरा गया हैं। इसमें लेखक के साहित्यिक जीवन का दर्शन मिलता है। यह कृ ति परतंत्र भारत के संघर्ष तथा नयी उपलब्धियों की गाथा जान पड़ती है। इसलिए उनकी यह कृति एक समग्र प्रभाव पाठक के मन पर छोड़ती हैं। महापंडित राहुल सांकृ त्यायन हिन्दी के बहुमुखी, प्रतिभा सम्पन्न और बहुभाषाविद विद्वान थे। ग्रन्थ के अध्ययन से पता चलता हैं कि लेखक इतने घूमें कि साधुओं के भोग्य जीवन, महंतो के ऐश्वर्यशाली गद्दियों के लिए संघर्ष तथा कर्मकांडों आदि का अध्ययन कर 'जीवन यात्रा' में उनका सुन्दर चित्रण किया है। यह एक विशिष्ट कृति है क्योंकि लेखक का व्यक्तित्व भी विशिष्ट है। इस आत्मकथा को पढ़कर यात्रा संस्मरणों का आनन्द भी पाठकों को प्राप्त होता है। इस आत्मवृत्त से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि राहुल जी एक उच्चकोटि के साहित्यकार अनुसंधित्सु भी थे। उनके बहुमुखी साहसी व्यक्तित्व के दर्शन ही प्रस्तुत आत्मकथा की चरम उपलब्धि हैं। बाबू श्याम सुन्दर दास लेखक, आलोचक, संपादक तथा काव्य कृतियों और सिद्धांतो के व्याख्याता के रूप में जाने जाते हैं लेखक की आत्मकथा 'मेरी आत्म कहानी' पांच वें दशक की पहली आत्मकथा है। इसमें काशी नागरी प्रचारिणी सभा की लेखक द्वारा की गई सेवाओं का वर्णन है। इस वजह से व्यक्तित्व का वे रूप, जिनसे व्यक्ति के चरित्र के विभिन्न रूपों का पता चलता है, इस कृति में कही भी चित्रित नहीं हो पाये हैं। उनका भीतरी संघर्ष, मानसिक उलझनें और व्यक्तिगत जीवन की प्रस्तुति करने में कहीं भी लेखक स्वयं को आगे नही ला पाया है। लेखक को अपने युग तथा सामाजिक जीवन की अन्य प्रवृत्तियों क्रिया–कलापों और गतिविधियों में कोई विशेष रुचि नहीं थी। इसलिए उनका ध्यान कहीं और न जाकर मात्र हिन्दी साहित्य के अभावों की पूर्ति की और अधिक गया । श्री यशपाल की आत्मकथा सिंहावलोकन' शीर्षक से प्रकाश में आई। यह आत्मकथा केवल एक व्यक्ति का जीवनवृत्तांत नहीं है वरन तत्कालीन भारतीय समाज के राजनीतिक युग का एक खुला चित्र प्रस्तुत करती है। जेल के चित्र अवश्य ही अच्छी तरह से चित्रित हुए हैं क्योंकि वे

लेखक के भोगे हुए यथार्थ पर आधारित हैं। उन्होंने अध्ययन खूब किया था, यह भी इस कृति के द्वारा उजागर होता हैं। कृति का आकार वृहद् अवश्य है किंतु उसमें निहित तथ्य अत्यंत सारगर्भित एवं प्राणवान हैं। भवानी दयाल संन्यासी की आत्मकथा 'प्रवासी की आत्मकथा' 1947 ई. में प्रकाश में आई। इसमें दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों की व्यथा और कल्पना से भरी कहानी है क्योंकि लेखक स्वयं प्रवासी भारतीय तथा भुक्तभोगी होने के कारण प्रवासीजनो की कष्ट कथा कहने का अधिकार रखता था। इसमे प्रवासी भारतीयों के कष्ट समस्याएं, कुरीतियों, सुधारात्मक कार्य तथा संघर्ष के चित्र भरे पड़े हैं। संन्यासी की यह आत्मकथा एक सन्यासी, प्रवासी, कर्मयोगी एवं साहित्यकार की आत्मकथा है। इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण भारतीय प्रवासियों की दुर्गति का हाल कहना है। वियोगी हरि की आत्मकथा 'मेरा जीवन प्रवाह' में लेखक की अध्यात्म पिपासा, साहित्य सेवा शिक्षा प्रसार की धुन और हरिजनोत्थान की आकांक्षा के स्वर हैं। इस पुस्तक का प्रारंभ पारंपरिक ढंग से अपने पूर्वजों के संक्षिप्त परिचय के साथ हुआ है। उसके बाद जन्म, स्थान आदि विषयों का उल्लेख हुआ है। इस कृति के लेखक का उद्देश्य इतना है कि दूसरे भी कभी यदि ऐसी घटनाओं से गुजरें तो वे अपने जीवन की तुलना उस 'जीवन प्रवाह' से करने में शायद कुछ प्राप्त कर सकें। आत्मकथा लेखक के लिए 'हंस' का आत्मकथा अंक साहित्य में मील का पत्थर साबित हुआ। इसने आत्मकथा लेखन के लिए नया रास्ता खोल दिया तथा एक सम्बल प्रदान किया। इसका उद्देश्य आत्मकथा लेखन की प्रवृत्ति की अभिवृद्धि था। इस अंक में प्रकाशित आत्मकथाएं, अत्यंत संक्षिप्त, लघु और प्रायः निबंधाकार थीं। प्रेमचन्द को आत्मविज्ञापक सिद्ध करते हुए नन्द दुलारे वाजपेयी तथा रामेश्वर शुक्ल अंचल ने घोर विरोध किया जिसका प्रेमचन्द को हंसवाणी में क्रमिक उत्तर देना पड़ा। प्रबल विरोध ओर प्रतिरोध के बावजूद प्रेमचन्द आंदोलन से एक ऐसी हवा चली जिसने सभी लेखकों को उनका अनुसरण करते हुए संक्षिप्त आत्मकथा या लघु आत्मकथा के प्रति रूचि प्रदर्शित करने को बाध्य किया है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की लघु आत्मकथा मिलती है। आचार्य द्विवेदी ने काशी में अपने अभिनन्दन के उत्तर में जो भाषण दिया था, उसमें प्रसंगवश तथा विनम्रता प्रदर्शनार्थ आत्मकथात्मक तत्त्व आ गये थे। इसी भाषण के प्रकाशन ने क्रमिक रूप में उनकी आत्मकथा का रूप धारण किया। केवल अभिव्यक्ति द्वारा संक्षिप्त आत्मकथा कहने का यह तृतीय उदाहरण है। इससे पूर्व स्वामी दयानन्द एवं विवेकाननद के 'आत्म विषयक व्याख्यान' प्रकाशित हो चुके थे। बाबू गुलाब राय की आत्मकथा ''मेरी

असफलताएं" अत्यंत रोचक एवं व्यंग्य विनोद पूर्ण है किन्तु साथ ही लेखक के व्यक्तित्व, चरित्र, स्वभाव, कार्यक्षमता, योग्यता, उत्साह तथा विद्वत्ता पर परोक्ष रूपेण प्रकाश डालती है। लेखक ने स्वयं अपनी हंसी उड़ाकर दूसरे को हंसने का अवसर प्रदान किया किन्तु अपनी सफलताओं के उल्लेख से सदा परहेज किया। लेखक क्रमशः आत्म विश्लेषण की ओर बढ़ता गया है।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का प्रथम भाग 'क्या भूलूँ क्या याद करूं' है। लेखक के कथनानुसार यह पुस्तक उनकी योजना का एक तिहाई भाग है। इसमें लेखक ने अपने भाव जगत् और यौवनारम्भ के प्रथम अभिसारों का चित्रण किया है। वहीं अपने कुल परिवेश तथा पूर्व पुरूषों का भी अत्यंत रोचक शैली में चित्रण किया है। लेखक की इच्छाओं, आकांक्षाओं, स्वप्नों और कल्पनाओं तथा शैशव और नवयौवन की ऊंची उड़ानों का इस भाग में सुन्दर दिग्दर्शन है । डेढ़ सौ पृष्ठों तक लेखक सिवाय इतिहास के कोई अन्य बात नहीं करते अतः पाठक का सारा समय संबंधो का जोड़–तोड़ करने में ही लग जाता है। 'रसीदी टिकट' के बीस वर्ष बाद अमृता प्रीतम की एक और आत्मकथा प्रकाश में आयी 'अक्षरो के साये' उनके आज तक के समग्र जीवन को अपने कथावृत्त में समेटते हुए एक बिल्कुल नये आध्यात्म से जुड़े धरातल पर उसका विवरण प्रस्तुत करती है, जिसमे लेखिका अपना सम्पूर्ण जीवन किसी न किसी साये के साथ जिया गया मानती हैं। लेखिका ने आत्मकथा गद्य–पद्यात्मक रूप में लिखी है। इसमें अपनी भावनाओं को नज्म के रूप में भी लिखा है। इसके अतिरिक्त लेखिका के क्रमवार चित्र दृष्टि स्तर पर भी उनकी अपनी छाया को उद्भासित करते नजर आते हैं। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' शीर्षक से प्रकाश में आयी। जिसमें लेखक ने आत्मकथा के प्रारम्भ में अपनी जाति का उद्भव, जन्म स्थान का वर्णन, रीति–रिवाज, संस्कारों, लोकदेवता–लोकविश्वास, आस्था, स्वतंत्रता संग्राम, गाँधी जी के बारे में साहित्यिक जीवन तथा नौकरी का भी वर्णन किया हैं। यह लेखक के जीवन के उतार चढ़ाव के साथ भारतीय समाज के ऐतिहासिक परिवर्तन का भी रोमांचक दस्तावेज है।

हिन्दी साहित्य में अस्सी के दशक के लगभग दलित आत्मकथा का अस्तित्व प्रकाश में आया, लेकिन अभिव्यक्ति से टकराने का दुस्साहस हर किसी में नहीं होता है। यही कारण रहा कि दलित आत्मकथाओ की संख्या गिनी चुनी है। 'मैं भंगी हूँ', भगवान दास

की आत्मकथा न होकर दलित या भंगी की आत्मकथा है। यह व्यक्तिनिष्ठ न होकर वस्तुनिष्ठ है। प्रतीकात्मकता इसकी विशिष्टता है। भंगी यहां पर 'दलित' का प्रतीक है। पहली होने के कारण इसमें आत्मकथा तत्त्वों का पूरी तरह से समावेश नहीं हो पाया हैं। इस आत्मकथा में आदि से अंत 'भंगी' यानि 'दलित' की व्यथा की कहानी बताई गई है। 'अपने–अपने पिंजरे' मोहन दास नैमिश्राय की आत्मकथा है। रचानाकार ने बचपन से लेकर वैवाहिक जीवन तक की घटनाओं का चित्रण किया है। यह आत्मकथा भावबोध का अच्छा उदाहरण है। दलित चेतना पर जगह–जगह प्रकाश डाला गया है। लेखक का स्त्रियों के प्रति आकर्षण इस आत्मकथा का कमजोर पक्ष है। कल्पना के स्थान पर यथार्थ का वैभव इसकी धरोहर है। मानवतावादी दृष्टि और जीवन संघर्ष की प्रेरणा इसे साहित्य में ऊँचाई प्रदान करती है। ओमप्रकाश वाल्मिकी की आत्मकथा 'जूठन' का केन्द्र बिन्दु दलित विमर्श और दलित चेतना है। यह कृति लेखक की भोगी हुई जिन्दगी को कटुसत्य के रूप में हमारे सामने लाती है। लेखक ने आत्मकथा में अपनी पत्नी को बहुत कम जगह दी है औ़र स्वयं एक अच्छे मुकाम पर पहुंच कर भी अपने समान लोगों के लिए लेखक ने क्या कदम उठाये, इसकी भी कमी अखरती है। 'तिरस्कृत' दलित कथाकार सूरजपाल चौहान की पहली आत्मकथा है। इस आत्मकथा में जीवन के विविध पहलुओं पर गहराई से प्रकाश डाला गया है। यह आत्मकथा भारतीय समाज की भेदभाव पूर्ण व्यवस्था पर सीधे–सीधे प्रहार है। यह सामाजिक समरसता एवं न्याय की अवधारणा पर अवलंबित है। तिरस्कृत में क्रमबद्धता का अभाव खलने वाला है लेकिन अपनी कमियों के बावजूद 'तिरस्कृत' मानवता की प्रतिष्ठा के लिए उल्लेखनीय है। इसमें आत्मकथा के सभी गुण परिलक्षित होते हैं। 'संतप्त' सूरजपाल चौहान की दूसरी आत्मकथा है। यह हिन्दी साहित्य की सबसे बोल्ड एवं व्यक्ति निरपेक्ष आत्मकथा है। बेहद रोचक एवं निष्पक्ष है, पीडित का दंश, दलित चेतना, समानता, तीव्रता, समरसता का प्रयास, अर्द्धांगिनी द्वारा विश्वासघात और जीवन के विविध पहलुओं का जैसा जीवन्त वर्णन संतप्त मे दृष्टि गोचर होता है, वैसा और कहीं देखने को नहीं मिलता, लेकिन घटनाओं की विवरणात्मक प्रस्तुति के स्थान पर विश्लेषणात्मकता ज्यादा प्रभावी हो सकती थी, क्योंकि यह आत्म मंथन का अवसर प्रदान करती है जो आत्मकथा का गुण हैं।

आत्मकथा केवल किसी व्यक्ति का जीवन वर्णन नहीं होता है अपितु उसमें एक संवेदना समायी हुई होती है। जिसे लेखक द्वारा जीवन के विभिन्न पड़ावों पर अनुभुत

किया हुआ होता है। सम्पूर्ण आत्मकथा को पढ़ने पर उसका एक मूल भाव प्रकट होता है वही उसकी संवेदना का स्वर है।

समस्त आत्मकथाकारों ने अपने जीवन के नितांत निजी क्षणों को पाठकों के साथ साझा करने की कोशिश की एवं तटस्थ भाव से अपने जीवन के उस भाग के दर्शन करवाये जिसे वह स्वयं जानता था। जिसमें सबसे बेबाक रूप में डॉ. प्रभा खेतान ने अपनी भूलों, कमजोरियों को पाठकों के सामने लाने का साहस किया हैं जिसमें उनका अधिकांश ध्यान वैयक्तिकता पर रहा है।

डॉ. मन्नू भण्डारी की आत्मकथा की मूल संवेदना नारी जीवन का प्रेम, परिवार की समस्याओं के सन्दर्भ में चित्रित हुई है। नारी मन की व्यथा अनुभूतियों और संवेदना के स्वर प्रभावशाली शैली में व्यक्त हुए हैं। इनकी आत्मकथा का मूलभाव पारिवारिक है।

डॉ0 हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा 'नीड़ का निर्माण फिर' की मूल संवेदना सामाजिक हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और व्यक्ति के बिना समाज और समाज के बिना व्यक्ति के जीवन की कल्पना असंभव हैं। समाज के बिना व्यक्ति पंगु होता है। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' में लेखक ने त्यौहार, मेलों को भी सामाजिकता अभियक्ति का एक माध्यम माना है। मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में यह अभिव्यक्त हुआ है कि सामाजिकता का स्वरूप छोटे शहरों में पारिवारिक रहता हैं जबकि महानगरों में व्यक्ति संकुचित, स्वार्थी, असहाय, असुरक्षित महसूस करता है। व्यक्ति मोती हैं और समाज इन मोतियो की एक माला है जिनका एक दूसरे के बिना कोई अस्तित्व नहीं है।

डॉ. विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'मुक्त गगन में' की मूल संवेदना में देश की राजनीति का स्वरूप उभरकर आया है, जिसने युवा पाठकों की सोई संवेदना झकझोरने की पूरी कोशिश की है। हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा 'एक जलती हुई नदी' में एक लेखक की संवेदना विचार, दृष्टि, बोध को राजनीति इस हद तक भी प्रभावित कर सकती है कि उससे उसके विचार प्रकट करने की क्षमता ही छीनी जा सकती है। मूल संवेदना के रूप मे प्रकट हुई हैं।

साहित्यकार अपने लेखकीय जीवन में संघर्ष करके मंजिल तक पहुँचता है। लेकिन वह अकेले संघर्ष नहीं करता वरन् उससे जुड़े सभी रिश्ते संघर्ष करते हैं।

कमलेश्वर एवं डॉ. हरिवंश राय बच्चन का मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में जहां कहीं भी आर्थिक पक्ष मूल संवेदना के रूप में नजर आया वही लेखक के साथ उनकी पत्नी व बच्चों को भी आर्थिक दंश ने प्रभावित किया। साहित्यकार ने अपने लेखन को ही अपनी आय का जरिया समझा इसके सिवाय कुछ करना उनके सम्मान स्वाभिमान के विरूद्ध प्रतीत हुआ।

विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा का एक खण्ड 'और पंछी उड़ गया' की मूल संवेदना साहित्यिक है। इसमें लेखक ने अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि शरत जीवनी 'आवारा मसीहा 'के सृजन काल का वर्णन किया है, जो किसी भी शोधार्थी के लिए दिक् सूचक का कार्य कर सकती है। मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में लेखिका के जीवन स्थितियों के साथ उनके दौर की रचनात्मक बेकली और तत्कालीन लेखकों के चढ़ाव–उतारों से भी परिचित कराता है। डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा में साहित्यिक मूल संवेदना प्रकट हुई है। साहित्यकार के जीवन की परिस्थितियां, आस–पास का परिवेश, साहित्य को भी प्रभावित करता है। कवि बच्चन के काव्य में रागात्मकता, अवसाद, अतीत की याद, विवशता का अहसास, असामर्थ्य बोध का दंश, अपनी भूलों पर पश्चात्ताप, निराशा के दर्शन होते हैं। कमलेश्वर की आत्मकथा 'जो मैंने जिया' में भी लेखक की सम्पूर्ण आत्मकथा की मूल संवेदना साहित्यिक है। इसमें लेखक के अनुभवों के यथार्थ से गुजरते हुए लम्बे साहित्यिक पड़ावों को दर्शाया गया है, जिसने लेखक की वैचारिक एवं रचनात्मक भूमिका को तय किया है।

डॉ. प्रभाकर की आत्मकथा में मूल संवेदना मे वैचारिकी स्तर पर राष्ट्रप्रेम, मातृभूमि के प्रति प्रेम, साहित्य को समपर्ण की भावना प्रमुखतः आलोकित हुई हैं। हिन्दी साहित्यकार 'मोहन राकेश की डायरी' में लेखक की जो वैचारिकी स्पष्ट हुई है वह हताशा, अकेलापन, स्वयं को खोजने की चाह, संत्रास, समय, संबंधों, और व्यक्ति प्रश्नों और उन प्रश्नों के मनमाफिक उत्तर पाने की आकांक्षाएं शब्दबद्ध की गईं। यहाँ मनोविश्लेषण द्रष्टव्य है। 'जो मैंने जिया' में लेखक कमलेश्वर के लेखन की वैचारिकी तत्कालीन साहित्य संसार से भिन्न थी। लेखक अपनी एक स्वतंत्र विचारधारा लेकर चल रहे थे, जिसमें क्षणवाद था, न यथार्थवाद, बल्कि लेखक ने अनुभव की कसौटी पर कसी गई अनुभूतियों को वरीयता दी।

डॉ. विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' के आरम्भ में ही लेखक की आत्मकथा में स्थानीयता का भाव प्रकट हुआ है जिसमें लेखक ने मीरापुर का वर्णन करते हुए आत्मकथा को पर्याप्त विस्तार प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त भी कामख्या देवी का मंदिर, शिलांग, गोहाटी, गंगोत्री, यमुनोत्री, अमरनाथ आदि का वर्णन भी शामिल है। प्रभाखेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में स्थानीयता का भाव लेखिका की जन्म भूमि के प्रति प्रेम की भावना में उजागर हुआ है। डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा में स्थानीयता का भाव, जन्म भूमि के प्रति प्रेम के साथ–साथ कर्मभूमि के प्रति लगाव में भी प्रकट हुआ है। इसने लेखक के व्यक्तित्व निर्माण में, परिवार निर्माण में, सृजन संसार में, सामाजिकता में, उनका सहयोग किया है। हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा में स्थानीय भाव अपनी कर्मभूमि इलाहाबाद का वर्णन करते प्रकट हुआ है। साहित्यकार अपनी आंतरिक अनुभूति से तो प्रभावित होता ही है अपनी बाहरी अनुभूति से भी उतना ही प्रभावित होता है क्योंकि उसे अपने सृजन के लिए विचार, पात्र, अभिव्यक्ति, बाहरी अनुभूतियों से ही मिलती हैं।

साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'मुक्त गगन में' मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा 'जो मैंने जिया' में राष्ट्रीयता का भाव प्रमुखता से मुखरित हुए हैं।

कमलेश्वर, डॉ. हरिवंश राय बच्चन तथा प्रभा खेतान की आत्मकथा में अंतर्राष्ट्रीयता का भाव प्रकट हुआ है। डॉ. हरिवंश राय बच्चन ने विदेशी संस्कृति की भारतीय संस्कृति से तुलना करते हुए अपने भाव प्रकट किये हैं। वहीं प्रभा खेतान ने विदेशी स्त्री एवं भारतीय स्त्री की तुलना करते हुए शोषण के स्तर पर दोनों को समान ही पाया।

मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में लेखिका ने मानवीय संवेदना के भाव प्रकट करते हुए बड़े शहरों एवं छोटे शहरो की मानवीय संवेदना मे भिन्नता पाई। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में लेखक ने उस क्षण का भी मार्मिक एवं करूण वर्णन किया है जब स्वयं लेखक की मानवीय संवेदना भावना शून्य हो गई तथा रक्त सूख गया था। मनुष्य जीवन

का आधार मात्र वैज्ञानिक प्रगति ही नहीं है, बल्कि जीवन के कुछ मानव मूल्य हैं और वह मानवीय संवेदना है जो मनुष्य की पहचान हैं।

वर्तमान में सांस्कृतिक संक्रमण काल हैं जहां पुराने मूल्यों का स्थान युगानुकूल नवीन मूल्य ले रहे हैं। समाज में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त है। जिसका परिणाम है नवीन स्थापनाएं, नये आदर्श, नये मूल्य अर्थात् नया समाज। विष्णु प्रभाकर ने वर्तमान युग में बदलते जीवन मूल्यों के प्रति चिंता ही प्रकट नहीं की है बल्कि उसका हल भी पाठकों को सुझाया है। कमलेश्वर को अपने संस्कारों के कारण जीवन के हर मोड़ पर सामाजिक, मानवीय, नैतिक मूल्यों का बोध रहा। लेखक ने नाजुक आर्थिक स्थिति में, आधुनिक ग्लैमर जीवन शैली में भी रिश्तों का मूल्य बोध समझा तथा महसूस किया। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में लेखक ने अपने पिता को पुरातन जीवन मूल्यों से जुड़े रहने का भाव प्रकट किया है। आत्मकथा साहित्य के अनुशीलन से निष्कर्ष निकलता है कि– मनुष्य की समझ होनी चाहिए तथा वक्त परिस्थिति अनुसार बुद्धि और तर्क की कसौटी पर कसकर निर्णय करना चाहिये कि इस वक्त क्या सही हैं और क्या गलत, यही मूल्य बोध है।

आधुनिक काल में सांस्कृतिक दृष्टिकोण में पर्याप्त परिवर्तन परिलक्षित होता है। इस काल में आधुनिक शिक्षा और विज्ञान के प्रसार से जागृतिवाद का चरमोत्कर्ष हुआ। कोई भी व्यत्कि अपने भारतीय संस्कारों के ताने बाने को तोड़ने की कोशिश करता हैं तो उसे उम्र भर संघर्ष करना पड़ता है। जीवन के हर मोड़ पर उसे समाज से संघर्ष करना पड़ता है। मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में सांस्कृतिक भाव प्रमुखतः प्रकट हुआ है।

भारतीय समाज में व्यक्ति स्वतंत्रता की भावना, धार्मिक रूढ़ियों के विश्रृंखलित विचारों ने सामाजिक धरातल पर नैतिक मूल्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। आधुनिक विचारधारा की प्रणेता प्रभा खेतान ने सेक्स संबंधों को श्लील–अश्लील, धर्म–अधर्म के चौखटे मे बांधने के बजाय तार्किक आधार पर प्रस्तुत किया है। कमलेश्वर की आत्मकथा 'जलती हुई नदी' में विभिन्न स्थलों पर नैतिकता के दर्शन होते हैं। वर्तमान की नवीन विचारधारा के बदलते परिदृश्य के माध्यम से समाज की तस्वीर प्रस्तुत की है। प्रत्येक

समाज में नैतिक मूल्यों की विशिष्ट परम्परा रहती है। उच्चता, श्लील–अश्लील के अपने मानदण्ड होते हैं। समाज की उच्छृंखलता पर नैतिक मूल्यों का नियंत्रण रहता है।

भारतीय समाज आदिकाल से अध्यात्म प्रेरित रहा है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन मनुष्य और पशु में समान है। किन्तु अध्यात्म से मनुष्य परिष्कृत होता है। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में आध्यात्मिकता का मूल भाव लेखक ने अपने पिता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मोहन राकेश की डायरी में वीणा प्रेम को आध्यात्मिकता के स्तर पर पहुंचाना चाहती है। जहां शारीरिक मिलन नही होकर आत्मा परमात्मा के स्तर पर आध्यात्मिक मिलन हो। प्रभा खेतान ने धर्म के प्रति रूढिवादी विचारों को नकारते हुए अपने कर्म और आचरण आधारित धर्म की स्थापना पर बल देते हुए धर्म को आधुनिक विचारधारा दी है। भारतीय समाज में व्यक्ति में प्रायः अध्यात्म की भावना जन्म से ही रक्त में विद्यमान रहती है। प्रत्येक व्यक्ति के अध्यात्म के प्रति अपने विचार एवं दृष्टिकोण भिन्न होते हैं।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन का जीवन दर्शन, व्यावहारिक एवं मौलिक होने के साथ ही उदारवादी है। उसमें मानवता की भावना है, सकारात्मक है, आधुनिकवादी है। प्रभा खेतान का जीवन दर्शन विद्रोह, कर्मठता, अस्तित्ववाद, आधुनिक विचारों की पक्षधरता, महत्वाकांक्षापूर्ण, दृढ़ संकल्प, जीवन संघर्ष रहा हैं। मोहन राकेश की डायरी में लेखक का जीवन दर्शन समष्टिवादी होते हुए भी व्यष्टिवादी है। निराशावादी, एकांतिक, शून्य में ताकने वाले, शोधार्थी पूर्ण रहा है जिसे हमेशा एक तलाश रही है। मन्नू भण्डारी का जीवन दर्शन आधुनिकतावादी, रूढ़ियो का विरोध करने वाला, स्वावलम्बनपूर्ण, संघर्ष का पक्षधर है। साहित्यकार की आत्मकथा से जीवन दर्शन के सम्बन्ध में यही विचारधारा मिलती है कि सतत संघर्ष करते रहो। अपने व्यक्तित्व को इतना निखारो कि समाज को एक नवीन दिशा मिले। जीवन संघर्षो से जो हार जाता है वह एकाकी हो जाता है, नैराश्य में डूब जाता हैं जिजीविषा ही जीवन है।

किसी भी साहित्यक रचना के दो पक्ष हैं– अनुभूति और अभिव्यक्ति। अनुभूति रचना की आत्मा है और अभिव्यक्ति उसका शरीर । अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक तत्त्व है भाषा। हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथा भाषा की दृष्टि से परिपक्व है उन्होंने शब्दों के चयन में सायास कोई काम नहीं किया वरन् सहज रूप में शब्द उतरे हुए लगते हैं।

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हम किसी भाषा के नियमों और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, वाक्य विन्यास, मुहावरें, कहावतों का सभी साहित्यकारों ने यथा योग्य प्रयोग किया है। हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में यथा संभव हिन्दी, तत्सम, देशज, तदभव, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, अरबी, स्थानीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है। समस्त आत्मकथाकारों ने अभिधा, लक्षणा, व्यंजना तीनों शब्द शक्तियों का यथा योग्य प्रयोग किया है।

भाषा जहाँ विचारों की वाहक है वहीं शैली उसका सजीव प्राकट्य है। यह वादकत्त्व एवं प्राकट्य जितना सहज, अकृत्रिम एवं स्वाभाविक होगा उतना ही सर्जना को कलात्मक, प्रभावी एवं सार्थक स्वरूप प्रदायक होगा। हिन्दी साहित्यकार मन्नू भण्डारी की आत्मकथा में जन सामान्य में प्रचलित शब्दों का ही यथासंभव प्रयोग किया गया है। आत्मकथा में लेखिका ने दुरूह एवं विलष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर किया है एवं स्वयं को सामान्य जन मानते हुए अपनी रचना को भी भाषा के माध्यम से सामान्य जन के पढ़ने, समझने और आत्मकथा में एक भारतीय स्त्री को स्वयं को ढूढने को विवश कर दिया है।

मोहन राकेश की डायरी रचना विधान, उद्देश्य, क्रमबद्धता, शैली, प्रारूप, के आधार पर वर्तमान में लिखी गई असाधरण रचना है। मोहन राकेश की डायरी में प्रकृति वर्णन, व्यक्ति वर्णन, सौन्दर्य बौध, दर्शन, अध्यात्म, धर्म, परिवेश, यात्राओं का दिन समय के साथ वर्णन अपने आप में असाधारणता है। किसी अन्य आत्मकथा मे यह वर्णन दुर्लभ है। यही इस कृति को विश्वसयनीय बनाता है। डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा 'बसेरे से दूर' हिन्दी साहित्य की असाधारण आत्मकथा है जिसका आरम्भ ही अंग्रेजी की पंक्तियों से हुआ है। आत्मकथा में संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फ्रेंच, पंजाबी, स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग, उच्चकोटि के विलष्ट एवं दुरूह शब्दों का प्रयोग, गद्य–पद्यात्मक रूप रचना को असाधारण बनाता है। 'मोहन राकेश की डायरी' एवं 'बसेरे से दूर' हिन्दी साहित्य की असाधारण आत्मकथाएँ हैं जो कि अनुभूति ही नहीं बल्कि अभिव्यक्ति के स्तर पर भी अनुपम हैं। 'डायरी' एक नवीन प्रयोग हैं तो 'बसेरे से दूर' किसी भी शोधार्थी के लिए कुतुबनुमा के समान है।

साहित्य वही रचना होती हैं जिसमें कोई सच्चाई हो। जिसकी भाषा प्रौढ एवं परिमार्जित हो, जिसमें हृदय एवं मानसिक स्तर पर असर डालने की क्षमता हो। हिन्दी साहित्यकार कमलेश्वर की आत्मकथा हिन्दी साहित्य में एकदम नया कलेवर लेकर अवतरित हुई है। साहित्यकार का रचना संसार आधुनिक काल के रचना संसार से भिन्न वर्तमान परिवेश, सोच, सृजनात्मकता, प्रतीक, बिम्ब, नवीन अर्थबोध से परिपूर्ण ही आत्मकथा में समाहित एवं पाठक के लिए अभिन्न है। साहित्यकार को साहित्य से विलग करके नहीं देखा जा सकता अतः समस्त साहित्यकारों की आत्मकथाएं साहित्यिक ही हैं।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा ने साहित्य के सभी सोपानों पर अपनी परीक्षा देकर अतिसाहित्यक रचना का ताज अपने सिर पर पहना है। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में साहित्यकार एक सदी का दृष्टा एवं भोक्ता दोनों रहा हैं। लेखक, स्वतंत्रता का भूत भविष्य एवं वर्तमान तीनों के यथार्थ से गुजरे हुए थे। इसलिए लेखक की आत्मकथा में स्वयं लेखक ही नहीं वरन् एक सदी का इतिहास समाहित है। डॉ. विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा की भाषा विशुद्ध साहित्यिक, परिनिष्ठित हिन्दी है। भाषा व्याकरण सम्मत, आलंकारिक है तथा पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। डॉ. हरिवंश राय बच्चन एवं विष्णु प्रभाकर की भाषा में कलात्मकता, सहज स्वाभाविकता, चित्रोपमता, प्रौढता, गम्भीरता, विषयानुकूलता जैसे गुण आत्मकथा को अति साहित्यिक बनाते हैं।

प्रत्येक लेखक का लिखने का तरीका अलग होता है किसी बात को लिखने के विशेष ढंग को लेखन भंगिमाएँ कहते हैं। यथार्थवाद 'जीवन क्या हैं' का उत्तर देता हैं, यथार्थवादी साहित्यकार केवल समस्या प्रस्तुत करता है जिसमें जीवन की विद्रूपताओं, विषमताओं, कटुताओं एवं विसंगतियों का चित्रण होता है। प्रभा खेतान की आत्मकथा यथार्थवाद का जीता जागता दस्तावेज़ है जिसमें जीवन की विषमता, कटुता एवं विसंगति को पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर दिया है। मोहन राकेश की डायरी पूर्णतः यथार्थवादी रचना है। इसमें लेखक ने 'जीवन क्या है' का वर्णन किया है, वह भी यथातथ्य वर्णन है। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा यथार्थ के धरातल पर इस तरह आसीन है कि लेखक ने निजी पत्र, दिनांक, पता तक यथावत प्रस्तुत किया है। डॉ. हरिवंश राय

बच्चन की आत्मकथा यथार्थवादी लेखन में मील का पत्थर साबित हुई है। कमलेश्वर ने फिल्मी दुनिया का ऐसा कड़वा सच, जिसे सामान्य जन मानस नहीं जान सकता यथार्थ की भावभूमि पर लेखनीबद्ध किया है।

कल्पना एक मानसिक तत्त्व है। अप्रत्यक्ष वस्तुओं से सम्बन्धित चिन्तन मनन ही कल्पना है। कल्पना के दो रूप हो सकते हैं – विधायनी एवं ग्राहक कल्पना। कमलेश्वर की आत्मकथा 'जलती हुई नदी' में लेखक ने कल्पना का सहारा लेकर स्वयं को उस आदर्शवादी स्थिति में पाया। प्रसिद्ध साहित्यकार बच्चन जी ने 'बसेरे से दूर में' लिखा है कि मनुष्य जो महसूस करता है उसे शब्द महसूस नहीं कर सकते। विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा 'पंखहीन' में बच्चे के स्कूल जाने से पूर्व की कल्पना का मनोरम चित्र उपस्थित हुआ है। विष्णु प्रभाकर को शरत जीवनी के सृजन के दौरान भी कल्पना के संसार में गोते लगाने पड़े जिसका सुन्दर वर्णन आत्मकथा में मिलता है। कल्पना यथार्थ को संवारती है। उसमें नये रंगभर कर उसे आदर्शोन्मुखी बनाती है।

शैली का सम्बन्ध रचना कृति के बाह्य परिधान से नहीं अपितु उसकी आत्मा एवं अभिव्यक्ति के समन्वय से होता है जिसका निर्धारण भाषा एवं शब्दों के विशिष्ट प्रयोग द्वारा होता है। आत्मकथा में विशिष्ट आत्मपरक (उत्तम पुरूष) शैली का प्रयोग किया जाता है। जहां लेखक स्वयं नायक होते हुए भी उत्तम पुरूष होता है और आत्मकथा प्रायः "मैं" शैली में लिखी जाती है। विष्णु प्रभाकर ने विशिष्ट आत्मपरक शैली की निर्वैयक्तिता कहा है जहां व्यक्ति स्वयं व्यक्ति नहीं रहता बल्कि विशिष्ट व्यक्ति हो जाता है। प्रभा खेतान के अनुसार आत्मकथा 'मैं' शैली में होने के कारण इसमें एक 'मैं' हमेशा इसके साथ चलता रहता है।

हिन्दी साहित्य श्री बनारसी दास की प्रथम आत्मकथा 'अर्द्धकथानक' पद्यात्मक शैली में लिखी गई है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल, गद्य का जनक काल है। आत्मकथा विधा का परिष्कृत एवं विकसित रूप आधुनिक काल में ही मिलता है। प्रभा खेतान की आत्मकथा पूर्णतः गद्यात्मक एवं आत्मकथात्मक तथा पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गई है। मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' गद्यात्मक होने के साथ ही मनोविश्लेषणात्मक, पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गई है। सर्वत्र तर्क, एक विचार, बुद्धि, सूक्ष्म अन्वेषण, विश्लेषण और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण है। कमलेश्वर की आत्मकथा के तीनों

खण्ड पूर्णतः गद्यात्मक हैं। संस्मरणात्मक एवं फिल्म शैली का प्रयोग किया गया हैं। इक्कीसवीं सदी की आत्मकथा में गद्यात्मकता के साथ ही नवीन प्रयोग भी किए गये है। लेखकों ने आत्मविश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक, संस्मरणात्मक, पूर्वदीप्ति शैली, स्मृति परक, संवादात्मक, शैली का प्रयोग कर आत्मकथा को एक नवीन स्थान पर विराजित किया है।

डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का रूप गद्य–पद्यात्मक है। लेखक का कवि हृदय अवकाश पाते ही प्राकृतिक रूप से कविता की ओर उन्मुख हो जाता है। हिन्दी साहित्य में आत्मकथा गद्य–पद्यात्मक का नया कलेवर लेकर साहित्य में आविर्भूत हुई है। डॉ. विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा का रूप भी गद्य–पद्यात्मक है। जिसमें भावात्मकता, रोचकता, आलंकारिता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहात्मकता इत्यादि प्रमुख है।

जो भी साहित्यकार कवि, गीतकार हैं, सहृदय हैं उनकी आत्मकथा में लयात्मकता हैं, सरसता है, सौन्दर्य बोध है, मार्मिकता है, भावप्रवणता, संगीतात्मकता है और उनकी कृतियां काव्यात्मक हैं। डॉ. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा में यत्र–तत्र कविता एवं गीत मिल जाते हैं। डॉ. विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा में गीत, कविता की अधिकता नहीं है लेकिन गद्य के माध्यम से भी लेखक ने संगीत प्रवाहित किया है जो उनके शब्दों से निरन्तर बहता रहा हैं।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में आत्मकथा साहित्य को नवीनतम शैलियां प्राप्त हुई है, जैसे– 'डायरी एवं पत्र' शैली। हिन्दी साहित्य में इस नवीनतम शैली का आरम्भ उत्कृष्ट रूप में 'मोहन राकेश की डायरी' के प्रकाशन से माना जाता है। मोहन राकेश की डायरी में आत्मकथात्मकता, संलाप, पत्रात्मक शैली, स्मृतिपरक, भावात्मक, मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। डॉ. विष्णु प्रभाकर ने अपनी आत्मकथा 'पंखहीन' में अपने निजी पत्रों को स्थान देकर नवीन शैली तथा सत्यता को तर्क की कसौटी पर कसा है। डॉ. विष्णु प्रभाकर ने 'मुक्त गगन में' खण्ड के परिशिष्ट में डायरी के अंशों को प्रस्तुत किया है तथा हरिवंश राय बच्चन ने 'नीड़ का निर्माण फिर' में परिशिष्ट के पत्रों को भी प्रकाशित करवाया है। साहित्यकारों ने नवीनतम शैली का प्रतिपादन करते हुए जब जैसी मनस्थिति, परिस्थिति, हुई तब–तब वैसे ही शब्द व शैली साहित्यकारों की कलम उगलती चली गयी।

# अर्थवत्ता

मैंने अपने शोध कार्य के लिये ''हिन्दी के साहित्यकारों का आत्मकथा–साहित्यः समीक्षात्मक आकलन'' विषय का चयन किया। जो जीवन यथार्थ है उसी पर शोध करना चाहिए | साहित्य की अन्य विधाओं में आत्मकथा ही एक ऐसी विधा है, जिसमें लेखक अपने 'स्व' को अपरोक्ष ढंग से प्रस्तुत करता है। अन्य साहित्य रूपों में पाठक का लेखक से प्रत्यक्ष साक्षात्कार नहीं हो पाता। 'आत्मकथा' में लेखक तथा उसके कार्यकलापों को अपने सम्मुख प्रत्यक्ष पाकर पाठक कौतूहल मिश्रित आह्लाद का अनुभव करता है। आत्मकथा के प्रति पाठक की जिज्ञासा इतनी प्रबल हो उठी है कि आज के युग मे प्रबुद्ध पाठक विशिष्ट व्यक्यिों की आत्मकथाएं पढ़ने के लिये उत्प्रेरित होता है। ऐसी महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट विधा पर अभी बहुत कम शोधार्थियो का ध्यान गया है। जिनका ध्यान गया भी है, उनका कार्य 'अपडेट' (अद्यतन) नहीं है। उनका ध्यान सिद्धान्त व स्वरूप पक्ष पर गया है। आत्मकथा पर अपेक्षित, समग्र तथा व्यवस्थित कार्य का अभाव शोध जगत मे व्याप्त था। मैनें इस अभाव को देखा, समझा और 'आत्मकथा' विषय पर शोध कार्य करने का मानस बनाया। मेरी शोध–निर्देशिका के परामर्श, सहमति और अनुमति से मैंने अन्ततः विषय का चयन किया और क्रमशः कार्य को गति दी।

आधुनिक काल से ही आत्मकथा लेखन का क्षेत्र उर्वर रहा है। अब तो सभी–कलम के धनी आत्मकथा पर अपना लेखन आजमा रहे हैं। समस्त आत्मकथाओं के साथ एक शोधार्थी न्याय नहीं कर सकता–जबकि उनका समीक्षात्मक आकलन करना हो। अतः मैंने हिन्दी साहित्य की विद्‌यार्थी होने के नाते हिन्दी के साहित्यकारों के आत्मकथा साहित्य को ही अपने समीक्षात्मक आकलन का आधार बनाया।

इनमे भी जो अतिख्यात, ख्यात, लब्ध प्रतिष्ठ और चर्तित साहित्यकार रहे, उन्हें मैंने प्रथमतः चयनित किया, अपने शोध कार्य के लिये। कुछ प्रसिद्ध साहित्यकारों डॉ0 विष्णु प्रभाकर, डा0 हरिवंश राय बच्चन, कमलेश्वर, मोहन राकेश, डॉ0 प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी, इत्यादि के साहित्य के बिना आत्मकथा साहित्य पर शोधकार्य करना बेमानी है, अतः मैंने ऐसे स्वनामधन्य साहित्यकारों की लेखनी से सृजित आत्मकथाओं पर अपना कार्य करना अभीष्ट बनाया।

उल्लेख तो इसमें विश्व के आत्मकथाकारों का भी है और पाठक को आत्मकथा के विषय में बहुत कुछ जानकारी भी इससे प्राप्त हो सकेगी। मैंने इसे 'शोध प्रविधि' की दृष्टि से परिपूर्ण बनाने की पूरी कोशिश की है और शोध जगत मे प्रचलित अद्यतन प्रविधियों गवेषणात्मक, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, एवं वैज्ञानिक आदि को इसका आधार बनाया है। शोध कार्य के दौरान आरम्भ से अद्यतन लिखे गये आत्मकथा साहित्य की लगभग महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को छूने का प्रयास किया। यह शोध कार्य तत्कालीन एवं समकालीन स्थितियों से साक्षात्कार कराने में अहम भूमिका निभायेगा। मैंने आलोच्य आत्मकथा साहित्य का विभिन्न आयामों से आकलन प्रस्तुत किया ताकि शोध जगत् की इस विषय की शून्यता को भरा जा सके। विभिन्न कालखण्ड़ों में लिखी गई आत्मकथाओं की समग्र स्थिति और स्वरूप का अभिव्यक्तीकरण किया है, जो एक नई एवं महत्त्वपूर्ण प्रस्तुति है।

'आत्मकथाओं' के माध्यम से विख्यात कलमकारों के जीवन की ऊहापोह, संघर्ष एवं उपलब्धियों से यह शोध परिचित करायेगा और मनोवैज्ञानिकता की भाव–भूमि पर भी खरा उतरेगा। मेरा विश्वास है कि मेरा मौलिक शोध प्रबन्ध शोध जगत के लिये अर्थवान साबित होगा। भावी शोधार्थी एवं पाठक वर्ग निश्चय ही इससे लाभान्वित होगा। यही इसकी अर्थवत्ता (सार्थकता) है।

## शोधार्थी की उपलब्धियां

**1 "हाडौती की लघु चित्र परम्परा" शोध लेख**
''हाडौतिका''(भारतीय सांस्कृतिक निधि की त्रैमासिकी)
अंक–4 अक्टूबर–दिसम्बर–2007 पृष्ठ संख्या–31–33

**2 "पश्चाताप" कहानी**
''औदिच्य बंधु'' मासिक पत्रिका –अंक–11
नवम्बर–2010, पृष्ठ 07–08

**3 "वल्लभ सम्प्रदाय का इतिहास" लेख**
''औदिच्य संदेश'' पत्रिका
नवम्बर–2012, पृष्ठ संख्या–07

**4 "रामचरित मानस में पारिवारिक आदर्श" लेख**
''औदिच्य संदेश'' त्रैमासिक पत्रिका
जनवरी–मार्च–2014, पृष्ठ संख्या–12–13

**5 "डॉ विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा युग का प्रतिबिम्ब"**
''शोध समीक्षा और मूल्यांकन'' अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
मार्च–अप्रेल–2015, पृष्ठ संख्या–48–50

**5 "हिन्दी साहित्य के इतिहास पटल पर आत्मकथा का बदलता रूप"**
''हिन्दू'' अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका,
मई–जुलाई–2015, पृष्ठ संख्या 43–48

# पुस्तकों की सूची


क्र.सं. लेखक पुस्तक प्रकाशन तथा प्रकाशन वर्ष

1. अजित प्रसाद जैन–अजात जीवन, रामदयाल, प्रयाग, 1951 ई.
2. अनिता, राकेश–चन्द सन्तरे श्रीर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1975
3. अम्बिकादत्त व्यास–निजवृतान्त, खड्ग प्रेस, बाँकीपुर (पटना), 1901
4. अलगू राय शास्त्री–मेरा जीवन, सरस्वती पब्लिक हाउस, इलाहाबाद 1951
5. उपेन्द्रनाथ अश्क–ज्यादा अपनी, कम परायी, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1959
6. उपेन्द्रनाथ अश्क–चेहरे अनेक भाग I] नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977
7. कालिदास कपूर–मूदर्रिस की राम कहानी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1979
8. क्षेमकरण त्रिवेदी–आत्मकथा, लेखक, इलाहाबाद, 1967
9. गणेश प्रसाद वर्णी–मेरी जीवन गाथा, जैन ग्रन्थमाला, काशी 1949
10. गयाप्रसाद दिवेद्वी–जीवन यात्रा, सम्भावना प्रकाशन, सुल्तानपुर 1975
11. गुरू गोविन्द सिंह–विचित्र नाटक, न्यू लिटरेचर दिल्ली 1961
12. गुरू गोविन्द–विचित्र नाटक (सटिप्पण संस्करण), सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली 1977
13. गुलाबराय–मेरी असफलताएं, साहित्य–रत्न–भण्डार आगरा 1942
14. गंगा प्रसाद–मेरी आत्मकथा, आर्य साहित्य, मण्डल, अजमेर, 1954
15. गंगा प्रसाद उपाध्याय–जीवन चक्र, कला प्रेस, इलाहाबाद 1954
16. जानकी शर्मा–विद्रोही की आत्मकथा, आत्मकथाराम एण्ड सन्ज दिल्ली, 1970
17. जानकी देवी बजाज–मेरी जीवन यात्रा, सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली, 1956
18. जानकी देवी बजाज–समर्पण और साधना, सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली, 1973
19. दयानन्द सरस्वती–श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की कुछ दिनचर्या, भारत सुदशा प्रर्वतक पत्रिका 1881
20. दयानन्द सरस्वती–श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की कुछ दिनचर्या, मुन्शी चुन्नीलाल–पन्नालाल फतेहगढ़, संस्करण II] 1887
21. दयानन्द सरस्वती–जन्म चरित्र (स्वलिखित व कथित), रामलाल कपूर ट्रस्ट अमृतसर, 1916
22. दामोदर सातवलेकर– आत्मकथा, स्वाध्याय मण्डल पारड़ी (गुजरात), 1964
23. देवराज–मानसिक चित्रावली, नानक चन्द वजीरचन्द कानपुर, 1960
24. देवराज उपाध्याय–बचपन के दो दिन, मंगल प्रकाशन जयपुर, 1958
25. देवराज उपा.–यौवन के द्वार पर, प्रकाशन जयपुर,958
26. देवेन्द्र सत्यार्थी–चाँद सूरज के वीरान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1952
27. धर्मेन्द्र गौड़–मैं अंग्रेजों का जासूस था, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1975
28. धीरेन्द्र वर्मा–मेरी कालिज डायरी, साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद, 1958
29. नरदेव शास्त्री–आप बीती जगबीती, गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, 1957
30. पदमुलाल पन्नालाल बख्शी–मेरी अपनी कथा, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1958
31. पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र–अपनी खबर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1964
32. पृथ्वी सिंह आजाद–कांतिपथ का पथिक, प्रज्ञा प्रकाशन, दिल्ली, 1964
33. बचित्र सिंह–पच्चीस वर्ष के अनुभव, आत्मराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1969
34. बनारसीदास–अर्द्ध कथानक, हिन्दी–ग्रन्थ–रत्नाकार, बम्बई, 1943
35. बलदेवराज धवन–काश्मीर से कावेरी, डॉ. कृष्ण कुमार धवन चण्डीगढ़, 1963
36. बलराज साहनी–मेरी फिल्मी आत्मकथा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1974
37. बलराज साहनी–यादो के झरोखे से, आत्मकथा, एण्ड सन्स, दिल्ली, 1974
38. भगवानदास केला–मेरा साहित्यिक जीवन, भारतीय ग्रन्थमाला, इलाहाबाद, 1953
39. भगवानदीन जीवन झाँकी, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, 1962
40. भवानी दयाल सन्यासी–हमारी कारावास कहानी, राजपाल आश्रम, लाहौर, 1918
41. भवानी दयाल सन्यासी–हमारी कैद कहानी, झाबरमल द्वारा संपादित ''भरतीय देशभक्तों की कहानी'' मे, 1921
42. भवानी दयाल सन्यासी–प्रवासी की आत्मकथा, राजहंस सरस्वती आश्रम, लाहौर, 1921
43. भाई परमानन्द–भाई परमानन्द–काले पानी की जेल कहानी, झावरमल द्वारा सं. ''भा. देश भक्तों की कहानी'' के अन्तर्गत, 1921
44. भुवनेश्वर प्रसाद माधव–जीवन के चार अध्याय, नेशनल पब्लिक हाऊस दिल्ली, 1967
45. मूल चन्द अग्रवाल–एक पत्रकार की आत्मकथा, विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता, 1944
46. यशपाल देसाई–मेरा जीवन वृत्तांत II] नवजीवन प्र. मं. अहमदाबाद, 1974

47. यशपाल–सिंहावलोकन II] विप्लव कार्यालय, लखनऊ, 1912
48. यशपाल–सिंहावलोकन III] विप्लव कार्यालय, लखनऊ, 1955
49. योगानन्द–योगी कथामृत, जैको पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई, 1974
50. राजेन्द्र प्रसाद–आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली, 1947
51. राजेन्द्र प्रसाद–संक्षिप्त आत्मकथा, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, 1971
52. रामप्रसाद बिस्मिल–''काकोरी के शहीद'' मे अंश भूत, प्रताप प्रेस कानपुर, 1928
53. रामप्रसाद बिस्मिल–आत्मकथा ( रामप्रसाद बिस्मिल), आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1962
54. रामप्रसाद बिस्मिल–''बिस्मिल विशेषांक'', ''राजधर्म'' आर्य समाज मन्दिर मार्ग, दिल्ली, 1968
55. रामवतार पोद्दार अरूण–अरूणायन, अशोक राजपथ, पटना, 1974
56. राहुल सांकृत्यायन–बचपन की स्मृतियां, किताब महल, इलाहाबाद, 1955
57. राहुल सांकृत्याय–मेरी जीवन यात्रा I, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1946
58. राहुल सांकृत्यायन–मेरी जीवन यात्रा II, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1949
59. राहुल सांकृत्यायन–मेरी जीवन यात्रा 3,4,5 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1967
60. लाला लाजपतराय– लाला लाजपतराय की आत्मकथा भाग I, नवयुग ग्रन्थ–माला लाहौर, 1932
61. विनोदशंकर व्यास–उलझी स्मृतियां, पुस्तक मंदिर काशी, 1950
62. वियोगी हरि–मेरा जीवन प्रवाह, सत्ता सा, मण्डल नई दिल्ली, 1948
63. विश्वेश्वरैया–मेरे काम काजी जीवन के संस्मरण, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया नई दिल्ली, 1967
64. वृन्दावन लाल शर्मा– अपनी कहानी, मयूर प्रकाशन, झांसी, 1972
65. वेदानन्द तीर्थ–जीवन की मूलें, विरजानन्द वैदिक संस्थान, दिल्ली, 1958
66. शांतिप्रिय द्विवेदी–परिव्राजक की प्रजा, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1952
67. श्यामसुन्दर दास–मेरी आत्म कहानी, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, 1941
68. श्रद्धानन्द सरस्वती–कल्याण–मार्ग का पथिक, ज्ञान मण्डल कार्यालय, काषी, 1924
69. सत्यदेव परिव्राजक–स्वतंत्रता की खोज मे, ज्ञानधारा कार्यालय, ज्वालापुर, 1951
70. सत्यानन्द अग्निहोत्री–मुझमें देवजीवन का विकास I, देव समाज मोगा, 1909
71. सत्यानन्द अग्निहोत्री–मुझमें देवजीवन का विकास II, देव समाज मोगा, 1918
72. सत्यानन्द अग्निहोत्री–मुझमें देवजीवन का विकास (पूर्ण), देव समाज मेगा 1965
73. सोमानन्द सरस्वती–जीवन की धूप छांव, लेखक, हैदराबाद, 1976
74. हरिप्रसाद द्विवेदी–मेरा जीवन प्रवाह, सत्ता सा. मं. नई दिल्ली, 1948
75. हरिभाऊ उपाध्याय–साधना के पथ पर, सत्साहित्य प्रकाशन दिल्ली, 1946
76. हरिवंशराय बच्चन–क्या भूलूँ क्या याद करूँ, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1969
77. हरिवंशराय बच्चन–नीड़ का निर्माण फिर, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1970
78. हरिवंशराय बच्चन–बसेरे से दूर, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1977
79. इन्द्र विद्यावाचस्पति–पत्रकार जीवन के बत्तीस वर्ष, जीवन स्मृ. क्षेम. सुमन, 1952
80. इलाचन्द जोशी–मेरे प्राथमिक जीवन स्मृतियां, सुधा पत्रिका फर. जून, 1929
81. काका कालेलकर–अपने ही बारे में, कादम्बिनी दिसम्बर, 1970
82. कृष्णदत्त पालीवाल–मेरी राम कहानी, सा. की. आत्म. देव., 1939
83. गयाप्रसाद श्री हरि–मेरी आत्मकथा, हंस, जन. फर., 1932
84. गुलाबराय–मैं और मेरी स्मृतियां, जीवन स्मृ. क्षै. सु., 1932
85. गुलाबराय–आत्म विश्लेषण, निबन्ध–निष्कर्ष, सं. महेन्द्र प्रताप व कैलाशचन्द, 1974
86. गोपाल राम गहमरी–सत्य संस्मरण, हंस, जन. फर. 1932
87. जगन्नाथ खन्ना–मेरी विचित्र कहानी, हंस, जन. फर. 1932
88. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी–आत्म संस्मरण, विषाल भारत पत्रिका, 1929
89. जयशंकर प्रसाद–आत्मकथा कविता, हंस, जन. फर. 1932
90. जैनेन्द्र–अपनी कैफियत, जीवन स्मृ. क्षै. सु. 1952
91. जैनेन्द्र–कश्मीर प्रवास के अपने दो अनुभव, हंस, जन. फर. 1932
92. ज्वालादत्त शर्मा–घटनात्रयी, हंस जन. फर. 1932
93. ठाकुरदत्त शर्मा–आत्मकथा, हंस, जन. फर. 1932
94. प्रेमचन्द–जीवन सार, हंस, जन. फर. 1932
95. प्रेमचन्द–जीवन सार, सा. की आत्म., देव. 1932
96. प्रेमचन्द–मेरी पहली रचना, सा. की आत्म, देव. 1939
97. प्रेमचन्द–मेरा जीवन, जीवन स्मृ. क्षै. सु. 1952

98. बनारसीदास चतुर्वेदी–प्रयाग के वे दिन, माध्यम पत्रिका, मई 1994
99. बालकृष्ण शर्मा नवीन–मेरी अपनी बात, सा. की आत्म देव. 1939
100. बालकृष्ण गुप्त –आत्मकथा निबन्ध गुप्त निब. कलकत्ता, 1913
101. भारतेन्दु–एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती, कवि वचन सुधा, 1876
102. भारतेन्दु–एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती, भारतेन्दु ग्रन्थावली, भाग III] 1953
103. मन्मनाथ गुप्त–क्रांतियुग के संस्मरण, साहित्य सेवा प्रकाशन, वाराणसी, 1938
104. मन्मनाथ गुप्त–जब क्रांतिकारी बना, राष्ट्र धर्म–अक्टूम्बर, 1968
105. महादेवी वर्मा–अपने सम्बंध मे, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
106. महावीर प्रसाद गहमरी–देखी सुनी और भोगी, हंस जन. फर. 1932
107. महावीर प्रसाद द्विवेदी–अतीत स्मृति, भारती भण्डार इलाहाबाद, 1929
108. महावीर प्रसाद द्विवेदी–जीवन गाथा, हंस, जन. फर. 1932
109. महेश प्रसाद मौलवी–मेरी जीवन गाथा, हंस, जन. फर. 1932
110. मैथिलीशरण गुप्त–कविता के पथ पर, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
111. यशोदा देवी–मेरा एक अनुभव, हंस, आत्म कथांक 1932
112. रमाशंकर अवस्थी–एक बात मेरी भी, हंस, जन. फर. 1932
113. रवीन्द्रनाथ ठाकुर–मेरा बचपन, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
114. राधाचरण गोस्वामी–राधाचरण गोस्वामी का जीवन चरित्र, मथुरा प्रेस, मथुरा, 1905
115. रामकुमार वर्मा–मेरे जीवन के कुछ चित्र, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
116. रामचन्द्र शुक्ल–आत्म संस्मरण, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
117. रामचन्द्र शुक्ल–मेरे जीवन के कुछ पृष्ठ, आदर्श जीवन, नागरी प्र. काशी 1950
118. विनोदशंकर व्यास–मैं, हंस जन. फर. 1932
119. विवेकीराय–संसद मे बारह वर्ष, ज्ञानोदय–पत्रिका, जून 1964
120. विश्वम्भर नाथ कौशिक–मेरा वह बाल्यकाल, हंस जन. फर. 1932
121. वृन्दावन लाल वर्मा–कुछ संस्मरण, विशाल भारत, 1929
122. शरत्चन्द चट्टोपाध्याय–आत्मचर्चा, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
123. शांतिप्रिय द्विवेदी–अभिशापो की परिक्रमा, जीवन स्मृ. क्षे. सु. 1952
124. शिवपूजन सहाय–मतवाला कैसे निकला, हंस जन. फर. 1932
125. शिवपूजन सहाय–अब तो बस एक ही कामना है, नवनीत, बम्बई, जनवरी 1962
126. शिवरानी देवी–मेरी गिरफ्तारी, हंस जन. फर. 1932
127. श्रीधर पाठक–स्वजीवनी, माधुरी, 1927
128. श्रीधर पाठक–आत्मकथा, सरस्वती जनवरी 1971
129. श्रीराम शर्मा–बोल्स फोर्ड मे कैसे मिला, हंस आत्म कथांक 1932
130. सुमित्रानन्दन पंत–मेरा रचना काल, जीवन स्मृ. क्षेत्र 1952
131. अमृता प्रीतम–रसीदी टिकट, पराग प्रकाशन दिल्ली, 1977
132. कन्हैया लाल माणिकलाल मुन्शी–सीधी चढान, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1952
133. कन्हैया लाल माणिकलाल मुन्शी–स्वप्न सिद्धि की खोज मे, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
134. कमला दास–मेरी कहानी, सरस्वती विहार दिल्ली, 1977
135. जवाहरलाल नेहरू–मेरी कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली, 1937
136. जवाहरलाल नेहरू–मेरी कहानी (संक्षिप्त), सस्ता साहित्य मण्डल, 1936
137. जोश मलीहाबादी–यादों की बारात, वीर प्रताप जालन्दर मे धारा. 1975
138. मीर मुहम्मद तकी–जिके मीर, मित्र प्रकाशन इलाहाबाद, 1961
139. मोहन दास कर्मचन्द गाँधी–यरवदा के अनुभव, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद, 1962
140. मोहनदास करमचन्द गाँधी–सत्य के प्रयोग, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1927
141. मोहनदास करमचन्द गाँधी–संक्षिप्त आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल दिल्ली, 1939
142. मोहनदास करमचन्द गाँधी–आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद, 1957
143. मोहनदास करमचन्द गाँधी–मेरा प्रारम्भिक जीवन, वेणीमाधव प्रकाशन इलाहाबाद, 1950
144. रवीन्द्रनाथ ठाकुर–जीवन स्मृति, मित्र ग्रन्थ माला इन्दौर, 1930
145. रवीन्द्रनाथ ठाकुर–मेरा बचपन, इण्डियन प्रेस इलाहाबाद, 1938
146. रवीन्द्रनाथ ठाकुर–मेरी आत्मकथा, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता, 1971
147. रवीन्द्रनाथ ठाकुर–मेरी आत्मकथा, देवनगर प्रका. जयपुर, 1978
148. लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ–मेरी स्मृतियाँ, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 1977
149. विनायक दामोदर सावरकर–काला पानी, विद्याभवन प्रकाशन पूना, 1956

150. विनायक दामोदर सावरकर–आजन्म कारावास, विद्याभवन प्र. पूना, 1969
151. शचीन्द्र सान्याल–बन्दी जीवन 3 भाग, आत्माराम एण्ड सन्ज दिल्ली, 1938
152. हंसा वाडेकर–अभिनेत्री की आपबीती, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, 1972
153. एन्थनी सिल्वेस्टर–साम्यावाद के मेरे अनुभव, नेशनल अकादमी प्रकाशन दिल्ली, 1967
154. एफ. आर. वेस्ट–कोयले की खान मे पार्लियामेंट, भारतवासी प्रेस प्रयाग, 1932
155. एवजेनिया एस. जिन्झबर्ग–अन्धड़ की झपेट मे, पी. के. पब्लिकेशन, दिल्ली, 1974
156. एस्तर अहन किम–आशा की किरण, मसीही साहित्य संस्था दिल्ली, 1981
157. टालस्टाय–टालस्टाय की आत्म कहानी, ज्ञानप्रकाश मन्दिर मेरठ, 1922
158. टालस्टाय–टालस्टाय–मेरी आत्म कहानी, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1939
159. टालस्टाय–मेरी मुक्ति की कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली, 1965
160. ट्राटस्की– ट्राटस्की की जीवनी, ज्ञानमण्डल, काशी, 1934
161. बर्नार्ड बोटोन–मेरी कहानी, इण्डियन युनिवर्सिटी पब्लिशर्ज, दिल्ली, 2956
162. बुकर टी. वांशिगटन–आत्मोद्धार, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकार, बम्बई, 1915
163. बैंजमिन फ्रैंकलिन–आत्मकथा, राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली, 1958
164. मैक्सिम गोर्की–मेरे विश्वविद्यालय, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को, 1928
165. मैक्सिम गोर्की–मेरा बचपन, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह मास्को, 1929
166. मारिस फ्रैंक तथा ब्लैक क्लार्क–दृष्टिदात्री, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, 1958
167. महम्मूद रेजा शाह पहलवी–देश के नाम मेरा सन्देश, रंगमहल, दिल्ली
168. झाबरमल शर्मा–भारतीय देशभक्तों की करावास कहानी, राजस्थान एजेंसी, कलकत्ता, 1921
169. देवव्रत–साहित्यकारों की आत्मकथा, नवशक्ति प्रकाशन मन्दिर, पटना, 1939
170. धीरेन्द्र वर्मा–हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल, वाराणसी
171. नारायण वि. शर्मा–हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978
172. पुरूषोत्तम अग्रवाल–नालन्दा अद्यतन शब्दकोश, आदीश बुक डिपो, दिल्ली, 1966
173. बनारसीदास चतुर्वेदी–साहित्य और जीवन शास्त्र, नन्द किशोर एण्ड सन्ज, वाराणसी,
174. भगवत् शरण उपाध्याय–विश्व साहित्य की रूप रेखा, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1976
175. भगवानदास वर्मा–साहित्य की विधा–धर्मिता, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1977
176. भगीरथ मिश्र–कला साहित्य और समीक्षा, भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1965
177. भोलानाथ–हिन्दी साहित्य, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग, 1971
178. मिश्र बन्धु–मिश्र बन्धु विनोद, गंगा पुस्तकालय, लखनऊ, 1967
179. यशपाल महाजन–बृहद् हिन्दी ग्रन्थ सूची, भारती ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1965
180. योगराज थानी–खिलाड़ियों की कहानी उन्हीं की जुबान, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1978
181. रत्नाकार पाण्डेय–पत्रकार प्रेमचन्द और हंस, राजेश प्रकाशन, दिल्ली, 1977
182. रवीन्द्र कुमार जैन–कविवर बनारसीदास : जीवनी और कृतित्व, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कलकत्ता, 1966
183. रामकुमार वर्मा–हिन्दी सा. का आलोचनात्मक इतिहास, रामनारायण लाल वेणी प्रसाद, इलाहाबाद
184. रामकुमार शुक्ल–हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1958
185. रामसागर त्रिपाठी–समीक्षाशास्त्र के भारतीय मानदण्ड, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1970
186. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय–आधुनिक हिन्दी साहित्य, हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग, 1941
187. ललिता शास्त्री–मेरे पति मेरे देवता, ग्रन्थ भारती, कानपुर, 1967
188. लालधर त्रिपाठी–प्रचारक हिन्दी शब्द कोश, हिन्दी प्रचारक पुस्कालय वाराणसी
189. यू. टी. हेसू–अदृश्य संघर्ष, लोकप्रिय प्रकाशन, दिल्ली, 1964
190. वाल्टर पी. ई. किइसलर–एक अमरीकी मजदूर की कहानी, नवकेतन पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1963
191. वीरा फिगनर–देवी वीरा, शारदा सदन, प्रयाग, 1931
192. हर्बर्ट ए. फिल्ब्रिक–मेरा तिरंगा जीवन, आधुनिक साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952
193. हिटलर–मेरा जीवन संग्राम, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय कलकत्ता, 1938
194. हिटलर–मेरा संघर्ष, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद,
195. हैनरी डेविड थोरो–सरल जीवन की साधना, पब्लि. ब्यूरो, पं. विश्व. चण्डीगढ़, 1954
196. हैनरी केलर–मेरी जीवन कहानी, बौरा एण्ड बौरा कम्पनी बम्बई, 1955
197. हैलेन केलर–मेरी जीवन गाथा, ओरियन्ट लौगमैन्स, दिल्ली, 1965

## सहायक ग्रन्थ सूची

### अंग्रेजी


198- A History of Autobiography in Antiquity Vol. I-George Misch, 195.
199- An Introduction on the Study of literature-William Henry Hudson.
200- A Reader's Guide to Libterary terms-Rail Beckson and Arthur Gans.
201- Art of Autobiography-D.G.Naik.
202- Autobiography of Pandit Dayanand Saraswati-[Theosophist Magazine], H.P. Bhavastky. 1879
203- Cassel's Encyclopaedia of Literature-S.H. Steinburg.
204- Desgin and Truth in Autobiography-Roy Pascal.
205- Dictionary of world Literary Terms-J.T. Shiply.
206- Encyclopaedia Americana.
207- Encyclopaedia Britannica, Vol.II
208- Experiment in Autobiography-H.G. Wells.
209- One Mighty Torrent-Edger Johnson.
210- Oxford Dictionary.
211- Shorter Oxford English Dictionary.


### हिन्दी


212. क्षेमचन्द सुमन–जीवन स्मृतियाँ, आत्माराम एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1952
213. गजानन माधव मुक्तिबोध–एक साहित्यकार की डायरी, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कलकत्ता, 1964
214. गणपति चन्द्रगुपत–हिन्दी विज्ञान, भारतेन्दु भवन, चण्डीगढ़, 1964
215. गणपति चन्द्र गुप्त–हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, भारतेन्दु भवन, चण्डीगढ़, 1965
216. गणपति चन्द्र गुप्त–हिन्दी साहित्य का विकास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1971
217. गार्सा द तासी–हिंदुई साहित्य का इतिहास, हिन्दुस्तानी अकेदमी, इलाहाबाद, 1956
218. गुलाबराय–काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1958
219. गोपालदास नीरज–लिख–लिख भेजत पाती, आत्माराम एण्ड सन्ज दिल्ली, 1961
220. गोविन्द त्रिगुणायत–शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, एस. चान्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली, 1968
221. चन्द्रावती सिंह–हिन्दी साहित्य मे जीवन चरित का विकास, इण्डियन प्रेस इलाहाबाद, 1958
222. विनयमोहन शर्मा–साहित्यावलोकन, साहित्य भवन इलाहाबाद, 1952
223. विश्व प्रकाश दीक्षित बटुक–हिन्दी साहित्य का नूतन इतिहास, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1963
224. वृन्दावन वर्मा–दबे पाँव, मयूर प्रकाशन, झाँसी, 1965
225. शान्ता कुमार–एक मुख्य मन्त्री की जेल डायरी, सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1977
226. शिवकुमार–हिन्दी साहित्य–युग और प्रवृतियाँ, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1961
227. शिवदान सिंह चौहान–साहित्यानुशीलन, आत्मराम एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1955
228. शिवरानी–प्रेमचन्द घर मे, आत्मराम एण्ड सन्ज, दिल्ली, 196
229. शिवसिंह सेंगर–शिवसिंह सरोज, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1921
230. श्यामसुन्दर घोष–साहित्य के नये रूप, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1969
231. सच्चिदानन्द शास्त्री–योगी का आत्मचरित्र, पांतजल योग साधना संघ, रोहतक, 1972
232. सच्चिदानन्द ही.वा. अज्ञेय–आधुनिक हिन्दी साहित्य, अभिनव भारतीय ग्रन्थ माला, कलकत्ता, 1940
233. सत्यदेव परिव्राजक–विचार स्वातन्त्रय के प्रांगण में, सत्यज्ञान निकेतन, ज्वालापुर, 1952
234. सीताराम चतुर्वेदी–हिन्दी साहित्य सर्वस्व–हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणसी, 1956
235. सूर्याकान्त शास्त्री–हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, मेहर चन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली, 1961
236. हजारी प्रसाद द्विवेदी–हिन्दी साहित्य, अतर चन्द कपूर एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1964
237. डॉ0 प्रभा खेतान–अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली 2008
238. डॉ0 हरिवंश राय बच्चन–दशद्वार से सोपान तक, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2013
239. मोहन राकेश –मोहन राकेश की डायरी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2008
240. डॉ0 विष्णु प्रभाकर–पंखहीन, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2010
241. डॉ0 विष्णु प्रभाकर–मुक्त गगन में, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2011
242. डॉ0 विष्णु प्रभाकर–और पंछी उड गया, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2009
243. मन्नू भंडारी–एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली 2009
244. कमलेश्वर–जलती हुई नदी, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2008
245. कमलेश्वर–जो मैंने जिया, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2008
246. कमलेश्वर–यादों के चिराग, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2008
247. तसलीमा नसरीन–मेरे बचपन के दिन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2008

248. सूरजपाल चौहान–तिरस्कृत, अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद उ0 प्र0 2005
249. सूरजपाल चौहान–संतप्त, अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद उ0 प्र0
250. ओमप्रकाश वाल्मिकी–जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा0 लि0 नई दिल्ली 2012
251. बेनजीर भुट्टो–मेरी आपबीती, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2008
252. भगवानदास–मै भंगी हूँ, गौतम बुक सेन्टर 2011
253. अमृता प्रीतम–अक्षरों के साये, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली 2011
254. डॉ0 विनय मोहन शर्मा–शोध प्रविधि, नेशनल पेपरबैक्स अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली, 2006
255. दयानन्द सरस्वती–सत्यार्थ प्रकाश, आर्श साहित्य प्रचार ट्रस्ट नया बांस दिल्ली, 2010
256. हिन्दी आत्मकथा स्वरूप एवं साहित्य, डॉ0 कमलेश सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 1989

## **साहित्यिक कोश**

1 स0 धीरेन्द्र वर्मा–हिन्दी साहित्य कोश–1 ज्ञानमण्डल लि0 वाराणसी
2 रामचन्द्र वर्मा–मानक हिन्दी कोश–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
3 डा0 भोलानाथ तिवारी–व्यवहारिक हिन्दी कोश–नेषनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
4 राणा प्रसाद शर्मा–पौराणिक कोश–हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद
5 डॉ0 हरदेव बाहरी–हिन्दी शब्द कोश–राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली।

## **पत्र–पत्रिकाएँ**

ज्ञानोदय
हँस
मधुमती
मीरायन
हिन्दू
वैचारिकी
वरदा
शोध समवेत
नवनीत
आलोचना
समीक्षा
शोध, समीक्षा और मूल्यांकन